Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ya Samaj Foundation Chenna

बाल भारती

१९५८

G.K.Y.
LIB
HARDWA

Domain. Gurukul Kangri Colle

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILE

Stock Verification-20[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

बाल-भारती

COMPILED

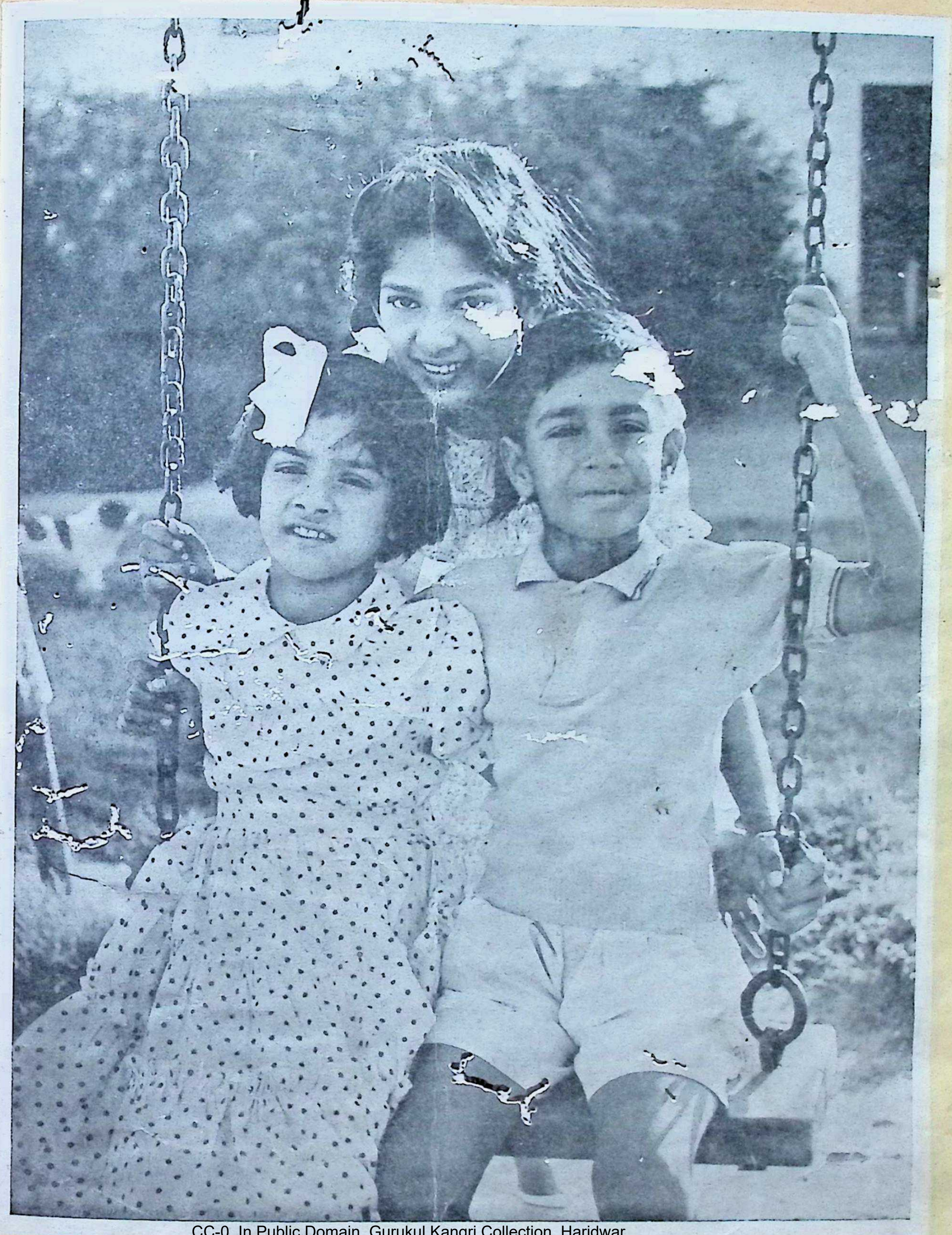

भाद्र-आश्विन
सितम्बर १९५८
★
मूल्य
३५ नये पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालोपयोगी प्रकाशन

	मूल्य रु०	डाक खर्च रु०
भारत की लोक कथाएँ	१·००	०·२५
भारत के गौरव	१·२५	०·३०
जातक कथाएँ (भाग–१)	०·७५	०·१५
जातक कथाएँ (भाग–२)	१·००	०·२५
पश्चिम भारत की लोक कथाएँ	०·७५	०·२०
खीर की गुड़िया	०·५०	०·२०
पंचतंत्र की कहानियाँ (भाग ३ व ४)	०·३५ प्रत्येक	०·१५ प्रत्येक
आदर्श विद्यार्थी बापू	०·३५	०·१५

(रजिस्ट्री व्यय अलग)

सभी प्रमुख पुस्तक विक्रेताओं से प्राप्य या निम्न पते पर सीधा लिखें

पब्लिकेशन्स डिवीज़न
पो० बॉ० नं० २०११, ओल्ड सेक्रेटेरियट
दिल्ली–८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के स्वास्थ्य के रक्षक

नौनिहाल
बेबी टानिक

बच्चों की कमज़ोरी में काम आता है

नौनिहाल
ग्राइप सीरप

बच्चों के क़ब्ज़, बदहज़मी दांत निकलना, और अफ़ारा में काम आता है

हमदर्द दवाखाना

(ट्रस्ट) देहली

बाल-भारती

संख्या ४ वर्ष ११

भाद्र-आश्विन १८८०

सितम्बर १९५८

सम्पादक-मण्डल

के० शंकर पिल्ले — मोहन राव
फ्रीडा बेदी — सावित्री देवी वर्मा (मंत्री)

विषय-सूची

कहानियां

निन्नानवे का फेर — मन्मथनाथ गुप्त ... २
बुद्धि कहां रहती है ? — गुरु नारायण पाण्डे ... ५
बन्दरिया रानी — सावित्री देवी वर्मा ... ७
बुद्धि बड़ी या रुपैया ? — जितेन्द्र गुप्त ... १९
मन्दारवती की कथा — वीरेश्वर भट्टाचार्य ... २१
चन्दा और मेघ (२) — अजित कुमार वन्द्योपाध्याय ... २४
डंडी चलती रही — उर्मिला वार्ष्णेय ... २६
गुरुजी घोड़े पर सवार हुए — वीरमा मुनीवर ... २७

काव्य कथा

मछुआ और सुनहली मछली — पुश्किन ... १०

अन्य रचनाएं

बच्चों का वर्षा गीत — मोहन अंबर ... १३
दो कविताएं — कपिल ... १३
ये भी खूब रही — ४

बच्चों की अपनी रचनाएं

हमारे दस नौकर — अरुण ... १४
एक दिन की बात — २३
कौवा है बेटा — पृथ्वीसिंह चौहान ... २९
जीवन की मुसकान — प्रेमचन्द भारद्वाज ... ३१
दीदी के पत्र—बरसात में क्या सावधानी बरतें ... २८

बाल-भारती चित्रावली १५

★

सम्पादकीय पत्र-व्यवहार का पता—सावित्री देवी वर्मा
पब्लिकेशन्स डिवीज़न, ओल्ड सेक्रेटेरिएट, दिल्ली-८

वार्षिक मूल्य—चार रुपये, १ डालर या ७ शिलिंग
एक प्रति—३५ नये पैसे, १० सेंट या ८ पेंस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निन्नानवे का फेर

किसान धान लेकर खेत से अभी गए ही थे कि एक बन्दर धान के खेत में आकर खोजने लगा कि कहीं कुछ धान पड़ा हो तो अपना और अपने बच्चों का पेट भरे। वहां उसे धान तो मिला नहीं, पर उसकी आंख किसी गोल चमकदार चीज़ पर पड़ी, पर वह क्या चीज़ है यह समझ पाने के पहले ही आंख हट गई। इसलिए यह पता नहीं लगा कि वह चीज़ कहां है। तब बन्दर ने फिर ध्यान से चारों तरफ देखा तो एक जगह उसे वही गोल चमकदार चीज़ दिखाई पड़ी। वह फौरन उस चीज़ के पास गया। उसने खुश होकर उसे हाथ से उठाकर सूंघा। इसके बाद उसे मुंह में डालकर देखा तो कोई स्वाद नहीं आया और वह पत्थर की तरह कड़ी भी थी। एक दफे तो उसकी इच्छा हुई कि उसे दूर फेंक दे, पर उसकी चमक की वजह से उसने अपने को रोका और उसे नहीं फेंका।

उसने उसे बहुत ध्यान से देखा तो उस पर कुछ लिखा हुआ था। अब उसे कुछ याद आया। वह समझ गया कि यह रुपया है, जिसके पीछे आदमी बावले रहते हैं। किसी किसान की टेंट से छूट गया होगा, इसलिए यहां पड़ा मिला।

पर वह रुपया उसके किस काम का था। न इसमें कोई स्वाद था और न छूने में ही कोई मज़ा था। हां, वह चमकदार जरूर था। यह बात उसकी समझ में आई कि जब आदमी इसके पीछे बावले रहते हैं, तो इसमें कोई न कोई अच्छाई जरूर होगी।

वह रुपया लेकर अपने जंगल में चला गया। उसकी बन्दरिया ने देखकर पूछा—कुछ मिला?

बन्दर ने मुंह बना दिया, बोला—नहीं।

पर उसकी मुट्ठी बंधी हुई थी और उसमें से कोई चमकदार चीज़ झांक रही थी। बन्दरिया की आंख उसी तरफ थी, यह देखकर बन्दर ने फौरन रुपया छिपा लिया और कुछ काम है कह कर पेड़ों पर छलांग मारते हुए दूर निकल गया।

अब उसे फिक्र पैदा हुई कि वह उस रुपए का क्या करे? अगर दूसरे बन्दर इसे देखेंगे, तो वे जरूर छीन लेंगे। बन्दरिया देखेगी तो वह भी ले लेगी। उसे तो चमकदार चीज़ों से खास मुहब्बत है। बच्चे देखेंगे तो इसका खिलौना बनाना चाहेंगे। इसलिए वह घने जंगल में निकल गया और वहां उसने जमीन खोदकर उस रुपए को गाड़ दिया।

अब उसे चिन्ता हुई कि आगे क्या करे। वह अपनी जान-पहचान के एक आदमी के पास गया और उससे पूछा—भाई, तुम रुपए का क्या करते हो?

बन्दर का यह प्रश्न सुनकर उस आदमी को बड़ा ताज्जुब हुआ। उसने कहा—अरे, यह भी कोई पूछने की बात है? हम उसे खर्च करते हैं।

—खर्च करने के क्या माने?

—खर्च करने के यह माने कि उसे देकर जो भी चीज पसन्द आती है, उसे लेते हैं।

बन्दर ने कहा—तब तो यह बड़ी अच्छी चीज़ है, पर यह तो बताओ जब खर्च नहीं करते तब उसका क्या करते हो?

—जमा करते हैं, जमा करके जब बहुत रकम हो जाती है, तो उससे जाने क्या-क्या काम बन सकते हैं। पर तू यह बता कि ऐसी बात क्यों पूछ रहा है?

बन्दर ने सोचा कि अब आगे पूछने से शक पैदा होगा, इसलिए वह वहां से चला गया। अब वह हर समय इसी टोह में रहने लगा कि कैसे और रुपए मिलें ताकि उसके रुपए बढ़ें। वह दिन-रात इसी सोच में रहता। उसे दुबला पड़ते हुए और परेशान देखकर बन्दरिया बोली—तुम्हें क्या हो गया है? दिन-रात सोचा करते हो। कुछ बीमारी तो नहीं लग गई है? अगर है तो चौपायों के वैद्य भालूजी के पास भी जा सकते हो और मवेशियों के अस्पताल में भी जा सकते हो।

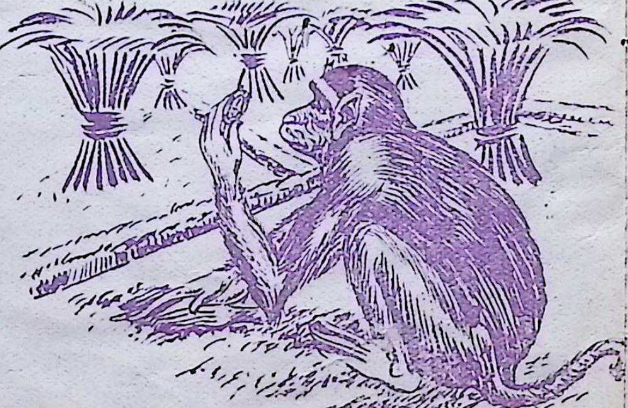

उसने उसे बहुत ध्यान से देखा तो उस पर कुछ लिखा हुआ था। अब उसे कुछ याद आया। वह समझ गया कि यह रुपया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन्दर ने कहा——तू तो हर समय छोटी-छोटी बातें सोचा करती है। तुझे पता नहीं कि दुनिया में कितनी बड़ी-बड़ी बातें हो रही हैं। तुझे अपनी ही पड़ी रहती है। मुझे कोई बीमारी नहीं हुई है। मैं तो इसी सोच में मर रहा हूं कि किस तरह से बन्दर आदमी का मुकाबला करे।

बन्दरिया बोली——मुझे यह सब कांव-कांव अच्छी नहीं लगती। हम आदमियों से यों ही बड़े हैं। हमें उनकी बराबरी से क्या मतलब है?

बात यहीं पर खत्म हो गई, पर बन्दर ने रुपए खोजने का काम जारी रखा। पर खोजने से रुपए थोड़े ही मिलते थे। तब उसने मौका देखकर सौदे के लिए आते-जाते लड़कों के हाथ से रुपए पैसे जो भी मिल जाते छीनने शुरू कर दिए। यहां तक कि बस्ती के आसपास यह खबर फैल गई कि बन्दर पैसे भी छीन लेते हैं। अब लोग बन्दरों के खिलाफ होने लगे।

धीरे-धीरे यह बात दूसरे बन्दरों के कानों में पहुंची। तब उन लोगों ने आकर उस बन्दर को समझाया——तू ऐसी बेजा हरकत क्यों करता है? इससे क्या फायदा है? हमें रुपए-पैसों से क्या मतलब? हम एक-आध खाने-पीने की चीज़ लेते हैं, तो उस पर कोई ध्यान नहीं देता। यों तो हमारा सफाया हो जाता, पर खैरियत है कि हिन्दुओं के किसी बड़े आदमी ने हमारी तारीफ लिख दी। इसलिए हमें कोई नहीं मारता? तू रुपया-पैसा छीनना बन्द कर दे।

पर वह नहीं माना। उसके पास इस समय तक बहुत रुपए जमा हो चुके थे। वह बराबर पहले की तरह रुपए छीनता रहा। उसने सोचा सौ पूरे कर लूं तो यह काम छोड़ दूंगा।

लोगों ने पुलिस को खबर दी, पर पुलिसवालों ने कहा——हमारा काम बन्दर पकड़ना नहीं है और बन्दर तो हमेशा से ऊधम करते हैं, हम इसमें क्या करें? इसके अलावा बन्दर देवता भी माने जाते हैं।

पर जनता परेशान हो चुकी थी। उसने बहुत शोर मचाया। तब मजबूर होकर पुलिसवालों ने एक फाइल जारी की कि इस कस्बे के पास के जंगल में बहुत बन्दर हो गए हैं, जो लोगों को परेशान करते हैं। इनको मारने या पकड़ने के लिए कोई बन्दोबस्त किया जाए। यह फाइल ऊपर की तरफ चली और बड़ा भारी बजट बना कि इतने बन्दर हैं, इनके इतने बच्चे साल में पैदा होते हैं, इसलिए उनको पकड़ने के लिए इतने आदमी चाहिए जिनको इतनी तनख्वाह और इतना भत्ता देना पड़ेगा। आखिर में जब यह प्रस्ताव वित्त मन्त्री यानी रुपए पैसे के मन्त्री के पास गया तो उन्होंने कहा कि इतना पैसा सरकार के पास नहीं है। इसलिए फाइल लौट आई, पर जनता को तो दुख था, इसलिए फाइल फिर ऊपर को चली।

इस बीच में कस्बे के चोरों ने सलाह की कि अगर किसी तरह हम इस बन्दर को पकड़ पाते तो बड़ा काम बनता। चोर सरकार की तरह न तो फाइल चलाते हैं और न ज्यादा सोच-विचार करते हैं। दो चोरों ने मिलकर सलाह की और अगले ही दिन वे फन्दा तैयार करके एक पेड़ की आड़ में बैठ गए। एक लड़के से कहा कि तू रुपया उछालता हुआ चल। बस फिर क्या था। वह बन्दर रुपया लेने के लिए लपका और फौरन ही उसके गले में फन्दा पड़ गया।

बन्दर सोच रहा था कि ये लोग जाने मेरे साथ क्या करें, पर उन लोगों ने उसे न तो मारा न पीटा और उसे खाने के लिए अच्छे-अच्छे फल दिए। बन्दर डरा हुआ था कि अभी तो आव-भगत हो रही है, फिर मार पड़ेगी। कुछ देर बाद उन चोरों के सरदार ने उस बन्दर से कहा——हम चाहें तो तुझे अभी मार सकते हैं, पर हम तुझे मारेंगे नहीं, तू हम लोगों को

बस फिर क्या था। वह बन्दर उस रुपए को लेने के लिए लपका और फौरन ही उसके गले में फन्दा पड़ गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोरी करने में मदद दिया कर, मकान में घुसकर दरवाजा खोल दिया कर, तो तुझे खाने के लिए कश्मीर से मंगाकर अच्छे-अच्छे फल दिया करेंगे। तू भी चैन से रहेगा और हम लोगों का भी भला होगा।

पर बन्दर के मन में यह इच्छा थी कि वह दूसरों के लिए नहीं अपने लिए बहुत-सा धन इकट्ठा करे। उसे तो अपने गड़े हुए धन की फिक्र हो रही थी। उसने आनाकानी की। इस पर एक चोर ने उसे न मारा न पीटा, बस बिजली के तार से उसे मामूली ढंग से छुआ दिया।

इतने ही पर बन्दर चीख पड़ा और चोरों की बात मान कर चोरी करने पर राजी हो गया।

अब तो कस्बे में चोरों की चांदी हो गई। कहीं दिन दहाड़े चोरी हो रही है, तो कहीं रात को घर में घुसकर चोरी हो रही है। कई दफे तो सैकड़ों रुपए की चोरियां हो गईं। सब लोग यही कहते कि बन्दर आता है और दरवाजा खोल देता है, फिर चोरी हो जाती है। अजीब बात तो यह थी कि चोर और कुछ नहीं उठाते थे, रुपए पैसे और सोना चांदी ही ले जाते थे।

ऊपर से मंत्री जी ने रुपया मंजूर नहीं किया था, पर जब नीचे से यह लिखकर गया तो मन्त्री जी ने फौरन रुपया मंजूर किया और पुलिस को यह हुक्म दिया कि हिन्दुओं की भावनाओं की बिलकुल परवाह न करके बन्दर जहां भी मिलें, उन्हें वहीं गोली से मार दिया जाए।

अब तो दस-बीस बन्दर गोली से मारे गए, पर जो असली चोर बन्दर था, उसको चोरों ने छिपा लिया और वह पकड़ा नहीं गया। पर बन्दरों को तो मालूम था कि उन पर आफत किस लिए आई है। इसलिए उन लोगों ने एक दिन सलाह करके चोरों के घर पर धावा किया और चोरों के साथ-साथ उस बन्दर को भी जान से मार डाला, साथ ही उस घर में आग लगा दी। पुलिस ने आग बुझाई तो कुछ सामान तो जल चुका था, पर जो सामान मिला, उससे सारी चोरियों का पता मिल गया। कई लाशें भी अधजली हालत में पाईं गईं। तब पुलिस वालों ने समझा कि यह बन्दर यहां रहता था और चोरों से मिलकर सारी खुराफात करता था। अब चोरियां बन्द हो चुकी थीं, फिर भी बन्दरों पर वार चलता रहा। अन्त तक ऐसी परिस्थिति हुई कि सभी बन्दरों को वह सारा इलाका छोड़ जाना पड़ा। एक बन्दर की गलती के कारण सारे बन्दरों का सत्यानाश हुआ।

★

ये भी खूब रही

देशभक्ति—दूसरे महायुद्ध के बाद की बात है। एक शाम चर्चिल, रूज़वैल्ट और स्टालिन इकट्ठे खाने पर बैठे। बातों-बातों में यह विषय छिड़ गया कि यदि वे अपने देश में पैदा न हुए होते और उनका जन्म किसी और देश में हुआ होता, तो वे कहां पैदा होना चाहते ?

सबसे पहले चर्चिल बोले—यदि मुझे ब्रिटेन में जन्म लेने को नहीं मिलता तो मैं अमेरिका में जन्म लेना पसन्द करता।

इसके बाद रूज़वैल्ट ने कहा—यदि मैं अमेरिका में पैदा न हुआ होता, तो मैं ब्रिटेन में पैदा होना पसन्द करता।

अब स्टालिन की बारी थी। उन्होंने वह जवाब दिया कि सब दंग रह गए। उन्होंने कहा—यदि मैं रूस में जन्म न ले पाता तो यह मेरे लिए शर्म की बात होती।

यह घटना उनके देश-प्रेम की गहराई का नमूना थी।

न्याय की मांग—महान व्यक्ति अपने जीवन में सचाई को बहुत प्रधानता देते हैं। इंगलैण्ड के बादशाह जार्ज प्रथम के जमाने की बात है। एक जज का साला खून के मामले में पकड़ा गया। न्याय की यह मांग थी कि उसे कत्ल की सज़ा दी जाए। जज ने किया भी वैसा ही। परन्तु वह चाहता था कि किसी तरह उसे बचा लिया जाए। एक ही रास्ता था कि जार्ज प्रथम से अपील की जाए।

जज ने कत्ल की सज़ा सुनाते समय अपील की कि राजा खानदान की इज्जत बचाने के लिए उनके साले को माफ कर दें।

जार्ज ने जब यह पढ़ा तो आग बबूला हो गए। उन्होंने उसी समय लिखा—जज यह चाहता है कि उसके खानदान की बदनामी मेरे खानदान पर आ जाए। इसलिए यह जज बरखास्त किया जाए।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि कहां रहती है?

श्री गुरु नारायण पाण्डे

राजा भोज मन्त्रियों सहित राजसभा में विराजमान थे। द्वारपाल ने अभिवादन किया और बोला——महाराज, एक बालक श्रीमान् से मिलने का हठ कर रहा है।

राजा ने बालक को राजसभा में आने की आज्ञा दी। दस-बारह वर्ष के एक सुन्दर बालक ने हँसते हुए राजसभा में प्रवेश किया।

महाराजा उसे देखकर मुग्ध हो गए। उन्होंने मुस्कराते हुए पूछा——क्या चाहते हो, कुमार?

बालक ने गम्भीर हो कर कहा——मेरा एक प्रश्न है, महाराज! कोई उसका ठीक उत्तर नहीं देता। लोग बालक समझकर मुझे डांट देते हैं। मैंने सोचा महाराज भोज का दरबार पंडितों का दरबार है। वहां मेरे प्रश्न का उत्तर अवश्य मिलेगा।

राजा ने बालक को प्रोत्साहित करते हुए कहा——पूछो, पूछो, तुम्हारे प्रश्न का सही उत्तर दिया जाएगा।

बालक ने मुस्करा कर पूछा——बुद्धि कहां रहती है, महाराज? वह दिल में, दिमाग़ में या सारे शरीर में रहती है?

प्रश्न कुछ अजीब-सा था। राजा ने महामन्त्री से कहा——आप इस प्रश्न का ठीक उत्तर दीजिए, महामन्त्री!

महामन्त्री घबराए। राजदरबार का मामला ठहरा। उन्होंने प्रश्न के उत्तर के लिए एक दिन का समय मांगा।

बालक अतिथि गृह में भेज दिया गया। महामन्त्री विचार में पड़ गए—पता नहीं बालक कैसा उत्तर चाहता है? क्यों न उसी से पूछा जाए। रात में वह चुपके से बालक के पास पहुंचे। इधर-उधर की बातें करने के बाद उन्होंने बालक से प्रश्न का उत्तर पूछा।

बालक ने कहा——मैं प्रश्न का उत्तर मुफ्त नहीं बताऊंगा। आप मुझे एक सहस्र स्वर्ण-मुद्रा दें तो मैं उसका उत्तर बता दूं।

महामन्त्री ने एक सहस्र-मुद्रा दे कर प्रश्न का उत्तर जान लिया।

दूसरे दिन जब वह राजसभा में आए बालक बुलाया गया और महाराज ने उन्हें प्रश्न का उत्तर देने का आदेश दिया।

महामन्त्री ने प्रसन्न मुद्रा से कहा——महाराज, बुद्धि न दिल में रहती है, न दिमाग़ में रहती है, न सारे शरीर में रहती है। वह श्रेष्ठ पुरुषों में रहती है। बालक ने प्रसन्नतापूर्वक महामन्त्री का उत्तर स्वीकार कर लिया, किन्तु उसने उसी बारे में एक दूसरा प्रश्न पूछ लिया——बुद्धि खाती क्या है, महामन्त्री?

प्रश्न मजेदार था। महाराज हँस पड़े। महामन्त्री ने उसके लिए भी एक दिन का समय लिया। महाराज ने बालक को पास बुलाकर प्यार से कहा——तुम बड़े बुद्धिमान मालूम पड़ते हो, कुमार! कहां रहते हो?

बालक ने उत्तर दिया——आपके राज्य के एक गरीब ब्राह्मण का लड़का हूं, महाराज! महाराज का ध्यान बालक के फटे वस्त्रों की ओर गया। उन्होंने उसे दूसरे दिन नवीन वस्त्र पहना कर राजसभा में लाने की आज्ञा दी।

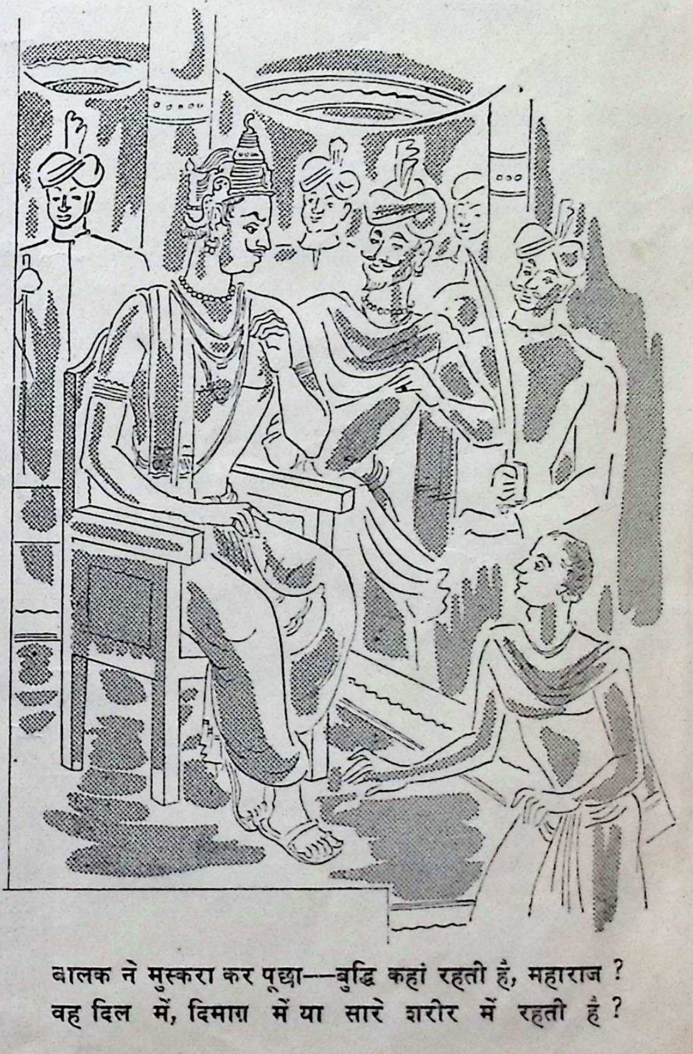

बालक ने मुस्करा कर पूछा——बुद्धि कहां रहती है, महाराज? वह दिल में, दिमाग़ में या सारे शरीर में रहती है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात में महामन्त्री फिर बालक के पास पहुंचे। इस बार बालक ने कुछ आनाकानी की और दो सहस्र पर सौदा पटाया।

अगले दिन राजसभा खचाखच भरी थी। सब प्रश्न का उत्तर जानने को उत्सुक थे। बालक के आते ही महामन्त्री को प्रश्न का उत्तर देने की आज्ञा हुई।

महामन्त्री प्रसन्न थे। उन्होंने महाराज को अभिवादन करते हुए कहा––महाराज, बुद्धि गम खाती है। बालक ने धन्यवादपूर्वक उत्तर स्वीकार कर लिया। किन्तु उसने तत्काल तीसरा प्रश्न पूछ दिया––बुद्धि क्या करती है, महाराज ? यह मेरा अंतिम प्रश्न है।

महाराज ने हँसते हुए महामन्त्री की ओर देखा। वह अपने मन्त्री की बुद्धिमत्ता पर प्रसन्न थे। महामन्त्री ने फिर एक दिन का समय लिया। वह रात में फिर बालक के पास पहुंचे। किन्तु इस बार बालक ने प्रश्न का उत्तर बताने से साफ इनकार कर दिया।

उसने कहा––मैं राजा भोज के दरबारियों की बुद्धि परखना चाहता हूं। एक लक्ष स्वर्ण मुद्रा पर भी प्रश्न का उत्तर नहीं बताऊंगा। आप मेरे इस प्रश्न का उत्तर स्वयं दीजिए, महामन्त्री !

महामन्त्री ने बहुत सोचा विचारा, चुपके-चुपके राज-दरबार के पंडितों से परामर्श किया। किन्तु तीसरे दिन जब राजसभा में आए तो पिछले दिनों की भांति प्रसन्न नहीं थे।

आज राजसभा में रोज से अधिक भीड़ थी। बालक बुलाया गया। महाराज ने उसे प्रेमपूर्वक बैठाया और महामन्त्री को उसके अंतिम प्रश्न का उत्तर देने को कहा।

महामन्त्री कुछ लड़खड़ाते से उठे। उन्होंने कहा––बुद्धि सब कुछ करती है, महाराज !

महाराज ने बालक की ओर देखा। वह चुप था।

––क्यों कुमार, महामन्त्री का उत्तर ठीक है न ?––महाराज ने पूछा।

––नहीं महाराज, ऐसा होता तो अब तक यह धरती स्वर्ग बन गई होती। आपके राज्य में मेरे पिता जैसे दरिद्र और मुझ जैसे अशिक्षित नहीं रह जाते।

राजा कुछ झुंझला कर बोले––अच्छा, बालक, फिर तुम्हीं बताओ बुद्धि क्या करती है ?

बालक हँस पड़ा ––मैं बताऊं ? आप लोग इस प्रश्न का ठीक उत्तर नहीं बता सकते ? तब तो आपको मेरी श्रेष्ठता स्वीकार करनी पड़ेगी, महाराज !

––हां, तुम्हीं बताओ, मैं तुम्हारी श्रेष्ठता स्वीकार करता हूं। मनुष्य आयु से नहीं गुण से बड़ा होता है––महाराज ने कहा।

––अच्छा, महाराज, आपको मेरी श्रेष्ठता स्वीकार है तो नीचे उतर आइए और मुझे ऊपर बैठने दीजिए। मैं ऊंचे आसन से प्रश्न का उत्तर दूंगा।

महाराज हँसते हुए राजसिंहासन से नीचे उतर आए और बालक का हाथ पकड़ कर उसे सिंहासन पर बैठा दिया।

सिंहासन पर बैठ कर बालक कभी राजा, कभी मन्त्री, कभी राज-पंडितों की ओर मुस्करा-मुस्करा कर देखता रहा। उसने बड़ी देर तक कुछ नहीं कहा।

महामन्त्री ने क्रोध के स्वर में कहा––अब प्रश्न का उत्तर क्यों नहीं देते, बालक ?

––सावधान महामन्त्री, मैं राज सिंहासन पर बैठा हुआ हूं––वह राजा भोज की ओर देखकर हँस पड़ा––क्यों महाराज ! क्या प्रश्न का उत्तर नहीं मिला ? दिखता है कि राजा भोज के दरबार के पंडित बालक की भाषा नहीं समझते ?

एक ओर से आवाज़ आई––हँसी मत करो। प्रश्न का ठीक उत्तर दो।

उत्तर तो दे दिया। बुद्धि वही करती है जो मैंने किया है। वह राजसिंहासन से नीचे उतार देती और नीचे से उठाकर सिंहासन पर बैठा भी सकती है। यही बुद्धि का व्यापार है।

इतना कह कर बालक नीचे उतर पड़ा। जल्दी से उठकर महाराजा ने उसे छाती से लगा लिया। उन्होंने प्रसन्न होकर कहा ––कुछ मांगो, बालक !

बालक ने हाथ जोड़ दिया––मैं आपके राज्य के एक गरीब ब्राह्मण का लड़का हूं। गरीबी के कारण मेरे माता-पिता ने मेरी शिक्षा बन्द कर दी है, महाराज।

––तुम मेरे राज्य के गौरव हो। आज से मेरे राज्य में सब बालकों की शिक्षा का पूरा प्रबन्ध होगा––महाराज भोज ने बालक की पीठ थपथपाते हुए कहा।

सब लोग धन्य ! धन्य ! कह उठे।

☆ ☆

सूचना

लेखक जो रचनाएं हमें भेजें उसकी नकल अपने पास जरूर रख लें। बाल-भारती में लम्बी और अन्यत्र प्रकाशित रचनाएं नहीं छापी जातीं। रचनाएं भेजते समय इस बात का विशेष ध्यान रखें कि उनकी भाषा सरल और रोचक हो। छोटे बच्चे अपनी रचना के ऊपर आयु और कक्षा का उल्लेख करना न भूलें।

सम्पादिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गतांक से आगे

छोटे कुंवर ने जेवर लाकर बन्दरिया रानी को दिएं और कहा —देख लो, मैंने कहा न था कि जेवर पहिन कर पिताजी के पांव छूने जाना पड़ेगा। कल नया वर्ष है। सो देव-पूजन के बाद सब को पिताजी के पास प्रसाद और आशीर्वाद लेने के लिए जाना होगा। सब भाई अपनी-अपनी पत्नी के साथ आएंगे। मैं भला तुम्हें सब के सामने लेकर कैसे जाऊं?

बन्दरिया रानी बोली—तुम फिक्र मत करो, जो मैं कहूं बस वही करो। यह चिट्ठी लेकर तुम उसी पेड़ के पास जाना और चिट्ठी को पेड़ के कोटर में डाल देना। फिर वहां से तुम्हें एक जल की झारी मिलेगी, उसे मेरे पास ले आना।

छोटे कुंवर ने वैसा ही किया, जैसा कि बन्दरिया रानी ने समझाया था। पेड़ के कोटर में चिट्ठी डालते ही सोने की एक झारी बाहर आ गई। उसे लेकर कुंवर घर वापिस आया और वह झारी बन्दरिया रानी को दे दी। दूसरे दिन झारी ले कर बन्दरिया रानी स्नान घर में घुसी। सब भाइयों की सवारी अपने-अपने महलों से चल पड़ी थी। इधर छोटा कुंवर अधीर होकर बन्दरिया रानी के महलों में चक्कर काट रहा था। थोड़ी देर बाद बन्दरिया रानी के महलों का दरवाजा खुला। कुंवर जल्दी से अन्दर घुसा। घबड़ा कर उसने इधर-उधर नजर घुमाई पर बन्दरिया तो उसे कहीं दिखाई दी नहीं, हां, दरवाजे के पास रखे शीशे में उसे एक परम सुन्दरी स्त्री की झलक दिखाई पड़ी। उसने पीछे मुड़ कर जो देखा तो बस देखता ही रह गया। मानो चांद ही धरती पर उतर आया हो। कुंवर ने उससे पूछा—तुम कौन हो? मेरी बन्दरिया रानी कहां गई?

उस सुन्दरी ने सिर नीचा करके मुसकराते हुए कहा—मैं ही तो तुम्हारी बन्दरिया रानी हूं।

कुंवर ने उससे पूछा—तुम कौन हो? मेरी बन्दरिया रानी कहां गई?
उस सुन्दरी ने सिर नीचा करके मुसकराते हुए कहा—मैं ही तो तुम्हारी बन्दरिया रानी हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंवर ने हैरान होकर पूछा––तुम ! तुम ! भला तुम बन्दरिया रानी कैसे हो सकती हो ?

सुन्दरी ने कोने में पड़ी बन्दरिया की खाल की ओर इशारा किया, तब जाकर कुंवर को विश्वास हुआ । अब तो कुंवर के आनन्द का ठिकाना न रहा ।

बड़े धूमधाम से छोटे कुंवर के महल से सवारी निकली–– इधर तीनों बड़ी बहुएं पहले ही राजमहल में पहुंची हुई थीं । वे परस्पर छोटी बहू की ही चर्चा कर रही थीं कि आज छोटी बहू का भेद खुलेगा । आज छोटे कुंवर की शान फीकी पड़ेगी । इतने में छोटे कुंवर की सवारी दरवाजे पर आकर रुकी । तीनों बड़ी बहुएं छोटी बहू को देखने के लिए उत्सुकतावश आगे बढ़ीं । पीछे-पीछे तीनों कुंवर चले आ रहे थे । उनके साथ दरबार का बूढ़ा मसखरा भी था ।

मसखरा कुंवर जी से बार-बार यही कह रहा था––क्यों, कुंवर जी ! बहूरानी को क्या चन्द्रलोक से चुरा लाए हो ?

छोटी बहू सचमुच ही परम सुन्दरी थी । जब चारों बहुएं राजा जी के पांव पड़ने गईं तो छोटी बहू को ससुर ने सबसे अधिक प्रसाद और आशीर्वाद दिया ।

महल में लौट कर बन्दरिया बहू ने फिर बन्दरिया की खाल ओढ़ ली । यह देख कर छोटे कुंवर को बहुत बुरा लगा । एक दिन बन्दरिया रानी को फिर पूजा में शामिल होना था । वह अपनी खाल उतारकर रख गई । मौका देख कर कुंवर ने सोचा मैं इस खाल में आग लगा दूं, तब भला यह फिर कैसे बन्दरिया बनेगी ? बस यह निश्चय करके उसने खाल में दिया-सलाई लगा दी । आग लगने की देर थी कि छोटी बहू—हाय मैं जली ! हाय मैं जली ! कहती हुई आकाश में जलती हुई-सी जाती दिखाई पड़ी । अब कुंवर को अपनी भूल पता चली । वह पछताने लगा ।

छोटा राजकुमार उसी क्षण बन्दरिया रानी की खोज में चल पड़ा । मार्ग में उसे जो मिलता उसीसे वह बन्दरिया रानी की बात पूछता । एक नदी के किनारे पहुंचने पर उसे एक व्यक्ति मिला । वह हाय ! हाय ! कर रहा था । कुंवर ने पूछा, भाई– कुछ कहो भी तो सही कि तुम क्यों हाय ! हाय ! कर रहे हो ?

वह व्यक्ति बोला––क्या बताऊं भाई । मैं इस जंगल में शिकार खेलने आया था, तो एक सुन्दरी-सी स्त्री एक ज्योति की तरह जलती हुई यहां से उड़ती हुई गुजरी । ऐसी कोमल और रूपवती सुकुमारी को मैंने जब से जलते हुए देखा है तभी से दुख से बावला होकर यहां हाय ! हाय ! कर रहा हूं । राम जाने उसका क्या हुआ होगा ?

कुंवर बोला––भाई, मैं ही उस स्त्री का अभागा पति हूं । और उसी को खोजने निकला हूं ।

वह व्यक्ति बोला––अच्छा, ऐसी बात है तो तुम्हारे साथ मेरी पूरी हमदर्दी है । लो मैं तुम्हें यह दुशाला देता हूं । इसको ओढ़ कर तुम अलोप हो सकोगे । पर लौटते समय मुझे उस देवी के दर्शन ज़रूर करा जाना ।

दुशाला लेकर कुंवर आगे बढ़ा । कुछ देर आगे जाकर उसे एक दूसरा व्यक्ति मिला, वह भी हाय ! हाय ! कर रहा था । कुंवर ने सोचा हो न हो इस व्यक्ति ने भी अवश्य उस जलती हुई ज्योति को देखा है । पूछने पर उस व्यक्ति ने बताया–– हां, भैया, मैं इस नदी में नहाने आया था । उस समय मैंने भी हाय मैं जली ! हाय मैं जली ! कहती हुई एक ज्योति को ऊपर से निकलते देखा था । उसके कष्ट से मैं भी तब से यहां हाय ! हाय ! कर रहा हूं ।

जब उस व्यक्ति को पता चला कि यह कुंवर उस सुन्दरी का पति है और उसीकी खोज में जा रहा है, तो उसने उसे एक जोड़ी खड़ाऊं दी और कहा––लो तुम इन खड़ाउओं को पहन लो । यह तुम्हें मिनटों में जिस जगह चाहोगे पहुंचा देंगी । पर भैया ! जब तुम इधर से लौटो तो भाभी के दर्शन हमें भी कराते जाना ।

उन दोनों को धन्यवाद देकर तथा लौटती बार फिर मिलने का वायदा कर के कुंवर खड़ाउओं पर बैठकर मिनटों में बन्दरिया रानी के देश में पहुंच गया । कहीं मैं पकड़ा न जाऊं इस डर से कुंवर ने वह दुशाला भी ओढ़ लिया । सारे दिन घूम फिर कर उसे यह पता चला कि इस देश की राजकुमारी ऐसी जल गई

वह व्यक्ति बोला––अच्छा, ऐसी बात है तो मेरी तुम्हारे साथ पूरी हमदर्दी है । लो मैं तुम्हें यह दुशाला देता हूं । इसको ओढ़ कर तुम अलोप हो सकोगे । पर लौटते समय मुझे उस देवी के दर्शन जरूर करा जाना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि अब उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं है। और राजा ने यह ढिंढोरा पिटवा दिया है, कि जो व्यक्ति राजकुमारी को अच्छा कर देगा उसे मुंह मांगा इनाम दिया जाएगा।

राजकुमारी को कैसे बचाया जाए, इसी सोच-विचार में कुंवर को रात भर नींद नहीं आई। रात के तीसरे पहर उसने सुना कि एक पेड़ पर दो पक्षी बात कर रहे हैं कि अगर कोई व्यक्ति राजकुमारी के घावों पर इस पेड़ की छाल घिस कर लगा दे तो वह तुरन्त अच्छी हो जाएगी। कुंवर पक्षियों की बोली समझता था। दूसरे दिन उसने उस पेड़ की छाल इकट्ठी की और एक झोली में भर कर राजदरबार में पहुंचा। वहां आकर वह राजा से बोला––महाराज, मैं एक वैद्य हूं। बहुत दूर देश से आपकी राजकुमारी का इलाज करने यहां आया हूं।

सारे महल में यह बात फैल गई कि उत्तर दिशा से एक नामी वैद्य राजकुमारी का इलाज करने आया है। वैद्य रूपी कुंवर ने राजकुमारी की दशा देखी तो उसकी आंखों में आंसू आ गए। राजकुमारी के सारे बदन पर फफोले पड़े हुए थे और हाय ! हाय ! करके वह तड़प रही थी। हाय, मेरे कारण ही राजकुमारी की यह दशा हुई है, यह सोच-सोच कर कुंवर को और भी दुख हुआ। उसने मन को धीरज देकर पेड़ की छाल का लेप तैयार करके राजकुमारी के फफोलों पर चुपड़ दिया। लेप के लगाते ही राजकुमारी की तड़फन बन्द हो गई। और जैसे-जैसे लेप सूखता गया फफोले साफ होते गए। राजकुमारी अच्छी तो हो गई पर उसकी आंखों की रोशनी चली गई।

हाय ! हाय ! तो क्या राजकुमारी अंधी हो गई है। यह सोच-सोच कर सब बड़े दुखी हुए। राजकुमारी के पिता ने कुंवर से कहा–– वैद्यजी ! जहां आपने राजकुमारी के प्राण बचा दिए उसकी आंखें भी अच्छी कर दें।

वैद्यजी बोले–– महाराज, आप से अधिक मुझे इस बात की चिन्ता है। रात को सोच लूं तब कल कुछ इलाज कर सकूंगा।

बस उस रात को कुंवर फिर उसी पेड़ के नीचे आकर सोया। रात के तीसरे पहर फिर उसे पक्षियों की बातचीत सुनाई पड़ी। एक पक्षी बोला––आज तो महलों में बड़ी खुशहाली छाई है।

दूसरे ने पूछा––क्यों ? क्या राजकुमारी अच्छी हो गई ?

पहला पक्षी बोला––हां, राजकुमारी अच्छी तो हो गई है, पर आंखें जल जाने के कारण उसे दिखाई नहीं पड़ता है।

दूसरा पक्षी बोला––यह कौन बड़ी बात है। अगर कोई इस पेड़ का फूल उसकी आंखों से छुआ दे तो राजकुमारी की आंखों की रोशनी फिर लौट आएगी।

दूसरे दिन वैद्यजी ने राजा से कहा––महाराज ! राजकुमारी को आप मेरे साथ अकेले बाग में भेज दें, मैं वहां उनकी आंखों का इलाज करूंगा।

बाग के चारों ओर पहरा लगवा कर राजा ने राजकुमारी को वैद्यजी के साथ कर दिया। हाथ पकड़ कर वैद्यजी राजकुमारी को उसी पेड़ के पास ले आए और उसकी आंखों से जैसे ही फूल छुआया, राजकुमारी ने आश्चर्य से ताकते हुए कुंवर से पूछा–– तुम यहां कैसे पहुंचे ?

उसकी आंखों में जैसे ही फूल छुआया राजकुमारी ने आश्चर्य से देखते हुए कुंवर से पूछा––अरे, तुम यहां कैसे पहुंचे ?

राजकुमार ने अपनी सारी कहानी सुना दी। और अपनी गलती के लिए बहुत-बहुत माफी मांगी। राजकुमारी बोली–– अच्छा, अब जो हो गया उसे भूल जाओ। चलो अब पिताजी के पास चलें।

राजकुमारी की आंखें अब अच्छी हो गई हैं, यह जान कर राजा बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा––वैद्यजी, तुम्हें जो मांगना है मांग लो। राजा के इस प्रकार तीन बार कहने पर वैद्यजी ने कहा––महाराज, मुझे तो आप इसी राजकुमारी को देने की कृपा करें।

(शेष पृष्ठ ३० पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मछुआ और सुनहली मछली

पुश्किन

वाचक : तीन दहाई तीन बरस से सागर के ही तट के पास,
टूटी-फूटी झोंपड़िया में बूढ़ा-बुढ़िया रहते साथ ।
जाल बिछाया, मछली पकड़ी——यह था उस बूढ़े का काम,
बुढ़िया बैठी सूत कातती, चरखा चलता था अविराम ।
उस दिन जब बूढ़े बाबा ने पहले पहले फेंका जाल,
फंसी न उसमें मछली, केवल कुछ काई का था जंजाल,
बार दूसरी फिर फैलाया उसने अपना जाल विशाल
वाह भाग्य ! जब खींचा, तो था फंसा हुआ कुछ घास कबाड़ ।

वाचिका : बार तीसरी फिर फैलाया
जाल साथ एक मछली लाया,
मछली, न साधारण मछली,
मछली थी सोने की असली !

वाचक : मछली बोली मानव स्वर में, और बूढ़े से करी गुहार
मुझे छोड़ दो बूढ़े बाबा, कर दो यह मुझ पर उपकार,
इच्छा सब पूरी कर दूंगी, बदले में जो मांगो दूंगी ।

वाचिका : तीस के ऊपर तीन बरस से मछियारी था उसका पेशा
मछली मानव-भाषा बोले, कभी सुना न, कभी न देखा !
छोड़ दिया उसने मछली को, प्यार भरे शब्दों में बोला:

बूढ़ा : नहीं चाहिए मुझे घुड़ौती, सोने की मछली तुम जाओ !
तुम स्वतन्त्र सागर में विचरो, लहरों में तुम मौज मनाओ ।

वाचिका : बूढ़ा लौटा, वापस आया
और अचम्भा भरा यह किस्सा
अपनी पत्नी को बतलाया !

बूढ़ा : मैंने पकड़ी थी एक मछली
बोल रही थी मानव-स्वर में
मछली न साधारण मछली
मछली थी सोने की असली !
कहने लगी, ऐ बूढ़े बाबा !
छोड़ मुझे कर दो उपकार
बदले में जो मांगो, दूंगी
इच्छा सब पूरी कर दंगी ।
मैंने उस को मुक्त कर दिया
भला मांगता क्या मैं उससे
वापस छोड़ दिया सागर में
आज़ादी से खेले, विचरे ।

वाचक : गरम हो गई बुढ़िया माई, लगी वृद्ध को गाली देने

बुढ़िया : महामूर्ख तू ! बिलकुल अहमक ! तुझे नहीं कुछ भी तो आया
मांग ही लेता तू मछली से नाद, कि मैं कपड़े तो धोती,
बिलकुल टूट चुकी वह कब से, है तेरी किस्मत को रोती ।

वाचिका : बूढ़ा उल्टे पांव पलट कर सीधा सागर पर जा पहुंचा
देखा ज्वार चढ़ा था भारी, उफना सागर फेन उगलता
मछली रानी ! मछली रानी ! बूढ़े ने आवाज़ लगाई
मछली ऊपर आकर बोली, बाबा ! क्या आफ़त है आई ?

बूढ़ा : मेरी बुढ़िया बड़ी कर्कशा गाली देती है मनमानी
नमस्कार स्वीकार करो, और करो रहम, हे मछली रानी !
नाद वस्त्र धोने की घर पर घिस कर टूट चुकी है सारी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक नई हमको मिल जाए, विनती केवल यही हमारी।

मछली : एवमस्तु, ऐसा ही होगा, विश्वास लिए ईश्वर पर जाग्रो,
मिल जाएगी नई नाद, तुम जाग्रो, ग्रपने घर पर पाग्रो ।"

वाचक : बूढ़ा लौटा, वापस ग्राया
नई नाद के पास खड़ी बुढ़िया को पाया ।
बुढ़िया भभकी ग्रौर बक डाली खूब गालियां धुंग्राधार ।

बुढ़िया : महामूर्ख तू ! बिलकुल ग्रहमक ! भला नाद का क्या उपकार ।
जा मछली के पास तू वापस
ग्रच्छे घर की कर फ़रमाइश ।

वाचक : बूढ़ा लौटा फिर से ग्राया वहं नीले सागर के पास,
धुंधला-सा दिखता था सागर, जैसे हो ग्रनमना उदास।
मछली रानी ! मछली रानी ! बूढ़े ने ग्रावाज़ लगाई,

मछली : मछली ऊपर ग्राई बोली बाबा, फिर क्या ग्राफत ग्राई।

बूढ़ा : नमस्कार स्वीकार करो तुम, मेरी प्यारी मछली रानी ।
बुढ़िया मेरी है झगड़ालू, गाली देती है मनमानी ।
ग्रच्छा घर मांगा बुढ़िया ने, है वह बेहद ही ग्रभिमानी

वाचिका : एवमस्तु, ऐसा ही होगा, मछली बोली ग्रब तुम जाग्रो,
बढ़िया, सुन्दर बड़ा भवन तुम वापस लौटो ग्रौर पाग्रो।

वाचक : बूढ़ा जब ग्राया तो देखा कुटिया का न नाम निशान,
उसकी जगह बना था सुन्दर कमरों वाला बड़ा मकान ।
साफ़, स्वच्छ ग्रौ' पुता हुग्रा था, चिमनी जिसमें ग्रालीशान
बने बलूती लकड़ी के मजबूत द्वार की चमचम शान !
खिड़की में बैठी थी बुढ़िया, करती गाली की बौछार--

बुढ़िया : महामूर्ख तू ! बिलकुल ग्रहमक ! मांगा बस घर का उपहार !
ग्रभी दौड़ कर वापस जा तू, कर मछली को पुनः प्रणाम
नहीं चाहती बनी रहूं मैं काली, मामूली दहकान,
बनूं ज़मींदार स्त्री सी सुन्दर, हो मेरी वैसी ही शान।

वाचक : वापस लौटा बूढ़ा, पहुंचा फिर सागर लहरों के पास
लहरों में फैली बेचैनी, सागर दिखता क्षुब्ध ग्रशान्त

बूढ़ा : मछली रानी ! मछली रानी !

वाचक : बूढ़े ने ग्रावाज़ लगाई

मछली : मछली ग्राई, बोली
बाबा, ग्रौर नई क्या ग्राफ़त ग्राई

बूढ़ा : रहम ! रहम ! हे मछली रानी ! मेरी बुढ़िया है सठियाई
ज़मींदार स्त्री बनने की उसके दिल में नई समाई ।

मछली : एवमस्तु, ऐसा ही होगा, विश्वास लिए ईश्वर पर जाग्रो
ज़मींदारनी की सज्जा में जाकर निज पत्नी को पाग्रो ।

वाचिका : ग्राकर देखा खड़ा हुग्रा था गगन चमता महल विशाल
बरामदे में खड़ी हुई थी बुढ़िया, ग्रोढ़े बढ़िया शाल
ज़रीदार टोपी थी सिर पर, पड़ा गले में मोती-हार
स्वर्ण मुन्द्रियां थी हाथों में, पैरों में थे जूते लाल
खड़े हुए थे वहां बहुत से सेवक बांधे कई कतार
बाल खींचकर उन्हें पीटकर, बुढ़िया देती थी उपहार
बूढ़ा ग्रा कर झुक कर बोला--

बूढ़ा : ज़मींदारनी, तुम्हें प्रणाम !
ग्रब तो हो संतुष्ट, मिला है मुंह मांगा तुम को वरदान

वाचिका : यह कहना था बुढ़िया तड़पी ग्रौर गुस्से से झल्लाई
भेज दिया घुड़साल उसे, थी बेचारे की शामत ग्राई !
हफ्ता गुज़रा ग्रौर बीतने लगा दूसरा जैसे जैसे,
सठियाती ही गई ग्रौर भी दिन पर दिन वैसे ही वैसे।

वाचक : ग्रौर समझने लगी स्वयं को जैसे वही खुदा की बच्ची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घेर घोट बूढ़े को भेजा पुनः उसी मछली के पास
कहा कि जा और कर प्रणाम तू, कह उससे मेरी अरदास

वाचिका : मुझे बना दे वह महारानी
वाचक : बूढ़ा सहमा, थी हैरानी !
बोला——
बूढ़ा : अरी मूर्खा, तूने कहीं धतूरा खाया है ?
नहीं सलीका बोलचाल का, चलना अभी न आया है .
भला बनेगी तू महारानी ! ज़रा होश में तो आ पगली
सारा राज्य हँसेगा तुझ पर, चर्चा होगी गली-गली ।
वाचक : बुढ़िया को अब ताव कहां थी, पति के मुंह पर थप्पड़ मारा
बुढ़िया : तेरी यह हिम्मत नालायक ? ओ गंवार, मूजी, आवारा !
मुझसे करे बहस यह हिम्मत ! जा सागर के पास अभी तू
अगर न सीधा चला, समझ ले, ज़ोर जुल्म से जाएगा तू ।
वाचक : लाचारी थी, किस्मत ठोकी, सागर पर पहुंचा बेचारा
बदल रहा था रंग समन्दर, नीले से था गहरा काला ।
वाचिका : मछली रानी ! मछली रानी ! बूढ़े ने आवाज़ लगाई
मछली ऊपर आई, बोली, अब क्यों फिर से पड़ी दुहाई ?
बूढ़ा : बड़ी अभागिन मेरी पत्नी, घोर कर्कशा है सठियाई
ज़मींदार स्त्री बन कर तो उसने सब पर आफत ढाई !
कहती है अब बनूंगी रानी
अजब मुसीबत, मछली रानी !
मछली : मत उदास हो बूढ़े बाबा, विश्वास लिए ईश्वर पर जाओ,
वह बन जाएगी महारानी, जाओ मन का क्लेश मिटाओ ।
वाचक : बूढ़ा लौटा, चकित रह गया, खड़ा हुआ था महल वहां,
बड़ी मेज़ पर बुढ़िया बैठी, सभी राजसी ठाठ जहां ।
सेवा में सामन्त झुके थे, ढाल रहे मदिरा के प्याले,
बुढ़िया पीती, साथ खा रही भव्य केक वह चित्रों वाले ।
वाचिका : चारों ओर खड़े पहरे पर, दास अनेकों घोर भयंकर
कंधों पर थे परशु रखे, तेज़ धार जिनकी प्रलयंकर !
भय से कांप उठा वह बूढ़ा

शीश झुका बुढ़िया से बोला
बूढ़ा : कोटि कोटि तुमको प्रणाम है, महाभयंकर हे महारानी
सिद्ध हुई अब मनोकामना नमस्कार, है राज्य की रानी !
वाचिका : कहा हटा दो इसे यहां से, बुढ़िया ने न नज़र भी डाली
उठकर सारे राजा दौड़े, दी ठोकर और अनगिन गाली ।
वाचक : पहरेदार द्वार के लपके
लगे लगाने मुक्के-धक्के
सभी हँसे उसकी दुर्गति पर
बजा तालियां, मुंह बिचका कर
लो सनकी की खूब खबर
निकले हैं चींटी के पर !
वाचिका : हफ्ता गुज़रा और बीतने लगा दूसरा जैसे जैसे,
बौराती ही गई वह बुढ़िया, बढ़ी सनक वैसे ही वैसे ।
वाचक : आदेश दिया, बूढ़े को ढूंढ़ो हाज़िर करो हमारे पास,
मुस्तैदी से दास ढूंढ़ कर लाए उसको बुढ़िया पास ।
बुढ़िया बोली——
बुढ़िया : फिर से जा, तू कर मछली को पुनः प्रणाम
साधारण महारानी बनना तो लगता है मुझको अपमान ।
बनूंगी मैं सागर महारानी,
रहूं वहां करती मनमानी ।
हो मछली सेवा में तत्पर,
इच्छा पूरी करे निरन्तर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाचक : कर देता इन्कार भला वह, कैसे हिम्मत हो सकती थी।
विकराल भयंकर उस बुढ़िया से बेचारे की रूह
कंपती थी।

वाचिका : सागर तट की ओर चल दिया, बेचारा किस्मत का मारा,
मचल रहा था क्रोधित लहरें, तूफानी था सागर काला।

वाचक : भय से डरता कंपते स्वर में चीखा मछली रानी,
आओ !
मछली बोली, बूढ़े बाबा कैसी बीती, कथा सुनाओ !

बूढ़ा : रहम करो ऐ मछली रानी, जीना है मेरा दुश्वार
मेरी पत्नी नहीं है औरत, शैतान उस पर हुआ सवार!
कहती है अब नहीं चाहती, वह साधारण रानी होना
कहती है वह सागर की ही पटरानी मुझ को होना !
सागर में वह रहे निरन्तर,
तुम उसकी सेवा में तत्पर !

वाचिका : मौन रही मछली, फिर उसने दुम से सागर-जल
फटकारा
चली गई फुर्ती से तल में, खड़ा रहा बूढ़ा बेचारा

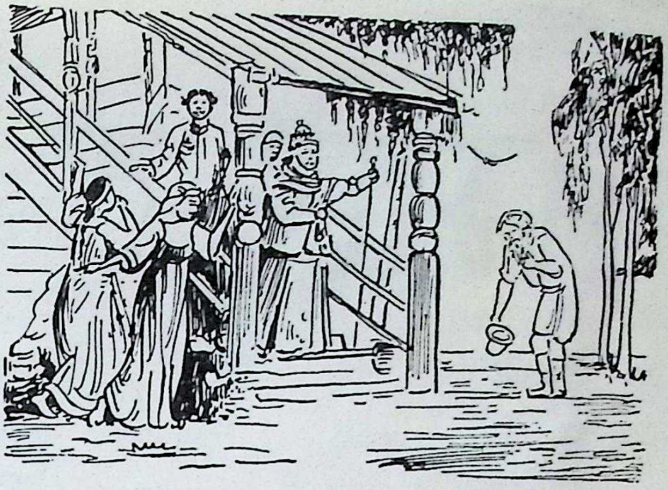

बड़ी देर तक राह तकी पर उत्तर नहीं वहां से पाया,
आखिर बूढ़ा ठहरे कब तक, वापस मुड़ बुढ़िया पर आया।

वाचक : आकर देखा चौंक पड़ा वह, वही पुरानी थी झोंपड़िया,
वही पुरानी नाद पड़ी थी, ड्योढ़ी में बैठी थी बुढ़िया !

बच्चे इस काव्य-कथा का अभिनय कर सकें इसलिए इसमें वाचक वाचिका जोड़ दिया गया है। —रुं

★

बच्चों का वर्षा गीत

मोहन अंबर

बिजली दीदी धीरे दमको
बच्चों का मन डरा-डरा
कृषकराज का मन बहलेगा
कोयल-मौसी बोल ज़रा
बरखा भाभी लौट जाएगी
कौवे तू मत गा रे !
पानी बाबा आ रे !

बादल, देखो कपड़े जैसे
लदे गगन की अर्गनी
सात रंग का इन्द्र धनुष
है किसी परी की करधनी
चिड़िया चाची धूल नहाती
अम्बर ढोल बजा रे !
पानी बाबा आ रे !

मोर उदासा नाच रहा है
धीर बंधाती मोरनी
धरती-बहिना मांग रही है
भैया नभ से ओढ़नी
नदिया मामी रूठ रही है
मामा मेघ मना रे !
पानी बाबा आ रे !

★

दो कविताएं

कपिल

सड़क

गरमी वर्षा और शीत को,
सड़क मुसकरा कर सहती।
कुटती-पिसती लेकिन फिर भी,
नहीं किसी से कुछ कहती।
चलता रहता रात और दिन,
सब का ही आना-जाना।
जीवन का आदर्श हमेशा,
औरों को सुख पहुंचाना।

दीपक

रोज रात को दीपक जल कर,
अंधियारे को हरता है।
अपने तन की लौ से घर को,
उजियारे से भरता है।
दीपक-सा उपकारी जग में,
और न कोई मिलता है।
चारों ओर उजाला करता,
पर खुद तम से घिरता है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे दस नौकर

अरुण (आयु १३ वर्ष)

नानी कहानी सुना रही थी—

श्यामू और रामू नाम के दो दोस्त थे। श्यामू एक सेठ का लड़का था पर रामू के पिताजी किसी दुकान के मुनीम थे। श्यामू मोटर में बैठ कर स्कूल आता, बढ़िया-बढ़िया कपड़े पहनता, दोपहर को एक नौकर उसका खाना लेकर आता, शाम को मोटर में एक चपरासी भी आता जो उसका बस्ता आदि उठा कर ले जाता। श्यामू की बड़ी शान थी।

एक बार श्यामू दो दिन तक स्कूल नहीं आया। रामू ने सोचा कहीं मेरा दोस्त बीमार न हो। शाम को वह स्कूल से सीधा उसके घर गया। वहां पहुंच कर रामू ने देखा श्यामू बड़ा ढीला-ढाला और सुस्त है, सुबह से अभी तक नहाया नहीं, क्या बात है ?

श्यामू—क्या बताऊं दोस्त, आज मेरा निजी नौकर चला गया। गर्मियों के दिनों में नौकरों की बड़ी किल्लत हो जाती है।

रामू ने हैरान होकर पूछा—भाई, तुम ऐसे नौकरों के भरोसे रहते ही क्यों हो ? अब जमाना बदल रहा है, तुम्हें अपनी आदतें भी बदलनी चाहिए।

श्यामू—क्या करूं अच्छे नौकर मिलते भी तो नहीं हैं।

रामू—नौकर तो हैं, पर तुम रईसजादे उनसे काम लेना नहीं जानते।

श्यामू—क्या तुम किसी ऐसे नौकर को जानते हो, जो मेरा काम संभाल ले ?

रामू—भाई हम तो अपने दसों नौकरों से बराबर काम लेते हैं और वे हमेशा बहुत वफादारी और सच्चाई से हमारी सेवा करते हैं। सच बात तो यह है कि वे हमारे इशारे पर नाचते हैं।

श्यामू रामू की बात सुन कर हैरान होकर बोला—भाई, क्या मजाक कर रहे हो, तुमने दस नौकर रखे हुए हैं ? तुम तो कहते थे कि तुम्हारे पिताजी की मासिक आय कुल सौ रुपए हैं। दस नौकर रखना तो आजकल राजा महाराजाओं के बूते का काम भी नहीं है।

रामू—अच्छा, तुम सच नहीं मानते। देखो मैं अपने दसों नौकरों के नाम गिनाता हूं। लो सुनो कौन हैं मेरे नौकर—दो हाथ, इन से मैं जो काम चाहे करवा लेता हूं। यह मुझे नहलाते हैं, मेरा कमरा साफ करते हैं, बर्तन साफ करते हैं, कपड़े धोते हैं तथा अन्य जो काम मैं कहूं सब करते हैं। दो पांव, हरदम मेरा हुक्म पालने को तैयार हैं। जहां मैं जाना चाहूं मुझे ले जाते हैं। दो आंखें, इनसे मुझे सारी चीज़ें दिखाई पड़ती हैं। दो कान, जिनके ज़रिए मुझे मधुर बातें, गीत आदि सुनाई पड़ते हैं। मेरी नाक मुझे दुर्गन्ध और सुगन्ध का ज्ञान करवाती है। मेरा मुंह मुझे भोजन चबाने में मदद करता है इससे बोलकर मैं अपना दुख-सुख का ज्ञान करा सकता हूं। देख लो भाई, मेरे ये दसों नौकर हरदम मेरी सेवा में हाजिर रहते हैं।

श्यामू—तुमने तो अपने नौकरों का अच्छा लेखा-जोखा जोड़ दिया। ये नौकर तो हमारे पास भी हैं।

रामू—हां, हैं तो सही, पर तुम ने इन्हें बेकाम बना रखा है। विशेष कर अपने हाथ पांवों को तुमने दूसरों का मुहताज बना दिया है। बिना मोटर के तुम घर से एक कदम बाहर नहीं रखते। खुद हाथ से काम करने में तुम्हें शर्म महसूस होती है। आज तुम्हारा नौकर चला गया तो तुम्हारा सब काम धरा रह गया। तुम खोये-खोये से फिर रहे हो। तुम्हारी सारी व्यवस्था ही बिगड़ गई। हमें तो तुम्हारी जैसी लाचारी कभी महसूस नहीं हुई।

श्यामू कुछ सोच कर बोला—दोस्त कहते तो तुम ठीक हो। हम दूसरों के मुहताज हो गए हैं। लो आज से कान पकड़ा जो अपना काम दूसरों से करवाएं।

रामू—शाबाश, अब देखना तुम कितने सुखी रहोगे।

अब नानी ने मुन्नू की तरफ देख कर कहा—क्यों मुन्नू तुम रामू बनोगे कि श्यामू ? मुन्नू जल्दी से अपना पलंग बिछाने में व्यस्त था। यह देखकर सब बच्चे तालियां बजाकर हंसने लग गए और दस नौकरों की जय के नारे लगाने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम और खेल साथ-साथ

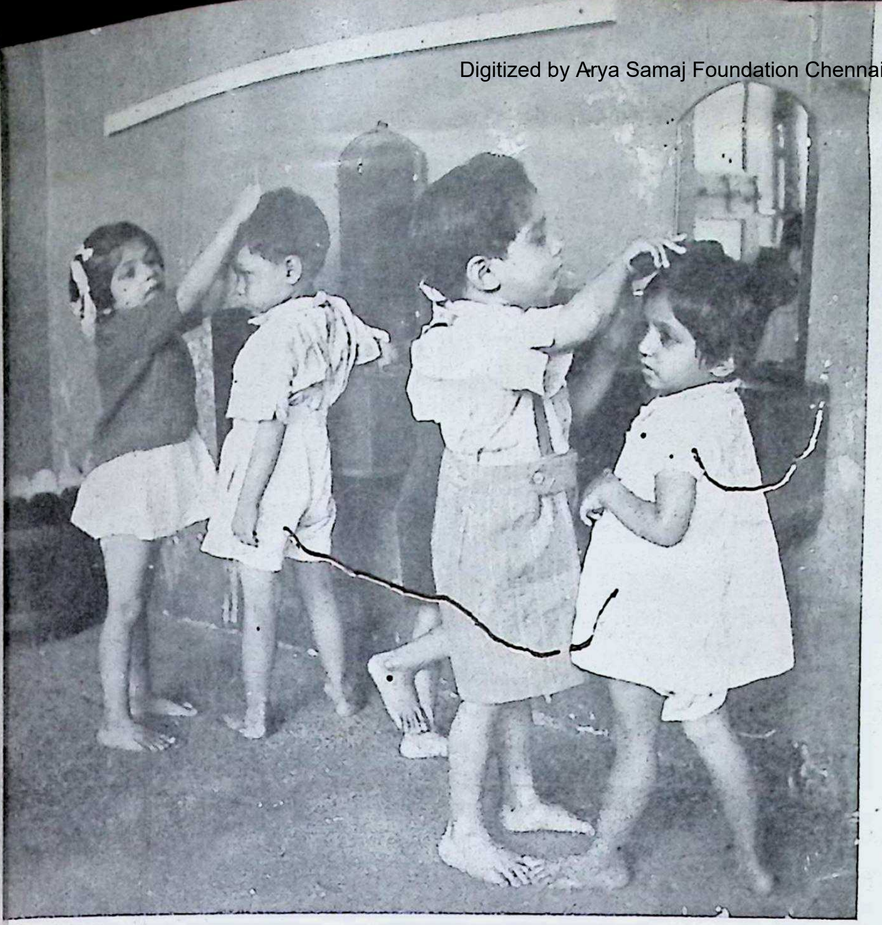

देखें, किसका झाड़ी पहले तैयार होता है

जरा, हाथ साव कर

वाह ! कैसी लम्बी तार खींची है

होनहार नन्ही गृहिणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

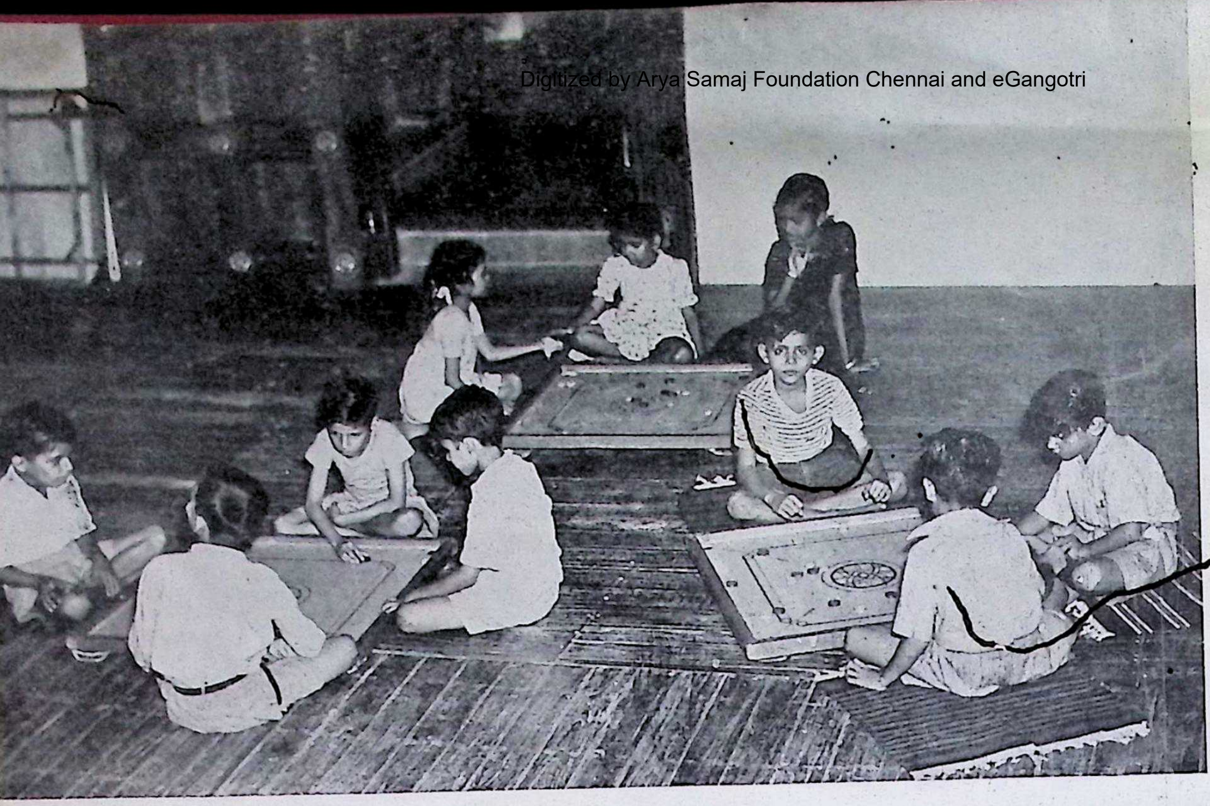

आओ, एक बाजी और लग जाए

आहा की ऊंची

बाल-शिक्षण केन्द्रों में पढ़ाई भी खे के

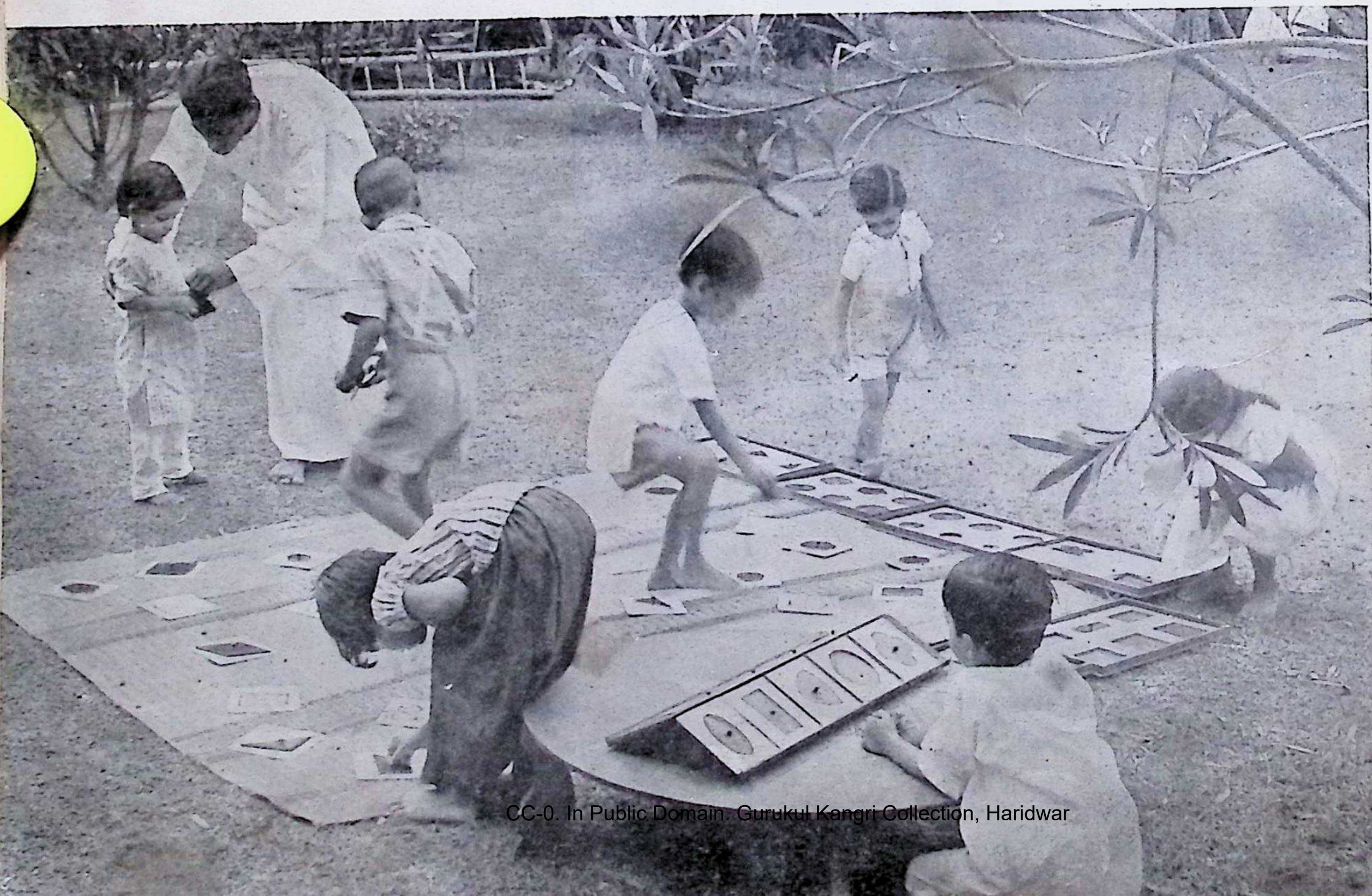

मुन्ने, सही
में चित्र ल

लकड़ी
तथा
त हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

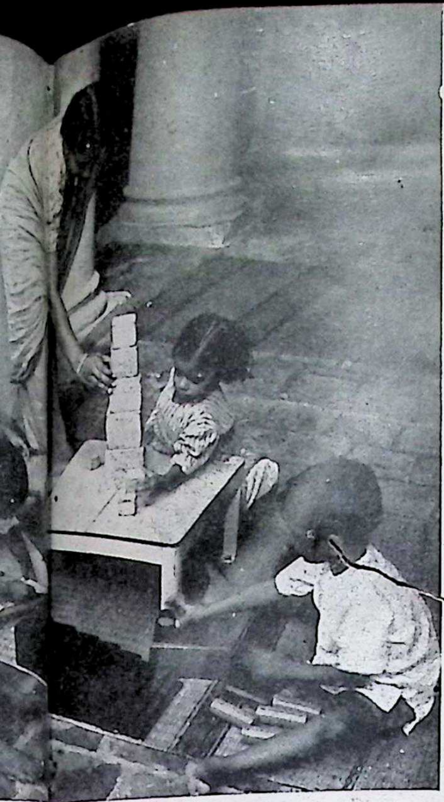

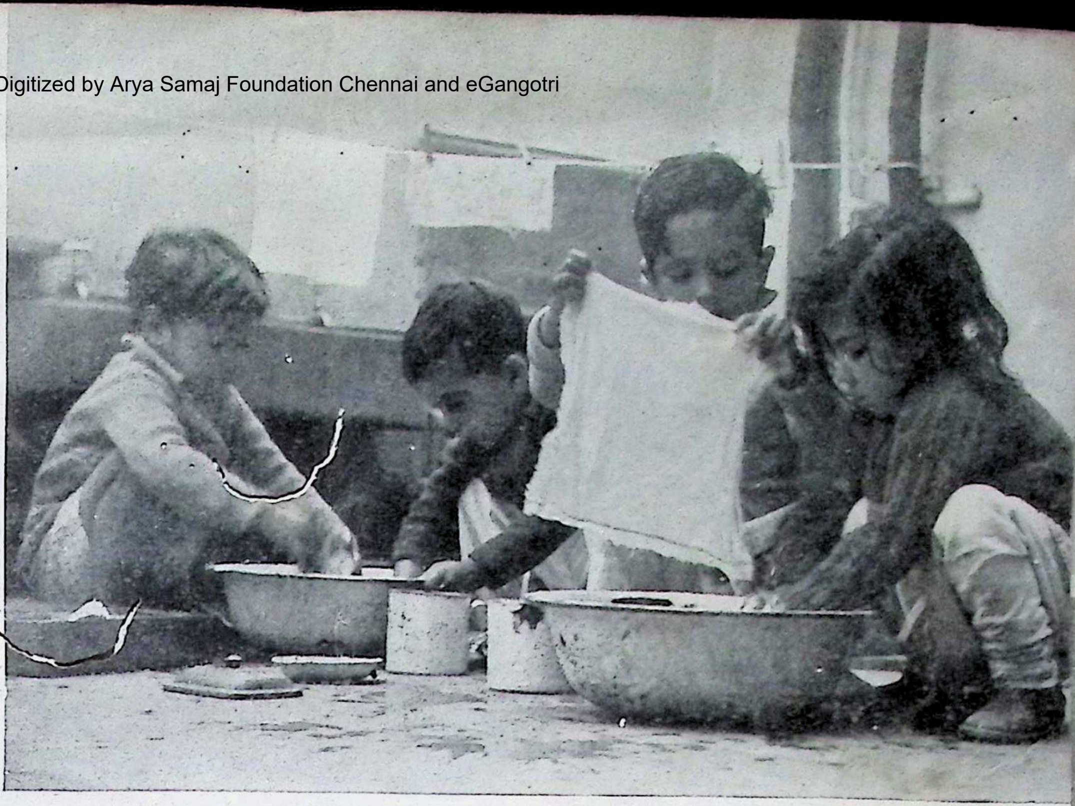

श्राहा की ऊंची मीनार

देखा, कितना साफ रूमाल धोया है !

खे के सदृश ही रोचक बनाई जाती है

सही
त्र ल

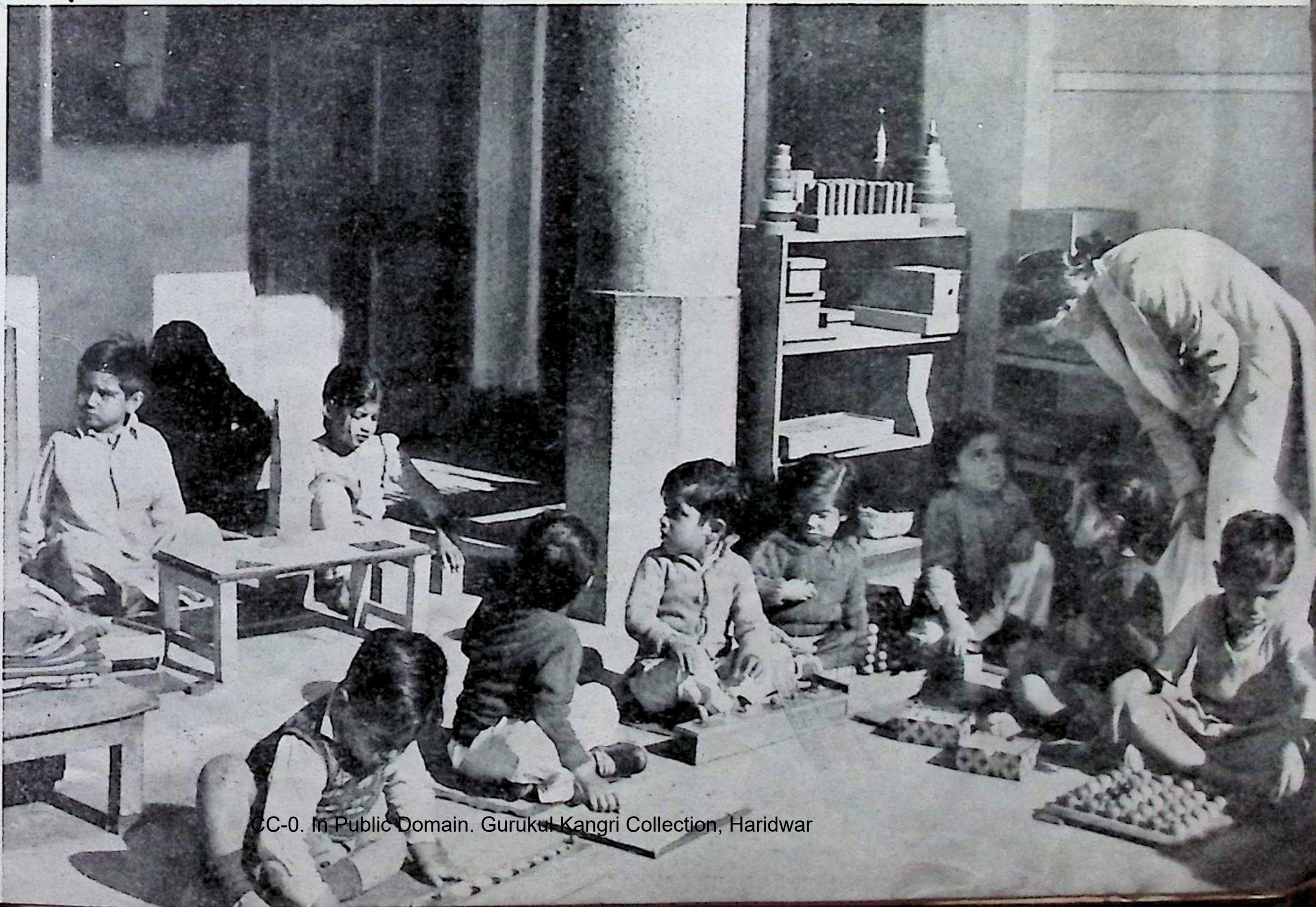

लकड़ी के गुटकों से
र तथा श्राकृतियों से
त हो रहे हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ने में मशगूल

भैया, मैं तैयार हूं

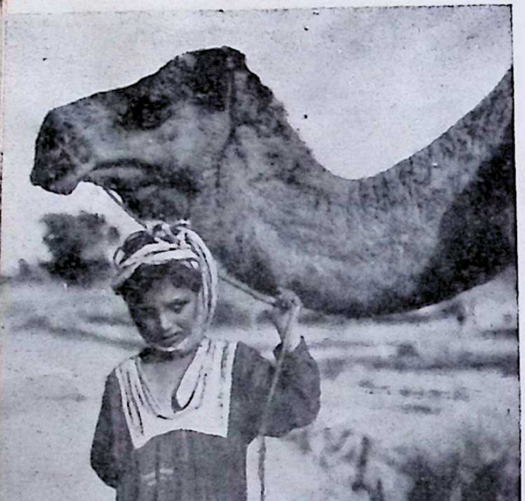

दूर है मंजिल मेरी

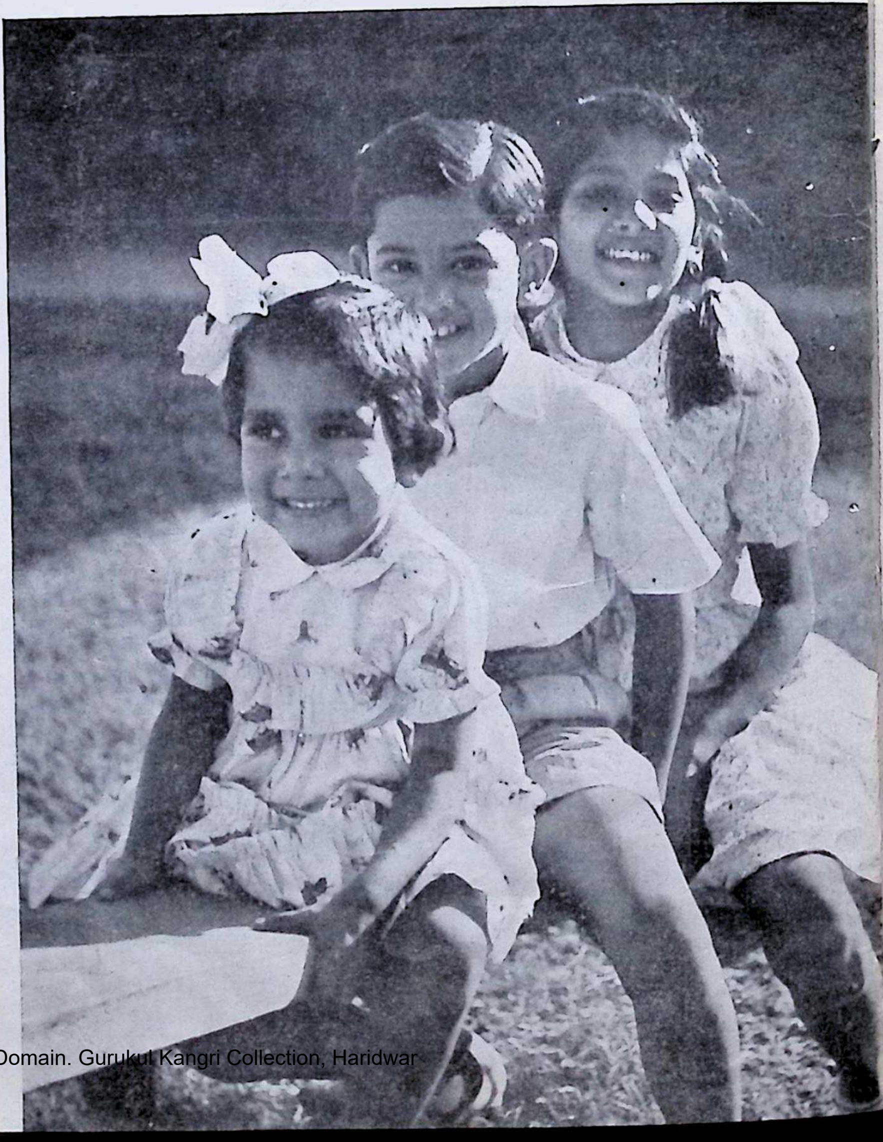

हम तीनों जने !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संथाली लोककथा

बुद्धि बड़ी या रुपया

जितेन्द्र गुप्त

एक राजा था और उसकी राजधानी में एक धनी व्यापारी रहता था। दोनों के एक-एक पुत्र था। दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते थे और उनमें गहरी दोस्ती थी। एक दिन दोनों मित्रों में इस बात पर बहस होने लगी कि धन की शक्ति अधिक है कि बुद्धि की। राजकुमार का कहना था कि धन सब कुछ है और धन की बदौलत सभी कुछ प्राप्त किया जा सकता है। व्यापारी का पुत्र कहता था कि बुद्धि सबसे बड़ी है।

दोनों अपनी-अपनी बात पर अड़ गए। अन्त में व्यापारी के लड़के ने कहा—इस तरह बहस करने से कोई फायदा नहीं, आजमा कर देखा जाए कि किस की बात सही उतरती है। न हो तो हम दोनों कहीं परदेश चलें और वहां एक वर्ष तक रह कर देखें कि रुपया और बुद्धि दोनों में से किसकी ताकत अधिक है। राजकुमार इस बात से राजी हो गया और यात्रा का दिन तय कर लिया गया।

दोनों जने घर गए और निश्चित तारीख को कुछ रुपए साथ लेकर निकल पड़े। एक नगर उन्हें पसन्द आया और वे वहीं ठहर गए। राजकुमार को यह अच्छा नहीं लगा कि वह किसी के यहां नौकरी करे। उसने सोचा कि मेरे पास जो रुपया है वह साल दो साल के लिए काफी है। वणिक पुत्र ने कहा—जो मर्जी आए करो, लेकिन मैं तो कोई न कोई काम जरूर करूंगा।

यह कह कर वह पास के एक गांव में गया और एक स्कूल में अध्यापक हो गया। विद्यार्थी और गांव वाले उसे दोनों समय का भोजन दे देते और उन्होंने तनख्वाह के रूप में उसके लिए कुछ रुपया महीना बांध दिया।

उधर राजकुमार ने एक मकान किराए पर ले लिया। थोड़े ही समय में उसके कई दोस्त हो गए, क्योंकि उसके पास पैसा था। जिन्दगी मज़े में कटने लगी। यार-दोस्तों ने खूब गुलछर्रे उड़ाए। पैसा पानी की तरह बहाया। जब पैसा खत्म हो गया तो यार-दोस्त भी खिसक गए। राजकुमार बहुत दुखी हुआ। अब न धन रह गया था, न दोस्त ही। राजकुमार वणिक पुत्र के पास गया और उससे लौट चलने या कुछ काम दिलाने का अनुरोध किया। मित्र ने उसे काम ढूंढ़ देने का वायदा किया।

दूसरे ही दिन उसे एक ऐसे किसान का पता चला जो एक नौकर की तलाश में था। बैल चराने और हौज़ में रोज़ एक बार पानी भरने का काम था। राजकुमार को काम आसान लगा और उसने उसके यहां काम करना मंजूर कर लिया।

किसान ने नौकरी की दो शर्तें रखीं—अगर राजकुमार ने खुद नौकरी छोड़ी तो उसकी छिगुनी (हाथ की छोटी उंगली) काट ली जाएगी, अगर किसान ने उसे निकाला तो वह अपनी छिगुनी कटवा देगा। दूसरी शर्त यह थी कि अगर राजकुमार बैल को चराने और हौज़ भरने का काम ठीक से करता रहेगा तो उसे केले के पत्ते पर भोजन मिला करेगा, लेकिन यदि काम ठीक से न हुआ तो इमली के पत्ते पर भोजन मिलेगा। राजकुमार ने ये शर्तें स्वीकार कर लीं, क्योंकि उसका ख्याल था कि दोनों कामों में ३-४ घण्टे से अधिक समय नहीं लगा करेगा। पहले दिन सबेरे वह बैल को चराने ले गया। बैल चरता तो कम था पर दूसरे ढोरों के साथ इधर-उधर भागता फिरता था। उसके पीछे भागना खासी मुसीबत थी। राजकुमार थक कर तीसरे पहर बैल को घर हांक लाया और उसे खूंटे से बांध दिया।

इस के बाद राजकुमार को हौज़ में पानी भरना था। उसने पानी भरना शुरू किया, लेकिन उसमें पानी रुकता ही न था। बात यह थी कि हौज़ की तली में एक गुप्त छेद था और सारा पानी उसी में से निकल कर किसान के खेतों में बह जाता था। राजकुमार की समझ में न आया कि वह आखिर क्या करे। दो घण्टे तक बराबर कुएं से पानी खींचता रहा। लेकिन हौज़ न भरा। नतीजा यह हुआ कि उसे रात में इमली के पत्ते पर खाना मिला। यही किस्सा रोज़ होता। बेचारा राजकुमार भूखों मरने लगा। खुद नौकरी छोड़ता कैसे, छिगुनी कटवानी पड़ती।

वणिक पुत्र राजकुमार को भूला न था। एक दिन वह राजकुमार से मिलने आया। उसे यह देख कर बड़ा दुख हुआ कि उसका दोस्त दुबला हो गया है। जब उसे सारा किस्सा मालूम हुआ तो उसने राजकुमार से कहा—अच्छा, तुम कुछ दिन मेरी जगह पर काम करो और मैं तुम्हारी जगह पर। तुम देखना, किसान को उसकी चालाकी का कैसा मजा चखाता हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसान को इस पर कोई एतराज न हुआ । उसे अपना काम कराना था, चाहे जो कोई करे । अगले दिन सबेरे वणिक पुत्र बैल को चराने जंगल में ले गया और उसने बैल को एक लम्बी रस्सी से बांध दिया । दोपहर को वह उसे घर वापस ले आया और हौज़ में पानी भरने लगा । उसने तुरन्त महसूस किया कि पानी कहीं से बह जाता है । उसने छेद का पता लगा कर गीली मिट्टी से उसे बन्द कर दिया । उसके बाद उसने हौज़ को बड़ी आसानी से भर दिया । तीसरे पहर वह बैल को फिर चराने ले गया । शाम को लौट कर उसने इतमीनान से केले के पत्ते पर डट कर भोजन किया ।

कुछ दिन बाद किसान ने वणिक पुत्र से कहा—धान की फसल पक गई है, जाओ काट लाओ ।

उसने पूछा—मैं खेत कैसे काटूंगा ?

किसान ने जवाब दिया—हंसिया से ।

वणिक पुत्र ने फिर कहा—तब तो मैं नहीं, बल्कि हंसिया खेत काटेगा ।

किसान ने कहा—ऐसा ही सही, तुम हंसिया ले कर जाओ तो, वही खेत काट देगा । वह हंसिया लेकर खेत पर गया । वहां उसने हंसिया को छू कर देखा । धूप में रहने के कारण हंसिया गरम हो गया था । वणिक पुत्र बोला—मैं इस हंसिये को धान नहीं काटने दूंगा, क्योंकि इसे बड़ा तेज़ बुखार मालूम होता है । जब तक अच्छा न हो जाए, इसे आराम करना चाहिए । यह कह कर हंसिये को छांह में रख कर इधर-उधर घूमने लगा ।

इतने में किसान वहां आया और काम न होता देख कर गुस्से से बोला—क्या मैंने तुम्हें इधर-उधर घूमने के लिए भेजा था, या खेत काटने के लिए ?

हंसिया बीमार पड़ गया उसे बुखार चढ़ा है । वह देखिए छांह में आराम कर रहा है—वणिक पुत्र ने उत्तर दिया ।

तुम बेवकूफ हो, खेत का काम तुम से नहीं हो सकता । घर जाओ और बड़े घर में आग जला कर पानी गरम कर रखो, मैं थोड़ी देर में आता हूं—किसान ने कहा ।

वणिक पुत्र इसी ताक में था कि किसान किसी तरह तंग आ जाए । किसान ने उससे जो कुछ कहा, उसका कुछ निश्चित अर्थ नहीं था, इसलिए उसने घर जाकर सबसे बड़े घर में आग लगा दी । किसान ने जब आग की लपटें और धुआँ उठता देखा तो दौड़ा-दौड़ा आया और वणिक पुत्र से पूछा—यह आग कैसे लगी ?

उत्तर मिला—जैसा आपने बताया ठीक वैसा ही मैंने किया, भला मैं आप का हुक्म टालने की जुर्रत कैसे कर सकता हूं ?

किसान क्या कहता, उसकी बात का दूसरा अर्थ लगा लिया गया था । वह सर धुन कर रह गया । अगर नौकर को निकालता तो अपनी उंगली कटवानी पड़ती । इसलिए उसने नौकर से छुटकारा पाने की एक तरकीब सोची । दूसरे दिन सबेरे उसने नौकर से कहा—यह चिट्ठी बहुत जरूरी है । इसे तुम मेरी ससुराल पहुंचा आओ । इसमें मकान जल जाने की खबर है ।

वणिक पुत्र राजी हो गया और चिट्ठी ले कर चल पड़ा । रास्ते में उसने उत्सुकतावश पत्र खोल कर पढ़ा । उसमें लिखा था कि पत्रवाहक को तुरन्त मार डाला जाए, क्योंकि यह बहुत दुष्ट है । वणिक पुत्र ने वह पत्र फाड़ कर फेंक दिया और किसान की तरफ से एक दूसरा पत्र लिखा । उसमें उसने लिखा—पत्रवाहक ने हमारे यहां रह कर बहुत अच्छा काम किया है । मैं चाहता तो यह था कि अपने परिवार में ही इसका विवाह करके इसे यहीं रख लूं । लेकिन चूंकि मेरे कोई ऐसी लड़की नहीं है, इसलिए मैं आपके पास भेज रहा हूं । आशा है कि आप अपनी पुत्री से इसका विवाह कर देंगे ।

किसान की ससुराल में पहुंच कर उसने यह पत्र दे दिया । ससुर महोदय को पत्र पढ़ कर आश्चर्य हुआ । उसने वणिक पुत्र से पूछा कि पत्र में क्या लिखा है ? वणिक पुत्र ने अपनी अज्ञानता जाहिर की और कहा—न तो मालिक ने मुझे कुछ बताया और न मैं पढ़ा-लिखा ही हूं ।

इस जवाब से उन लोगों का सन्देह दूर हो गया और उसी दिन विवाह की रस्म पूरी कर दी गई । वणिक पुत्र अपनी ससुराल में ही रहने लगा ।

कुछ दिन बाद जब किसान को इन बातों का पता लगा तो वह बहुत घबड़ाया । उसने सोचा कि उस नौकर से पार पाना मुश्किल है, कहीं मुझे अपनी उंगली न कटवानी पड़े । इसलिए वह घर-द्वार छोड़ कर वहां से भाग गया ।

जब वणिक पुत्र को किसान के भागने की खबर मिली तो वह राजकुमार से मिलने गया और उससे पूछा—अब बताओ कौन बड़ा है, बुद्धि या रुपैया ? देखो मैंने अपनी चालाकी से किसान को बुद्धू बनाया । वह मुझे इतना खाना देता था जितना मैं खा भी नहीं सकता था । मैं ने उसका बैल मार डाला, मकान जला दिया और बिना एक पाई खर्च किए विवाह भी कर लिया । दूसरी तरफ अपने को देखो । तुमने सारा धन उड़ा दिया, मुसीबतें आईं, भूखा रहना पड़ा । बताओ, धन से तुम्हें क्या लाभ हुआ ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

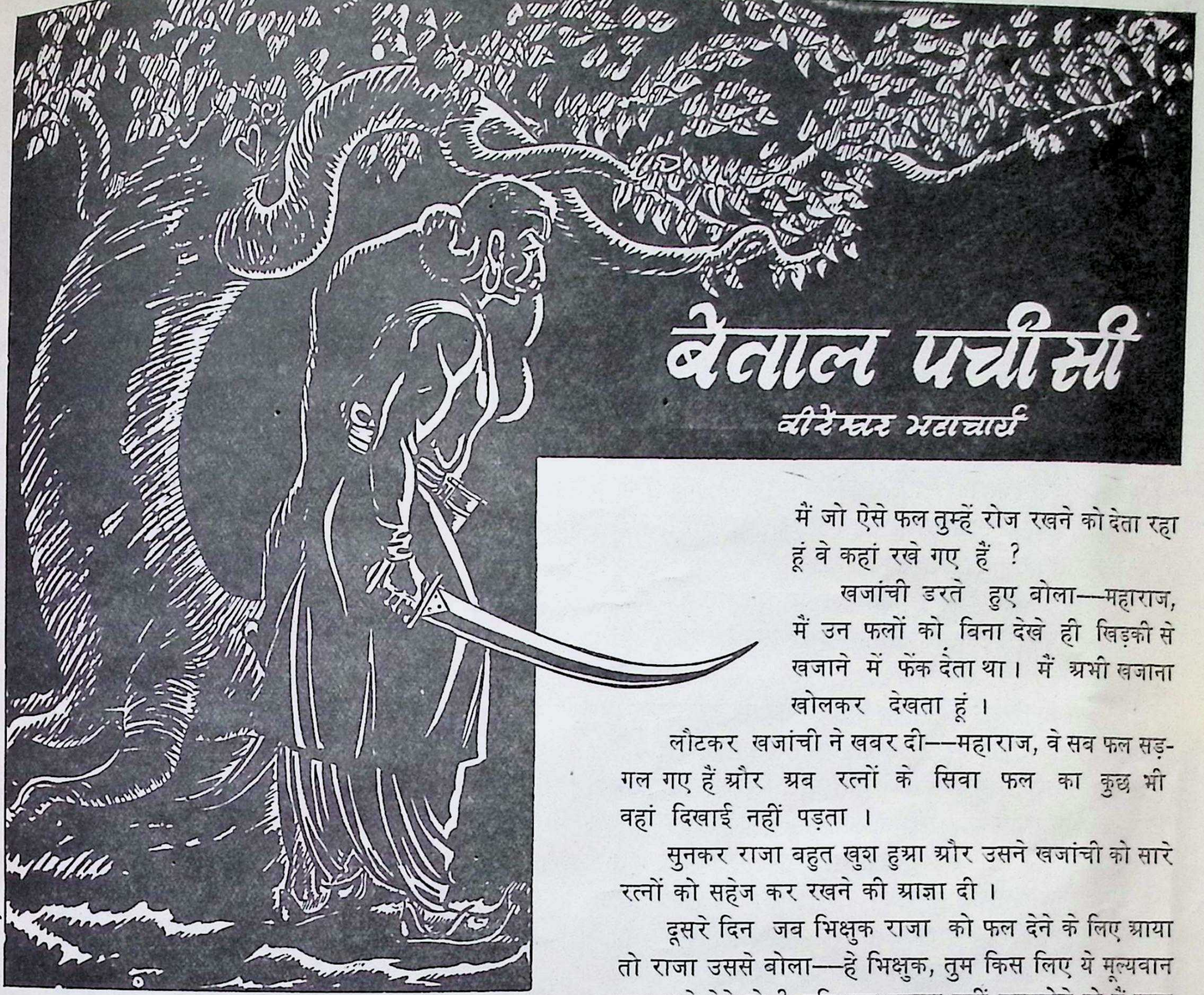

बैताल पचीसी

वीरेश्वर भट्टाचार्य

प्राचीन काल में गोदा नदी के किनारे प्रतिष्ठान नाम का एक नगर था। वहां त्रिविक्रमसेन नाम का एक प्रसिद्ध राजा राज्य करता था। उसे शान्तिशील नाम का एक भिक्षुक प्रतिदिन एक फल लाकर भेंट करता था। राजा वह फल लेकर अपने खजांची को सहेज देता था।

इस प्रकार रोजाना फल देते-देते दस साल बीत गए। एक दिन अचानक राजा के हाथ से फल गिर पड़ा। उस दिन राजा का एक पालतू बन्दर किसी तरह अपने पिंजड़े से छूट कर सभामंडप में पहुंच गया। उसने फल को झट उठा लिया और उसकी दो फांक कर दीं। उसमें से एक कीमती रत्न निकला। राजा ने वह रत्न ले लिया और खजांची से पूछा—में जो ऐसे फल तुम्हें रोज रखने को देता रहा हूं वे कहां रखे गए हैं?

खजांची डरते हुए बोला—महाराज, मैं उन फलों को बिना देखे ही खिड़की से खजाने में फेंक देता था। मैं अभी खजाना खोलकर देखता हूं।

लौटकर खजांची ने खबर दी—महाराज, वे सब फल सड़-गल गए हैं और अब रत्नों के सिवा फल का कुछ भी वहां दिखाई नहीं पड़ता।

सुनकर राजा बहुत खुश हुआ और उसने खजांची को सारे रत्नों को सहेज कर रखने की आज्ञा दी।

दूसरे दिन जब भिक्षुक राजा को फल देने के लिए आया तो राजा उससे बोला—हे भिक्षुक, तुम किस लिए ये मूल्यवान रत्न मुझे देते हो? यदि तुम कारण नहीं बताओगे तो मैं आज से तुम्हारा फल स्वीकार नहीं करूंगा।

यह सुनकर भिक्षुक राजा को एकान्त में ले जाकर बोला—महाराज, आप जैसे वीरों की सहायता से मेरा एक कार्य सिद्ध होने वाला है, इसीलिए मैं आपकी प्रसन्नता के लिए रोज़ यह भेंट देता हूं, जिससे आप सन्तुष्ट हो कर मेरी सहायता करें।

भिक्षुक की बात सुनकर राजा ने उसकी सहायता करने का वचन दिया। भिक्षुक खुश होकर बोला—महाराज, आप आने वाले अंधेरे पाख की चतुर्दशी की रात को, महाश्मशान में बरगद के पेड़ के नीचे पहुंच जाएं। वहीं मैं आपको काम बताऊंगा।

राजा ने वहां पहुंचने का वचन दे कर उसे विदा किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंधेरे पाख की चतुर्दशी के दिन अपने वायदे को याद करके राजा ने नीले रंग के वस्त्र पहने। हाथ में खड्ग लिया और शाम को चुपचाप महल से निकल कर श्मशान में बरगद के नीचे पहुंच गया। भिक्षुक वहां पहले से ही बैठा था। राजा ने कहा—— भिक्षुक, अपना काम बताओ, मैं आ गया हूं।

राजा को देख कर भिक्षुक बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने कहा—— महाराज, अगर आप मुझ पर उपकार करना चाहते हैं, तो अकेले ही इधर से दक्षिण की ओर जाएं। वहां एक शीशम का पेड़ है। उस पेड़ पर एक मुर्दा लटका हुआ है। उसे मेरे पास ले आएं।

यह सुनकर सत्यवादी राजा दक्षिण दिशा को चल पड़ा। कुछ दूर जाने पर उसे वह शीशम का पेड़ दिखाई पड़ा। पेड़ की डाल में भूत की तरह एक मुर्दा लटका हुआ था। राजा ने पेड़ पर चढ़ कर मुर्दे को धरती पर गिरा दिया। धरती पर गिरते ही अचानक मुर्दा चिल्ला उठा। उसकी आवाज़ सुनकर राजा बड़े सन्देह में पड़ा। उसने सोचा कहीं यह जीवित न हो इस लिए उसके शरीर पर हाथ फेरने लगा।

राजा ने सोचा कि किसी वैताल ने इस मुर्दे पर अधिकार कर लिया है। यह सोचकर वह बोला——इस तरह हँसते क्यों हो? चलो, चलें।

इतना सुनते ही मुर्दा फिर उछल कर पेड़ पर लटक गया। राजा ने फिर पेड़ पर चढ़ कर मुर्दे को नीचे उतारा और उसे कन्धे पर उठाकर चलने लगा। मुर्दा बोला——महाराज, राह चलते-चलते मैं एक कथा कहता हूं, सुनो——

कालिन्दी के किनारे ब्रह्मस्थल नाम का एक नगर है। वहां पर एक विद्वान ब्राह्मण रहता था, जिसका नाम अग्निस्वामी था। उसकी एक सुन्दरी गुणवती कन्या थी, जिसका नाम था मन्दारवती। जब वह विवाह योग्य हुई तो एक दिन अग्निस्वामी के घर तीन गुणवान ब्राह्मणकुमार आए। उन तीनों के मन में मन्दारवती से विवाह करने की इच्छा हुई। अग्निस्वामी भी उन तीनों में से ही किसी एक से मन्दारवती का विवाह करना चाहता था। पर एक के साथ विवाह करने पर अन्य दो साथी आत्महत्या कर लेंगे, इसी डर से अग्निस्वामी चुप रहा। तीनों ब्राह्मण-कुमार दिन रात वहीं आस लगाए पड़े रहते।

अचानक वह लड़की बीमार पड़ी और कुछ दिन बाद मर गई। तीनों ब्राह्मणकुमारों ने श्मशान में ले जाकर उसका दाह संस्कार किया। उन तीनों में से एक ब्राह्मणकुमार चिता की राख पर ही आसन जमा कर रहने लगा और भिक्षा मांग कर पेट भरने लगा। दूसरा मन्दारवती की हड्डियां चुन कर गंगाजी में डालने के लिए चल पड़ा। तीसरा सन्यासी होकर देश-देश में भ्रमण करने लगा। यह सन्यासी घूमते-घामते एक गांव में किसी ब्राह्मण के घर ठहरा। उस ब्राह्मण ने सन्यासी का खूब आदर-सत्कार किया और जब उनके सामने भोजन परोसा गया, उसी समय उस गृहस्थ का लड़का खूब रोने लगा। वह किसी तरह भी चुप नहीं होता था। लड़के की मां ने क्रोध में आकर उसे पकड़ कर जलती हुई आग में झोंक दिया। नन्हा बच्चा तो था ही, आग में जलकर राख हो गया। यह कठोर दृश्य देख कर सन्यासी बोला—— अरे! यह घर ब्राह्मण का है या राक्षस का। मैं तो यहां भोजन नहीं करूंगा।

वह जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। उसे जाते देख ब्राह्मण बोला——सन्यासी महाराज, आप मेरी संजीवनी विद्या का प्रभाव तो देखिए।

यह कह कर पोथी से संजीवनी मन्त्र का जाप कर के उसने थोड़ा-सा जल राख पर छिड़क दिया। लड़का तुरन्त ही जिन्दा हो कर उठ खड़ा हुआ। सन्यासी ने वहां आराम से भोजन किया। ब्राह्मण ने भी मन्त्रों की पोथी पिटारी में रख कर भोजन किया और अतिथि के सोने का इन्तजाम कर दिया।

जब सब सो गए तो सन्यासी पिटारी से पोथी निकाल कर

मन्दारवती जीवित हो गई। उसे जीवित देखकर वे तीनों आपस में फिर लड़ने लगे। सन्यासी बोला——मेरे मन्त्र के प्रभाव से ही यह जीवित हुई है, इसलिए यह मेरी स्त्री है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहां से भाग निकला । वह इसी मन्त्र बल से मन्दारवती को फिर जीवित करना चाहता था । वह मन्दारवती के गांव लौट पड़ा । उसने मार्ग में दूसरे साथी को भी देखा जो गंगा में मन्दारवती की हड्डियां फेंकने गया था । वे दोनों राख पर सोने वाले, तीसरे साथी के पास गए । सन्यासी बोला—मित्र, अब इसे छोड़ो । मैं मन्त्रशक्ति से अपनी प्रेमिका मन्दारवती को जीवित कर दूंगा ।

उसने पोथी से मन्त्र देख कर जाप किया और थोड़ा-सा जल लेकर राख पर छिड़क दिया । मन्दारवती जीवित हो गई । उसे जीवित देखकर वे तीनों आपस में फिर लड़ने लगे । सन्यासी बोला—मेरे मन्त्र के प्रभाव से ही यह जीवित हुई है, इसलिए यह मेरी स्त्री है ।

दूसरे ने कहा—मेरे तीर्थ यात्रा के प्रभाव से ही मन्दारवती जीवित हुई, इसलिए यह मेरी पत्नी है ।

तीसरा बोला कि मैं इस चिता की राख पर बैठ कर तपस्या करता रहा, तभी यह जीवित हुई, इसलिए यह मेरी पत्नी है ।

मुर्दे ने राजा से कहा—हे राजन्, मैं तुम्हीं को इसका विचारक मानता हूं । बताओ, मन्दारवती किसकी पत्नी होनी चाहिए ? अगर तुम ठीक-ठीक उत्तर नहीं दोगे तो मैं तुम्हारा सिर तोड़ दूंगा ।

यह सुनकर राजा बोला—सन्यासी ने बहुत कष्ट सह कर अपने मन्त्र बल से मन्दारवती को जीवित किया, इसलिए वह पिता हुआ । दूसरे ने उसके उद्धार के लिए तीर्थयात्रा की, इसलिए वह पुत्र हुआ । किन्तु तीसरा उसके प्रेम में व्याकुल, उसकी राख पर बैठ कर तपस्या करता रहा, इसलिए वही मन्दारवती का पति हुआ ।

बात खतम होते ही वह शव राजा त्रिविक्रमसेन के कन्धे से उछल कर फिर शीशम की डाल से लटक गया ।

★

एक दिन की बात

मेरी नन्हीं बहन पूर्णिमा अभी ६ वर्ष की ही थी । एक दिन उसकी भौंह पर एक फुंसी निकल आई, जिसके कारण वह शाम को बालकन की बारी क्लब में खेलने नहीं जा सकी । दो-तीन दिन के बाद जब वह खेलने गई तो भाई साहब (इंचार्ज) ने पूछा—क्यों पूनम, तुम इतने दिन गैरहाजिर क्यों रही ? पूनम अपनी आंख की भौंह की ओर संकेत करके बोली—भाई साहब, मेरी आंख की मूंछ पर फुंसी हो गई थी । भाई साहब ने हैरानी से पूछा—आंख की मूंछ ? और फिर एकदम से पूर्णिमा का अभिप्राय समझ कर जोर से खिलखिला कर हँस पड़े । सब बच्चे भी हँसने लगे । पूर्णिमा कुछ लजा सी गई । भाई साहब ने पूर्णिमा का संकोच मिटाते हुए कहा—भई, पूनम अभी शब्द ज्ञान बढ़ा रही है, उसे भौं शब्द याद नहीं था तो उसने आंखों की दोनों ओर मूंछों की तरह फैली हुई भौंहों को आंख की मूंछ की संज्ञा दे दी । देखो, बच्चो, इसी प्रकार से भाषा का विकास हुआ है । ध्वनि, और आकार की सादृश्यता (मिलते-जुलते रूप) के आधार पर नए-नए शब्दों की रचना हुई है ।

मुन्नी रानी, दिल्ली

एक दिन बचपन की घटनाओं का जिक्र चला । माताजी बोलीं—जब रानी (बड़ी बहन) तीन-चार वर्ष की थी, तब उसने वर्णमाला बड़े अनूठे ढंग से सीखी थी । वह हर एक शब्द का पहला अक्षर लेकर दोहराती थी । यथा उसकी आया का नाम था कमला । तो वह कहती क से कमला, द से दही, घ से घोड़ा, च से चम्मच । इस तरह जो भी शब्द वह कहती, उसका पहला अक्षर झट पकड़ती । छोटी बहन के बारे में उन्होंने बताया कि एक बार वह छुटपन में बहुत बीमार हो गई थी । हालत बिगड़ती गई । अंतिम समय जानकर डाक्टर ने एक इंजेक्शन और दे दिया, बस उसी से वह चेत गई । फिर माता जी ने यह भी बताया कि १९४७ में पाकिस्तान से भागते समय बच्चों को कैसी-कैसी मुसीबतों का सामना करना पड़ा था ।

मां की बातें सुनकर छोटा मुन्ना रमेश यह महसूस कर रहा था कि यहां सबकी चर्चा हो रही है पर मेरे जीवन की घटना के विषय में कुछ भी उल्लेख नहीं किया गया । कुछ सोच कर वह बोला—बड़ा अच्छा हुआ कि मैं इन बीमारियों-मुसीबतों के बाद पैदा हुआ । मैं भाग्यशाली जो ठहरा ।

छवि, ग्वालियर

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गतांक से आगे——

(२)

——बादल ने कहा कूँ ऊं ऊं ऊ

एकाएक मेघना की बांछें खिल गई। वह चौंक कर इधर-उधर ताकने लगी। अनन्नासों की उत्तर की झाड़ियों में से नयनचन्द प्रकट हो गया। बोला——हार गई न ! छिः छिः

नयनचन्द ने हाथ फैलाकर और आंखें अधखुली करके मेघना को जीभ निकाल कर मुंह चिढ़ाया।

——अरे यह क्या ? तेरे तो हाथ पैर भी छिल गए हैं ! अनन्नास के पत्तों से ही ऐसा हुआ न ?

मेघना ने सिर हिला कर कहा——हां।

दिन ढल रहा था। नयनचन्द ने मेघना को लाल मछली और नीली मछली की कहानी सुनानी शुरू कर दी। मेघना मुंह बनाकर कहानी सुनती रही और नयनचन्द के चेहरे की तरफ अवाक् होकर ताकती रही। नयनचन्द कितना अच्छा है, वह कितनी अच्छी कहानी जानता है।

मुकुन्द-परिवार के बाग के पूरव में पीपलों की एक कतार है वहां शिवजी का एक बहुत पुराना मंदिर था।

बच्चे, बच्चे ही ठहरे। एक दिन उनके दिमाग में यह ख्याल आया कि वे बूढ़े शिवजी के मन्दिर के इर्द-गिर्द खेलेंगे और पीपल की जटाओं तथा कालकासुन्दा की झाड़ियों में लुकाछिपी खेलेंगे। उधर के मुहल्ले का सुबल उम्र में सबसे बड़ा था, कोई ग्यारह साल का होगा। उसी के दिमाग में यह ख्याल आया था कि आज का खेल वहीं पर होगा। कालिन्दी को साथ ही यह झक सवार हुई कि वहीं पर खाना बनाएंगे और खाएगें। मेघना भी पीछे क्यों रहती, उसने तय किया कि इसके साथ ही साथ राधा-कृष्ण की पूजा भी हो। दोपहर के पहले ही लड़कों ने अपना-अपना गिरोह बना लिया और वहां पहुंचे। सब काम ठीक चलता रहा, पर मेघना ने एक मुसीबत खड़ी कर दी। लोगों ने उससे कहा तू राधिका बन, पर उसने कहा——मैं राधिका तभी बनूंगी, जबकि नयनचन्द कृष्ण बने।

मेघना ने अन्तिम रूप से फैसला सुना दिया कि अगर मुकुन्द कृष्ण बनेगा तो वह राधिका हरगिज़ नहीं बनेगी और अकेली घर लौट जाएगी और ताऊजी से कह देगी कि नयनचन्द शिवजी के मन्दिर में वनभोजन करने गया है। मेघना ने इन बातों को इतने ताव से कहा जैसे अभी-अभी वह रो पड़ेगी।

सुवल ने सब कुछ इन्तजाम किया था। टूटी हुई ईंटों के चूल्हे पर खाना पकने लगा था। यशोदा छुरी से तरकारियां छील रही थी। कालिन्दी मेघना को राधिका बनने के लिए समझा रही थी।

——अब मुकुन्द कभी तुझ पर हाथ नहीं उठाएगा। जो अबकी उसने मारा तो हम सब लोग उससे कुट्टी कर लेंगे।

पर मेघना गुम सुम बनी रही। कालिन्दी उसे हाथ पकड़ कर घसीटने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतने में एकाएक नयनचन्द और नीलकण्ठ वहां पहुंच गए। दोनों गांगुलियों के पोखर से बहुत से सापला के फूल ले आए थे। वे सापला फूलों से कृष्ण और बलराम बने थे।

—यशोदा ! सुबल कहां है ?

—सूखे पत्ते लाने गया है। चूल्हा तो सुलगने में ही नहीं आता। बड़ी मुश्किल से आग जलाई तो फिर बुझ गई।

नीलकण्ठ और नयनचन्द यशोदा के पास जाकर पुकारने लगे—सुबल ! सुबल !!

सुबल ने दूर से आवाज दी—आता हूं।

सुबल, ढेर से सूखे पत्ते लेकर आया था। तीनों मिलकर चूल्हा सुलगाने की कोशिश करने लगे। धुएं के मारे उनकी आंखों से पानी टपक रहा था।

अन्त में चूल्हा जल गया। तब जाकर तीनों को राहत मिली।

—सुबल, सुनते हो ? हमने कालिन्दी को सापला की माला गूंथने को दिया है।

—माला का क्या होगा ?

नीलकण्ठ बोला—अरे ! तू यह भी नहीं जानता ? राधा-कृष्ण के गले में माला डाली जाएगी।

मेघना और नयनचन्द राधा-कृष्ण की तरह सजाए गए। नयनचन्द ने अपनी बांसुरी में सुर भरना शुरू किया। वे दोनों राधा-कृष्ण की तरह खड़े थे। सुबल पलथी मारकर आंखें मूंदे हुए था। वन भोजन में जो कुछ पकाया, वही मानो नैवेद्य बन गया। चारों तरफ पूजा का ही ठाट-बाट था।

बूढ़े शिवजी के खण्डहर वाला मन्दिर बच्चों की जोश भरी आवाज़ से गूंज रहा था, जैसे उसमें से एक मीठी लौ निकल रही हो।

इतने में सत्तर साला श्रीधर वहां आया। उसके हाथ में फूल और बेल-पत्र थे। शिवजी के मन्दिर के आंगन में राधा-कृष्ण की लीला देखकर श्रीधर गद्‌गद् हो गया। वह बूढ़े शिवजी के सिर पर फूल चढ़ाना भूल-सा गया, पल्थी मारे हुए ध्यानस्थ सुबल की ओर देखकर उसे अपने बचपन की याद आई।

श्रीधर ने जल्दी से पूजा समाप्त कर दी और मन्दिर से निकल पड़ा। उसे यह देख कर खुशी हुई कि सब बच्चे अपने-अपने घर लौट गए हैं।

निरंजन कृष्णनगर का मशहूर कलाकार था। सारे बंगाल के बच्चे ही नहीं बूढ़े भी उसके बनाए हुए खिलौनों के ज़रिए उसे पहचानते थे। उन खिलौनों में न सिर्फ बच्चों के मन मोहने की कला थी, बल्कि लोगों को उसके हृदय का भी पता मिलता था। लोग उसे दिल से चाहते थे। यह नहीं कि लोग उसके चेहरे को जानते हों, पर लोग उसके काम और उसके नाम से परिचित थे। उसी की पोती मेघना तितलियों की तरह चुलबुली और चिड़ियों की तरह मधुरकण्ठी थी।

उस दिन सवेरे जब उसका नाना छप्पर में खोंसी हुई पुरानी तेल लगी हुई पुस्तक को उतार कर, सुतली बंधा हुआ चश्मा चढ़ा कर रोज की तरह पढ़ने बैठा, तो मेघना दूसरे दिनों की तरह नाना की गोद में सिमट कर इस तरह बैठी थी कि उसे कोई कहानी सुनने को मिलेगी। मेघना को यह पुस्तक बहुत पसन्द थी। क्यों न होती, क्योंकि इसमें सीता और लछमन की बात लिखी हुई थी। और पंचवटी के वन में सीता को खाने आई शूर्पनखा की कहानी भी थी।

निरंजन नाना पढ़ते जाते थे। खर और दूखन के साथ राम की घनघोर लड़ाई हो रही थी। मेघना चुप मार कर बैठी थी। इस पुस्तक में इतनी सारी बातें लिखी हैं ! हाय, जंगल के अन्दर राजकुमार राम, लछमन और राजकुमारी सीता पर कितनी मुसीबत आ रही है।

(क्रमशः)

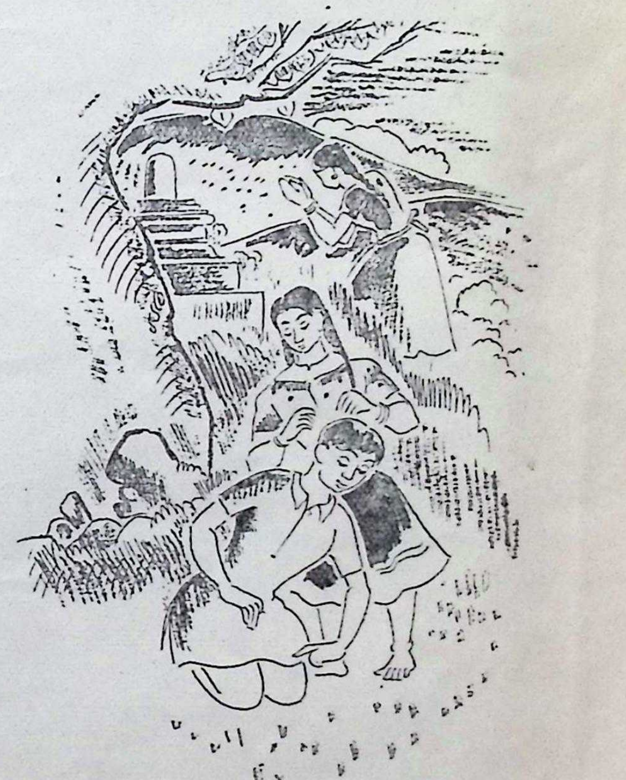

एक दिन उनके दिमाग़ में यह ख्याल आया कि वे बूढ़े शिवजी के मंदिर के इर्द-गिर्द पीपल की जटाओं तथा कालकासुन्दा की झाड़ियों में लुकाछिपी खेलेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डंडी चलती रही

उर्मिला वार्ष्णेय

एक राजा जंगल में शिकार खेलने जा रहा था । घूमते-घामते उसे वहां एक बारहसिंघा दिखाई दिया । राजा ने अपना घोड़ा बारहसिंघा के पीछे दौड़ा दिया । कुलांचें मारता हुआ बारहसिंघा एक पहाड़ी पर चढ़ गया और राजा की नज़रों से ओझल हो गया । अब राजा क्या करे ? उसे रास्ता ही न याद रहा । थोड़ी दूर दाईं ओर मुड़कर चला तो उसे एक नदी दिखाई दी । उसने देखा नदी किनारे एक आदमी लोटे में पानी भर-भर कर तराज़ू से तोल रहा है । राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ । वह बोला–तुम कौन हो ? इस पानी को तोलने का तुम्हारा क्या मतलब है ?

वह बोला––मैं जात का बनिया हूं । रामलाल मेरा नाम है । रोटी के गुज़ारे के लिए पानी तोल रहा हूं ।

अब की बार राजा को और भी अचरज हुआ । बोला––तुम विचित्र आदमी हो । पानी तोलने से क्या रोटी मिलेगी ? मैं इस देश का राजा हूं । सच-सच बताओ नहीं तो तुम्हें दंड दूंगा ।

बनिया उठकर खड़ा हो गया । बोला––सरकार अन्नदाता, आप मालिक हैं । जो चाहें दंड दें । पर सच तो यह है कि बनिए की डंडी चलती रहे तो वह कभी भी भूखों नहीं मर सकता ।

राजा बोला––चलो मेरे घोड़े पर पीछे बैठो । अपनी बात की परीक्षा देना, नहीं तो तुम्हें प्राण दंड दूंगा ।

बनिया मान गया और राजा के साथ चल दिया ।

राजधानी में पहुंच कर राजा ने अस्तबल में उसे घोड़ों की लीद तोलने का काम सौंपा । राजा ने राज में ड्योढ़ी पिटवा दी कि कोई भी उसे उधार चीज़ें न दे ।

बनिया अब रोज़ लीद तोलता । जिस घोड़े के लीद पहले दिन से कम बैठती उसी के सईस से कहता––तुमने घोड़े को जरूर कम खुराक दी है । नहीं तो लीद कम क्यों बैठी ? मैं तो राजा से कहता हूं । तुमको अवश्य दंड मिलेगा । सईस डर जाता । कुछ रुपए देकर अपना फैसला कर लेता ।

घोड़ों की खुराक में से अब चोरी कम होने लगी । इस प्रकार वे भी खूब मोटे-ताज़े हो गए ।

जब एक माह समाप्त होने को आया तो राजा ने बनिए को बुलाकर पूछा––कहो, कैसा हाल है ?

रामलाल बोला––महाराज, रोजी अच्छी चल रही है ।

राजा बोला––सच-सच सारी बातें बताओ । पूरे माह तुमने अपनी रोटी का खर्चा कैसे निकाला ?

रामलाल बनिए ने सारी बात सच-सच बता दी । कहा––अन्नदाता, आपके घोड़े भी पहले से अच्छे मोटे-ताज़े हैं । अब तो आप को विश्वास हो गया कि डंडी चलती रहे तो बनिया भूखों नहीं मर सकता ।

राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और उसे बड़ा इनाम दिया । अपने रसद विभाग का अध्यक्ष बना दिया । बनिए ने बड़ी ईमानदारी के साथ सब प्रबन्ध किया ।

वह बोला––तुम कौन हो ? इस पानी को तोलने का तुम्हारा क्या मतलब है ?

वह बोला––मैं जात का बनिया हूं । रामलाल मेरा नाम है । रोटी के गुज़ारे के लिए पानी तोल रहा हूं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

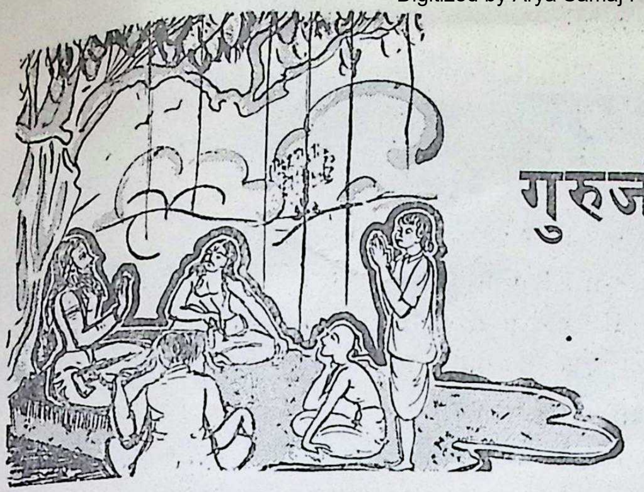

गुरुजी घोड़े पर सवार हुए

धेरिसा मुनीवर

(५)

वह सज्जन उन छहों आदमियों को अपने गांव ले गया। वह बहुत धनवान तो नहीं था, लेकिन दिल का अच्छा था। उसने मेहमानदारी में कोई कसर नहीं उठा रखी। रात को खाना दिया और उनका बड़ा आदर सत्कार किया।

दूसरे दिन सवेरे उस सज्जन ने अपने घोड़े को उनके सामने लाकर खड़ा कर दिया। और कहा--गुरु महाराज, आप इसे ले जाइए।

गुरुजी ने अपने शिष्यों से कहा कि घोड़ा भले कमजोर है, पर है तो मुफ्त में ही मिला। इस पर सब लोग मिलकर घोड़ा देने वाले सज्जन की तारीफ करने लगे। मट्ठी ने घोड़े की प्रदक्षिणा की। मडैयन ने पूंछ पकड़ कर खींची। मिलेच्च उसके मुंह में घास देने लगा।

इसके बाद शुभ मुहूर्त में गांव के सब लोगों ने इकट्ठे होकर गुरुजी को घोड़े पर बिठाया। उस समय मट्ठी लगाम पकड़ कर आगे-आगे चला। मडैयन और मिलेच्च घोड़े के दोनों ओर चलते हुए घोड़े को सम्हाल रहे थे। चौथा घोड़े को पीछे से धकेल रहा था। पैदे सबके आगे गुरु के प्रतापों को बखानता जा रहा था। घोड़ा भी एक महीने में एक कोस के हिसाब से दौड़ रहा था।

इतने में गांव की पंचायत वाले कर वसूल करने के लिए वहां आ गए और गुरुजी को देख कर कहने लगे--आपको घोड़े पर सवार होने के लिए एक अशर्फी देनी पड़ेगी।

यह सुनकर सब शिष्य एक दम चिल्ला उठे और कहने लगे--क्या हमारे गुरुजी को भी कर देना पड़ेगा? हम व्यापारी लोग थोड़े ही हैं? यह घोड़ा तो हमें मुफ्त में मिला है, इसलिए गुरुजी से कर वसूल करना बड़ी भूल है।

पर कर वसूल करने वाले बहुत हठी थे। उन्होंने दोपहर तक घोड़े को नहीं छोड़ा। आखिर ये लोग कर अदा कर के आगे बढ़े। गुरुजी ने अब लाचार होकर कहा--यदि यह घोड़ा नहीं होता तो हमें इस तरह की तकलीफें हरगिज नहीं उठानी पड़तीं। इस पर शिष्यों ने समझाकर उन्हें शान्त किया। इसके बाद वे वहीं एक धर्मशाला में ठहरे। फिर सवेरा होते ही दूसरे गांव चल दिए और रात वहीं बिताने का तय किया।

वहां जाकर दूसरे दिन सवेरे अपने घोड़े की खोज में इधर-उधर गए। उन्होंने देखा कि एक किसान ने अपने खेत में घोड़ा बांध रखा है। आखिरकार २० अशर्फियां देकर घोड़ा छुड़ाया।

अपने शिष्यों को देख कर गुरुजी ने कहा--भाइयो! मुझे इस घोड़े की बिल्कुल जरूरत नहीं है। पर शिष्य नहीं माने।

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

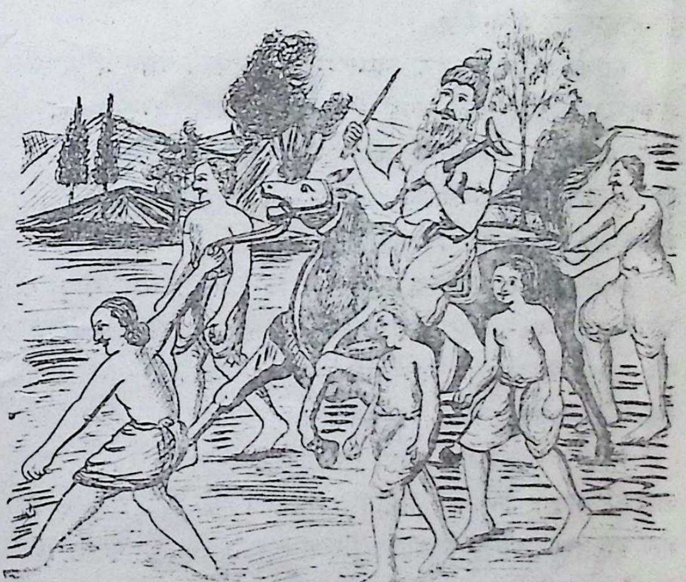

ये सब खत्म होने के बाद शुभ मुहूर्त में गांव के सब लोगों ने इकट्ठे होकर गुरुजी को घोड़े पर बिठाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी के पत्र

प्यारे मुन्ना-मुन्नी,

हां, तो बरसात की हुमस के मारे सब के नाकों दम आ गए हैं। इस साल एक तो गर्मी खूब पड़ी, ऊपर से खरबूजे और आम की गर्मी! बच्चों के खूब फोड़े-फुंसी निकले। किसी के सिर में गूमडे हो गए, आंखें दुखने लगीं। नन्ही मुन्नी की कोमल त्वचा मरौरी के मारे ऐसी खुरदरी हो गई, मानो किसी ने बदन पर राई बिछा दी हो। छोटे मुन्ने के दांत निकल रहे हैं और बरसात की इस हुमस से तो वह घबड़ा उठा है। उसकी तबियत ही ठीक नहीं रहती। बड़ा चिड़चिड़ा हो गया है। मां भी तो परेशान है। ऐसी सूरत में घर में बड़े बच्चों का यह फर्ज है कि वे इस बात की जानकारी रखें कि बरसात की असुविधाओं से बचने के लिए क्या-क्या उपाय करने चाहिए।

बरसात में मक्खियों और मच्छरों के कारण बड़ी परेशानी रहती है। ये बीमारी भी फैलाते हैं। इनसे बचने के लिए आप घर में पूरी सफाई रखें। खाने-पीने की चीज़ें ढक कर रखें। कूड़ा करकट किसी ढक्कनदार डिब्बे में डालें। घर के आस-पास कीचड़ या पानी जमा मत होने दें। यदि सभी गढों को पाटना आसान न हो तो, कम से कम जहां पानी खड़ा हो वहां थोड़ी फिनायल ही छिड़क दें। घर की नाली भी रोज़ फिनायल से धुलाना न भूलें। तुलसी के पौधे गमलों में लगाएं। इन की गंध से मच्छर दूर भागते हैं।

पेट की सफाई का पूरा ध्यान रखें, क्योंकि बरसात में पाचन शक्ति ज़रा धीमी पड़ जाती है। खान-पान में परहेज रखें। हल्का भोजन खाएं। पोदीने की चटनी, इमली का पना, नीबू का शरबत, आदि का इस्तेमाल अधिक करें। गला-सड़ा फल या बासी भोजन भूलकर भी मत खाएं।

बाहर से जब आएं तो खाली पेट पानी मत पिएं। नियम से शौच जाएं। स्नान करें। गीले कपड़े मत पहनें। पांवों को सूखा रखें। पांव की उंगलियां हरदम गीली रहने से वे बीच से लाल-लाल सी हो जाती हैं। इससे खुजली होने का डर रहता है।

मरौरी से बचने के लिये पानी में थोड़ा 'सोडा बाइ कार्ब' डालकर साबुन मल कर नहाएं। स्नान करने के बाद कुछ बूंद तेल बदन पर हथेली से मलें। उसके बाद साफ तौलिए से बदन पोंछ कर ऊपर से डस्टिंग पाऊडर छिड़क दें। वर्षा के जल से नहाने से भी मरौरी मिट जाती हैं।

बरसात के दिनों में खीरा, ककड़ी, भुट्टे खाने को सबका जी करता है। पर ये चीज़ें खाली पेट मत खाएं, भोजन के बाद खाएं। ऊपर से पानी मत पिएं। बाजार के कटे हुए फल मत खाएं।

बच्चों के नाखूनों की सफाई का पूरा ध्यान रखें। बरसात में बच्चे खुजा लेते हैं और फिर उस जगह पककर फोड़े-फुंसी बन जाती हैं। बच्चों को पानी में नीम की पत्तियां उबालकर उसे ठंडा करके नहलाएं। नीम के कोपलों को पीस कर उसमें गोल मिर्च और सेंधा नमक का चूर्ण मिलाकर गोलियां बांध लें। यदि बरसात में इन गोलियों का सेवन नियम से किया जाए तो फोड़े-फुंसी से अच्छा बचाव रहता है।

यदि मच्छर अधिक हैं, तो रात को मसहरी लगाकर सोएं। अपने ओढ़ने, बिछाने और पहनने के कपड़े सूखे रखें। जब धूप निकले उन्हें धूप में ज़रूर फैला दें। सांझ को घर में धूप या लुबान अथवा नीम के पत्तों की धुनी ज़रूर दें।

बरसात में दीमक, झींगुर, पिस्सू, खटमल, कौकरेज (बड़े-बड़े लाल-लाल कीड़े) भी बहुत सताते हैं। इसलिए भली प्रकार झाड़ू लगवा कर फिनायल के पानी से फर्श धुलवा दें या फिनायल के पानी का कमरों में पोचा फिरवाएं। दीमक से बचने के लिए एक खास तरह का तेल मिलता है उसे चौखटों पर पोत दें। पिस्सू खटमलों से छुटकारा पाने के लिए खटियों में उबलते हुए पानी में काफी फिनायल डाल कर पांवों में डालें।

इन दिनों में नंगे पांव मत घूमें। जहां ऊंची घास हो, वहां सैर के लिए मत जाएं क्योंकि अन्धेरे में या ठंडी जगह में कीड़े-मकोड़े का डर होता है। इन दिनों में हैजा, बदहजमी, संग्रहणी आदि रोग जोर पकड़ लेते हैं। अतएव बाजार की चीज़ें मत खाएं। भोजन समय पर करें। हरी साग-सब्जी लाल दवाई के घोल में धोना मत भूलें। और पानी उबाल कर छानकर पिएं।

यदि मुन्ना-मुन्नी उपरोक्त बातों का ध्यान रखें तो मां बहुत-सी परेशानियों से बच सकती है। हर एक बच्चे को रहने का सलीका और स्वास्थ्य की देखभाल करनी आनी चाहिए। आखिरकार शिक्षा का यह भी तो एक अंग है।

तुम्हारी
दीदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौवा है बेटा

पृथ्वीसिंह चौहान

किसी गांव में एक गरीब महाजन रहता था। उसके तीन वर्ष का एक पुत्र था, जिसका लालन-पालन वह बड़े प्यार से करता था।

एक दिन की बात है——सर्दी के दिन थे, महाजन अपने घर के बाहर आंगन में धूप में बैठा अपनी बही-खाता में कुछ लिख रहा था। पास ही उसका बच्चा भी बैठा खेल रहा था। बच्चा कभी बही-खाता पर झुक-झुक कर देखता, कभी कलम पकड़ता तो कभी दावात उठाने को हाथ बढ़ाता था। इतने में सामने पेड़ पर एक कौआ कांव-कांव करता हुआ आ बैठा। बालक का ध्यान सहसा कौए की ओर जा लगा और उसने बड़ी उत्सुकता से अपने पिता से पूछा——पिताजी ये त्या है? पिता ने बड़े प्यार से बच्चे को चूम कर कहा——कौआ है, बेटा!

बालक ने कुछ क्षण रुक कर फिर पूछा——पिताजी ये त्या है?

पिता ने फिर बड़े प्रेम से उत्तर दिया——कौआ है, बेटा!

किन्तु बालक ने अब रट पकड़ ली। वह बार-बार अपने पिता से पूछने लगा——पिताजी ये त्या है? पिता जी ये त्या है? और पिता अपनी बही-खाता में कुछ लिखते हुए प्रत्येक बार उसे धीरज और प्यार से उत्तर देते रहे——कौआ है, बेटा! कौआ है, बेटा!

कई साल बीत गए लड़का जवान हो गया और पिता बुड्ढे हो चले। पिता के दिन जब कारबार करने के थे तब वे पूंजी अधिक नहीं होने के कारण दस-बीस रुपए का सौदा ले जा कर पास के गांवों में बेचा करते थे, किन्तु पुत्र ने अब अपने ही गांव में बाप के कमाए रुपयों से आटे-दाल की एक दुकान खोल ली थी। घर का सारा खर्च अब इसी दुकान से चलता था। पिता दिन-दिन अधिक बूढे होने के कारण कुछ कर नहीं पाते थे, अतः उनका शेष जीवन पुत्र की कमाई पर ही निर्भर हो गया।

एक दिन पिता ने पुत्र से कहा——बेटा! मेरी धोती और कुर्त्ता दोनों फट चले हैं, कोई मोटा-सा टिकाऊ कपड़ा बाजार से ले आओ।

यह सुनकर पुत्र ने उत्तर दिया——ले आएंगे।

दो-चार दिन निकलने पर बुड्ढे ने पुत्र को फिर याद दिलाई——बेटा, धोती-कुर्ता लाना है।

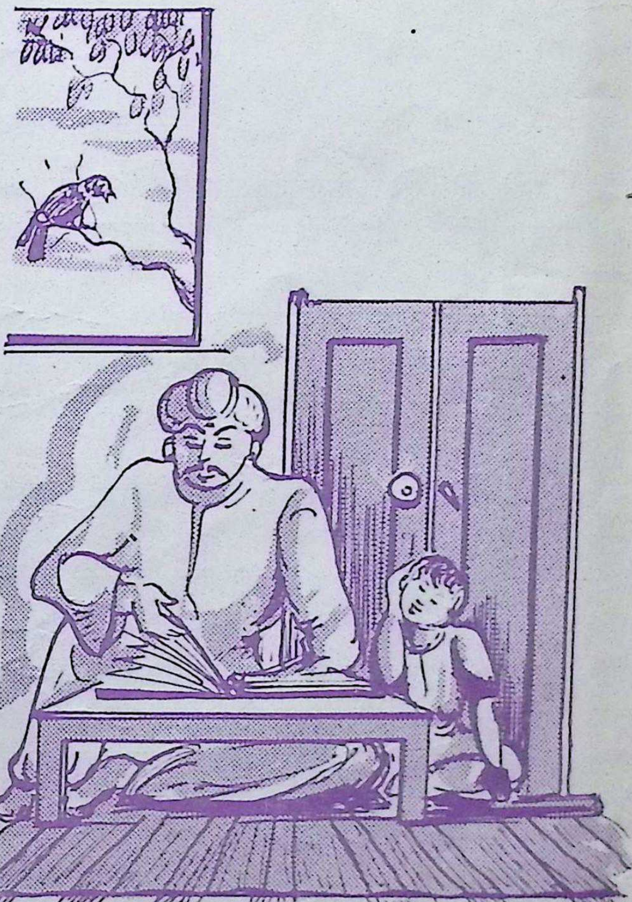

बालक ने कुछ क्षण रुक कर फिर पूछा—पिताजी ये त्या है? पिता ने फिर बड़े प्रेम से उत्तर दिया—"कौआ है बेटा!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु बेटे ने इस बार जवाब दिया——दुकान की गाहकी आजकल टूट गई है, हाथ तंग है।

यह सुनकर पिता चुप हो गया।

कुछ दिन निकलने पर पिता ने पुत्र से फिर कहा——बेटा, धोती-कुर्ता अब केवल दो एक बार ही और धोए जा सकेंगे।

पुत्र को इस बार क्रोध आ गया। उसने तमक कर कहा——बार-बार क्यों माथा खाते हो ? धोती लाओ, कुर्ता लाओ, धोती लाओ, कुर्ता लाओ। मुझे सब मालूम है, ले आऊंगा।

पुत्र के ऐसे क्रोध भरे वचन सुनकर पिता को पुत्र के बचपन की घटना याद हो आई। उसने कहा——बेटा, अन्दर से अमुक वर्ष की मेरे हाथ की बही-खाता तो लाओ।

पुत्र ने समझा कोई पुरानी उगाही देखते होंगे, वह बही-खाता ले आया। पिता बही खोलकर दिखाने लगा——बेटा, यह देखो तो।

पुत्र ने देखा और झुंझला कर कहा——क्या देखूं ? कौआ है बैटा ! कौआ है बैटा ! पूरे दोनों पृष्ठों में यही तो लिखा है।

पिता ने पुत्र को उसके बचपन की कौए वाली घटना से जानकारी कराई और कहा——मैंने तेरे सैंकड़ों बार पूछने पर उतनी ही बार धीरज रख कर प्यार से जो उत्तर दिया उसी का यह व्यौरा है, जो मैं तेरे प्रेम में लीन होकर लिखता रहा था। आज तू जब मेरी सेवा करने योग्य हुआ है, मैंने तुझे एक से अधिक बार वस्त्र लाने को कह दिया तो तुझे ताव आ गया।

यह सुनकर पुत्र की अक्ल ठिकाने लग गई उसने लज्जित हो कर पिता से माफी मांगी।

★

बन्दरिया रानी——(पृष्ठ ९ का शेषांश)

यह सुनते ही राजा ने अपनी तलवार खींच ली और क्रोध से तमतमा कर सिपाहियों को ललकारा——मार डालो इस गुस्ताख को।

उसी समय कुंवर दुशाला ओढ़ कर अलोप हो गया।

राजकुमारी ने आगे बढ़ कर पिता का हाथ पकड़ लिया और बोली——पिताजी ! आप शान्त हों। ये आपके दामाद और मेरे पति हैं।

इसके बाद राजकुमारी ने उन्हें सारा किस्सा सुनाया।

राजा अपनी बेटी और दामाद को लेकर महलों में आए और दूसरे दिन खूब धूमधाम के साथ कन्या को विदा किया। चलते समय कुंवर ने बन्दरिया रानी से कहा कि तुम अपने साथ अपनी दो सखियां को भी ले चलो। मार्ग में अपने उपकारी मित्रों को भी तो कुछ देना होगा। उन्होंने हमारी सहायता की थी, उनका घर भी तो आबाद करना चाहिए।

मार्ग में अपना विमान रोक कर कुंवर ने अपने दोनों मित्रों का कुशल समाचार पूछा और राजकुमारी की एक-एक सखी से उनका ब्याह कर दिया। राजकुमारी और राजकुमार के पांव छू कर जैरामजी की करके वे भी अपने-अपने घर चले गए।

कुछ दिनों बाद कुंवर अपने देश पहुंचे। राज्य भर में बड़ा जलसा हुआ। राजा ने देखा कि मेरे तीनों बड़े बेटे तो बहुत निकम्मे हैं, दिन भर शिकार और जुआ खेलने में ही डूबे रहते हैं। उनकी स्त्रियां भी महा आलसी, ईर्ष्यालु और झगड़ालु स्वभाव की हैं। सिवाय खाने-पीने और पहिनने-ओढ़ने के उन्हें और किसी बात का शऊर ही नहीं है, फिर भला ऐसे निकम्मे लोग प्रजा का दुख-सुख क्या समझेंगे ? यह सब सोच कर उसने छोटे बेटे का राजतिलक कर दिया और आप वन में तपस्या करने चला गया।

(समाप्त)

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन की मुस्कान

प्रेमचन्द भारद्वाज

महान व्यक्तियों का जीवन, दीपक की तरह प्रकाश फैलाता है। इस प्रकाश में समझदार लोग अपने जीवन को और अधिक सुन्दर बना सकते हैं।

दूसरों के आराम का ख्याल—सन् १९३८ या ३९ की बात है। पण्डित जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस के प्रधान थे। वे बड़ौदा गए और श्रीमती रैहाना तैयबजी के यहां ठहरे। घर में श्रीमती रैहाना थीं और उनकी बूढ़ी मां थीं, जो बेहद बीमार थीं।

जवाहरलाल के आगमन से बड़ौदे में क्या शोर, क्या खुशी का तहलका, क्या रौनक, क्या जोश छा गया। उन्हें कई जगह भाषण देने पड़े। बोलते-बोलते पण्डित जी का गला भी बैठ गया। वह दौड़ धूप से थक गए थे, तब भी घर में थोड़ी देर बैठे और बातचीत करते रहे। श्रीमती रेहाना की मां तो उनके व्यवहार से बहुत प्रसन्न हुईं। उस समय से वह हमेशा उन्हें बेटे की तरह याद करती थीं।

रात भोजन करके पण्डित जी को फिर एक सभा में जाना पड़ा। घर के सब लोग इन्तजार करते सो गए, कि पण्डित जी कब आएंगे? कब आएंगे?

सुबह मालूम पड़ा कि पण्डित जी तो रात को बारह साढ़े-बारह बजे ही आ गए थे। वह जूते निकाल कर सीढ़ियां चढ़े। कमरे की बत्ती भी नहीं जलाई, गुसलखाने की बत्ती से ही काम चला लिया। बिल्ली भी मात हो जाए, ऐसे दबे पांव से चल कर सोने की तैयारी की। और यह सब इसलिए किया कि बूढ़ी बीमार अम्मां जाग न जाएं और उनकी नींद खराब न हो।

उचित पुरस्कार—दूसरों की सुविधा का पूरा ध्यान रखना बड़प्पन की निशानी है। परन्तु भावना और सुविधा का ही नहीं, दूसरों की इज्जत का सम्मान रखना भी बहुत जरूरी होता है।

इंगलैण्ड की महारानी विक्टोरिया संगीत की शौकीन थीं। उनका नियम था कि संगीत सुनाने वाले को उचित इनाम दे कर विदा किया करती थीं।

एक बार उन्होंने वीयना (आस्ट्रिया) के एक पियानो बजाने वाले को बुलवाया। वह प्रसिद्ध संगीतकार था। महारानी को उसका गाना सुनकर बहुत आनन्द आया। उन्होंने उससे बार-बार पियानो बजवाया। अन्त में उससे प्रार्थना की कि वह अपने देश का राष्ट्रगीत बजाए। राष्ट्रगीत आरम्भ होते ही वह उसके सम्मान में खड़ी हो गईं और अन्त तक खड़ी रहीं।

बूढ़े संगीतकार के आनन्द की सीमा नहीं थी। खुशी में फूले न समाते हुए उसने अपने मित्रों से कहा—महारानी ने इनाम में मुझे हीरे का जड़ाऊ पिन दिया। लेकिन मेरे राष्ट्र-गीत के सम्मान में उनका उठ खड़ा होना ही मेरे लिए सबसे बड़ा इनाम था।

गुरुजी घोड़े पर सवार हुए—(पृष्ठ २७ का शेषांश)

इन सब की बात सुन कर एक ज्योतिषी ने कहा—अजी! आप लोग गलती कर रहे हैं। घोड़े में एक दोष है। अगर आप लोग पांच अशर्फ़ियां देने को तैयार हों तो मैं उसे दूर कर दूंगा।

आखिर घोड़े में होने वाले दोष को दूर कराने के लिए वे तैयार हो गए।

वह ज्योतिषी बड़ा चालाक था। उसने इन लोगों को धोखा देना चाहा। वह इधर-उधर की जड़ी-बूटी ले आया। घोड़े पर उन्हें फेर कर, इधर-उधर की कुछ बातें बक कर गुरुजी से कहने लगा—घोड़ा अब ठीक हो गया है। अब घोड़े के सब दोष एक कान में आकर इकट्ठे हुए हैं। यदि आप उसे काट डालें तो यह घोड़ा बिलकुल दोषमुक्त हो जाएगा।

यह सुन कर गुरुजी ने घोड़े का एक कान कटवा दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

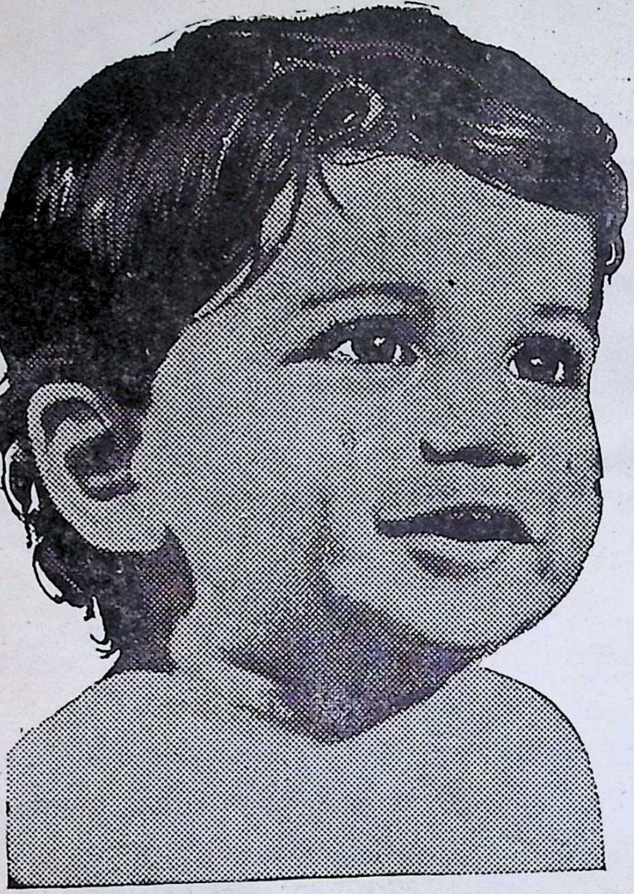

दांत निकलने
की तकलीफ़,
मरोड़, वायु व
पेट की खराबी ?

उन्हें

ग्राइमिक्स

ग्राइप मिक्श्चर दीज़िये

ग्राइमिक्स आपके बच्चे को मरोड़, वायु व पेट की दूसरी ख़राबियों से फ़ौरन आराम देगा। आपने बच्चे को स्वस्थ व प्रसन्न रखिये। उसे ग्राइमिक्स दीजिये।

ग्राइमिक्स

ग्राइप मिक्श्चर

आपके बच्चे को स्वस्थ रखता है।

NOJ

"ग्राईमिक्स ग्राईप मिकश्चर की एक बोतल खरीदने पर एक सुन्दर चम्मच मुफ्त दिया जायगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्डिया डायरी - १९५८

(सचित्र)

आकार ८॥''×६''

नए वर्ष के लिए एक उत्तम उपहार

दिनचर्या को नोट करने के लिए अति उपयोगी। हर सप्ताह के लिए एक पृष्ठ। हर पृष्ठ के सामने भारतीय जीवन तथा दृश्यों के रंग विरंगे सुन्दर चित्र।

अक्टूबर १९५८ में उपलब्ध होगी
मूल्य : ५ रुपये, डाक खर्च ५० नये पैसे (रजिस्ट्री व्यय अलग)

पच्चीस रुपये अथवा इससे अधिक मूल्य की प्रतियों पर डाक खर्च नहीं लिया जायगा।
रेखांकित पोस्टल आर्डर भेजने से सुविधा रहती है।

पब्लिकेशन्स डिवीज़न

पो० बा० नं० २०११, ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली—८

बौद्ध धर्म सम्बन्धी दो सुन्दर पुस्तकें

बौद्ध धर्म के २५०० वर्ष

इस पुस्तक में गत ढाई हज़ार वर्षों में बौद्धमत की कहानी का संक्षिप्त लेखा है।
२५५ पृष्ठों की सचित्र पुस्तक का
मूल्य केवल ३.०० रु०
डाक व्यय ०.६० नये पैसे

भारत के बौद्ध तीर्थ

भारत में बौद्ध तीर्थ व पवित्र स्थानों पर सचित्र पुस्तक। आकर्षक छपाई व सजधज।
१०८ पृष्ठों की इस सुन्दर पुस्तक का
मूल्य केवल २.०० रु०
डाक व्यय ०.७५ नये पैसे

(रजिस्ट्रेशन व्यय अलग)

मूल्य अग्रिम आना आवश्यक है। पोस्टल आर्डर भेजने से सुविधा रहती है।

प ब्लि के श न्स डि वी ज़ न

पो० बॉ० नं० २०११, ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली-८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन पत्रिकाओं को अपने वाचनालय में सम्मिलित कीजिए

ग्राम सेवक

ग्राम सुधार की विभिन्न योजनाओं के बारे में ग्रामीण जनता के योग्य सामयिक सूचना और समाचार। भाषा अति सरल और छपाई सुन्दर। वार्षिक शुल्क १·२५ रुपये।

मैट्रिक मापतोल

मापतोल प्रणाली में होने वाले महत्वपूर्ण परिवर्तन का जानना हर एक नागरिक के लिये अनिवार्य है। इस सम्बन्ध में पूरी जानकारी के लिये इस पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया है। वार्षिक मूल्य २·०० रुपये, एक प्रति ४० नये पैसे।

कुरुक्षेत्र

सचित्र मासिक पत्र, जिसमें देश के सामुदायिक विकास-कार्यक्रम सम्बन्धी समाचार तथा लेख प्रकाशित होते हैं। वार्षिक शुल्क २·५० रुपये।

आजकल

इस लोकप्रिय सचित्र मासिक पत्र में भारत भर के प्रसिद्ध साहित्यकारों के विचारपूर्ण लेख, कविताएं तथा कहानियों के अतिरिक्त कला, संस्कृति व अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर प्रामाणिक लेख पढ़िए। वार्षिक शुल्क ६·०० रुपये।

भारतीय समाचार (पाक्षिक)

दो चित्र कथाओं सहित

ठोस पाठ्य सामग्री, अधिकृत सरकारी सूचनाएं व विकास सम्बन्धी गतिविधियों के समाचारों से युक्त यह पत्रिका छात्रों, शिक्षकों, व सार्वजनिक कार्यों से सम्बन्धित सभी व्यक्तियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। वार्षिक शुल्क ५·०० रुपये।

योजना

सब क्षेत्रों में हुई प्रगति का आलोचनात्मक मूल्य आंकने वाला, भारत की पंचवर्षीय योजनाओं का पथप्रदर्शक हिन्दी और अंग्रेजी का पाक्षिक पत्र। वार्षिक शुल्क २·५० रुपये।

बिक्री बढ़ाने के लिए इन पत्रिकाओं में विज्ञापन दीजिए

पब्लिकेशन्स डिवीज़न

पो० बॉ० नं० २०११, ओल्ड सेक्रेटेरिएट

दिल्ली - ८

डायरेक्टर, पब्लिकेशन्स डिवीज़न, ओल्ड सेक्रेटेरिएट, दिल्ली–८ द्वारा सम्पादित तथा प्रकाशित और उपप्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Regd. No. D—508.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्यम

वार्षिक मूल्य
रु. ७

अगस्त
१९५८

प्रति अंक
७५ नये पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्थिक तथा औद्योगिक परिवर्तन

लेखक--श्री भा. म. काले, एम्. ए., बी. टी.

उडीसा सीमेंट कंपनी

औद्योगिक क्षेत्र में अधिकांश औद्योगिक कंपनियों के लिये पिछला वर्ष (१९५७) मंदी का अथवा तत्सम् कठिनाइयों का ही रहा। केवल उड़ीसा सीमेंट कंपनी ही इस बात में एक अपवादस्वरूप रही है। इस वर्ष इस कंपनी की प्रगति संतोषजनक रही। कंपनी को कुल ६४ लाख ९९ हजार रु. का लाभ हुआ; इसके पहिले वर्ष में इसे कुल ४७ लाख ७३ हजार रु. ही लाभ हुआ था। १९५७ के लेखे में टूटफूट-निधि के अन्तर्गत १९ लाख ४८ हजार रु. जमा किये गए। इसके पहिले के वर्ष में इस निधि में ८ लाख ९९ हजार रु. जमा किये गए थे। डिविडन्ड हरेक शेयर पर १॥ रु. के हिसाब से बांटा जावेगा जब कि इसके पूर्व-साल में हरेक शेयर पर १। रु. के हिसाब से डिविडन्ड बांटा गया था। कंपनी की कुल पूंजी २ करोड़ ९ लाख रु. थी जो अब ३ करोड़ ५ लाख रु. हो गयी है। इसके सिवा १ करोड़ १६ लाख रु. का निर्माण-कार्य अभी जारी है; उपर्युक्त हिसाब में इसका समावेश नहीं है। १९५७ में सीमेंट का कुल उत्पादन २ लाख ८६ हजार ९७१ टन हुआ; इसके पूर्व-साल में कुल उत्पादन १ लाख ९० हजार १७३ टन हुआ था। चालू वर्ष के प्रथम ५ महिनों में ही सीमेंट का उत्पादन १ लाख ४८ हजार टन हुआ है जबकि गतवर्ष इसी अवधि में १ लाख १० हजार टन उत्पादन हुआ था। फायर-क्ले व सिलिका जाति की ईंटों का भी उत्पादन प्रारंभ हो गया है। इसके सिवा आगामी वर्ष बेसिक ईंटों का उत्पादन भी शुरू किया जावेगा। इस प्रकार उत्पादन में वृद्धि एवं नये विभागों के शुरू किये जाने से १९५८ का वर्ष भी इस कंपनी के लिये संतोषजनक रहेगा।

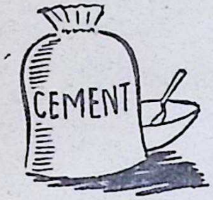

× × ×

कॅलिको मिल्स

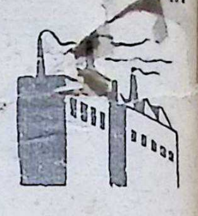

अहमदाबाद की सुप्रसिद्ध कॅलिको मिल्स के लिए मार्च १९५८ के अंत में समाप्त होनेवाला वर्ष काफी कठिनाई का रहा। कंपनी की कापड की बिक्री इस वर्ष संतोषजनक रही और वर्ष की समाप्ति पर कपडे का संग्रह भी हमेशा की भांति ही रहा। कारखाने में सुधार-कार्य भी हो रहे हैं; किन्तु अभीतक सरकार की अनुमति न मिलने से सादे करघों का स्वयंचलित करघों में रूपान्तर करने का कार्य ज्यों का त्यों पड़ा है। उत्पादन एवं माल की श्रेणि बढ़ाने की दृष्टि से कुछ प्रगति अवश्य हुयी है। अहमदाबाद के रासायनिक विभाग का कार्य संतोषजनक चलता रहा तथा मार्च १९५८ में बम्बई में कॉस्टिक सोडा व क्लोरिन प्लँट के कार्य की शुरुवात हुयी। संचालकों ने और २ करोड़ रु. लगाकर बम्बई में उक्त विभाग का विकास करने का निर्णय लिया है। इस हेतु आवश्यक निधि एकत्रित करने का प्रयास जारी है। इस विभाग के खुलने से कंपनी के वार्षिक लाभ में वृद्धि होगी तथा वर्तमान विदेशी विनिमय की समस्या भी काफी मात्रा में हल हो सकेगी। मार्च १९५८ में समाप्त एक वर्ष में कंपनी ने ५९ लाख ८१ हजार रु. आय-कर अदा किया; १ करोड़ १७ लाख रु. उत्पादन-शुल्क तथा ७ लाख ६६ हजार रु. बिक्री-कर भी पटायी। रासायनिक पदार्थों को मिलाकर कंपनी की कुल बिक्री ८ करोड़ ४९ लाख रु. की हुयी। इसके पूर्व-साल में भी बिक्री लगभग उतनी ही (८ करोड़ ५२ लाख रु.) हुयी थी। किन्तु गत वर्ष कुल लाभ १ करोड़ २८ लाख रु हुआ जब कि उसके पूर्व-साल वह १ करोड़ ८६ लाख रु. हुआ था। पूंजीगत व्यय में १ करोड़ ८ लाख रु. वृद्धि होकर वह अब ६ करोड़ २२ लाख रु. हुआ है। कंपनी द्वारा वसूल की गयी पूंजी २ करोड़ ३५ लाख रु. है।

× × ×

भारत लाइन्स लि.

विदेशी मुद्रा की कमी तथा जहाजों की बढ़ती हुयी कीमतों के कारण 'भारत लाइन्स' गतवर्ष अपने जहाजों में वृद्धि नहीं कर पायी। भारत लाइन्स भारतीय किनारे पर, बर्मा के पास व पर्शियन खाड़ी में व्यापार करती है। संचालकों ने कर-पटाने की आगामी व्यवस्था के हेतु निधि में २५ लाख रु. जमा कर रखे हैं।

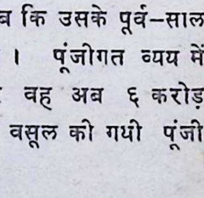

(कृपया कव्हरपृष्ठ क्र. ३ देखिये)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खास तौर से आपके लिये बनाई गई

लाभदायक उद्योग-धंधे, सफल खेती-बाड़ी, व्यापार आदि विषयों की विशेषज्ञों द्वारा लिखी गई अनुभूत जानकारी निम्न पुस्तकों में दी है।

खाली समय में सह-व्यवसाय या मूल धंधे के रूप में व्यवसाय करने के लिये इन पुस्तकों की जानकारी आपको उपयोगी सिद्ध होगी।

★ नित्योपयोगी पुस्तकें मंगवाइये ★

	रु. न. पै.
१. विद्युत्-संस्कार	०·७५
२. चर्मकला-व्यवसाय	१·००
३. फैक्टरी एक्ट	१·००
४. मिरची की पैदावार	१·००
५. विक्रयशास्त्र अर्थात् दूकानदारी	१·५०
६. मुर्गीपालन-व्यवसाय	१·५०
७. अमोनियम सल्फेट	१·५०
८. आतिशबाजी अर्थात् बारूदकाम	१·५०
९. पानी खींचने के यंत्र	१·५०
१०. पपीते की काश्त और व्यापार	१·५०
११. फलों के टिकाऊ पदार्थ	२·००
१२. फलों की बागवानी	२·००
१३. सुलभ फोटोग्राफी	२·००
१४. संतरे की बागवानी और व्यापार	२·००
१५. आम की काश्त और व्यापार	२·००
१६. स्नो-पाउडर-तेल	२·००
१७. सब्जियों की बागवानी	२·००
१८. डिझेल अर्थात् ऑइल-इंजन	२·००
१९. नीबू की काश्त और व्यापार	२·००
२०. उपाहारगृह का व्यवसाय	२·००
२१. नित्योपयोगी औषधियाँ	२·५०
२२. चाँवल की खेती और व्यापार	२·५०
२३. डेअरी का धंधा	२·५०
२४. नित्योपयोगी वस्तु-सूत्र	२·५०
२५. साबुन तैयार करना	२·५०
२६. फूलों की बागवानी	२·५०
२७. मोटर की दुरुस्ती	२·५०
२८. अपने व्यवसाय में सफल कैसे हों ?	२·५०
२९. फसल-प्रतियोगिताएँ	२·५०
३०. आदर्श ग्राम	२·५०
३१. गृह निर्माण	२·५०
३२. घरेलू कारखानेदार	२·५०
३३. रेडियो की कार्यपद्धति	३·५०

म. ऑ. आने पर पुस्तकें रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा भेजी जायेंगी। र. खर्च रु. ०.५०। इसके अतिरिक्त प्रति पुस्तक डाक खर्च लगभग १९ नये पैसे तथा बिक्रीकर प्रति रुपया ३ नये पैसे होगा। वी. पी. द्वारा भी पुस्तकें भेजी जा सकती हैं। आज ही ऑर्डर भेजें।

— उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(उद्यम मासिक विभिन्न राज्यों के शिक्षाविभाग द्वारा स्कूलों एवं लाइब्रेरियों के लिये स्वीकृत किया गया है।)

टेलिफोन नं. २९२९

उद्यम

तारका पता– 'उद्यम', धर्मपेठ, नागपुर।

धर्मपेठ, नागपुर

वार्षिक मूल्य रु. ७·००; वी. पी. से रु. ७·६३

एक प्रति : ७५ नये पैसे

हर माह की १५ ता. को प्रकाशित होता है।

सम्पादक—वि. ना. वाडेगांवकर

व्यवस्थापक, उद्यम कार्यालय—अनसूया वाडेगांवकर

व्यवस्थापक, उद्यम कमर्शियल प्रेस—गो. के. खेडकर

(खेती, बागवानी, विज्ञान, व्यापार, उद्योगधंधे, कलाकौशल्य, ग्रामसुधार, स्वास्थ्य आदि विषयों की एकमेव मासिक पत्रिका)

वर्ष ४० वाँ, अंक ८ वाँ] अनुक्रमणिका [अगस्त १९५८

(१) मुखपृष्ठ का चित्र
चित्रकार– श्री नागेश आर्डे, जी. डी. (आर्ट)

(२) आर्थिक तथा औद्योगिक परिवर्तन क. पृ. क्र. २ व क्र. ३
लेखक– श्री भा. म. काले, एम्. ए.; बी. टी.

(३) सम्पादकीय (उद्योगों की क्ष–किरण परीक्षा) ४१५

(४) 'हेलिकॉप्टर' का जनक इगोर सिकोर्स्कि ४१६
(अल्प परिचय)
लेखक– श्री वि. द. नवाथे

(५) पुलिस–सिपाही की नौकरी (Police Career) ४२२
लेखक– श्री रघुनाथ हडकर, एम्. ए.

(६) एक नया व्यवसाय : वृद्धाश्रम ... ४२६
लेखक– श्री श्री. वा. काले

(७) टेलिफोन की रचना तथा कार्यपद्धति ... ४२९
लेखक– श्री श्री. स. आपटे

(८) वर्षा विषयक भविष्य : लेखांक ५ वाँ ... ४३८
चन्द्र तथा बिजली द्वारा वर्षा विषयक संकेत
लेखक– श्री मा. वा. लेले

(९) केले की बागवानी तथा व्यवसाय : ले. ८ वाँ ४४१
विभिन्न राज्यों में खाद देने की पद्धतियाँ
लेखक द्वय– श्री ब. वि. राहुडकर
श्री वि. श्रा. यावलकर

(१०) बेल तेल, वार्निश, पॉलिश व रंग : ले. ६ वाँ
तेल रंग (Oil Paints) ... ४४७
लेखक–प्रा. श्री. ना. वेहेरे, बी. एस्सी. (ऑ.).
एम्. एस्सी., बी. टी., ए. आर. आय. सी.

(११) सिलाईकला : शेरवानी ४५७
लेखक–श्री ज. पां दांडेकर

(१२) टॉर्च–बॅटरीपर (सेल्स) चलनेवाला
मितव्ययी रेडिओ ४५९
लेखक–श्री र. अ. घारे

(१३) बनाकर देखें : मछलियों का खिलौना ... ४६२
संग्राहक–श्री व. द. मुन्हार

(१४) मॅट्रिक वा तत्सम शिक्षाप्राप्तों के लिये
तांत्रिक शिक्षा की सुविधायें : लेखांक ६ वाँ
विश्वविद्यालयों के माध्यम व सत्र तथा
युनियन पब्लिक सर्विस कमिशन की परीक्षायें ४६३
संकलक–श्री स. अ. रानडे,
एम्. ए., बी. टी., अॅडवोकेट

(१५) महिला विभाग : दही मथना ... ४६५
लेखिका–श्रीमती प्रभा परांजपे, बी. ए.
मुंगफली के दाने पीसने के यंत्र के उपयोग ४६६
लेखिका–श्रीमती मालती आर्डे

(१६) बालकों का विश्व : ज्ञान–तुषार
मछलियां पानी में क्यों नहीं डूबती ? ... ४६७
लेखिका–उषा दीदी

(१७) खोजपूर्ण खबरें ४६८
संग्राहक–श्री श्री. स. आपटे
टंग्स्टन कार्बाईड का सैण्डपेपर
कीलें मारनेवाली काडतूस
जलविरहित बॅटरी

(१८) जिज्ञासु–जगत् ४६९
आलू की खेती
सोने का मुलामा चढाने की विधि

(१९) भारतीय अनुसंधान ४७०

(२०) होनहार युवकों के लिये : नौकरी की खोज में ४७१

(२१) शेअर बाजार का रुख ४७२
लेखक–श्री धनंजय, एम्. कॉम्.

(२२) व्यंगचित्र–
चित्रकार–श्री करगणीकर ... ४३१
श्री कापडसकर ४४३. ४६८
श्री शरद पंडित ... ४५३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
(उद्यम मासिक के लेखों तथा चित्रों के सर्वाधिकार सुरक्षित।)

सम्पादकीय

उद्योगों की क्ष-किरण परीक्षा

जब कोई व्यक्ति अपने को अस्वस्थ अनुभव करता है तब वह अपनी डाक्टर से परीक्षा करा लेता है। उसकी व्याधि का सुस्पष्ट निदान करने के लिये आवश्यक होनेपर 'क्ष' किरण से भी परीक्षा की जाती है। उससे व्याधि का अचूक निदान तथा परीक्षा की जाती है।

अचूक निदान तथा योग्य उपाय

उपर्युक्त दृष्टान्त व्यापार के–उत्पादित वस्तुओं के–बारे में भी सही है। स्वास्थ्य की गिरावट तथा व्यावसायिक गिरावट में लाक्षणिक भेद नहीं है। इसलिये स्वास्थ्य में गिरावट दिखाई देने पर जिस प्रकार हम तत्परता से शीघ्र निदान तथा चिकित्सा कराते हैं उसी प्रकार व्यापारी को भी व्यावसायिक गिरावट के बारे में करना चाहिये। अन्तर इतना ही है कि व्यावसायिक गिरावट के लिये कुशल अन्वेषण की आवश्यकता है। व्यावसायिक गिरावट के काल में संस्था का संचालन, उत्पादित वस्तुओं के गुणदोष तथा संस्था के ग्राहकों से संबंध, इन सभी बातों की बार बार जांच करने की आवश्यकता निर्माण होती है।

मददगार संस्थायें

किसी संस्था की व्यावसायिक कठिनाइयों की पड़ताल निदान, तथा निवारण करने के लिये दो बाह्य संस्थाओं की मदद उपलब्ध होती है। उनमें से एक विज्ञापन संस्था तथा दूसरी विक्री, व्यापार तथा बाजार की सलाहगार प्रतिनिधि संस्था है। दोनों संस्थाओं का यही एक मात्र उद्देश्य है।

सूत्रबद्ध संगठन

प्रत्यक्ष निदान करते समय वस्तु तथा उसकी बिक्री–व्यवस्था देखने के पूर्व, संस्था की व्यवस्था तथा कार्यप्रणालि की पड़ताल करनी होगी। विशिष्ट वस्तु की बिक्री के लिये संस्था का कार्यक्षम तथा सूत्रबद्ध संगठन होना, इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इसके विपरीत किन्ही किन्ही संस्थाओं का कार्यालय ही कार्य की तुलना में बहुत बड़ा दिखाई देता है।

इसके बाद वस्तु की निर्विकार तथा निष्पक्ष रीति से परीक्षा करनी होगी। अपनी वस्तु से स्पर्धा करनेवाली अन्य वस्तुओं को छोड़कर, ग्राहकगण हमारी ही वस्तु क्यों खरीदें इसका उत्तर ढूंढने का प्रयत्न करनेवाले निर्माता बिरला ही देखने को मिलते हैं।

प्रतियोगिता में टिकने की सिद्धता

बाजार का स्वरूप ध्यान में लेते हुये, क्या आकार, प्रकार, वजन, रंग, स्वाद, पॅकिंग आदि दृष्टि से वस्तु सुयोग्य है, क्या उसका मूल्य उचित है, यह भी देखना पड़ता है। कई बार बाजार का प्रत्यक्ष निरीक्षण तथा जांच करने से इन प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर मिलता है। क्या अपनी वस्तु प्रतियोगिता में सफलतापूर्वक टिक सकती है, किस प्रकार की प्रतियोगिता है इन प्रश्नों के उत्तरों के लिये व्यापारियों को प्रतियोगिता करनेवाली अन्य वस्तुओं की भी संपूर्ण जानकारी रखनी चाहिये।

विज्ञापन तथा विक्री संवर्धन विभाग की जांच इसके बाद करनी होगी। इस मद के लिये नियत राशि का व्यय योग्य रीति से होता है या नहीं यह देखना महत्त्वपूर्ण है। विज्ञापन–प्रतिनिधि ठीक प्रकार से काम कर रहे हैं या नहीं यह भी देखें। निष्पक्ष विशेषज्ञ से इसके बारे में प्रतिवेदन मंगवाना चाहिये।

कागजी कार्यप्रणालि

अन्त में उद्योग के कार्यालय के कर्मचारियों की कार्यप्रणालि की जांच करनी चाहिये। कई बार 'कागजी कार्यप्रणालि' से भी वस्तु–विक्री को विलंब लगता है। इस वर्ग की कार्यक्षमता घट जाती है और निर्णय शीघ्र नहीं किया जाता है। बीजक तथा हिसाब में भी कार्यक्षमता अत्यावश्यक है। इसके लिये समय बचानेवाले तथा निर्भूल कार्य करनेवाले आधुनिक यंत्रों का कार्यालय में उपयोग करना सुविधाजनक होगा।

इस तरह से उद्योग–व्यापार का प्रत्येक विभाग तथा उसकी व्यवस्था की जांच करने से दोष स्पष्टरूप से ज्ञात हो सकेंगे तथा विशेषज्ञों के निरीक्षण के नीचे यह जांच होने से उनकी सूचनाओं तथा मार्गदर्शन से उद्योग की कार्यक्षमता बढ़ेगी जिसका परिणाम निश्चित रूप से उत्पादित वस्तु की बिक्री बढ़ने में होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हेलिकॉप्टर' का जनक

इगोर सिकोर्स्कि

(अल्प परिचय)

लेखक--श्री वि. द. नवाथे

अथक प्रयास का फल

उन दिनों में जबकि अधिकृत रूप से यह मत प्रस्थापित हो गया था कि "मनुष्य तो क्या ३० पौंड से अधिक वजनवाले पक्षी को भी हवा में उड़ना असंभव है"--एक १२ वर्षीय बालक मानों उक्त मत को झूठा सिद्ध करने तथा उस पर विजय पाने की इच्छा से ही अपनी प्रयोगशाला में निरन्तर प्रयोग करने में मग्न हो गया था।

'इगोर सिकोर्स्कि' ही उस बालक का नाम। वह एक हवाई जहाज (Air-Craft) बनाना चाहता था; कमसे कम उन दिनों में वह एक अपूर्व कल्पना ही थी। इगोर की कल्पना थी कि वह हवाई जहाज-ऊपर लगे पंखे की सहायता से (Over-head Propeller) जमीन पर से सीधा ऊपर उड़ सकने में समर्थ हो। इस दृष्टि से वह अनेक नमूने निरन्तर तैयार करता रहा; उड़ान के समय ही उसे पता चलता था कि उसके हवाई जहाज (Model) की शक्ति आवश्यकता से कम ही थी। इस प्रकार लगन के साथ नये नये नमूने अविरत बनाते रहने पर एकाएक उसकी सफलता के चिन्ह दिखायी दिये। एक विमान चालू करते ही जमीन छोड़कर ऐसा उड़ा कि सीधे प्रयोगशाला के छत पर जाकर ही टकराया। सिकोर्स्कि द्वारा बनाये गये उस 'मजेदार-खिलौने' को देखकर उसके पिता के वैज्ञानिक मित्र उस पर बेहद खुश हुये और इस प्रकार उसकी कल्पकता प्रशंसनीय सिद्ध हुई।

इगोर सिकोर्कि की यह कल्पकता उत्तरोत्तर बढ़ते गई। अंत में अर्ध-शताब्दि के बाद (१९५० के लगभग) तो उसने अलौकिक प्रतिष्ठा प्राप्त की। उपहास करनेवाले उसकी सफलता देखकर खामोश हो गये। उनमें से अनेक तो खुले आम उसकी प्रशंसा करने लगे और बाद में अनेक संशोधक उसका उदाहरण सामने रख उसी रास्ते से चलने लगे।

किसी समय प्रत्यक्ष में असंभवप्राय लगनेवाली हेलिकॉप्टर की कल्पना अब सत्य सृष्टि में दिखाई देने लगी और व्यवहार में उपयोगी सिद्ध होने लगी। उसका उपयोग न केवल शांति-काल में वरन् अशांति-काल में भी हो सकता है। इसका सारा श्रेय पूर्णतः सिकोर्स्कि को ही है।

सन् १९५० में "कोरियन" युद्ध-काल में इसी हेलिकॉप्टर ने महत्वपूर्ण कार्य किया है और अपना वर्तमान नाम 'एंजल्' (Angel) को सार्थक बनाया। यह चलाने में हाथ-गाड़ी के समान सरल है। प्रतिवर्ष विमान-विद्या में अनमोल प्रगति करने के हेतु दिया जानेवाला पारितोषक इगोर सिकोर्स्कि को ही दिया गया। अमेरिका के राष्ट्रपति की ओर से (President: "Truman" प्राप्त हुआ वह पारितोषक वस्तुतः सिकोर्स्कि के अथक प्रयासों का ही फल है।

बचपन से ही विज्ञान के प्रति लगन

'सिकोर्स्कि बचपन से ही विज्ञान के पीछे पागल था'--यह हमें उसके जीवन-कार्य के इतिहास से स्पष्ट दिखाई देता है। उसके पिता रूस के 'कीव्ह' (Kiev) नामक शहर में प्राध्यापक थे। सिकोर्स्कि ने अपने बचपन में ही उनसे भूगर्भशास्त्र, विद्युत्-शास्त्र, विज्ञान आदि विषयों के संबंध में अनेक रोचक प्रश्न पूछकर काफी ज्ञान प्राप्त कर लिया था। इतना ही नहीं तो उसने अपने ज्ञान का प्रत्यक्ष उपयोग कर-विद्युत् मसाले (Batteries), विद्युत् चालक-यंत्र (Electric Motor), भाप की सहायता से चलनेवाली मोटर-साइकिल आदि छोटी किन्तु अनेक उपयोगी वस्तुएं बनाने के प्रयास भी किये। इसी बीच उसकी मां ने उसे एकबार सहज ही एक भूतपूर्व असामान्य वैज्ञानिक-'लेओनॅर्डो डॅ विन्सि' द्वारा चित्रित 'हेलिकॉप्टर' दिखाया। बस यही उसे इस दिशा में प्रवृत्त करने का कारण बना। सतत २८ वर्ष उसने अपनी इस महत्वाकांक्षा को लेकर कार्य किया और यह दीर्घ कालावधि उसने विमानों की रचना (The design of giant fixed-wing aeroplanes) करने में ही व्यतीत की। 'हेलिकॉप्टर' का मानों उसपर भूत ही सवार था। आज नहीं तो कल वह अवश्य अपने प्रयोग में सफल होगा--इसी विश्वास को लेकर उसने अपना कार्य किया।

१९०८ में सिकोर्स्कि की आयु लगभग १८ वर्ष की रही होगी। उन्ही दिनों एक समाचार उसके पढ़ने में आया जिसमें पांच वर्ष पूर्व 'राइट बंधु' ने एक विमान की रचना कर आद्योड्डान करने का विक्रम दिखाने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्ता दी गयी थी। कल्पक-बुद्धिवाले सिकोर्स्कि के लिये इतना उत्तेजन पर्याप्त था। वह तुरन्त 'पेरिस' रवाना हुआ। उन दिनों विमान-शास्त्र-सम्पन्नता की दृष्टी से 'पेरिस' प्रथम श्रेणि में गिना जाता था। वहां कुछ सप्ताह रहकर सिकोर्स्कि ने यथासंभव ज्ञान प्राप्त कर लिया और उस शास्त्र में पारंगत बनकर ही लौटा।

असफलता में भी संतोष माननेवाला सिकोर्स्कि

यद्यपि उसके शिक्षक ने उसे समझाकर कहा था कि वह 'हेलिकॉप्टर' के चक्कर में फंसकर समय व्यर्थ न खोये। किन्तु सिकोर्स्कि ऐसे उपदेश कब माननेवाला था? वह अपनी ही धुन में मस्त था। वह २५ हॉर्स-पावर की एक मोटर तथा कुछ खुले पुर्जे (Parts) खरीदकर ही अपने गांव लौटा।

आते ही वह 'हेलिकॉप्टर' के निर्माण कार्य में जुट गया। १९०९ में सिकोर्स्कि का पूर्व-संकलिपत हवाई जहाज अत्यन्त अव्यस्थित एवं बेढंगे आकार में अस्तित्व में आया। एक ही अक्ष पर (Vertical axis) लगाये गए दो पंखे (Propellers) जब विरुद्ध दिशा में घूमने लगे तब सिकोर्स्कि उस ओर कितनी आशा भरी दृष्टि से देख रहा था! किन्तु दुर्भाग्य से वह विमान जांच करने में टूट गया।

आपका स्वास्थ्य

हिन्दी की एक मात्र

स्वास्थ्य सम्बन्धी मासिक पत्रिका

"आपका स्वास्थ्य" आपके परिवार का साथी है।

"आपका स्वास्थ्य" अपने क्षेत्र के कुशल डाक्टरों द्वारा सम्पादित होता है।

"आपका स्वास्थ्य" में अध्यापकों, अभिभावकों, माताओं और देहातों के लिए विशेष लेख प्रकाशित होते हैं।

आज ही ६ रु. वार्षिक मूल्य भेजकर ग्राहक बनिये।

व्यवस्थापक,

आपका स्वास्थ्य - बनारस १.

पनडुब्बी के आधार पर हेलिकॉप्टर

अभी हाल ही में जमीन, पानी, बर्फ, हिमवर्षा क्षेत्र व दलदलमय प्रदेश इन सभी क्षेत्रों में उपयुक्त एक नये हेलिकॉप्टर का तथा पानी में उतरने की उसकी क्षमता का सफल प्रदर्शन किया गया। टर्बाइन की शक्ति पर चलने-वाले "सिकोर्स्कि एस-६२" हेलिकॉप्टर ने वाशिंगटन के एक खारे पानी के सरोवर में उतरते समय तथा उस पर उडान करते समय पनडुब्बी का अनुसरण किया। इस हेलि-कॉप्टर का नाम सिकोर्स्कि रखा गया। आप एक अमेरिकी हैं किन्तु आपका जन्म रशिया में हुआ। आप विमान-शास्त्र के इंजिनियर हैं। हेलिकॉप्टर, क्लिपर, फ्लाइंग बोट तथा पेट्रोल बॉम्बर्स आदि तैयार करने में आप अग्रेसर हैं। उनके दीर्घोद्योग व गवेषणासंबंधी जानकारी आप इस लेख में पढिये।

इस घटना से सिकोर्स्कि निराश तो नहीं हुआ वरन् हवा में उड़ने के हेतु उसके हेलिकॉप्टर द्वारा की गयी छटपटी देखकर ही उसे काफी संतोष हुआ। और पुनः उसने नया निर्माण कार्य प्रारंभ किया।

बड़े विमान की ख्वाहिश पूरी नहीं हुयी!

सिकोर्स्कि के पिता वास्तव में गुणग्राहक थे। वे अपने पुत्र के प्रयत्नों की प्रशंसा करते। पुत्र की अपने कार्य के प्रति निष्ठा देखकर उन्होंने उसे तात्काल और दो एंजिन बनाने के लिये कहा। शीघ्र ही १ वर्ष में दूसरा हवाई जहाज भी तैयार हो गया। उसका वजन लगभग ४०० पौंड था। यद्यपि उतना वजन उठाकर ऊपर उड़ने की शक्ति उस मशीन में थी तथापि उससे अधिक शक्ति की मोटर तथा विभिन्न प्रकार के पुर्जों की उसे आवश्यकता थी। इसके बिना प्रयोग सफल होना प्रायः असंभव ही था। किन्तु साल-ढेढ़साल में किए गए खर्च के कारण सिकोर्स्कि का परिवार आर्थिक कठिनाइयों में फंसा था और इसी से उसने बड़ी मुश्किल से कदम पीछे लिये और छोटे विमान (small biplanes) बनाने के कार्य में वह जुट गया।

सिकोर्स्कि के सहयोगी

प्रयत्नवादी एवं मिलन-सार स्वभाव के कारण सिकोर्स्कि को निर्माण कार्य में अनेक शक्तियों की सहायता प्राप्त हुई। वे सहयोगी कोई धनवान नहीं थे। कोई प्लंबर, कोई साइकिल सुधारनेवाले थे, तो कोई स्कूलों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़नेवाले मित्र थे। उनमें से कई तो बिना-मूल्य काम करनेवाले थे। इन सभी के सहयोग से विमान के अनेक पुर्जे उन दिनों उसे प्राप्त हो सके। "S-5" नामक विमान के पूर्ण होने पर उन सभी को अपने प्रयत्नों की सफलता का अनुभव हुआ। विमान बनते ही शीघ्र उड़ान के हेतु उसके प्रयोग शुरू हुये। उनके सौभाग्य से यह प्रयोग भी सफल रहा। अब इगोर सिकोर्स्कि 'पाइलट' बन चुका था। शीघ्र ही उसे 'सैनिक-प्रदर्शन' में अपनी कुशलता का खुला प्रदर्शन करने की संधि प्राप्त हुई। इस निमंत्रण को स्वीकार कर सिकोर्स्कि ने १,५०० फुट की ऊंचाई पर से हवाई-यात्रा का कार्यक्रम लगभग १ घंटे तक दिखाया और काफी लोकप्रियता प्राप्त की। बाद में पैसा कमाने की दृष्टि से भी उसने इसी भांति अनेक कार्यक्रम किये।

विश्व-विक्रम में सर्वश्रेष्ठ

इसके बाद शीघ्र सिकोर्स्कि अपने छठवें विमान की तैयारी में लगा। १०० अश्व-शक्ति की मोटरवाले उस विमान के तैयार हो जाने पर सिकोर्स्कि ने दो यात्रियों सह उसमें उड़ान की और ७० मील प्रति घंटा की गति से विमान चलाकर उसने विश्व-विक्रम प्रस्थापित किया।

होनहार व्यवसायियों का अचूक मार्गदर्शन याने

व्यवसाय की सफलता

अर्थात्

अपने व्यवसाय में कैसे सफल हों?

लेखक-श्री द. वा. बर्वे, बी. ए., व्यापारतज्ञ.

मूल्य रु. २·५०; रजि. पो. से रु. ३·२१ तथा वी. पी. से रु. ३·२७। विक्रीकर अतिरिक्त।

--प्रस्तुत पुस्तक में--

बरताव के नियम, लोकप्रिय होने की कुंजी, शत्रुता टालने के उपाय, वादविवाद के दुष्परिणाम, गलती तुरन्त कबूल करिये, बोलने तथा बरताव में नम्रता रखिये, सॉक्रेटीस का उपदेश, दूसरों को बोलने का अवसर दीजिये, सहयोग, प्राप्त करने की कला, 'निवेदन' से कार्य कैसे साधें, सौजन्य का प्रभाव, दूसरों की गलतियाँ बताने का ढंग, सुखी गृहजीवन का रहस्य आदि संबंधी जानकारी सचित्र और उदाहरणसहित दी है। अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करा लें।

— उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १।

सिकोर्स्कि अब अपने ध्येय-पूर्ति के लगभग निकट पहुंच चुका था। कुछ ही दिनों में उसे एक सुअवसर भी प्राप्त हुआ। उस समय वह केवल २२ वर्ष का ही था। उसे 'पेट्रोग्राड' की एक फर्म से निमंत्रण प्राप्त हुआ। उक्त फर्म ने सिकोर्स्कि द्वारा बनाये गये विमानों की भांति अन्य विमान तैयार करने के सारे विशेषाधिकार (Exclusive rights) खरीद लिये। साथ ही उसे प्रमुख डिझाइनर-कम्-इंजीनियर बनने की संधि भी मिली। अब सिकोर्स्कि की आर्थिक स्थिति काफी सुधर गयी। उसने केवल दो वर्षों में ही अपने परिवार को ८ हजार पौंड की रकम दी।

चार-मोटरों का विमान

शीघ्र ही सिकोर्स्कि ने चार मोटरोंवाला एक विमान तैयार किया जिसमें यात्रियों के लिये उचित व्यवथा भी थी। इसका नाम 'ग्रॅन्ड' (Grand) रखा गया जो सही अर्थों में ठीक ही था। विश्व में चार-मोटर-युक्त विमान यह पहला ही था। १ पाइलट सहित आठ व्यक्तियों को लगभग दो घंटों तक लगातार वह हवाई-यात्रा करने में समर्थ था। तत्कालीन राजा झार उक्त प्रदर्शन देखने स्वयं पहुंचे थे। और वे प्रदर्शन को देखकर इतने खुश हुये कि उन्होंने अपने पास की एक सोने की घड़ी सिकोर्स्कि को पारितोषक के रूप में दे दी। सिकोर्स्कि के खुशी का उस समय कोई ठिकाना न रहा।

मातृभूमि से बिदाई

उसके बाद कुछ दिनों में प्रथम महायुद्ध शुरू हुआ। यह काल सिकोर्स्कि को अपने उद्योग के लिये विशेष लाभकारक प्रतीत हुआ। उसने उन दिनों चार एंजिनोंवाले लगभग ७५ लड़ाकू विमान (Bombers) तैयार किये। जर्मनी पर अनेक आक्रमण कर वे उड़ने लगे। उसके बाद हुयी लाल-क्रांति (Red-Revolution) के कारण सिकोर्स्कि को सरकारी ऋणपत्र (Govt. Bonds), आदि में लगी हुयी लगभग १,५०,००० पौंड कीमत की पूंजी का परित्याग कर अमेरिका की राह लेनी पड़ी। मार्च १९१९ में सिकोर्स्कि जब न्यूयार्क पहुंचा तो उसके पास केवल २०० पौंड की की पूंजी शेष थी। उस समय उसका 'अंग्रेजी' का ज्ञान कम था और वहां न उसका कोई मित्र ही था। अपने तीसवें वर्ष में सिकोर्स्कि 'जितना मिलेगा' उतने पर ही अपना गुजर-बसर चलाने के हेतु अग्रसर हुआ।

सप्ताह में २ पौंड किराये का एक कमरा उसने लिया तथा स्वयं का खर्चा भी प्रतिदिन ५ शिलिंग ६ पेंस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हो जाता था। किन्तु विमानों के काम की उसकी प्यास अभी बुझी नहीं थी।

शीघ्र ही सिकोर्स्कि को पास के ही एक नाइट स्कूल में देशांतरित (Immigrants) रूसी विद्यार्थियों को गणित (Maths) सिखाने की नौकरी मिली। जब उसके देशवासियों को सिकोर्स्कि के उक्त इतिहास का पता चला तो उन्होंने उसे विमान–विद्या, नभ–शास्त्र आदि पर भाषण देने का अनुरोध किया। सिकोर्स्कि ने कहा कि वैमानिक क्षेत्र में निश्चित् रूप से प्रगति होगी किन्तु इसके लिये प्रयत्न किया जाना आवश्यक है– उसका भाषण सुनकर अनेक विद्यार्थी प्रोत्साहित हुए और उन्होंने सिकोर्स्कि को इस कार्य में अपना सहयोग देने की तैयारी दिखायी। इसके सिवा सिकोर्स्कि चाहता भी क्या था?

तदनुसार एक निर्वासित रूसी कृषक ने सिकोर्स्कि को अपने निवास स्थान पर एक वर्कशॉप खोलने की व्यवस्था कर दी। और शीघ्र सिकोर्स्कि अपने कार्य में पुनः जुट गया।

सिकोर्स्कि–एरो–इंजीनियरिंग कार्पोरेशन

१९२३ में केवल ३५० पौंड की पूंजी पर "सिकोर्स्कि–एरो–इंजीनीयरिंग कार्पोरेशन" की स्थापना की गयी तथा २ एंजिनों पर चलनेवाले यात्री विमान का निर्माण-कार्य आरंभ हुआ। रूसी अन्वेषक व इंजीनियर–मायकेल व सर्जग्लॅहरेफ् तथा कीव्ह में उसके साथ अध्ययन करनेवाला मित्र–मायकेल् ब्यूव्हिड् सिकोर्स्कि को उक्त कार्य में अपना सहयोग दे रहे थे। उनका साप्ताहिक वेतन हरेक को ५ पौंड निश्चित् किया गया। १२ शिलिंग ६ पेन्स में एक पुरानी ड्रिलिंग मशीन खरीदी गयी। पुरानी मोटर गाडियों के बंपर खरीद कर अॅल्यूमिनम की आवश्यकता पूर्ण की गयी। उन्हें काटने के हेतु कैंचियां भी तैयार कर ली गयीं। बेड्–स्प्रिंग्ज् से अँगल आयर्नस् निकाले गये। इसके सिवा अन्य सामग्री 'वुलवर्थ' नामक व्यक्ति से खरीदी गयी।

काम करते समय यदि कोई भाग अनुपयोगी सिद्ध हुआ तो सिकोर्स्कि तत्काल नयी योजना बनाकर परिणाम की खोज करता था। इस प्रकार लगभग २० सप्ताह तक श्रमिकों ने सतत बिना–मूल्य परिश्रम किये। उन दिनों खाद्यान्न स्थिति भी बड़ी विकट थी। इस कारण अधिक विचार न करते हुए सिकोर्स्कि ने अपना अनमोल पारितोषक–सोने की घड़ी–गिरवी रख कर उन श्रमिकों का वेतन चुका दिया।

तरक्की करने के लिये

उद्योग - व्यापार पत्रिका

अवश्य पढ़िये, क्योंकि

देश में उद्योग और व्यापार को आगे बढ़ाने के लिये क्या हो रहा है और आप इससे किस तरह फायदा उठा सकते हैं? देश में क्या क्या चीजें और कितने परिमाण में कहां कहां बन रही हैं और आप क्या बना कर अच्छी कमाई कर सकते हैं? तरह तरह के व्यापार की देश–विदेश में क्या दशा है? पंच–वर्षीय योजना से हमारी क्या उन्नति हो रही है? - ये सभी प्रश्न ऐसे हैं जिनके उत्तर आपको अवश्य जानना चाहिये। और इन सब की जानकारी पाने का अमूल्य साधन है–

उद्योग -- व्यापार पत्रिका

इसलिये आप ६ रु. साल भर के लिये आज ही भेजकर ग्राहक बन जाइये।

नमूना पत्र लिखकर मंगाइये।

एजेन्टों को भरपूर कमीशन। पत्रिका विज्ञापन देने का अच्छा साधन है।

सम्पादक : उद्योग व्यापार पत्रिका,
वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ ही दिनों में वहां का पहला विमान उड़ने के लिए तैयार हो गया। खुशी के साथ सारे श्रमिक उस विमान में बैठे। सिकोर्स्कि अत्यन्त उदार हृदय का था अतः वह उन सभी को विमान में लेकर उड़ा किन्तु ओव्हर-लोड़ हो जाने के कारण वह विमान तत्काल जमीन पर आकर गिरा। सौभाग्य से किसी को गंभीर स्वरूप की चोटें नहीं पहुंची। किन्तु सिकोर्स्कि इस घटना से काफी निराश हो गया। उसे इस बात का भय हुआ कि संभवतः आगे ये लोग उसकी मदद न करेंगे। पर ऐसा नहीं हुआ।

उसके सहयोगी अभी भी उस पर उतनी ही श्रद्धा रखते थे जितनी कि पहले थी। उन लोगों ने पुनः ८०० पौंड की पूंजी एकत्रित की। वह विमान पुनः सुधारा गया और बाद में उसी विमान में १४ यात्रियों को लेकर प्रति घंटा १०० मील की गति से सफल यात्रा की गयी। अब सिकोर्स्कि के विमानों की मांग बढ़ने लगी और वह भी पुनः नये विमान बनाने के कार्य में जुट गया।

"S-38" नामक विमान तैयार होने पर उसे काफी लोकप्रियता प्राप्त हुयी। ब्रिजपोर्ट के (कॉनेक्टिकट) कारखाने से सिकोर्स्कि एवं उसके सहयोगियों के द्वारा लगभग १०० विमान बनकर तैयार हुए। उनमें १० यात्रियों के बैठने की व्यवस्था थी। पश्चिम-गोलार्ध में दूर-दूर से डाक व यात्रियों को लाने-ले जाने में "S-38" नामक विमान का जो उपयोग हुआ है वह निस्संदेह अतुलनीय ही कहा जा सकता है। उसके बाद "सिकोर्स्कि फ्लाइंग क्लिपर्स" नामक संस्था अस्तित्व में आयी।

सिकोर्स्कि-फर्म बाद में 'यू. ए. सी.' (United Aircraft Corporation) नामक संस्था की एक शाखा बनी। सिकोर्स्कि का नाम सुविधाजनक हवाई-यात्रा के अर्थ में रूढ़ हो गया।

हेलिकॉप्टर युग

ये सारी घटनाएं एक के बाद एक हुईं किन्तु सिकोर्स्कि द्वारा संकल्पित "हेलिकॉप्टर" अभी तक तैयार न हो सकने के कारण उसे अभी भी चैन नहीं थी। समय निकालकर उसने तत्संबंधी सुधारों को लेखबद्ध किया तथा परवाना (Patents) भी ले लिया। १९३८ में उसने अपनी सारी योजनाएं (Plans) 'यूनाइटेड-एयरक्रॅफ्ट' के वरिष्ठ अधिकारी को दिखाईं। उसके एक वर्ष पूर्व जर्मनी के एंटोनी फोकर ने उसी आधार पर बनाया गया हवाई-जहाज (Rotary Wing Air-Craft) उड़ाकर दिखाया था किन्तु यंत्रज्ञों की दृष्टि में वह अब तक दोष-युक्त ही था। इस पर भी युनाइटेड कं. ने ३५० पौंड की पूंजी प्रयोग के हेतु खर्च की।

एक ही वर्ष में सिकोर्स्कि ने पूर्व-कल्पित एक विलक्षण 'हेलिकॉप्टर' विमान स्थल पर लाया। कुछ गिट्ठा-सा वह जहाज अनेक नलिकाओं तथा एक मोटर व ऊपरी भाग पर घूमनेवाले (Horizontal) पंखो से युक्त था। यह वजनी वाहन किस भांति उड़ेगा इसकी कल्पना केवल उसके निर्माता को ही थी। उसके उड़ान की शिक्षा सरलता से प्राप्त हो सके इस हेतु उसे सांकल व वजनी गोल बांधने की व्यवस्था की गयी। इस कारण वह जमीन से केवल ३ फुट की ऊंचाई से जा सकने योग्य बना।

उक्त प्रयोग करते समय अनेक बार हवाई जहाज बिगड़ने अथवा टूटने के अवसर आए किन्तु सिकोर्स्कि हिम्मत न हारते हुए उसे सुधारते ही गया व अधिकाधिक ऊंचाई से उसे उड़ाने के प्रयास में लगा रहा। अपने इस कार्य में उसे अभूतपूर्व सफलता मिलने लगी- धीरे धीरे वृक्षों के सिरों से छूते हुए, हवा में स्थिर रहते हुए,

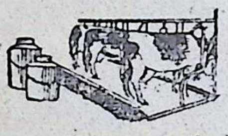

डेयरी का धंधा

मूल्य रु. २·५०; मनीऑर्डर से रु. ३·२१ भेजने पर पुस्तक रजि. पोस्ट से भेजेंगे। वी. पी. से मंगाने के लिये रु. ३·२७ लगेंगे। विक्रीकर अतिरिक्त।

प्रस्तुत पुस्तक में

डेयरी के लिये स्थान का चुनाव, अधिक दूध देनेवाली गाय-भैंसों की पहिचान, सांड का महत्त्व तथा उसका चुनाव, मवेशियों की खुराक, मवेशियों की सामान्य बीमारियाँ तथा उनकी पहिचान और उपचार, गाय-भैंसों की सुलभ प्रसूति, 'आदर्श डेयरी' की योजना, दुग्ध-परीक्षा, दूध के घटक और उनका कार्य, गाय-भैंस दुहना, दूध की हिफाजत, मशीन से क्रीम, मक्खन, घी आदि निकालना, 'स्कीम्ड' दूध का उपयोग तथा दूध से केसीन और उसका उपयोग आदि विषयों पर वैज्ञानिक तथा व्यवहारोपयोगी जानकारी दी है जो हमारे किसान-बन्धु तथा व्यवसाइयों को आर्थिक लाभ बढ़ाने के लिये उपयुक्त है। आज ही एक प्रति मंगा लें।

—उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं भी उतर जाना तथा हवा में जमीन से सीधे लम्ब रूप उड़ान लेना आदि आवश्यक कार्यक्षमता भी उसमें आने लगी।

१९४१ में उसके इन 'हेलिकॉप्टरों' की मांग यू. एस. आर्मी की ओर से की गयी। इसके बाद लगभग ८०० तथा इससे कुछ हलके 'हेलिकॉप्टरों' का निर्माण किया गया। सिकोर्स्कि के सिवाय अन्य वैज्ञानिकों ने भी अपने विभिन्न 'हेलिकॉप्टरों' का निर्माण किया और इस प्रकार 'हेलिकॉप्टर-व्यवसाय' में काफी प्रगति होने लगी। अब तो इस वाहन का उपयोग न केवल शांति-काल में वरन् युद्ध-काल में भी हो सकता है–इस बात का अनुभव होने लगा है। इतना होने पर भी सिकोर्स्कि बड़े विनय के साथ कहता है कि–"अभी तो हेलिकॉप्टर युग प्रारम्भ हुआ है।"

'जेट ट्रांस्पोर्ट लाइनर्स' विमानों के मार्ग काफी बड़े होने के कारण उनका विमानस्थल शहर के निकट रहना असंभव है। ऐसे समय पर यात्रियों के लिये बस-सर्व्हिस के रूप में हेलिकॉप्टर का उपयोग किया जा सकता है। और इसलिये १० यात्रियों को ले जानेवाला 'S-55' नामक प्रथम हेलिकॉप्टर सिकोर्स्कि ने तैयार किया। अमेरिका द्वारा सर्टिफिकेट प्राप्त होने पर उसका काफी प्रचार भी हुआ।

विमान व हेलिकॉप्टर का समन्वय

१९५२ के एक वर्ष में सिकोर्स्कि की १०० टन वाले हेलिकॉप्टर को तैयार करने की तीव्र मनीषा थी। पंखों के सिरों पर लगाये गये 'जेट पॉवर' से चलनेवाले, भारी वजन ढो सकनेवाले तथा ऊंचे ऊंचे पर्वतों को अत्यन्त वेग से पार करनेवाले–ऐसे एक बड़े मालवाहक विमान को वह बनाना चाहता था। अमेरिकी सरकार ने उसे इस कार्य के हेतु आवश्यक आर्थिक सहायता भी दी और सिकोर्स्कि ने अपना यह नया अभियान शुरू कर दिया। इस वाहन की कार्यक्षमता हेलिकॉप्टर और विमान की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं का एकीकरण था। विमानों के वेग तथा हेलिकॉप्टर की ऊर्ध्वगति में समन्वय करना था। अनेक लोगों को यह कार्य असंभव सा प्रतीत हुआ। किंतु सिकोर्स्कि को अपने कार्य में पूरा विश्वास था और अपने अन्य सहयोगियों को भी 'असंभव' प्रतीत न हो इस हेतु उसने आश्वासन देनेवाला एक महत्वपूर्ण निम्न संदेश लिखा और वह हमेशा उनकी आंखों के सामने रहे, ऐसी व्यवस्था की--

"According to recognized aerotechnical tests, the bumble-bee cannot fly because of the shape and weight of his body in relation to the totel wing area. The bumble-bee doesn't know this, so he goes ahead and flies any way !"

★ विज्ञान प्रगति ★

घरेलू और छोटे उद्योगों के लिये अनुसंधान-समाचार-सेवा उद्योगों पर लेख—

★ गवेषण संस्थाओं का परिचय ★ आविष्कार सम्बन्धी सूचनाएँ

★ वैज्ञानिक साहित्य का विमर्श ★ पेटेन्ट विधियों के वर्णन

★ अनुसंधान-कर्मियों द्वारा प्रश्नों के उत्तर

देश के औद्योगिक विकास में रुचि रखनेवाले व्यक्तियों के लिये आवश्यक, टेक्निकल संस्थाओं, स्कूलों और वाचनालयों के लिये अनिवार्य।

वार्षिक मूल्य ५ रुपये एक प्रति का आठ आना

पब्लिकेशन्स डिवीजन,

कौंसिल ऑफ साइंटिफिक एण्ड इंडस्ट्रियल रीसर्च

ओल्ड मिल रोड, नई दिल्ली—२।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस-सिपाही की नौकरी
(Police Career)

लेखक -श्री रघुनाथ हडकर, एम्. ए.

[सर्वसामान्य जनता की एवं उसके जानमाल की सुरक्षा का उत्तरदायित्व सामान्यतया पुलिस की कर्त्तव्य-दक्षता पर निर्भर है। चोरी, झगडे, मारपीट आदि होने पर अथवा किसी भी प्रकार किसी व्यक्ति ने दूसरे को कष्ट पहुँचाने अथवा सताने की धमकी दी तो इन सब बातों की शिकायतें पुलिस थाने में दर्ज की जाती है। मार्ग में वाहनों की भरमार होने पर, गुंडों द्वारा दंगाफिसाद होने पर अथवा कोई दुर्घटना हो जाने पर या किसी प्रकार नागरिकों के जीवन को खतरा पहुँचने की संभावना होने पर पुलिस तत्काल उस स्थान पर पहुँच जाती है अथवा उन्हें वहां बुलवाया जाता है। फलतः सामान्य जनता व पुलिस के बीच अत्यन्त निकट का संबंध प्रस्थापित होता है। परिणाम स्वरुप जनता में पुलिस के सम्बन्ध में भय के साथ साथ कुतूहल भी होता है। कुछ लोगों की तो पुलिस में भर्ती होकर जन-हित कार्य करने तथा जनता की सेवा करने की इच्छा निर्माण हो जाती है। ऐसे लोगों को पुलिस विभाग में भर्ती होने के लिए कौनसी शर्तें हैं-यही महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत लेख में दी गयी है।]

सशस्त्र एवं निःशस्त्र पुलिस

पुलिस विभाग में सबसे निचली श्रेणि पुलिस सिपाही की ही होती है। इन सिपाहियों के सशस्त्र (Armed) व निःशस्त्र (Unarmed)-ये दो विभाग बनाये जाते हैं। दोनों को थोड़ा पृथक् कार्य दिया जाता है। सशस्त्र सिपाही के लिए शिक्षा कम रही तो भी चल सकेगा। निरक्षर व्यक्ति भी सशस्त्र-पुलिस में भर्ती हो सकता है।

भर्ती की शर्तें

आयु--१८ से २२ वर्ष।

सेना में काम किये व्यक्ति के लिए आयुमर्यादा कुछ ढीली (Relax) कर दी जाती है। ऐसे लोगों को १० वर्षों की छूट मिलती है अर्थात् वे ३२ वें वर्ष की आयु तक इस विभाग में भर्ती हो सकते हैं। पिछड़ी जाति वालों के लिए भी ५ वर्षों की रियायत दी गयी है-वे २७ वर्ष की आयु तक इस विभाग में भर्ती हो सकते हैं।

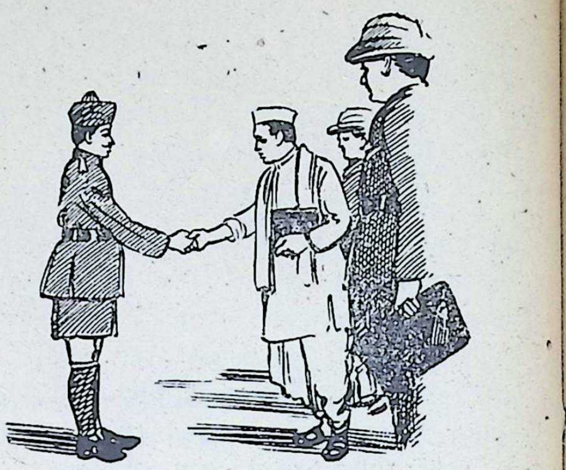

शिक्षा--(१) मराठी, हिन्दी अथवा अन्य किसी भी प्रादेशिक भाषा में (Regional) ६ वीं अथवा अंग्रेजी की दूसरी कक्षा तक कम से कम शिक्षा होनी चाहिये। आजकल तो एफ्. वाय्. अथवा इंटर तक शिक्षा प्राप्त लोगों को निःशस्त्र पुलिस विभाग में सीधे हवालदार बना दिया जाता है।

(भूदल) आर्मी, (नौदल) नेव्ही व (हवाई दल) एयर कोर्स की निम्न परीक्षाएं देनेवाले भी पुलिस विभाग में भर्ती हो सकते हैं--

आर्मी--(1) Indian Army – Special
(2) 1st Class – (English) Indian Army
(3) 2nd Class – (English) Indian Army
(4) 3rd Class – (English) Indian Army
(5) 1st Class Army.

नेव्ही--इंडियन नेव्ही की उच्च पाठ्यक्रम की परीक्षा (Higher Education Test).

इंडियन एयर फोर्स--लीडींग एअर क्रॅफ्टमन पद प्राप्त होते समय की शैक्षणिक परीक्षा (Educational Test for reclassification to Leading Air Craftmen)। एस्. एस्. सी. अथवा मॅट्रिक पास लोगों को, पुलिस में अन्य उम्मीदवारों की अपेक्षा ३ वर्ष की वृद्धि (Seniority) दी जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊंचाई--उम्मीदवार की ऊंचाई कम से कम ५ फुट ४ इंच हो।

सीना—बिना फुलाये सीना कम से कम ३१ इंच रहना चाहिये तथा कम से कम २ इंच फूलना चाहिये।

वजन--वजन ११० पौंड से अधिक होना चाहिये।

हरेक उम्मीदवार भारतीय नागरिक हो यह सबसे प्रमुख शर्त है। जिस राज्य में नौकरी करनी है उस राज्य की नागरिकता (domicile) उसे अनिवार्यतः प्राप्त करनी होती है। पाकिस्तान के मुसलमानों को छोड़कर अन्य लोग जो विभाजन के पश्चात् अपना मूल निवासस्थान छोड़कर भारत में स्थायी रूप से रहने के हेतु आये हैं उन्हें भी पुलिस में भरती होने का अवसर मिलता है।

अयोग्य उम्मीदवार

किसी भी अपराध में यदि किसी व्यक्ति को सजा हुयी हो तो उसे पुलिस विभाग में भरती नहीं किया जाता। इसके बावजूद भी जिस अपराध में व्यक्ति की नीति एवं असामाजिक व्यवहार का संबंध नहीं हो तो ऐसे अपराधियों को भी पुलिस में भर्ती का अवसर दिया जाता है।

पिछड़ी जातियों के लिये विशेष सुबिधायें

पिछड़ी जातियों के लोगों के लिये निम्न प्रमाण में स्थान संरक्षित रहते हैं–

(१) Scheduled Castes : ६ प्रतिशत

(२) Scheduled Tribes : ७ ,,

(३) Other Backward Communities : ९ ,,

उम्मीदवारों की परीक्षा

भर्ती के पूर्व उम्मीदवार के सामान्य ज्ञान (General knowledge) की परीक्षा ली जाती है। इस परीक्षा में पास होनेवाले उम्मीदवारों को ही भर्ती किया जाता है। साथ ही उनकी चिकित्सा-जांच (Medical Examination) भी की जाती है। यह सब होने पर चुने गये उम्मीदवार को उस विभाग के विशेष प्रशिक्षण के हेतु भेजा जाता है।

हरेक उम्मीदवार को १ वर्ष तक आगे दिये अनुसार कानून की शिक्षा, सामान्य ज्ञान, कवायत परेड व मस्केट्री आदि की शिक्षा दी जाती है--

(१) प्रारंभ में ४ माह तक डिस्ट्रिक्ट हेड क्वार्टर्स में

(२) बीच के काल में ६ माह तक प्रत्यक्ष पुलिस–स्टेशन पर

(३) व अन्तिम दो माह में पुनः डिस्ट्रिक्ट हेड क्वार्टर्स में

बाद में उसकी परीक्षा ली जाती है। इस परीक्षा में पास होना अनिवार्य है। असफल उम्मीदवारों को पुलिस में भर्ती नहीं किया जाता। उन्हें निकाल दिया जाता है। ट्रेनिंग शुरू होते ही वेतन भी शुरू हो जाता है।

वेतनमान--रु. ३५-½-४०। इसके सिवा प्रतिमाह

कोई भी शिक्षित–स्त्री या पुरुष–

डॉक्टर बन सकता है

शिक्षित स्त्रियों या पुरुषों के लिये सीखने योग्य माननीय व्यवसाय

होमिओपॅथिक, बायोकेमिक, क्रोमोपॅथिक, इंजेक्शन ट्रेनिंग व फॅमिली प्लॅनिंग आदि की शिक्षा की सुविधा और अन्य चिकित्सा पद्धतियों को वैशिष्टय अल्प समय तथा अल्प खर्च में सिखाया जाता हैं। कहीं भी डॉक्टरी व्यवसाय माननीय रूप में हो सके इस तरह शिक्षा दी जाती है। कंपौंडर, नर्स, शिक्षकों, शिक्षिकाओं तथा अन्य शिक्षित लोगों के लिये उत्तम अभ्यासक्रम। डिप्लोमा के बिना प्रॅक्टिस करनेवालों को परीक्षा में प्रायवेट बैठने की सुविधा। आज तक कई एक लोगों ने इस पाठ्यक्रम की सहायता से अपना जीवन स्वावलंबी बना लिया है। पूर्ण विवरण मंगवाने के लिये रु. ०·१५ के डाक तिकिट भेजें।

मध्यप्रदेश होमिओपॅथिक ट्रेनिंग इन्स्टिट्यूट,
C/o डॉ. नालमवार. ३६२, सुदाम रोड,
नवीन दत्तमंदिर के सामने, इतवारी, नागपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५ रु. महंगाई भत्ता। यह वेतनमान बम्बई शहर छोड़कर शेष राज्य में लागू है। बम्बई शहर में वेतनमान–४५–१–५५ रु. तथा प्रतिमाह महंगाई भत्ता ४० रु. है।

सिपाहियों के लिये सरकार की ओर से निवास व्यवस्था की जाती हैं और यदि सरकारी निवासस्थान न हो तो मकान भत्ता दिया जाता है।

५ वर्ष की नौकरी के बाद सिपाहियों की पदोन्नति के लिये एक परीक्षा ली जाती है। उक्त परीक्षा के विषय निम्न हैं--

(१) पुलिस के कर्तव्य (Police duties) संबंधी पर्चा	=	१०० गुण
(२) पुलिस के कार्यो से सम्बन्धित विषयों का सामान्य ज्ञान	=	५० गुण
(३) मौखिक परीक्षा	=	५० गुण

इस परीक्षा के सिवाय सिपाही के काम के रिकार्ड पर ५० गुण रखे जाते हैं। इस परीक्षा में ८० प्रतिशत से अधिक गुण प्राप्त करनेवाले की पदोन्नति (Promotion) अति शीघ्र (Accelerated) की जाती है।

फैक्टरी एक्ट

मूल्य रु. १·००, मनीऑर्डर से रु. १·६२ भेजने पर पुस्तक रजि. पोस्ट से भेज देंगे। वी. पी. से मंगवाने पर रु. १·६९ लगेंगे। विक्रीकर अतिरिक्त।

–प्रस्तुत पुस्तक में–

कारखाने की मंजूरी के लिये आवश्यक आवेदनपत्र से लेकर तो कारखाने की जगंह तथा अन्य सुविधाएँ, मजदूर की सरल परिभाषा, कारखाने के घोखे के स्थान और तत्सम्बन्धी आवश्यक दक्षता, मजदूर युनियन, फैक्टरी इन्स्पेक्टर का अधिकारक्षेत्र, वाल और स्त्री मजदूर सम्बन्धी नियम, फैक्टरी मैनेजर आदि विषयों की सुबोध जानकारी दी है। पुस्तक न केवल कारखानेवालों के लिये उपयोगी है, मजदूरों को भी आवश्यक है।

–उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १।

महिला–पुलिस

पुलिस विभाग में आजकल महिला-पुलिस की शाखा भी खोली गयी है और पुरुषों की तरह महिलाओं की भी पुलिस में भर्ती होने लगी है। महिला–पुलिस के लिए निम्न शर्तें रखी गयी हैं--

आयु--२० से ३० वर्ष तक।

ऊंचाई--५ फुट से अधिक।

शिक्षा--मराठी, हिंदी अथवा प्रादेशिक (Regional) भाषा की ६ वीं अथवा अंग्रेजी ३ री तक।

वजन--१०५ पौंड से अधिक।

भर्ती के पूर्व उन्हें सरकारी डाक्टर से पुलिस भर्ती के लिये योग्यता का प्रमाण–पत्र लाना होता है। महिला–पुलिस की भर्ती संबंधी अन्य शर्तें पुरुष–पुलिस की शर्तों के समान ही हैं।

भर्ती केन्द्र

प्रत्येक डिस्ट्रिक्ट हेडक्वार्टर्स में पुलिस की भर्ती की जाती है। पुलिस हेडक्वार्टर्स में शिक्षाप्राप्त पुलिस–सिपाहियों को अन्यत्र भेजा जाता है।

पुलिस–सिपाहियों को प्राप्त होनेवाली सुविधाएं

पुलिस–सिपाहियों को छुट्टी, प्राविडेन्ट फंड व पेन्शन आदि का लाभ प्राप्त होता है। पुलिस–सिपाहियों की पत्नियों के लिये सूतिकागृह, वेलफेयर सेंटर्स आदि की विशेष व्यवस्था होती है। यदि किसी सिपाही की नौकरी पूरी होने के पूर्व ही मृत्यु हो गयी तो उसकी पत्नी अथवा बच्चों को विशेष निधियों से ५ वर्ष के लिए अथवा उससे भी अधिक काल के लिए पेन्शन देने की खास व्यवस्था की जाती है। गरीब सिपाहियों के १८ वर्ष से कम आयुवाले लड़कों को भी 'बॉय कान्स्टेबल' (बालक पुलिस) की नौकरी पर रख लेते हैं। १८ वर्ष की आयु पूरी हो जाने के बाद यदि ये बालक पुलिस–सिपाही बनने के योग्य हुए तो इन्हें पुलिस में भर्ती कर लिया जाता है। काम करते समय (On duty) यदि किसी सिपाही को कोई सांघातिक चोट (Grievious injury) पहुँची अथवा मृत्यु हो गयी तो उसे 'Injury Pension' व उसपर आश्रित लोगों को 'Death Pension' प्राप्त होती है।

पुलिस–विभाग की शाखायें--पुलिस–विभाग की–(१) सिटी, (२) सिविल तथा (३) क्रिमिनल–ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन शाखायें मोटे हिसाब से होती हैं। इनमें से सिविल व क्रिमिनल शाखायें सी. आय. डी. विभाग के अन्तर्गत आती हैं। क्रिमिकल विभाग का चोरी, लूटमार करनेवाले अपराधियों से संबंध आता है। सी. आय. डी. तथा सिविल विभागों का राजनीति, हड़ताल आदि करनेवालों से संबंध आता है। सी. आय. डी. विभाग में स्थानान्तरित होने के लिये सिपाही को कम से कम ५ वर्ष तक सिटी विभाग में काम करना होता है। केवल होशियार एवं चालाक पुलिस को ही सी. आय. डी. विभाग में लिया जाता है। इस विभाग में पुलिस को वेतन के अलावा सी. आय. डी. भत्ता भी प्राप्त होता है। सी. आय. डी. विभाग के पुलिस मुफ्ती में (Plain–Clothes) भी कार्य कर सकते हैं। किन्तु सिटी पुलिस को गणवेश (Uniform) आवश्यक होता है। सिटी एवं सी. आय. डी. ये दो पृथक् विभाग न होकर केवल काम की सुविधा के लिये एक ही विभाग की दो विभिन्न शाखायें बना दी गयी हैं। चुने गये लोगों में कुछ सिटी विभाग में तथा कुछ सी. आय. डी. विभाग में भर्ती किये जाते हैं। सी. आय. डी. विभाग के लिये भर्ती की कोई पृथक् व्यवस्था नहीं है। प्रथम सभी उम्मीदवारों को सिपाही के रूप में भर्ती किया जाता है तथा जो लोग सी. आय. डी. विभाग में जाने योग्य होते हैं उन्हें ५ वर्षों के बाद सी. आय. डी. विभाग में स्थानांतरित कर दिया जाता है। सी. आय. डी. विभाग में स्थानांतरित होने के लिये कोई विशेष नियम आदि नहीं होते; यह केवल उनकी कार्यकुशलता एवं चालाकी पर ही निर्भर होता है।

काम करते समय जखमी हुए सिपाहियों को काम के सम्बन्ध में सुविधाएं दी जाती हैं। उन्हें हलका (light duty) व उनके स्वास्थ्य को देखते हुए योग्य काम ही दिया जाता है। पुलिस–सिपाहियों तथा उनके कुटंबियों के लिये अस्पताल की भी विशेष सुविधा रहती है। इतना ही नहीं तो टी. बी. के समान भयंकर रोग से पीडित व्यक्ति को पूर्ण स्वस्थ्य होते तक साल–डेढ़ साल की छुट्टी भी दी जाती है। उनके उपचार पर हुए खर्च का आधा हिस्सा सरकार उन्हें देती है।

यदि किसी को पुलिस में भर्ती होना है तो उसे 'Employment Exchange' (नौकरी दफ्तर) से 'Introduction-Card' (शिफारस) लाना पड़ता है। बाद में जैसे जैसे स्थान रिक्त होते जाते हैं वैसी वैसी उसकी सूचना पुलिस–विभाग 'Employment Exchange' को देती रहती है। ३०–४० अथवा इससे अधिक उम्मीदवारों की टुकडी को एक साथ प्रशिक्षण दिया जाता है।

मुर्गीपालन-व्यवसाय

मूल्य रु. १·५०। मनीऑर्डर से रु. २·१५ भेजने पर पुस्तक रजि. पोस्ट से भेज देंगे। वी. पी. से मंगाने के लिये रु. २·२१ लगेंगे। विक्रीकर अतिरिक्त।

प्रस्तुत पुस्तक में

व्यवसाय की पूर्व–तैयारी से लेकर तो व्यवसाय का प्रारंभ कैसे करें, व्यवसाय के लिये आवश्यक साधन, मुर्गियों की कुछ शुद्ध जातियाँ, उनका चुनाव, पक्षियों के निवासस्थान, उनके खानपान और टहलने का प्रबंध, मुर्गियों का खाद्य, मुर्गियों की आदर्श पैदाइश, अंडों का व्यापार, अंडे टिकाऊ बनाने की पद्धतियाँ, अंडों की यातायात, मुर्गियों के सामान्य रोग और उनका इलाज, मुर्गीपालन–व्यवसाय के संबंध में कुछ महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ आदि की पूरी जानकारी दी है। अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करा लें।

— उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १।

व्यापारिओं, रेडियोसुधारक तथा जनसाधारण को रेडियो की वैज्ञानिक जानकारी तथा कार्यपद्धति समझने के लिये

रेडियो का अंतरंग और कार्यपद्धति

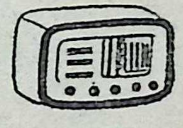

मूल्य रु. ३·५०, म. ऑ. से रु. ४·२९ भेजनेपर पुस्तक रजि. पोस्ट से भेज देंगे। वी. पी. से मंगाने पर रु. ५·३५ लगेंगे। विक्रीकर अतिरिक्त।

प्रस्तुत पुस्तक में

रेडियो की प्राथमिक जानकारी, धन और ऋण विद्युत्, विद्युतावस्था आदि की जानकारी, विद्युत्घट की रचना और उसका कार्य, विद्युत्-धारिणी, ध्वनि-लहरें और उसके बाद की अवस्थाएँ, स्वयं ध्वनि–नियंत्रण, ग्रामोफोन पिक–अप आदि रेडिओसम्बन्धी समस्त वैज्ञानिक जानकारी दी गई है जो रेडियो के सुधारक, बनानेवाले तथा कार्य सीखनेवाले विद्यार्थिओं के लिये अत्यंत उपयोगी है। आज ही एक प्रति मंगा लें। —उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्धाश्रम

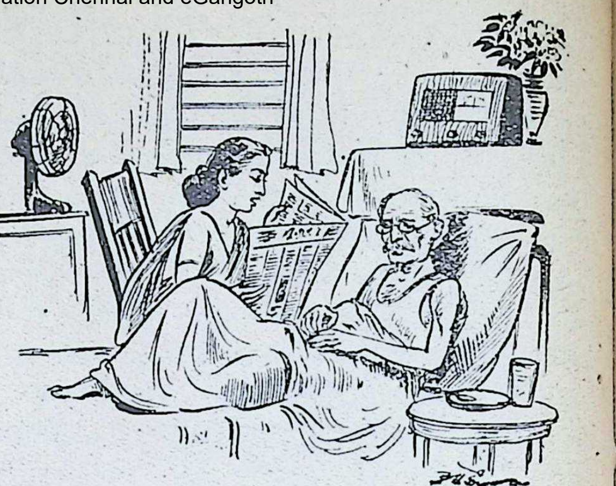

धनवान वृद्धों की आवश्यकता तथा कर्तृत्ववान् व्यक्तियों के लिये अवसर

लेखक—श्री श्री. वा. काले

["चाहिये। वृद्धाश्रम चलाने के लिये कर्तृत्ववान, सेवा परायण, धैर्यवान्, वृद्धों के प्रति सहानुभूति रखनेवाली, थोड़ा बहुत नर्सिंग जाननेवाली, दक्ष महिलाओं की आवश्यकता है। आश्रम में प्रवेशेच्छु सधन लोगों से इमारत तथा साधन-सामुग्री के खर्च के लिये सहायता प्राप्त होगी।" इस तरह के विज्ञापन समाचार-पत्रों में प्रकाशित होने लगें तो समाज की एक बहुत बडी समस्या हल होने में सहायता मिलेगी।

फ्लॉरेन्स बर्ग तथा मिल्ड्रेड एंडर्सन इन दो अमेरिकन महिलाओं ने १४ वृद्धों की व्यवस्था करनेवाला आश्रम स्थापन कर, उसे व्यवसाय के रूप में चलाया है। उसी व्यवसाय की प्रस्तुत लेख की जानकारी 'उद्यम' के पाठकों को शिक्षाप्रद तथा प्रेरणादायक प्रतीत होगी —लेखक]

एक सामाजिक आवश्यकता

संयुक्त कुटुंब-पद्धति में घर के वृद्ध व्यक्तियों की देखभाल ठीक तरह से हो पाती थी, परन्तु आज वह स्थिति नहीं रही है। वृद्ध लोग दूसरों को बोझ मालूम होने लगे हैं, उनके खातिर अपनी असुविधा सह्य कर लेने का विचार युवकों को भाता नहीं है। इससे वृद्धों की ओर दुर्लक्ष होता है, उनकी देखभाल तो अच्छी होती ही नहीं, अवहेलना भी होती है। उन्हें अपने पुत्र-पुत्रियों की ओर से भी सहानुभूति, प्रेम नहीं मिल पाता। मां को दूसरे भाई के पास बिदा कर देने की हर कोई सोचता है, उसे अपने पास रखने के लिये कोई भी तैयार नहीं रहता है। अपनी वृद्धावस्था में भी क्या दशा होगी, तब अपनी क्या अपेक्षाएँ रहेंगी, और इस प्रकार के आचरण से वे कहां तक पूर्ण हो सकेंगी यह ध्यान में रखकर ही हमें वृद्धों के साथ सहानुभूति रखनी चाहिये। परन्तु कितने लोग इस तरह सोचते हैं?

हमने अपने माता-पिता की उत्तम रीति से देखभाल की, फिर भी हमारी सन्तान हमारे वृद्धावस्था में हमारी देखभाल करेगी ही ऐसा विश्वासपूर्वक नहीं कह सकते, ऐसा सोचनेवाले तथा उसके अनुसार आचरण करनेवाले बहुत से लोग हैं। इन सब बातों को देखते हुये आजकल वृद्धों को आश्रय देनेवाले आश्रम की आवश्यकता अनुभव होने लगी है। वृद्धाश्रम की कल्पना कुछ अनुचित नहीं है, परन्तु जब तक उसके साकार होने की संभावना नहीं है तब तक प्रत्येक परिवार के वृद्धों की देखभाल परिवार में होनी चाहिये। वृद्धाश्रम के बारे में चर्चा करने से यह प्रश्न फौरन हल नहीं होगा या वह जिम्मेदारी भी नहीं टल सकती है। वृद्धाश्रम में रहना वृद्धों को कहां तक पसन्द होगा, परिवार उस खर्च को वहन कर सकेगा या नहीं आदि बातों का वृद्धाश्रम की स्थापना करते समय विचार करना होगा। जिन वृद्धों की परिवार में देखभाल नहीं हो सकती है ऐसे असहाय व्यक्तियों को आश्रय देनेवाले अमेरिका के एक वृद्धाश्रम का उदाहरण आदर्श रूप में सामने रखने योग्य है।*

अमेरिका का एक सराहनीय उपक्रम

फ्लॉरेन्स बर्ग अपने माता के साथ एक देहात में रहती थी। उस गांव में डॉक्टर या नर्स न होने से

*सॅटर्डे इव्हिनिंग पोस्ट, १२ अक्टूबर १९५७।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों की बहुत ही असुविधा होती थी। परन्तु फ्लॉरेन्स बर्ग की माता हड्डी के जोड़ विठाने, दवादारू देने, दाई आदि का काम सेवाभाव से निःशुल्क करती थी। फ्लारेन्स बर्ग को भी उन कामों के प्रति रुचि पैदा हो गयी तथा नर्स बनने का उसने निश्चय किया। सतरह वर्ष की आयु में वह दूसरे बड़े शहर में रहने गयी तथा वहां अध्यापिका बनी। वहां उसने अपनी एक छात्रा मिल्ड्रेड एंडरसन के मन में अपनी भी जैसी नर्सिंग की रुचि निर्माण की। १९३९ में उन दोनों ने नर्सिंग का कोर्स पूर्ण किया। १९४८ में फिलेडेल्फिया के पास फ्लारेन्स बर्ग की एक बहन ने खेती–वाडी मोल ली तथा आय बढ़ाने के हेतु से उन्होंने पांच वृद्धों को, पैसे लेकर आश्रय दिया। इस रीति से वृद्धों की देखभाल करने का अनुभव प्राप्त कर फ्लॉरेंस बर्ग तथा मिल्ड्रेड एंडरसन इस जोडी ने वृद्धाश्रम खोलने का निर्णय किया। जब फ्लॉरेन्स बर्ग की बहन ने कुछ वर्षों के बाद खेती–वाडी बेच डाली तब इस जोडी ने पास के अस्पताल में तथा निजी काम कर वृद्धों की सेवा करने का अनुभव प्राप्त किया।

कॅलिफोर्निया की एक वृद्ध महिला की जिसकी कमर की हड्डी टूट गयी थी, फ्लॉरेन्स बर्ग ने शुश्रुषा की। जिसमे वह वृद्धा अच्छी हो गयी। उसके बाद उस वृद्धा ने आजन्म अपने मकान में ही रहने का निश्चय किया। उसका १२ कमरोंवाला दुमंजला मकान था। उस वृद्धा ने फ्लॉरेन्स–मिल से अनुरोध किया कि वे उस मकान को खरीद लें तथा मकान की कीमत, नगदी रुपयों में नहीं तो आजन्म शुश्रुषा कर चुकाएं। फ्लारेन्स – मिल जोडी ने वह स्वीकार कर लिया। उस घर को वृद्धाश्रम का रूप प्राप्त हो गया। मिल बाहर नर्सिंग का काम करती तथा पैसा कमाकर लाती। फ्लॉरेन्स पर वृद्धा की सेवा का भार था। धीरे धीरे उनके पास पूंजी जमा होती गयी। उस पूंजी से वृद्धाश्रम के कमरे सुधारे गये तथा फर्नीचर खरीदा गया। आश्रमवासियों की संख्या बढ़ने पर मिलने बाहर काम करना बन्द कर दिया। तथा दोनों वृद्धाश्रम की देखभाल करने लगीं। छः महीनों में ही वृद्धाश्रम के सारे स्थान भर गये। प्रत्येक से ७५० रु. से १००० रु. लिया जाता है। दोनों को आश्रम चलाने से प्रतिवर्ष २५ हजार रु. मिलता है।

"सीनोरा" की बड़ी शीशी रु. ४·२५
छोटी शीशी रु. १·८७
सोल एजंट– हेमिल्टन डेविस एण्ड सन्स,
पो. बॉ. नं. २०८५, बम्बई।

मितव्ययिता नहीं

वृद्धाश्रम में वृद्ध लोग अनेक कारणों से रहने के लिये आते हैं। जिनकी दवादारू तथा शुश्रुषा घर पर नहीं हो सकती है, ऐसे बहुसंख्य वृद्ध ही वृद्धाश्रम में भर्ती होने के लिये आते हैं। बुद्धिभ्रम हुये वृद्धों की संख्या भी अधिक होती है तथा उनकी देखभाल करने का काम अधिक पीड़ादायक होता है। उनके कारण दूसरों को पीडा पहुंच सकती है, दुर्घटना होने की भी संभावना रहती है।

घर बड़ा हो, ग्राम में घर हो, आयुर्मर्यादा थोडी हो तो बात अलग है। परंतु शहरी जीवन में दम्पति को नौकरी करनी पडती है। ऐसी स्थिति में वृद्धाश्रम की सुविधा का लाभ उठाना पडता है। वृद्धाश्रम चलाने के लिये खर्च आता है। वृद्धों को अच्छा भोजन देने, उनकी सहानुभूतिपूर्वक अच्छी देखभाल करने तथा साफ सफाई पर ध्यान देने के लिये आश्रम को पर्याप्त रकम उपलब्ध होनी चाहिये। अन्यथा आश्रम में भी वृद्धों की अच्छी व्यवस्था नहीं हो सकेगी। घर पर जितना खर्च आएगा उससे अधिक खर्च वृद्धाश्रम में उनके लिये करना होगा। वृद्धों की देखभाल में मितव्ययिता करने की दृष्टि से वृद्धाश्रम का उपयोग है ऐसा समझना भूल होगी। सुविधा की दृष्टि से ही उसका उपयोग है। दूध न देनेवाली गाय जिस प्रकार पिंजरापोल में रखी जाती है,

एस्. एच्. केलकर एण्ड कं.
(प्रायव्हेट) लि.
३६, मंगलदास रोड, बम्बई २.
शाखा–बंगलोर सिटी
सुगंधित द्रव्य तैयार करने में आवश्यक अॅरोमॅटिक केमिकल्स, इसेन्शियल ऑइल्स, रेझिनॉइड्स आदि समस्त माल के भारत के प्रथम व एकमेव निर्माता।
हमारा रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क "नाग छाप"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैसी यह व्यवस्था नहीं है। एक ही माप दण्ड में दोनों व्यवस्थाओं को देखना उचित नहीं होगा।

आचरण में सनकीपन प्रकट न हो

दूसरी बात यह है कि वृद्धाश्रम की व्यवस्था कितनी भी अच्छी हो, उसमें रहनेवाले वृद्धों के पुत्र तथा बहु आदि रिश्तेदारों को ऐसा प्रतीत होता है कि वे अपने कर्तव्य पालन से च्युत हो गये हैं। जब वे मिलने के लिये आते हैं तब उनकी उदास मुद्रा इस भाव को प्रकट करती है। अपराधस्थल से अपराधी जिस प्रकार भाग जाने का प्रयत्न करता है उसी प्रकार वे भी भेंट लेने के बाद शीघ्र चले जाते हैं, पीछे मुड़ कर भी नहीं देखते हैं। आश्रम के वृद्ध मिलने आने वालों को अपना दुःख बढ़ा चढ़ा कर बताते हैं। अपने बारे में सहानुभूति निर्माण करने के हेतु से ही वे वैसा करते हैं। वास्तव में वे भेंट के समय उतनी दुखी अवस्था में नहीं होते हैं।

वृद्धाश्रम में व्याधि तथा मृत्यु दोनों बातें अटल हैं। परन्तु रोगियों की चिकित्सा की पूरी व्यवस्था की जाती है। वृद्धों की रुग्णावस्था में, उनके रिश्तेदार पास रह सकते हैं। आश्रमवासी मनःपूर्वक इच्छा करें तो वे प्रसन्न रह सकते हैं। आश्रम में तो उन्हें प्रसन्न रखने का भरसक प्रयत्न होता है। परन्तु अनुभव यह है कि वृद्धों को आश्रम में बहुत देर से भर्ती किया जाता है जिससे उनकी मानसिक प्रवृत्ति को इष्ट दिशा दिखाना कठिन हो जाता है।

आध्यात्मिक संबल

वृद्धाश्रम की सफलता संचालकों की शांत वृत्ति पर निर्भर करती है। एक ही बात बार बार दुहरानी तथा करनी पड़ती है, इसलिये उन्हें चिढ़ना नहीं चाहिये। काम तो कभी समाप्त ही नहीं होता। फ्लॉरेन्स तथा मिल इन दोनों का यह अनुभव है कि धार्मिक आचार का बहुत ही उत्तम परिणाम होता है। आश्रमवासियों को वे चर्च में नियमित रूप से ले जाती हैं। आश्रम में भी भक्तिरस के गीत गाये जाते हैं। जो इन कार्यक्रमों को टालते हैं वे प्रायः दुखी रहते हैं ऐसा देखा गया है। फ्लॉरेंस तथा मिल का सभी के लिये यह कहना है– "वृद्धावस्था में स्वभाव में परिवर्तन नहीं हो सकता। आज ही यदि आप अपने रिश्तेदारों से प्रिय न हों तो आप अपने स्वभाव को बदलने का प्रयत्न करें। अन्यथा वृद्धापकाल में कोई भी तुम्हें अपने पास नहीं रखेगा। आध्यात्मिक ग्रंथों का पठन तथा श्रवण प्रारंभ करें; वृद्धावस्था में उसका उपयोग होगा।"

वृद्धाश्रम याने सेवाश्रम

वृद्धाश्रमों की आवश्यकता है परन्तु उसके लिये योग्य मनोवृत्ति के चालक दुष्प्राप्य हैं। वृद्धों के प्रति आदर तथा सहानुभूति रखनेवाले ही उनकी सर्वतोपरी सेवा करने में रुचि ले सकते हैं। अकेला जीवन व्यतीत करनेवाली, समाज सेवा से प्रेरित कर्तृत्वशाली महिलायें भी वृद्धाश्रम चला सकती हैं। नर्सिग की शिक्षा हुई हो तो उत्तम है, परन्तु वह शिक्षा न भी हुई हो तो कोई बाधा नहीं आयेगी। नर्सों को काम पर रखा जा सकेगा। अन्य दूसरा काम बहुत रहता है। वृद्धाश्रम पागलखाना या पिंजरापोल नहीं हैं, अपने प्रिय माता–पिताओं की वृद्धावस्था में उत्तम देखभाल करनेवाली उपयोगी संस्था है। इसी भावना से उन्हें चलाना भी चाहिये। उन संस्थाओं ने अपनी यह भूमिका प्रत्यक्ष कार्य द्वारा सिद्ध कर देनी चाहिये। मुनाफाखोरी को उसमें स्थान नहीं मिलना चाहिये। अर्थात् पैसा बचेगा तभी वृद्धाश्रम की व्यवस्था उत्तम रखी जा सकेगी। अपने माता–पिताओं के लिये नियमित रूप से प्रतिमाह आवश्यक खर्च कर सकनेवाले कर्तव्यदक्ष पुत्र हों या स्वयं वृद्धों द्वारा अपने बुढापे के लिये विपुल धन की व्यवस्था की गयी हो तो उनका आश्रम का खर्च चलाने में कोई कठिनाई उपस्थित नहीं होगी।

घर के भोजन के समान भोजनालय का भोजन कदापि सुस्वादु नहीं रह सकता है। परन्तु घर पर भोजन करने की व्यवस्था नहीं है तथा जो उसके लिये पैसा खर्च कर सकते हैं उनके लिये भोजनालय आवश्यक हैं। उसी प्रकार जहां वृद्धों की शुश्रुषा करने की ठीक व्यवस्था नहीं हो पाती है तथा जो उसके लिये पैसे खर्च कर सकते हैं उनके लिये उत्तम वृद्धाश्रम जैसी संस्थायें आवश्यक हैं। वृद्धों की देखभाल करने के कष्ट उठाना जिन्हें संभव है वे यदि अपने घर के वृद्धों को वृद्धाश्रम में भेजें तो वह उचित नहीं होगा। समाज की वास्तविक आवश्यकता की पूर्ति करनेवाली संस्थाओं का कुछ लोग स्वार्थी हेतु से अनुचित लाभ उठायेंगे। परन्तु उसके लिये संस्था को दोष नहीं दिया जा सकता। इसलिये सधन वृद्धों की आवश्यकतायें पूर्ण करने के लिये घरेलू वातावरण के वृद्धाश्रम स्थापन करनेवालों को विचलित होने का कोई कारण नहीं हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेलिफोन की रचना तथा कार्यपद्धति

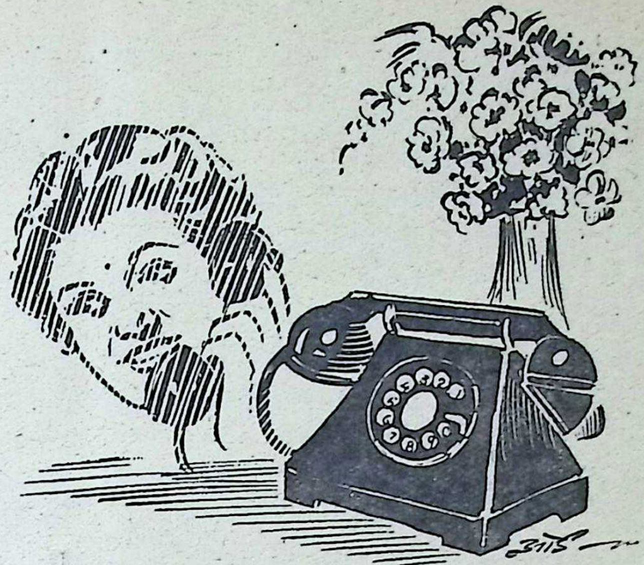

लेखक—श्री श्री. स. आपटे

[शहरों में टेलिफोन का उपयोग बहुत होने लगा है। किसी वस्तु के अति परिचय से उसका महत्त्व प्रतीत नहीं होता। भारत में टेलिफोन का संपूर्णतः उत्पादन होने लगा है। प्रथम पंचवर्षीय योजना के कार्यक्रम के अनुसार बंगलोर की "इंडियन टेलिफोन कंपनी" में वे बनाये जाते हैं। प्रस्तुत लेख में टेलिफोन का तत्त्व, प्रकार तथा उसकी कार्यपद्धति के संबंध में चर्चा की गयी है। —लेखक]

टेलिफोन के तत्त्व का आविष्कार

सन १८७५ में विख्यात अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. अलेक्जांडर ग्राहाम बेल ने बोस्टन में टेलिफोन के तत्त्व का आविष्कार किया। बच्चों को माचिस की डिबिया को सीधी तार या धागा बांधकर टेलिफोन का खेल खेलते हुये देखकर (अर्थात् उस समय 'टेलिफोन' यह शब्द प्रचार में नहीं था) बेल को टेलिफोन की कल्पना सूझी। मुंह के सामने बिलकुल पतला टिशुपेपर (पतंग का कागज) रखकर मुंह से 'आऽऽ' ध्वनि निकालने से कागज स्पष्ट रूप से कंपायमान होता हुआ दिखता है। डॉ. बेल ने इसी तत्त्व का आविष्कार किया। लहरों के रूप में ध्वनि का प्रसार होता है। गड्ढे में जमे पानी में पत्थर डालने से पानी में लहरें पैदा होकर जिस प्रकार वे किनारेतक पहुचती हैं उसी प्रकार मुंह से ध्वनि निकलने पर हवा कम्पायमान होती है तथा ध्वनी की लहरें फैलती हैं। ध्वनी जितनी कर्कश होती है उतना कंपन अधिक शीघ्रता से होता है।

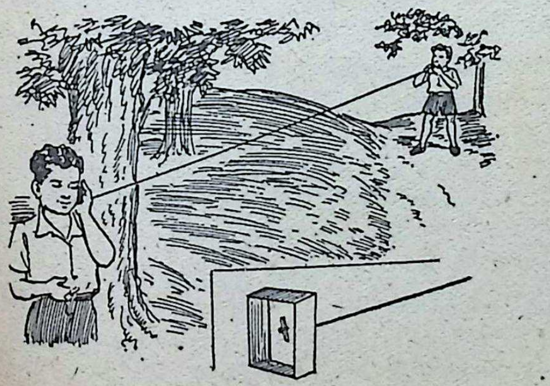

हवा में निर्माण हुई ध्वनी की लहरें कागज पर आघात करती हैं तथा कागज भी कंपायमान होता है। माचिस की डिबिया के टेलिफोन के खेल में हवा के स्थान पर धागा कंपायमान होता है तथा ध्वनी-लहरियाँ धागे में से दूसरे छोर तक पहुंचती हैं। इन लहरियों से कान के पास रखी माचिस की डिबिया की हवा कंपायमान होती है। आगे इसी हवा के आघात से कान का पड़दा कंपायमान होता है। अन्त में अपने मज्जातंतुओं को संवेदना होकर हमें ध्वनी सुनायी देता है।

बहुत लम्बा धागा हो तो ध्वनी की तीव्रता कम होकर वह बीच में ही लुप्त हो जाती है; वह दूसरे सिरे तक नहीं पहुंच पाती है। उसी प्रकार ध्वनी के मार्ग में धागे को स्पर्श हो तो ध्वनी-भ्रमण में बाधा आती है। यह देखकर ही बिजली के तार द्वारा ध्वनी प्रसारित करने की कल्पना डॉ. बेल को सूझी। इसके लिये हमें पहिले विद्युत् तथा चुंबकत्व के कुछ मूलभूत सिद्धान्त समझ लेना आवश्यक है।

लोहचुंबक के गुणधर्म

प्रत्येक लोह-चुंबक के दो ध्रुव होते हैं—उत्तर ध्रुव तथा दक्षिण ध्रुव। असमान ध्रुवों में आकर्षण तथा समान ध्रुवों में प्रतिसारण होता है। लोहचुंबकत्व स्थायी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या अस्थायी रह सकता है। निकल धातुमिश्रित फौलाद का चुंबकत्व स्थायी होता है। इसके विपरीत नरम लोहे का चुंबकत्व अस्थायी होता है। लोहे के टुकड़े के चारों ओर बिजली की तार लपेट कर, उसमें से विद्युत् प्रवाह छोड़ा जाय तो जिस मात्रा में उसमें से प्रवाह बहेगा उस परिमाण में उस लोहे के टुकड़े में चुंबकत्व पैदा होगा। विद्युत् प्रवाह बंद करने पर, विद्युत्जन्य चुंबकत्व नष्ट हो जायगा परंतु लोहे में चुंबकत्व हो तो वह नष्ट नहीं होगा। इसके विपरीत विद्युत् प्रवाह बन्द रहते समय भी यदि चुंबक के सामने कोई लोहे का टुकड़ा आगे-पीछे हिलाया जाय तो चुंबक पर लपेटी तार में उलटा-सीधा प्रवाह निर्माण होगा। मूल चुंबक की शक्ति तीव्र हो तो यह प्रवाह भी अधिक तीव्र होगा।

चुंबकीय गुणधर्म का टेलिफोन में उपयोग

ऊपर बताये तत्त्व कल्पना पर आधारित नहीं हैं तो प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित हैं। घर पर भी हम इन तत्त्वों को परख सकते हैं। इन तत्त्वों का टेलिफोन में किस प्रकार उपयोग किया जाता है यह आगेकी आकृतियों से स्पष्ट होगा।

आ. १, २ तथा ३ में टेलिफोन के पुर्जे तथा रचना बतायी गयी है। नालाकार छोटे से लोहचुंबक पर (आ. ३) बिजली की तार लपेटी है तथा उसके सामने एक नरम लोहे का पड़दा (Diaphragm) है। यह श्रवण यंत्र की रचना है (इसे रिसीवर कहते हैं)। आ. २ में मायक्रोफोन की रचना दिखायी गयी है। इसका पड़दा फौलाद का बना होता है। उसके पीछे की ओर कार्बन की चकती होती है। जब पड़दा हिलता है तब यह चकती भी हिलती है। चीमड कागज की डिबिया के ढक्कन जैसा इस चकती का उपयोग होता है। इस डिबिया में कोयले के (मामूली इंधन का कोयला नहीं तो विशिष्ट प्रकार का) सैकड़ों बारीक टुकड़े होते हैं तथा डिबिया के तल में कार्बन की दूसरी चकती होती है।

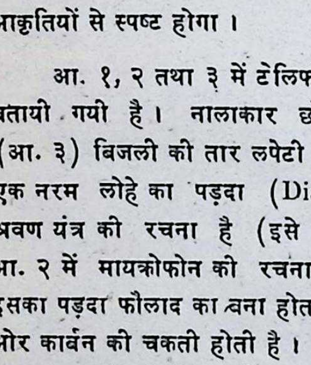
आकृती १

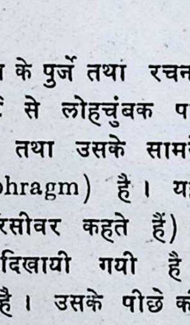

आकृती २ (मायक्रोफोन)

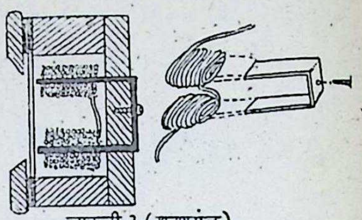
आकृती ३ (श्रवणयंत्र)

बैटरी से इस तार में आनेवाला प्रवाह "अ" चकती की ओर जाता है। वहां से वह कोयले के टुकड़ों में बहकर "ब" चकती द्वारा तथा आगे तार में से रिसीवर की गुंडली में जाकर बाहर आता है तथा बैटरी के ऋण ध्रुव की ओर जाता है। इस तरह सर्किट पूरा होता है।

कोयले की घनता बढ़ने से विद्युत्प्रवाह को प्रतिरोध कम होता है तथा प्रवाह सुगमता से प्रवाहित होता है। यह कोयले का गुणधर्म है। संक्षेप में उसकी तीव्रता बढ़ती है।

मायक्रोफोन तथा रिसीवर

मायक्रोफोन के सामने संभाषण करने पर उसके अनुसार ध्वनिलहरियों से पड़दा हिलने लगता है। पड़दे के साथ पीछे की चकती भी हिलती है। दूसरी चकती 'ब' स्थिर होने से इन दो चकतियों के बीच रखे हुये कोयले के टुकड़े कम्प के साथ दबते हैं। इससे उनका विद्युत्प्रवाह को होनेवाला विरोध भी उसी मात्रा में कम अधिक होता है तथा प्रवाह की तीव्रता भी उसी परिमाण में कम-अधिक बदलती रहती है। संक्षेप में ध्वनिलहरियों का विद्युत् लहरियों में रूपान्तर होता है।

यही बदलते रहनेवाला प्रवाह रिसीवर की गुंडली में बहने से वहां के चुंबक का सामने के पड़दे पर का आकर्षण कम-अधिक होता रहता है तथा पड़दा भी कम्पित होने लगता है। पड़दे के कम्पित होने से वहां की हवा भी कम्पायमान होती है तथा उसमें ध्वनिलहरियाँ पैदा होती हैं। ये ध्वनिलहरियां आगे सुननेवाले के कान पर आघात करती हैं जिससे उसे मूल संभाषण स्पष्ट सुनाई देता है। ऊपर बताया तत्त्व स्पष्ट होने के लिये फिर से एक बार किस क्रम से ये सारी बातें होती हैं यह समझ लेना अच्छा होगा-

(१) संभाषण की ध्वनीलहरियों से माइक्रोफोन के सामने की हवा कम्पायमान होती है।

(२) यह कम्पित हवा माइक्रोफोन के पड़दे पर आघात करती है तथा पड़दा हिलता है।

(३) पड़दे के पीछे की डिब्बी कें कोयले के टुकड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम्प के अनुसार दबते हैं तथा उसके कारण उनमें से बहनेवाले प्रवाह की तीव्रता कम-अधिक होती है।

(४) यह बदलनेवाला प्रवाह रिसीवर के चुंबक की गुंडली में से बहता है।

(५) उसके कारण चुंबक का आकर्षण कम अधिक होता है तथा उस मात्रा में उसके सामने का पड़दा आगे पीछे हिलता है।

(६) पड़दे के कम्पित होने से उसके सामने की हवा कम्पित होती है तथा उसमें ध्वनी लहरियाँ निर्माण होती हैं।

(७) ध्वनिलहरियाँ कानपर आघात करती हैं तथा मूल संभाषण स्पष्ट रूप से सुनाई देता है।

प्रत्येक टेलिफोन में माइक्रोफोन तथा रिसीवर होता है। जो दो व्यक्ति आपस में बातचीत करते हैं, उनमें से एक का माइक्रोफोन तथा रिसीवर क्रमशः दूसरे के रिसीवर तथा माइक्रोफोन से जुड़े होते हैं। दोनों सिरों के पास विद्युत् प्रवाह भरपूर रहने के लिये बैटरियाँ रहती हैं। इन बैटरियों का प्रवाह एक मार्गी होता है, यह बात ध्यान में रखें।

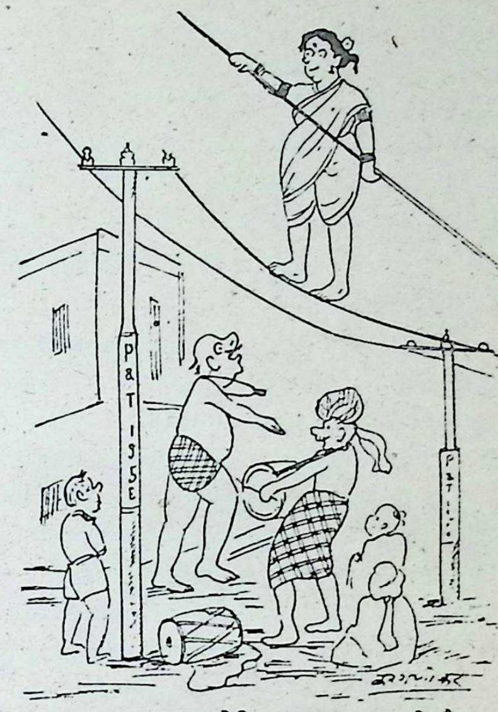

…जरा सम्हलकर…टेलिफून तार सरकारी है…

* पुस्तकालय में संग्रहणीय * विद्यार्थियों के लिये उपयोगी * समाजवाद का विश्व-कोष * जनता के लिये ज्ञानवर्धक

सम्पदा का हिन्दी जगत् को नया उपहार

समाजवाद अंक

कुछ विशेषताएँ : समाजवाद की पृष्ठभूमि, दार्शनिकता, इतिहास आदि पर विद्वत्तापूर्ण लेख, विदेशों में समाजवाद के परीक्षण, भारत समाजवाद की ओर, तुलनात्मक दृष्टी, विदेशी और भारतीय नेताओंके मनोरम चित्र।

यह अंक हाथोंहाथ बिक रहा है। मूल्य रु. १·६२ (डाक-व्यय सहित) भेजकर अपनी कॉपी मंगवा लीजिये। पीछे पछताना न पडे।

उद्योग, विकास-योजना, भूमि-सुधार, वस्त्रोद्योग, मजदूर तथा बैंक सम्बन्धी 'सम्पदा' के विशेषांक भी विद्यार्थियों के लिये अनमोल हैं।

वार्षिक मूल्य ८ रु.) शिक्षा - संस्थाओं से ७ रु.)।

—मैनेजर 'सम्पदा'

अशोक प्रकाशन मंदिर, २८/११ शक्तिनगर, दिल्ली ६।

टेलिफोन जोडने की पद्धति

ऊपर बताये गये भागों के अलावा टेलिफोन में और भी कुछ अन्य भाग होते हैं। उनकी जानकारी आगे दी जाएगी। परन्तु एक स्थान से दूसरे स्थान पर टेलिफोन अपने आप या हाथ से जोड़ने की जो अनेक पद्धतियां प्रचलित हैं उनमें से कुछ प्रमुख पद्धतियों का परिचय संक्षेप में नीचे दिया गया है—

ऑफिस के केवल दो टेलिफोन की पद्धति—कई बार मैनेजर को एक ही व्यक्ति से बारबार बातचीत करनी पड़ती है। इसके लिये उन दोनों के पास के टेलिफोन स्वतंत्र रूप से केवल एक-दूसरे से स्थायी रूप से जुड़े होते हैं। इस पद्धति में जब एक व्यक्ति रिसीव्हर उठाता है तब दूसरे के टेलिफोन का दिया लगता है (या घंटी बजती है) तथा दूसरा जब बोलने के लिये रिसीव्हर उठाता है तब घंटी या दीया बन्द होता है। दोनों जब अपने अपने रिसीव्हर नीचे रख देते हैं तब बैटरी का कनेक्शन अपने आप टूट जाता है तथा विद्युत् व्यर्थ खर्च नहीं होती। इस प्रकार का टेलिफोन घर पर तैयार करने की रीति आगे बतायी गयी है।

निजी टेलिफोन एक्सचेंज् (PBX)—बड़े बड़े कारखानों में, सरकारी कार्यालयों में, होटलों में अनेक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों के पास टेलिफोन होते हैं तथा उन्हें एक दूसरे से संभाषण करने के लिये तथा बाहर के लोगों से संभाषण करने के लिये निजी टेलिफोन एक्सचेंज होता है। जिस प्रकार रेल की पटरी के जोड़ बदल कर एक लाइन से दूसरी लाईन पर गाड़ी ली जाती है उसी प्रकार एक्सचेंज एक टेलिफोन को दूसरे टेलिफोन के साथ जोड़ता है। इसे "Private Branch Exchange" (प्राइवेट ब्रँच एक्सचेंज) कहते हैं।

छोटे PBX में एक टेलिफोन रहता है तथा जितने टेलिफोनों के लिये एक्सचेंज हों उतनी चाबियाँ रहती हैं। ये चाबियाँ एक प्रकार में खटके होते हैं। जब कोई व्यक्ति रिसीव्हर उठाता है तब उस के नीचे का खटका (जो इतने समय तक खुला रहता है) वन्द होता है तथा सर्किट पूर्ण होकर उससे संबंधित PBX का एक दीया जल उठता है या वहां की एक पट्टी नीचे गिरती है। ऐसा होने पर ऑपरेटर वह पट्टी फिर से ऊपर सरकाता है याने मूल टेलिफोन का तथा उसके टेलिफोन का संबंध स्थापित होता है। ऑपरेटर नंबर पूछता है तथा वह ज्ञात होने पर उस नंबर की चाबी वह दबाता है। उस नंबर की टेलिफ़ोन की घंटी बज उठती है (पुरानी पद्धति में हाथ से डंडा घुमाकर घंटी बजाने की व्यवस्था थी)। वहां के व्यक्ति द्वारा टेलिफोन उठा लेने पर ऑपरेटर चाबी पूर्णतः ऊपर करता है। जिससे उसके टेलिफोन से संपर्क विच्छेद होता है तथा बाहर के दोनों टेलिफोनों का संपर्क स्थापित हो जाता है। उनमें से किसी के भी द्वारा टेलिफोन नीचे रखे जाने पर फिर से दीया जल उठता है; फिर ऑपरेटर चाबी मूल स्थिति में लाकर रख देता है। बड़े एक्सचेंज में इसी प्रकार के तत्त्वपर ऑपरेटर्स टेलिफोन के नंबर जोड़ते हैं।

स्वयंचलित एक्सचेंज (Automatic Exchange)

ऊपर बताये गये एक्सचेंज को "मैन्युअल एक्सचेंज" कहते हैं; क्योंकि ऑपरेटर को प्रत्येक बार तुम से नम्बर पूछकर वह देना पड़ता है। आजकल अधिकांश बड़े शहरों में स्वयंचलित (Automatic) एक्सचेंज पर टेलिफोन लगाये होते हैं। इस टेलिफोन पर १,२,३,४, ५,६,७ ८,९ तथा ० आंकड़े लिखी हुई चकती पर आंकड़ों के क्रम से घुमाने से (इस समय टेलिफोन का रिसीवर ऊपर उठा लिया जाता है) मुख्य स्वयंचलित एक्सचेंज में अपने आप यांत्रिक क्रिया से उस नंबर को टेलिफोन जोडा जाता है। उस समय उस टेलिफोन से पहले से ही दूसरे नंबर द्वारा संबंध स्थापित किया हो तो, वह खुला होने तक मूल टेलिफोन में कूंऽऽ कूंऽऽ ऐसी ध्वनि रुक रुक कर आती रहती है। नंबर खुला हो तो टण्ऽऽ टण्ऽऽ ऐसी आवाज आती है तथा उस नंबर के टेलिफोन की घंटी बजने लगती है। स्वयंचलित एक्सचेंज की यंत्रसामग्री बहुत ही जटिल होती है। एक्सचेंज की अनेक पद्धतियां हैं, उनमें से एक पद्धति की जानकारी संक्षेप में नीचे दी गयी है। इस पद्धति को स्टेप-बाय-स्टेप पद्धति कहते हैं। उस का तत्त्व रेल्वे के उदाहरण से अधिक स्पष्ट रूप से ध्यान में आएगा।

मान लो की हमें वम्बई से कलकत्ते जाना है। बम्बई से हम लोग पहिले कल्याण आएंगे। वहाँ से पूना तथा भुसावल की ओर लाइनें जाती है। पूना की ओर जाने से मद्रास मार्ग से कलकत्ता जा सकते हैं या वही मार्ग से फिर से मूल मार्ग पर आ सकते हैं। भुसावल जाने से एक मार्ग खांडवा-इटारसी की ओर जाता है तथा दूसरा नागपुर जाता है। इटारसी जाने से जबलपुर-गोंदिया मार्ग से या जबलपुर-इलाहाबाद मार्ग से या दिल्ली-कानपुर-बनारस मार्ग से कलकत्ता जा सकते हैं। इसका सार यही है कि प्रत्येक जंक्शन के पास जो मार्ग मिलेगा उसके द्वारा अन्त में हम लोग कलकत्ते पहुंचेंगे।

भारत के सभी किसानों, बागवानों और शहर के असंख्य लोगों के लिये अत्यंत उपयोगी

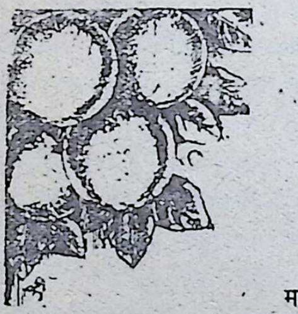

संतरे की बागवानी और व्यापार

(द्वितीय संस्करण)

मूल्य रु. २·००;
म. ऑ. से रु. २·६५

भेजनेपर पुस्तक रजि. पोस्ट से भेजेंगे। वी. पी. से मंगाने के लिये रु. २·७१ लगेंगे। विक्रीकर अतिरिक्त।

प्रस्तुत पुस्तक में

संतरे की काश्त के लिये जमीन तैयार करना, खाद देना, संतरे की कलमें तैयार करना, कलमें लगाना, कलमों की देखभाल, संतरे के पौधों को ६ वर्ष यथाविधि पालना, सिंचाई, कीड़ों व रोगों से रक्षा आदि बातों संबंधी व्यवहारोपयोगी जानकारी, चित्रों सहित सरल भाषा में दी है।

— उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयंचलित (Step by step) पद्धति में ऐसा ही कुछ होता है। मान लो हमें २५१९ नंबर आवश्यक है। इसके लिये हम रिसीवर उठाकर पहिले २ नम्बर घुमाते हैं। चकती घुमती है तब उसपर पीछे बिठायी हुई दो पत्तीवाली एक बारीक चकती दो बिजली की परस्पर स्पर्श करनेवाली पट्टियों में से दो बार घूमती है तथा स्वाभाविकतः दो बार ये पट्टियां खुलकर बन्द होती हैं तथा उनमें से बहनेवाला प्रवाह दो बार खण्डित होता है।

यह प्रवाह टेलिफोन की तार द्वारा एक्सचेंज के 'सिलेक्टर' में बहता है। टेलिफोन में से बहनेवाला प्रवाह बिलकुल मन्द होता है। परन्तु जिस प्रकार हम अल्प शक्ति से नल की टोटी कम-अधिक कर पानी की प्रचण्ड शक्ति में अत्यधिक हेरफेर कर सकते हैं उसी प्रकार 'सिलेक्टर रीले' से (टेलिफोन के डिब्बे का एक भाग) सिलेक्टर का प्रवाह बड़ी मात्रा में कम अधिक होता है।

सिलेक्टर रिले

सिलेक्टर में एक विद्युत्चुंबक होता है। प्रत्येक बार प्रवाह खण्डित होने पर चुंबक एक "सीढी" नीचे उतरता है (इस तरह की अनेक सीढियां होती हैं)। सिलेक्टर पहिले पूर्णतः ऊपर उठा हुआ रहता है। जब २ नंबर घुमाते हैं तब चुंबक दो सीढियां नीचे उतरता है। इस पंक्ति में १०० या २०० टर्मिनल रहते हैं तथा उनमें से कुछ टेलिफोन से संलग्न रहते हैं। इसलिये इस चुंबक के सिरे इस पंक्ति में विद्युत् मोटर की सहायता से आगे सरकाये जाते हैं। जो टर्मिनल्स खुले मिलते हैं वहां ये सिरे रुक जाते हैं तथा जोड़े जाते हैं। कोई भी टर्मिनल खुला न होने पर ये सिरे फौरन अपने मूल स्थान पर आ जाते हैं तथा 'कूंऽऽकूंऽऽ' आवाज करनेवाले यंत्र से अपना टेलिफोन जोड़कर अलग हट जाते हैं।

मान लो टर्मिनल खुला रहकर २ नंबर मिला तो उसी क्षण हम ५ नंबर घुमाते हैं। अब पहिले 'खाने' का प्रत्येक टर्मिनल अपने पीछेके 'खाने' से संबंधित होता है। इसके कारण वहां के सिलेक्टर में ५ बार प्रवाह खण्डित होकर वहां का चुंबक ५ सीढियां नीचे उतरता है तथा ५ वीं पंक्ति में खाली टर्मिनल खोजने लगता है। इसी क्रम से तीसरे तथा चौथे आलमारी में १ तथा ९ पंक्ति के टर्मिनल मिलकर आवश्यक नंबर मिलता है।

साधारणतः रिसीवर अपनी जगह रखा रहने से उसमें प्रवाह नहीं रहता। उसे उठाने पर उसके नीचे का खटका स्प्रिंग से ऊपर उठाया जाकर पहिले एक्सचेंज के "लाईन फाईंडर" में से प्रवाह बहने लगता है तथा उसके द्वारा सिलेक्टर से टेलिफोन का रिले जोड़ा जाता है। इसीके कारण हमें पहिले "डायल टोन" धीमा (टर्रर्ऽऽ जैसा आवाज) सुनाई देता है। यह आवाज सुनाई दिये बिना नंबर घुमाने में कोई अर्थ नहीं, क्योंकि तब तक सिलेक्टर का संबंध स्थापित नहीं हो पाता है।

लाईन फाइण्डर

जब सिलेक्टर सारे काम करता है तब लाइन फाइण्डर की आवश्यकता ही क्या यह प्रश्न उपस्थित हो सकता है। इसका स्पष्टीकरण देना आवश्यक है। सिलेक्टर सरकनेवाला भाग है तथा अत्यंत कीमती होता है। सभी सिलेक्टर सरकने की स्थिति में हों और यदि कोई टेलिफोन उठाये तो उसका टेलिफोन की स्थिति पर परिणाम होने की संभावना रहती है। लाईन फाइण्डर का काम सिलेक्टर खुला है या नहीं, यह देखना है। वह बहुत ही मजबूत होता है। जिस प्रकार बस में स्थान है या नहीं यह देखकर ही कंडक्टर अधिक यात्रियों को भीतर लेता है और बस में भीड़ नहीं होने देता उसी प्रकार सिलेक्टर खुला होने तक तुम्हें लाईन फाइण्डर डायल टोन

MU-1
दाद खुजली की
सही दवा
जालिम लोशन
सब जगह मिलती है।
पता – ओरिएन्टल केमिकल, इन्दौर.

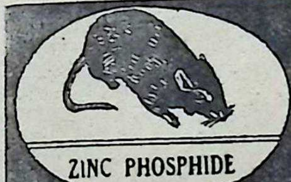

यह देखिये, आपकी फसलों को तबाही करनेवाला बड़ा दुश्मन।
झिंक फॉस्फाईड
उपयोग कर चूहों से अनाज सुरक्षित करें।
अधिक विवरण के लिये तथा मूल्य आदि के लिये लिखें–
कृष्णाजी बल्लाल एण्ड कंपनी
बीज व खेती के औजारों के व्यापारी,
८४६, सदाशिव पेठ, पूना २।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अर्थात् नंबर घुमाने की अनुमति) नहीं देगा तथा सिलेक्टर में से व्यर्थ में अधिक प्रवाह नहीं जाने देगा।

संक्षेप में टेलिफोन तथा टेलिफोन एक्सचेंज की जानकारी दी गयी है। हर एक व्यक्ति को घर पर टेलिफोन रखना संभव नहीं। सौभाग्य से अब भारत में टेलिफोन के सभी पुर्जे निर्माण होने लगे हैं। फिलहाल ये टेलिफोन संपूर्णतः सरकारी कार्यालयों में ही उपयोग में लाये गये हैं फिर भी कुछ ही वर्षों में वे बाजारों में भी मिलने लगेंगे तभी उनकी कीमत कम होगी। इतना होने पर कम से कम शहरों में रेडियो के समान टेलिफोन का प्रचार हो जाएगा।

घरेलू टेलिफोन

घर पर टेलिफोन बनाना कठिन नहीं है। उसके लिये बड़े औजार या अधिक सामान भी नहीं लगता। कम अन्तरवाले कमरों में या पड़ोस के घरों में ऐसे दो टेलिफोन लगाकर उनसे उत्तम रीति से परस्पर संभाषण कर सकते हैं।

मायक्रोफोन--टेलिफोन बनाने के लिये प्रथम माइक्रोफोन बनाना होगा। आ. २ में माइक्रोफोन के भाग बताये गये हैं। एक ३/१६ इंच मोटी तथा २ इंच व्यास की तथा दूसरी १/२ इंच मोटी तथा २ इंच व्यास की लकड़ी की चकती काट लें। दूसरी चकती के बीचोबीच ३/४ इंच व्यास का छेद करें। तीसरी चकती १/४ इंच मोटी लकड़ी की तथा २ ३/८ इंच व्यास की काटकर, उसमें १ १/२ इंच व्यास का छेद करें। पहिली चकती सिरस से दूसरी चकती के पीछे चिपकाएँ।

इस माइक्रोफोन में कार्बन के टुकड़े रखने के लिये निरुपयोगी ड्रायसेल बैटरी से निकाले हुये कार्बन के टुकडों का उपयोग हो सकता है। इसके लिये बैटरी का जस्त का पतरा चिमटे से निकाल डालें तथा भीतरी मसाला गीला कर कुरेद कर निकालें। बीच में लगी हुई कठिन कार्बन की डंडी, जिसे ऊपर पीतल की घुंडी लगी होती है, निकल आएगी (बड़े व्यास की बैटरी की डंडी लें; पुराना सामान मिलनेवाले बाजार में ऐसी निरुपयोगी बैटरियां बहुत सी मिलती हैं। उनका व्यास ३ १/२ इंच तक रहता है। टॉर्च की बैटरी काम में नहीं आ सकती, क्योंकि उसकी कार्बन की डंड़ी बहुत ही पतली होती है। बड़ी डंडी न मिलने पर छोटी डंडी से ही काम चलाएं। परन्तु उसके कारण आवाज बहुत ही धीमी आएगी) बैटरी की डंडी के स्थान पर विद्युत्मोटर का कार्बन ब्रश भी घिसकर उपयोग में ला सकते हैं।

बड़ी बैटरी की डंड़ी का व्यास ३/४ इंच तक हो, कम हो तो जितना हो उसी आकार का छेद दूसरी चकती में करें (ऊपर ३/४" व्यास का छेद रखने के लिये कहा गया है)। बाद में आ. २ के अनुसार इस कार्बन का सिरा नोकदार बनाएँ तथा उस सिरे से ३/१६ इंच अन्तर पर घिसकर सपाट करें। अब यह टुकड़ा बैठ सके इस हिसाब से दूसरा कार्बन का टुकड़ा पोला करें। ये दोनों टुकड़े एक दूसरें में बिठाने पर उनकी कुल लम्बाई ३/८" होगी इस हिसाब से दो टुकड़ों के सपाट भाग घिसें तथा इसके बाद दोनों में बीचोबीच १/८ इंच व्यास का छेद करें। पोला टुकड़ा ऊपर बताये अनुसार चकतियां चिपका कर बनायी गयी लकड़ी की डिबिया में डालें तथा उसमें एक स्क्रू डालकर दूसरी ओर से बाहर निकालें। बाद में उसपर नट हलके से कसें। यहां टेलिफोन की तार आगे लगानी है।

इसके बाद बिस्किट या चाय-काफी के डिब्बे के भीतर का सीलबन्द करनेवाला पतला पतरा निकाल कर उससे २ इंच व्यास की चकती काटकर निकाल लें। यह पतरा बहुत ही पतला हो। उसके मध्य में १/८ इंच व्यास का छेद कर, उस पर कार्बन का नोकदार टुकड़ा रखें तथा

मिरची की पैदावार

लेखक-प्रा. वा. व. राहुडकर, बी. एस्सी. (कृषि)

मूल्य रु १·००; मनीऑर्डर से रु. १·६१ भेजने पर पुस्तक रजिस्टर्ड पोस्ट से भेज देंगे। वी.पी. से मंगाने पर रु. १·६७ लगेंगे। विक्रीकर अतिरिक्त।

प्रस्तुत पुस्तक में

मिरची की विविध जातियाँ, मिरची की काश्त के लिये भूमि, जलवायु, बीज का चुनाव, बोआई का समय, फसलों का हेरफेर, नर्सरी तरीके से पौधे तैयार करना, पौधों की देखभाल, जमीन की पूर्व-जुताई, आवश्यक खादें, पौधों का स्थानान्तर और देखभाल, पानीपूर्ति, अंतर-जुताई, मिरची तोड़ना, सुखाना, संग्रह करना, मिरची के रोग-कीड़ों का इलाज, मिरची का व्यापार, आहार की दृष्टि से मिरची की उपयुक्तता आदि की जानकारी दी है। कृषकों के लिये यह एक उपयुक्त पुस्तक है। आज ही मंगा लें।

-उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों नट-बोल्ट से कसें। जिनका बाह्य व्यास २ इंच तथा छेद का व्यास १½ इंच है ऐसी, मोटे कागज की या गत्ते की, दो चकतियां काटकर, पतरे की चकती को दोनों बाजू से सीमेंट से (डयूरोफिक्स, फ्लायोबांड या रबर सोल्युशन) चिपकाएँ। इस तरह पड़दा (डायफ्राम) तैयार होगा।

कार्बन का बचा हुआ हिस्सा खुरदुरी रेती उलटी पकड़ कर उसपर घिसें। उसके कणों में से बड़े टुकडे इकठ्ठा करें तथा कार्बन की पोली जगह में भरें। लकडी की डिबिया पर दूसरा कार्बन का टुकड़ा लगाया हुआ पड़दा रखने पर इन दो टुकड़ों की पोली जगह आधी भरेगी इस हिसाब ये टुकड़े भरें। पड़दा उसी स्थान पर रखकर तथा उसकी एक किनार के गत्ते की चकती थोड़ी कुरेद कर, वहां प्लास्टिक का आवरण लगायी हुई ४ फुट लंबी पीतल की तार का सिरा दाग देकर बिठायें। पड़दे पर ¼ इंच मोटी तीसरी चकती रखकर उसमें से नीचे की मोटी चकती में तीन स्क्रू कसें। पड़दा अपने ही स्थान पर रहेगा। इस तीसरी चकती के भीतरी छेद की किनार लंबोतरी होती है यह आकृति ३ से स्पष्ट होगा। इस प्रकार माइक्रोफोन तैयार होगा।

रिसीवर--रिसीवर के लिये भी माइक्रोफोन के समान ही चकतियां काट लें। लोहचुंबक तैयार करने के लिये २½ इंच लंबी, $\frac{1}{16}$ इंच मोटी तथा $\frac{3}{16}$ इंच चौड़ी फौलाद की पट्टी आ. ३ के अनुसार नालाकार झुकायें। उसके मध्य भाग में $\frac{1}{16}$ इंच व्यास का छेद करें। रिसीवर के लिये बनायी गयी डिबिया के पीछे की चकती के मध्य बिंदू पर ये छेद आएगा इस हिसाब से वह पट्टी रखकर उसकी सब बाजुओं से लकडी पर पेन्सिल से लकीर खींच लें तथा आ. ३ के अनुसार पट्टी के दो पैर भीतर डालने के लिये दो छेद कर उसमें से पट्टी के पैर बाहर निकाले जांय। पट्टी के पीछे के छेद से स्क्रू डालकर वह पट्टी चकती पर कस डालें (पट्टी बाहर निकालने पर दिखाई देनेवाली स्थिति आ. ३ की बाजू में देखें।)

पट्टी के जो दो पैर बाहर आएंगे उनपर ब्रुश से थोड़ा वार्निश लगा कर ऊपर से पतले ब्राऊन पेपर की पट्टी एक-दो बार लपेटें तथा वार्निश लगाएँ। ३० से ४० नंबर की इन्शुलेटेड तांबे की तार के प्रत्येक पैर पर ५० बार लपेटें। गुंडली लपेटने की दिशा एक दूसरे के विरुद्ध हो। तार लपेटने के बाद तार विलग न हों इसलिये उसपर पिघला हुआ मोम लगायें।

तार लपेटने के पूर्व तथा लपेटने के बाद लगभग १ फुट तार खुली छोड़ें। ये दोनों सिरे पीछे की चकती में इच्छानुसार छेद कर बाहर निकालें। इसके बाद किनार की चकती से (½ इंच मोटी) चिपकाएँ। इस तरह से तैयार हुई डिबिया के पृष्ठभाग की सतह से चुंबक-पट्टी के सिरे नीचे हों तो चकती को घिसें। बहुत ऊपर आये हों तो पट्टी के पीछे लगाये स्क्रू पर पट्टी के नीचे पतले टिन का एक या अधिक वॉशर लगायें तथा पहिले के समान गत्ते की चकतियां लगाया हुआ पतला फौलाद के पतरे का पडदा डिबिया पर रखकर उसपर तीसरी चकती ३ स्क्रू लगाकर बिठायें। इस पडदे को दाग देकर तार जोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है यह ध्यान में रखें। इस तरह रिसीवर तैयार होगा। इसके बाद उत्तम लकड़ी का ९ इंच लंबा तथा एक-डेढ़ इंच चौड़ा टुकड़ा (आ. १ के समान) लेकर उसे टेलिफोन के असली डंडे के समान आकार दें तथा उस पर माइक्रोफोन तथा रिसीवर नट-बोल्ट से या स्क्रू से पक्के बिठायें। यह टेलिफोन हाथ में पकड़ने पर माइक्रोफोन लगभग खडी सतह में रहना चाहिये इसकी ओर अवश्य ध्यान दें।

माइक्रोफोन तथा रिसीवर की तार डंडे के भीतरी बाजू में एक कम चौड़ी परन्तु लंबी खांच कर डालें तथा उपर लाख भरें जिससे वह बीच में नहीं आएगी। सब भागों को गहरा काला जापानी लैकर या साइकिल एनेमेल का चमकदार रंग पोतें। यह टेलिफोन असली टेलिफोन के समान दिखायी देगा। इस तरह से दो पूर्ण टेलिफोन (प्रत्येक का एक रिसीवर तथा एक माइक्रोफोन) तैयार करें।

घंटी—जहां तक बने आजकल बाजार में ३-४ रु. तक मिलनेवाली तथा बॅटरी पर चलनेवाली जर्मन घंटी

असली व विश्वसनीय
बीज तथा **फलवृक्ष**
और उनसे अधिकतर उत्पादन के लिये
मिश्र-खाद, कीटकनाशक
स्प्रे-पंप व डस्टर्स
तथा
मवेशियों के सब रोगोंपर
पशु-दवाइयाँ तथा **पुष्टिदायक खुराक**
-विवरण के लिये लिखें-
नेने बंधू
बीजों के बेपारी, महाल, नागपूर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयोग में लायें। घंटी के स्थान पर टर्र आवाज करनेवाला 'बझर' भी काम में ला सकते हैं। द्वोनों में से एक भी चीज खरीदने की इच्छा न हो तो आ. ४ के समान घर पर ही बझर तैयार कर लें। इसके लिये मामूली मोटे

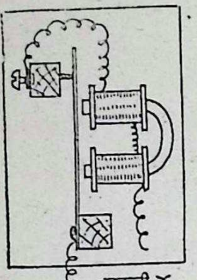
आकृती ४

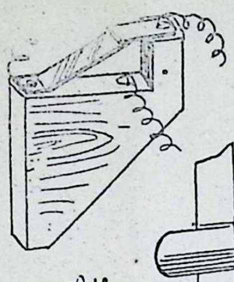
आकृती ५

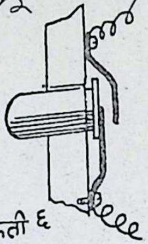
आकृती ६

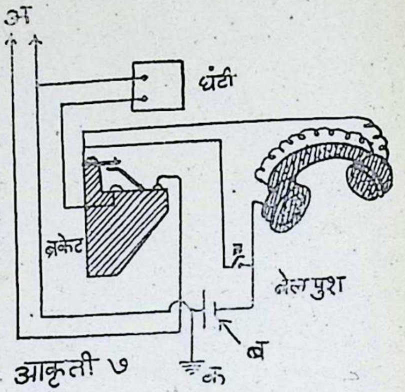

आकृती ७

अ– दूसरे टेलिफोन की ओर ब– बैटरी
क– पानी का नल

प्लायवुड से २$\frac{1}{2}$" × २" आकार का टुकड़ा काट लें। $\frac{1}{2}$"×$\frac{1}{2}$"×$\frac{3}{4}$" आकार के दो लकड़ी के टुकड़े प्राप्त करें। १॥ इंच लंबे U आकार की कीलें (स्टेपल) लेकर उनके सिरे सपाट घीसें। स्टेपल उपलब्ध न हों तो ४ इंची तार के कीलें झुका लें। चार प्लाइवुड की चकतियाँ लेकर उनमें कील के बराबर के $\frac{3}{8}$ इंच व्यास के छेद करें तथा कील के प्रत्येक सिरे पर एक इस हिसाब से दो चकतियां दोनों सिरों पर जितनी चढ़ सकें उतनी चढ़ायें। अन्य दो चकतियां सिरों के पास रखें।

रिसीवर के चुंबक के समान इसपर भी चकतियां भरने तक २८ नंबर की डबल कॉटन कव्हर्ड (d. c. c.) तार लपेटें। दोनों गुंडलियों की दिशा परस्पर विरुद्ध हो। गुंडलियों पर एक लकड़ी की पट्टी आड़ी रख कर उसमें से नीचे के तख्ते में स्क्रू कसें। लोहचुंबक पक्का बैठ जायेगा। आर्मेचर के लिये एक टूटी हैकसॉ या घड़ी के स्प्रिंग की १$\frac{1}{2}$ इंच लंबी पट्टी काम में लायें। यह पट्टी में छेद* कर, स्क्रू की सहायता से एक $\frac{1}{2}$" × $\frac{1}{2}$" × $\frac{3}{8}$" टुकड़े से जोड़ी गयी है तथा वह टुकड़ा आ. ४ के अनुसार नीचे के तख्ते से जोड़ा गया है। दूसरे टुकड़े में से एक लंबा पीतल का स्क्रू निकाला गया है तथा वह आर्मेचर से स्पर्श कर सके इतना कसा गया है। गुंडलियों की तार का एक सिरा इस स्क्रू से स्थायी रूप से जोड़ा गया है। गुंडली का दूसरा सिरा तथा आर्मेचर के स्क्रू से जुड़ी हुई तार इन्हें बैटरी के सिरे जोड़ने से पट्टी 'टर्र टर्र' आवाज करने लगती है। उसका आवाज कम–अधिक करने के लिये उससे स्पर्श करनेवाला स्क्रू आगे–पीछे करें। इस बझर का आवाज बढ़ाना हो तो आर्मेचर पट्टी के सिरे के पास एक बिना ढक्कन का खाली डिब्बा आड़ा रख कर तथा उसके तल से पट्टी का सिरा स्पर्श करता हुआ रखने के लिये, झुका लें।

पुश बटन या बेल पुश––(Push–button या bell push) यह बाजार में बहुत ही सस्ता मिलता है (८–१२ आने में)। उतने भी पैसे खर्च करने की इच्छा न हो तो एक लकड़ी का बटन, दो लचीली पीतल की पट्टियां (इसके लिये सायकल के दीये के लिये जिस दो सेल की बैटरी का उपयोग किया जाता है उसकी पीतल की दो पट्टियां काम में ला सकते हैं)। आ. ६ के अनुसार स्क्रू की सहायता से तख्ते के पीछे बिठायें। बटन दबाने से पट्टियों का स्पर्श होकर उसमें से प्रवाह बहने लगेगा।

टेलिफोन का खटका (Cradle Switch)–– आ. ५ के अनुसार $\frac{1}{2}$ इंच (मोटी) लकड़ी के दो ब्रैकेट बनायें। (नाप सुविधा के अनुसार हो)। इसी ब्रैकेट पर ही टेलिफोन रखना है। दो ब्रैकेट में से एक ब्रैकेट पर दो स्क्रू उपयोग में लाकर आकृति के अनुसार दो लचीली पीतल की पट्टियां, एक दूसरे से स्पर्श करने की स्थिति में, कसें। दोनों स्क्रू से तार जोड़ें। उसी प्रकार तिरछी पट्टी, उस पर टेलिफोन रखने पर, जहां वह झुकेगी वहां स्पर्श कर सके इस हिसाब से तार जोड़ा हुआ तीसरा स्क्रू कसें।

इसके बाद १२" × ६" × $\frac{1}{8}$" आकार की लकड़ी के तख्ते पर यह ब्रैकेट बिठायें (आ. १) तथा उसपर टेलिफोन ठीक बैठता है या नहीं यह देखें। टेलिफोन उठाने पर एक ब्रैकेट की तिरछी पट्टी नीचे के स्क्रू से अलग होकर ऊपर की आडी पीतल की पट्टी से स्पर्श करती है या नहीं यह देखें।

*पट्टी में छेद करने के लिये उसे लाल होते तक गरम कर धीरे धीरे ठंडी होने दें। कील से छेद करें। फिर लाल होते तक गरम करें तथा पानी में डुबायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तार जोडना

आ. ७ के अनुसार निम्नलिखित रीति से तार जोड़ें–

(१) टेलिफोन के माइक्रोफोन की एक तार रिसीवर के एक तार से उसी जगह जोड़कर दूसरी तार (४ फुट लंबी) बाहर निकालें तथा क्रेडल-स्विच के ब्रैकेट के ऊपर की आडी पट्टी से जोड़ें।

(२) रिसीवर की दूसरी तार को भीतर ही ५ फुट लंबी प्लास्टिक वायर का एक सिरा दाग देकर बिठायें तथा यह प्लास्टिक वायर ४ फुट तक माइक्रोफोन के ४ फुट की तार के साथ गूंथे। इससे तार उलझती नहीं। इतना ही करें कि उसका सिरा तख्ते के पीछे बिठायी हुई बैटरी के एक सिरे से जोड़ें।

(३) बैटरी के इसी सिरे से और एक तार लेकर, उसे बेलपुश खटके के एक सिरे से जोड़ें। इस खटके का दूसरा सिरा तार द्वारा ब्रैकेट के ऊपर की आडी पट्टी से जोड़ें।

(४) बझर की एक तार ब्रैकेट की तिरछी पट्टी के नीचे आएगी इस तरह बिठाये हुये स्क्रू से जोड़ें तथा दूसरा सिरा बैटरी से जोड़ें। इसी सिरे से जुड़ी हुई लंबी तार आगे दूसरे टेलिफोन की ओर ले जाएं। (या पानी के नल को दाग देकर बिठाएँ)।

(५) ब्रैकेट की तिरछी पट्टी के स्क्रू को एक लंबी तार लगाकर वह आगे दूसरे टेलिफोन की ओर ले जाएं।

(६) जहां तक हो सभी जोड़ दाग देकर बिठाएँ।

ठीक इसी क्रम से दूसरे टेलिफोन की तार भी जोड़ें। दोनों टेलिफोन को इन्शुलेटेड वायरों से जोड़ें। प्लास्टिक वायर आजकल बहुत ही सस्ती मिलती है। १०० यार्ड (३००-फुट) लंबी दोहरी Flexible तार का (प्लास्टिक वायर) बंडल १२ रु. तक मिलता है। सभी तार तथा जोड़ तख्ते के पीछे की बाजु में रखें। बैटरी के ध्रुव समान हों। सायकल के टॉर्च की बैटरियाँ इसके लिये उत्तम हैं।

उपयोग करने की पद्धति

जब दूसरे टेलिफोन से बात करनी हो तब पहिले अपना टेलिफोन उठा कर बेलपुश का बटन दबाएँ। दूसरी ओर की बझर या घंटी बज उठेगी। बटन सतत दबाकर न रखें; केवल दूसरे छोर के व्यक्ति का ध्यान आकर्षित करना ही इसका उद्देश्य है। उस व्यक्ति द्वारा टेलिफोन उठाने पर पहिले टेलिफोन में 'क्लिक्' ऐसी ध्वनी सुनाई देगी। फिर संभाषण शुरू करें।

छोटे कारखानदारों के लिये सुविधा]प्रकाशित हुआ[कृषकों का मार्गदर्शन

डीझेल या ऑइल इंजन की पूर्णतः व सचित्र जानकारी की खास पुस्तक

डिझेल अथवा ऑइल इंजन

लेखक – श्री श्री. स. आपटे

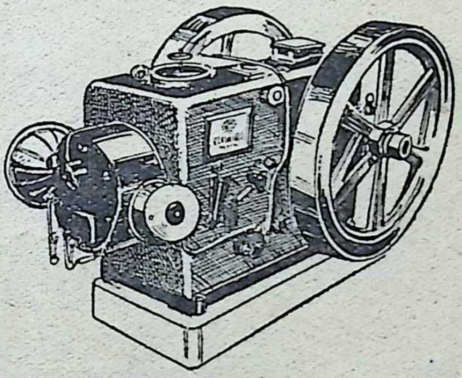

कीमत रु. २·०० मनीऑरडर से रु. २·६५ भेजने पर पुस्तक रजि. पोस्ट से भेजेंगे। व्ही. पी. से मँगाने पर रु. २·७१ होंगे। सेलटॅक्स अतिरिक्त।

– प्रस्तुत पुस्तक में –

डिझेल इंजिन के प्रकार, प्रमुख पुर्जे, टू स्ट्रोक इंजन, डीझेल तेल का ज्वलन, तेल की पूर्ति करना, डीझेल इंजन में दोष और उनका निराकरण आदि जानकारी दी है। अन्त में कुछ प्रमुख देशी व विदेशी इंजिनों की विस्तृत जानकारी दी है। अपनी प्रति बिना विलंबके मंगा लीजिये। – उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद्र तथा बिजली द्वारा वर्षा विषयक संकेत

[जुलाई १९५८ के अंक में सूर्य, आकाश का रंग, मेघ, इन्द्रधनुष्य, सूर्यबिम्ब, मेघों के स्तम्भ, सन्धिप्रकाश आदि से वर्षा का अनुमान लगाने के बारे में बताया गया था। प्रस्तुत लेख में चंद्र तथा बिजली द्वारा जो वर्षा विषयक संकेत मिलते हैं उनकी चर्चा अनुभव के आधार पर की गयी है।

बहुत वर्षों के सृष्टि–निरीक्षण से जो अनुभव प्राप्त हुये हैं उनकी प्रतीति 'उद्यम' के पाठक स्वयं अवश्य लेंगे ऐसा विश्वास है। किसानों के लिये तो यह जानकारी बहुत ही उपयोगी है।

मैंने यह सारा निरीक्षण पूना में रहकर ही किया, क्योंकि वहां से दो मील की दूरी पर मेरी खेती थी। दूर की यात्रा में भी ये अनुभव मैंने परख कर देखे हैं।]

चंद्र द्वारा वर्षा के संकेत

सूर्य के समान ही चंद्र से भी वर्षा विषयक संकेत प्राप्त होते हैं। चंद्र के संकेत सूर्य के संकेतों से कुछ अधिक निर्भूल होते हैं। चंद्र की ओर देखने से सभी को हमेशा आनन्द होता है। हम उस आनंद का उपभोग हमेशा ही करते हैं। परन्तु बहुत कम लोगों को चंद्र पर दिखाई देनेवाले चिन्हों से वर्षा का अनुमान करना ज्ञात है। शुद्ध प्रतिपदा से चंद्र विभिन्न प्रकार से वर्षा की सूचना देता है।

शुद्ध प्रतिपदा का चंद्र एकाध बार ही देखने मिलता है। ऐसा चंद्र देखने बंबई में चौपाटी पर लोग उत्सुकता से जमा होते हैं। ऐसा पता चला है कि कुछ व्यापारी लोग ऐसे चंद्र से तेजी मंदी का अनुमान करते हैं। चंद्र की कोर दक्षिण या उत्तर की ओर झुकी हुई हो तो बाजार का रुख क्रमशः मंदी या तेजी की ओर रहेगा तथा कोर समानान्तर हो तो बाजार का रुख स्थिर रहेगा ऐसा कुछ व्यापारी मानते हैं। कई बार ऐसे चंद्र को चांदी के सिक्के की चढोत्री चढ़ाकर प्रणाम करनेवाले लोग भी दिखायी देते हैं।

चंद्र के रंग से वर्षा का अनुमान

अमावास्या के बाद पहिले तीन दिनों में चंद्र का रंग धूमिल हो तथा उसकी कोर दक्षिण की ओर झुकी हो तो उस दिशा में चार दिन में वर्षा होने की अधिक संभावना रहती है। उसके दोनों सिरे पूर्णतः बायीं ओर झुके हुये हों तथा उसका रंग धूमिल हो तो उस समय दक्षिण दिशा में वर्षा हो रही है तथा वह अष्टमी नवमी तक जारी रहेगी ऐसा समझें। चंद्र पूर्णतः दाहिनी बाजू में झुका हो और उसका रंग धूमिल हो तो उत्तर में वर्षा अधिक होने की सूचना मिलती है। इसकी प्रतीति बहुत दूर तक मिलती है। ऐसे समय दक्षिण की ओर वर्षा की कमी का अंदाज लगाना गलत साबित नहीं होगा।

अमावास्या के बाद प्रथम चार दिनों में चंद्र यदि समानान्तर स्थिति में हो तथा उसपर वर्षा का धूमिल रंग हो तो चार छह दिन में वर्षा होगी तथा वह साधारणतः सब दूर होगी ऐसा अनुमान निकलता है। अनेक बार इसका अनुभव ले सकते हैं। दक्षिण की ओर होनेवाली वर्षा, थोडी बहुत अपने भी गांव में होने की संभावना रहती है; उत्तर की वर्षा इधर नहीं होती है। इन दिनों में चंद्र पर कोई भी छटा या रंग न हो तो लगभग पंद्रह दिनों तक वर्षा की बिलकुल संभावना नहीं रहती है।

बिलकुल फीके रंग का चंद्र संभाव्य वर्षा की सूचना देता है। चन्द्र लाल सा दिखाई दे तो पन्द्रह दिनों तक वर्षा न होने तथा आकाश निरभ्र रहने का संकेत मिलता है। यह चिन्ह वर्षाऋतु छोड़कर अन्य ऋतुओं में देखने को मिलता है। ऊपर बताया गया प्रथम लक्षण विशेष रूप से वर्षाऋतु प्रारंभ होने के पूर्व दिखाई देता है। उसपर से कोलंबो में वर्षा कब होगी इसका अनुमान लगा सकते हैं। रात्रि को चन्द्र मलीन तथा फीका तथा दिन में सूर्य यदि नीला दिखता हो तो चार दिन में निश्चित वर्षा होती है।

चन्द्र के चारों ओर वलयाकृति

अपने को दिखाई देनेवाले आकाश के पूर्व–पश्चिम तथा दक्षिणोत्तर, इस प्रकार ४५° के चार भाग होते हैं। उसमें पहिले दो मध्यान्ह पूर्व तथा दूसरे दो उत्तर रात्रि के होते हैं। चंद्र आकाश के दूसरे भाग में हो तथा यदि वह वर्षा का रंग दिखाता हो, वह धूमिल कांच के समान दिखता हो, उसके चारों ओर सफेद पीला सा वलय भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो तथा आकाश में मेघ इधर उधर फैले हुये हों तो उसपर से ८ से १० दिन के भीतर अच्छी वर्षा शुरू होगी ऐसा संकेत मिलता है। चंद्र आकाश के प्रत्येक भाग में से भ्रमण करता हुआ जाता है। शुद्ध एकादशी या द्वादशी को वह लगभग नौ बजे दूसरे भाग में होता है। उस समय उसके चारों ओर ऊपर बताये अनुसार वलय दिखाई दे तथा उस वलय के भीतर शनि, मंगल या गुरु इन ग्रहों में से किसी एक ग्रह का समावेश हो तो उससे अलग अलग अनुमान निकलते हैं। मंगल कृषिप्रधान ग्रह है; वह यदि चंद्र के वलय में आता हो तो निश्चित रूप से चार दिनों में वर्षा होती है तथा वह वर्षा खेती के लिये लाभकारी होती है। शनि ग्रह उग्र तथा हानिकारक माना गया है। इसलिये वह यदि वलय में आता हो तो वर्षा निश्चित होती है परन्तु इससे हानि पहुंचती है। यदि गुरु उस वलय में हो तो साधारणतः सौम्य तथा प्रसन्नता देनेवाली वर्षा होती है। इन बातों का अनुभव हम आसानी से ले सकते हैं।

वलयों की विभिन्न स्थिति तथा उनसे मिलनेवाले संकेत

इस प्रकार गोलाकृति वलय चंद्र के पास रहे तो हर भाग के अनुभव अलग होते हैं। उदाहरणार्थ–प्रथम भाग में चंद्र के चारों ओर वलय दिखाई दे तो बहुत बार वर्षा-मान कम रहता है। तीसरे भाग में चंद्र हो और उस समय उसके चारों ओर वलय दिखाई देने के साथ ही वर्षा के अन्य संकेत भी दिखते हों तथा वलय एकाध दिशा में खण्डित दिखता हो तो उस दिशा में वर्षा नहीं होती है। चौथे भाग में चंद्र हो और उसके चारों ओर वलय हो तो अकाल की संभावना अधिक होती है। तीसरे भाग के वलय के कारण कभी कभी अति वृष्टि होकर फसल को हानि पहुंचती है।

चंद्र के चारों ओर दिखाई देनेवाले वलय का अनुभव मैंने कई बार लिया है। विगत तीन–चार बर्षों के गणेशोत्सवों में वर्षा हुई। श्रावण शुद्ध दशमी–एकादशी को ही उपर्युक्त चिन्हों द्वारा संभाव्य वर्षा के संकेत मुझे मिल गये थे। कुछ गणेशोत्सवों के संचालकों को मैंने सावधान भी कर दिया था। वद्य पक्ष में चंद्र दूसरे भाग में विभिन्न समयों पर आता है; परन्तु उस समय भी संभाव्य वर्षा का यह संकेत कम–अधिक मात्रा में मिलता है।

रात्रि के समय दिखाई देनेवाले मेघों के स्तंभ

इसके पूर्व के लेख में आकाश में वर्षा–निदर्शक मेघों के विभिन्न आकार के स्तंभ के बारे में उल्लेख किया जा चुका है। इसी प्रकार के स्तंभ रात्रि को भी दो से साढ़े तीन के बीच चंद्रप्रकाश में अनेक बार दिखते हैं। वे जिस दिशा में दिखते हों उस दिशा में यदि वे वलय का छेद कर प्रवेश कर रहे हों तो उस दिशा में एक–दो दिन में निश्चित वर्षा होगी ऐसा संकेत मिलता है। यह अनुमान आज तक एक बार भी गलत सिद्ध नहीं हुआ है। इस प्रकार के स्तंभ के चिन्ह दिन के समान ही रात्रि को भी बहुत बार दिखते हैं।

"आर्थिक समीक्षा"

आखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आर्थिक-राजनीतिक अनुसन्धान विभाग का पाक्षिक पत्र

प्रधान सम्पादक : आचार्य श्रीमन्नारायण अग्रवाल

सम्पादक : श्री हर्षदेव मालवीय

★ हिन्दी में अनूठा प्रयास ★ आर्थिक विषयों पर विचारपूर्ण लेख

★ आर्थिक सूचनाओं से ओतप्रोत

भारत के विकास में रुचि रखनेवाले प्रत्येक व्यक्ति के लिये अत्यावश्यक, पुस्तकालयों के लिये अनिवार्य रूप से आवश्यक

वार्षिक चन्दा ५ रुपये : एक प्रति का साढ़े तीन आना

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग,

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, ७, जंतर-मंतर रोड, नई दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद्र का धूमिल कांच के समान, काला सा, पीला सा दिखाई देना भी वर्षा–निदर्शक लक्षण है। इस प्रकार का चन्द्र यदि एकाध दिन अल्प समय के लिये ही दिखाई दे तो उससे आकाश में केवल बादल जमा होंगे, वर्षा नहीं होगी ऐसा संकेत मिलता है। परन्तु लगातार तीन दिनों तक उसी प्रकार चन्द्र दिखाई दे तो निश्चित वर्षा होती है। कई बार उदय होने के बाद, चन्द्र मेघाच्छादित होता है। स्वयं चन्द्र शुभ्र होता है परन्तु काले से मेघों के पीछे रहते समय उस मेघ की दिशा में उसकी प्रभा लाल-सी दिखती है। ऐसे समय मेघ बिलकुल स्थिर रहते हैं। तया संध्या को सूर्यास्त के समय उन पर गुलाबी, अधिकांश सिंदूरी रंग की छटा दिखती है। ऐसे समय दो बातों की संभावना होती है। एक–दो दिन में तूफान होकर वर्षा होगी या जाड़ा पड़ेगा। यह दृश्य सबेरे सूर्य के चारों ओर वलय दिखने के दस बारह दिन बाद दिखाई देता है।

इस प्रकार वर्षा विषयक भविष्य बतलाने में चंद्र से मदद मिलती है। ये संकेत समझना बिलकुल आसान है, केवल उन्हें ध्यानपूर्वक देखने का अभ्यास करना होगा।

बिजली का कौंधना

वर्षा ऋतु के प्रारंभ में या अन्त में आकाश में समय समय पर बिजली कौंधती है। उसका भी इस दृष्टि से महत्व है। वैशाख मास में वर्षा के समय बादलों में कड़ाके के साथ बिजली कौंधती है या बिजली गिरती है परन्तु उसे वर्षा विषयक संकेत की दृष्टि से कोई महत्त्व नहीं है। परन्तु आकाश में मामूली मेघ छाये रहते हुये भी सतत बिजली कौंध रही हो और उसका आवाज न होता हो तो उसे वर्षा की दृष्टि से बहुत अधिक महत्व है। इस तरह की बिजली कभी सूर्यास्त के पहिले, परन्तु अधिकांश समय सूर्यास्त के बाद ही नौ बजे तक दिखाई देने पर पांच–छह दिनों में वर्षा होने का संकेत मिलता है। इस संबंध में भाडली कहती है "उत्तर या पश्चिम में शाम को बिजली कौंधती हो तो शीघ्र ही वर्षा विपुल होगी ऐसा संकेत मिलता है। परन्तु बिजली केवल पूर्व या दक्षिण में दिखाई दे तो फिलहाल अपने यहां वर्षा नहीं होगी ऐसा संकेत मिलता है।" संक्षेप में उत्तर की बिजली वर्षा होने का संकेत देती है, पश्चिम की बिजली साधारण वर्षा की सूचना देती है। ईशान्य दिशा में चमकनेवाली बिजली चार दिनों के भीतर वर्षा होने की सूचना देती है।

बिजली के प्रकार तथा रंग

कभी कभी बिजली उत्तर या ईशान्य दिशा में कौंधती है और नैऋत्य या पश्चिम की ओर से वर्षा होती है। इस असंगति का कारण समझ में नहीं आता है। बिजली के भी तीन प्रकार हैं। उसी प्रकार उनके रंग भी तीन हैं– रक्तवर्ण, पीतवर्ण तथा श्वेतवर्ण। बिजली का कौंधना भी तीन प्रकार का है–(१) जिस दिशा में वह कौंधती है उस दिशा से समानांतर तथा चपल (२) उस दिशा में सीधी (९०° का कोन) तथा सर्पाकार तथा (३) उस दिशा में तिरछी याने ४५° का कोन कर कौंधनेवाली तथा अत्यंत चपल। तीन प्रकार से कौंधनेवाली बिजलियों के रंग को भी बहुत महत्त्व है। रक्तवर्ण बिजली वर्षा की सूचना देती है। पीतवर्ण बिजली मूसलाधार वर्षा की सूचक है तथा श्वेतवर्ण बिजली वर्षा हट जाने की सूचना देती है। सतत निरीक्षण से बिजली के रंगों का अन्तर सरलता से ध्यान में आता है। जिस रंग की बिजली कौंधती है उसी रंग का प्रकाश फैलता है।

समानान्तर चमकनेवाली बिजली चपल हो तो सबदूर कम–अधिक मात्रा में छह दिन के भीतर वर्षा होगी ऐसा संकेत मिलता है। यदि वह मन्द हो तो कुछ ही हिस्सों में वर्षा होने की सूचना मिलती है। सीधी चमकनेवाली बिजली अति चपल हो तो उस हिस्से में याने उत्तर में बहुत दूर तक वर्षा फैल रही है, ऐसा संकेत मिलता है। सीधी बिजली बहुत ही कम मन्द होती है; परन्तु वैसी बिजली दिखे तो वर्षा का जोर नहीं रहता। ४५° डिग्री का कोन कर याने तिरछी बिजली हमेशा चपल ही होती है। उसका उगम स्थान यदि पूर्व दिशा में हो तो उस दिशा में वर्षा अधिक होने की संभावना रहती है; परन्तु उसका अधिक रुख ईशान्य की ओर ही होता है। इन तीनों समयों पर उसके रंग को ही अधिक महत्त्व है। ये सारी बातें सातत्य से निरीक्षण कर उसपर विचार करने से ही समझ में आती हैं।

आकाश से गिरनेवाली बिजली धरती पर पानी में आश्रय लेती है इसलिये जंगल में जिस स्थान पर बिजली गिरती है वहां पानी लगता है ऐसी एक धारणा है।

संचित पानी पर बुलबुले

वर्षा होते समय वह भी अपने आगामी आगमन की सूचना देती है। आंगन में पानी के डबरे में वर्षा की बूंदें गिरती हैं तब उस पानी में बुलबुले पैदा होते हैं। ये बुलबुले कुछ समय तक स्थायी रहते हुये दिखाई दें तो वर्षा शीघ्र बन्द न हो कर, तीन चार दिन तक जारी रहेगी ऐसी सूचना मिलती है। ये बुलबुले रास्ते से बहनेवाले पानी में भी दिखते हैं। वर्षा कम या अधिक समय तक होगी यह बात बुलबुले की कम अधिक संख्या तथा उनके टिकने की अवधि पर निर्भर करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक द्वय-श्री ब. वि. राहुडकर
श्री वि. श्रा. यावलकर

विभिन्न राज्यों में खाद देने की पद्धतियाँ

[पिछले लेखांक में (जुलाई १९५८) केले की बागवानी के लिये कौनसी खाद कितनी मात्रा में किस समय देनी चाहिये इसके बारे में जानकारी दी गयी थी। इसके अतिरिक्त केले को आवश्यक पोषक अन्न-द्रव्य, अन्नद्रव्यों की कमी पहिचानने की रीति के बारे में भी चर्चा की गयी थी]

महाविदर्भ

अनुभव से ज्ञात हुआ है कि केले के लिये गोबर खाद ही सबसे अधिक उत्तम है। नत्रयुक्त खादों से भी उत्तम लाभ पहुंचता है। वरुड (अमरावती जिला) में केले को लगाने के पूर्व प्रति एकड़ ४० गाड़ियां गोबर खाद जमीन में मिलायी जाती हैं। इसके अतिरिक्त हरी खाद भी देते हैं। पूरक खाद के नाते (Top dressing) नीचे बताये अनुसार खाद-मिश्रण केले के प्रत्येक पेड़ को देते हैं--

मूंगफली की खल्ली	...	४ छटाक
सुपर फॉस्फेट	...	४ ,,
पोटेशियम सल्फेट	...	४ ,,

उपर्युक्त परिमाण में वर्ष में दो बार प्रथम अक्टूबर तथा दूसरी बार जनवरी में केले को पूरक खाद दी जाती है।

नागपुर-सौंसर भागों में मई में प्रति एकड़ ४० गाड़ियां गोबर खाद दी जाती है। रोपण के पूर्व प्रत्येक गड्ढे की मिट्टी में ½ सेर मूंगफली की खल्ली तथा २ सेर गोबर खाद मिलाते हैं। रोपण के एक मास बाद रोपों को निम्नलिखित खाद मिश्रण देते हैं--

मूंगफली की खली	...	१४ छटाक
अमोनियम सल्फेट	...	८ ,,
सुपर फॉस्फेट	...	८ ,,
{ पोटेशियम सल्फेट	...	६ ,,
{ या लकड़ी की राख	...	१२ ,,

उपर्युक्त परिमाण में खाद-मिश्रण तैयार कर केले के पेड़ को प्रथम मास में २ छटाक, दूसरे मास में ४ छटाक, तीसरे मास में ६ छटाक, चौथे मास में ८ छटाक, पांचवे तथा छठवें मास में ८-८ छटाक देते हैं। संभव हो तथा आवश्यकता हो तो उपर्युक्त परिमाण से दुगुनी मात्रा में खाद देने में कोई आपत्ति नहीं है। खाद देने के बाद पानी अवश्य दें।

बंबई राज्य

खानदेश-जलगांव के पास के जिन केले के बगीचों को मैला-पानी की (Sewage water) खाद दी जाती है वहां अन्य खाद नहीं देते हैं।

खानदेश में अधिकांश लोग केले को गोबर खाद ही देते हैं। वर्षाऋतु प्रारंभ होने के पूर्व हलकी किस्म की काली जमीन में १०० से १५० गाड़ियां तथा मध्यम प्रकार की काली जमीन में ३० से ५० गाडियां गोबर खाद मिलाते हैं। वर्षाऋतु समाप्त होने के बाद क्यारियां बनाते समय, संभव होने पर, प्रत्येक पेड़ को १ या २ तसेले भरकर गोबर खाद दी जाती है।

हरी खाद देने से भी फायदा होता है, ऐसा बागवानों का अनुभव है। केले के पौधे बगीचे में लगाने के समय ही सन का बीज बोते हैं। छह सप्ताह के बाद सन की फसल जमीन में मिलाते हैं। उसे जमीन में मिलाना हो तो उसके पूर्व जमीन में गोबर खाद नहीं मिलायी जाती। परन्तु क्यारियां बनाते समय प्रति एकड़ १०० गाड़ियां गोबर खाद जमीन में मिलाते हैं।

किन्हीं स्थानों में पेडों को विपुल खाद देते हैं। केले की बागवानी करने के एक वर्ष पूर्व वर्षाऋतु प्रारंभ होते ही सनई का बीज बगीचे में फेंक कर बोते हैं। इस फसल को सितम्बर-अक्टूबर में काटा जाता है। उसके बाद तुरन्त जमीन की जुताई की जाती है। कई बार जमीन में बखर भी चलाया जाता है। अक्टूबर से मई तक इस खेत में रोज रात्रि को जानवर बांधे जाते हैं। हर दो मास बाद इकट्ठा किया हुआ गोबर खेत में एक-सा फैलाया जाता है तथा हल द्वारा जमीन में मिलाया जाता है। इसके अतिरिक्त संभव हो तो प्रतिदिन रात्रि को प्रति एकड़ ४००० बकरी-भेडें रखी जाती हैं। खेत में भेडें रखना संभव न हो तो रोप लगाने के पूर्व प्रति एकड़ १०० गाड़ियाँ गोबर खाद जमीन पर फैलाकर बखर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसमें मिलाते है। इस प्रकार खाद देने से रोपण के बाद केले को अन्य खाद नहीं दी जाती है।

जिन भागों में बगीचे को नहर का पानी उपलब्ध होता है वहां रोपण के पूर्व प्रति एकड़ ३० से ३५ गाड़ियां गोबर खाद मिलायी जाती है। रोपण के तीन मास बाद प्रत्येक पेड़ को मुठ्ठीभर अल्मोनियम सल्फेट तने से ९ इंच दूरी पर परन्तु तने के चारों ओर खाद का गड्ढा बना कर देते हैं। ये खाद खुरपी से जमीन मिलाते हैं। केले को अमोनियम सल्फेट देने से उत्पादन बढ़ता है। परन्तु उससे ग्रीष्मऋतु में फलों में दरारें पड़ती हैं तथा बहुत हानि होती है, ऐसा बागवानों का अनुभव है।

बसई--बसई भाग में केले को निम्नलिखित खाद-मिश्रण दिया जाता है--

अण्डी की खल्ली २ से २½ सेर	पोटैशियम सल्फेट ५ छटाक
अमोनियम सल्फेट १२ छटाक	सुपर सल्फेट ६ ,,

रोपण के बाद चार मास तक प्रति मास उपर्युक्त खाद-मिश्रण पूरक खाद के नाते प्रत्येक पेड़ को देते हैं। इसके अतिरिक्त वर्ष में दो या तीन बार दूसरे प्रकार की खली प्रत्येक पेड़ को ३ से ४ सेर के हिसाब से देते हैं।

बंबई राज्य के उत्तर भाग में वर्षा शुरू होने के बाद केले को उत्तम सड़ी हुई प्रांगारिक खाद भरपूर दी जाती है। निराई होने के बाद तथा पेड़ों के सूखे पत्ते तोड़ डालने के बाद ही खाद दी जाती हैं। दक्षिण के भागों में रोपण के बाद प्रति एकड़ जमीन में ४० गाडियां गोबर खाद मिलायी जाती है। बंबई राज्य के कुछ भागों में प्रति एकड़ २० गाड़ियां गोबर खाद तथा १०० रत्तल अमोनियम सल्फेट देने से उत्तम फसल मिलती है।

क्या मौसम में आपके फल व्यर्थ जाते हैं? क्या मौसम को छोड़ अन्य समय में फलों का उपयोग करने से आप वंचित रह जाते हैं? तो फिर

फलसंरक्षण अर्थात्

फलों के टिकाऊ पदार्थ तैयार करना

नामक नई प्रकाशित पुस्तक क्यों नहीं मंगवाते?

मूल्य रु. २·००; म. ऑ. से रु. २·६५ भेजनेपर पुस्तक रजि. पोस्ट से भेजेंगे। वी. पी. द्वारा मंगाने के लिये रु. २·७१ लगेंगे। विक्रीकर अतिरिक्त।

प्रस्तुत पुस्तक में

फलों के जैम, जैली, मार्मलेड, मुरब्बे आदि पदार्थ फलों को डिब्बाबन्द करना (Fruit Canning), फलों के पाक बनाना (Candied Fruits) आदि विषयों की जानकारी सप्रयोग दी गई है। अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करा लें।

—उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १।

देने योग्य खाद

केले के पेड़ को नीचे बताये अनुसार खाद देकर देखें—

(१) पौधा लगाते समय प्रत्येक गड्ढे में २५ रत्तल गोबर खाद डालें। निम्नलिखित खाद तीन समान किश्तों में रोपण के क्रमशः दो, तीन तथा चार मास बाद डाली जाय--

प्रत्येक पौधे को	(रत्तल)		रत्तल
खली …	३ से ४	अमोनियम सल्फेट	१।।
सुपर फॉस्फेट	३	पोटैशियम सल्फेट	२

केले के पेड को अण्डी की खली देना अधिक उत्तम है।

या (२) प्रथम वर्ष--	अमोनियम सल्फेट	३	रत्तल
	सुपर फॉस्फेट …	३	,,
	पोटैशियम सल्फेट …	१	,,
द्वितीय वर्ष--	अमोनियम सल्फेट …	१	,,
	सुपर फॉस्फेट …	½	,,
	पोटैशियम सल्फेट …	¼	,,
या (३) …	खल्ली … …	२½	,,
	अमोनियम सल्फेट …	१½	,,
	सुपर फॉस्फेट …	३	,,
	कुल	७	रत्तल

इसमें से ४ रत्तल मिश्रण रोपण के पूर्व गड्ढे में डालकर शेष मिश्रण भराई के समय प्रत्येक पेड़ को डालें।

(४) हाजीपुर में (बिहार) प्रति बीघा ४०० मन गोबर खाद डालते हैं। इसके सिवाय प्रत्येक पेड़ को ६ सेर अण्डी की खल्ली, ६ सेर मछली या २ सेर हड्डी का चूरा तथा १० सेर केले के पत्तों की राख या लकड़ी की राख या २ सेर पोटैशियम सल्फेट मिलाकर वर्ष में वर्षाऋतु के प्रारंभ में, वर्षाऋतु के बाद तथा वसन्तऋतु के प्रारंभ में तीन बार देते हैं।

गोबर खाद के स्थान पर हरी खाद भी देते हैं। हरी खाद देने के बाद प्रति बीघा १४ से १७ मन चूना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डालते हैं। वैसे भी ४–५ वर्ष में एक बार केले के बगीचे में चूना डाला जाता है। चूने से हरी खाद जलदी सड़ती है और जमीन खुली होती है।

केले की जाति के अनुसार खाद

केले की जाति के अनुसार विभिन्न परिमाण में खाद डालने की पद्धति है। बसराई जाति के प्रत्येक पेड़ को ५ सेर अण्डी की खल्ली तथा १ सेर पोटैशियम सल्फेट या ५ सेर गोबर खाद डालते हैं। इस खाद के ३ भाग कर, निम्नलिखित परिमाण में तीन बार डालते हैं।

(१) रोपण के एक मास बाद–इस समय खाद डालने से पौधे तेजी से बढ़ते हैं।

(२) ८ से १० सप्ताह के बाद–इस समय खाद डालने से नये रोप अंकुरित होते हैं। उन्हें काटने से फल-धारणा शीघ्र होती है तथा लंबे और वजनदार घौद लगते हैं।

(३) पुनः ८ से १० सप्ताह के बाद–इस समय खाद देने से घौद में केले उत्तम भरते हैं।

बसई की "लाल वेलची" नामक जाति के केले को एक मास के अन्तर से प्रत्येक पेड़ को २ सेर अण्डी की खल्ली दो बार डालते हैं। पौधे के चारों ओर छह इंच स्थान छोड़कर खल्ली फैलाते हैं तथा ऊपर मिट्टी की डेढ़ फुट मोटी तह बिछाते हैं। बाद में इस मिट्टी पर सूखे हुए पत्तों का आवरण बिछाते हैं। खाद देने के ३ या ४ दिन बाद वर्षा न हो तो हाथ से पानी देते हैं। खाद की दूसरी किश्त उसके १ महीने बाद (जुलाई अन्त में) डालते हैं। तृण निकालने के बाद मिट्टी पर का पत्तों का आवरण निकाल डालते है तथा पुनः पहिले के समान ही (दूसरी बार) अण्डी की खल्ली प्रत्येक पेड के खूंट के चारों ओर

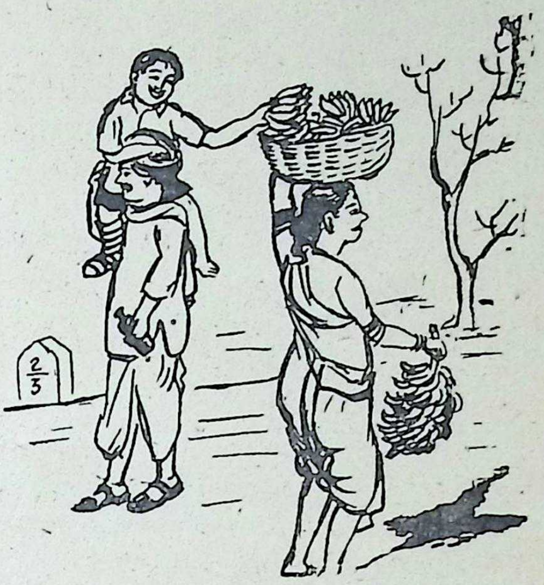

८ से ९ इंच स्थान छोड़कर डालते हैं। पुनः उसपर मिट्टी फैला कर केले के सूखे पत्ते फैलाते हैं। खाद की तीसरी किश्त अगस्त के अन्त में डालते हैं। यदि मछली की खाद डालनी हो तो वह सितम्बर में डालते हैं। कभी कभी तीसरी बार खाद डालते समय २½ सेर अण्डी की खल्ली १ सेर मछली की खाद में मिलाकर डालते हैं। 'लाल केला' (वसई लाल) जाति को ३ सप्ताह के अन्तर से चार बार निम्नलिखित खाद–मिश्रण डालते हैं–

प्रथम बार – अण्डी की खल्ली २ सेर

दूसरी बार–अण्डी की खल्ली ३ सेर

तीसरी बार–ताजी मछली २½ से ३ सेर
तथा अण्डी की खल्ली १ सेर

चौथी बार–घौद उत्तम भरा हो तो २ सेर
अण्डी की खल्ली या ३ सेर मछली।

'वल्हा' जाति को गोबर खाद तथा मेंगनी खाद इस प्रकार देते हैं–पहिली बार जुताई करने के बाद १० गाड़ियां गोबर खाद तथा १० गाडियां मेंगनी खाद डालकर बखर चलाते हैं। उसके बाद प्रत्येक पेड़ को ६ मास के अन्तर से कुल २० सेर गोबर खाद डालते हैं।

विभिन्न जातियों के लिये अलग अलग खाद

श्री फडणीस द्वारा विभिन्न जातियों के लिये आगे दिये खाद उपयुक्त बताये गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बसराई—प्रति एकड़ २० से ४० गाड़ियां गोबर खाद। पूरक खाद के नाते २ से ३ हफ्ते बाद २० मन मूंगफली की खल्ली या ३ मन अमोनियम सल्फेट।

हारी साल—रोपण के तीन हफ्ते बाद प्रति एकड़ ५ टन अण्डी की खल्ली।

सफेद वेलची—थाना जिले में प्रत्येक पौधे को लगभग १५ रत्तल अण्डी की खल्ली डाली जाती है।

लाल केला—प्रत्येक पौधे को तीन हफ्ते के बाद लगभग २४ रत्तल अण्डी की खल्ली।

वल्हा—मुख्य खाद-प्रति एकड़ ४० गाड़ियां गोबर खाद, पूरक खाद-पांच से छह रत्तल मिश्र खाद।

खड़की (पूना) के गणेश खिंड फल अनुसन्धान केन्द्र में बसराई जाति को दक्षिण की जलवायु तथा जमीन में कौनसी खाद उपयुक्त है इसके बारे में किये गये प्रयोगों में (१९३३ से १९४७) मुख्य खाद के नाते गोबर खाद डालने के बाद पूरक खाद के नाते अमोनियम सल्फेट, अण्डी की खल्ली, हड्डियों का चूरा, पोटैश तथा पुनः (दो बार) गोबर खाद डाली गयी। इस प्रयोग में जो सर्व श्रेष्ठ खाद सिद्ध हुई वह इस प्रकार है—प्रत्येक पेड़ को ५ रत्तल अण्डी की खल्ली तथा ४० रत्तल गोबर खाद। गोबर खाद रोपण के समय तथा अण्डी की खल्ली रोपण के बाद दूसरे, तीसरे तथा चौथे महीने में डालें।

आजकल (१९५२) उपयुक्त प्रायोगिक प्रक्षेत्र पर ही निम्नलिखित अनुसार केले के लिये खाद के प्रयोग किये गये हैं। ९ प्रकार से खाद डाली गयी जो इस प्रकार है—

खाद	प्रत्येक पेड़ को दी गयी खाद (रत्तल)	नत्र (भूयाति) (रत्तल में)
(१) गोबर खाद (मुख्य खाद के नाते)	८०	०·४
(२) गोबर खाद (दो बार)	१६०	०·८
(३) गोबर खाद + पोटैशियम सल्फेट २ रत्तल	८० + २	०·४
(४) गोबर खाद + अमोनियम सल्फेट २ ,,	८० + २	०·८
(५) गोबर खाद + हड्डी का चूरा १० ,,	८० + १०	०·८
(६) गोबर खाद + अण्डी की खल्ली १० ,,	८० + १०	०·८
(७) गोबर खाद + अमोनियम सल्फेट २ ,, तथा पोटैशियम सल्फेट २ ,,	८० + २ + २	०·८
(८) गोबर खाद + हड्डियों का चूरा १० ,, तथा पोटैशियम सल्फेट २ ,,	८० + १० + २	०·८
(९) गोबर खाद + अण्डी की खल्ली १० ,, तथा पोटैशियम सल्फेट २ ,,	८० + १० + २	०·८

गड्ढों में केले के पौधे लगाने के पूर्व गोबर खाद जमीन में मिला दी गयी थी। रोपण के बाद पूरक खाद तीन बार दी गयी। प्रथम बार रोपण के तीन महिने बाद तथा बाद में २ मास के अन्तर से दूसरी तथा तीसरी बार खाद दी गयी। इसके बाद की दो फसलों पर भी ऊपर के अनुसार ही खाद के प्रयोग किये गये। केले के पेड़ों में ६ फुट अन्तर था। इन प्रयोगों के निष्कर्ष नीचे दिये गये हैं (धारेश्वर)।

खाद क्रमांक	प्रति एकड़ कुल आय रु.	प्रति एकड़ कुल खर्च रु.	प्रति एकड़ लाभ रु.
(१)	१७९२	७३९	१०५३
(२)	१८३७	९४१	८९६
(३)	१६८०	९४१	७३९
(४)	१९९४	९६३	१०३१
(५)	१९२६	१२३२	६९४
(६)	१८३७	११२०	७१७
(७)	२१२८	११६५	९६३
(८)	२०८३	१३२१	७६२

मद्रास

मद्रास राज्य में प्रत्येक पेड़ को २–३ रत्तल मूंगफल्ली की खल्ली डालते हैं। यहां के लोगों की धारणा है कि अन्य खल्ली से मूंगफली की खल्ली का नाइट्रोजन केले का पेड़ शीघ्र शोषण कर लेता है। जहां मछली की खाद तथा अन्य प्रकार की खल्ली सस्ती मिलती है वहां वह खाद दी जाती है। कावेरी के मुहाने के प्रदेश में निम्नलिखित अनुसार खाद देने की पद्धति अधिक प्रचार में है। इस पद्धति में रोपण के दो मास बाद (अप्रैल–मई मास में) केले के पेडों को प्रति एकड़ २२४ रत्तल अमोनियम सल्फेट डालते हैं। उसके पांच या छह मास बाद प्रति एकड़ १००० रत्तल मूंगफली की खल्ली तथा २२४ रत्तल अमोनियम सल्फेट पेड़ों को डालते हैं। नववे मास में पुनः प्रति एकड़ २२४ रत्तल अमोनियम सल्फेट डालते हैं। प्रत्येक दो पंक्तियों में १५ इंच चौड़ी तथा ९ से १२ इंच गहरी नाली खोदी जाती है। नाली की मिट्टी केले के पेड़ के थाले के उचान पर डालते हैं। किन्हीं स्थानों पर प्रत्येक पेड़ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारों ओर आधी रत्तल मूंगफली की खल्ली, पौधे जब जड़ पकड़ लेते हैं तब डालते हैं। ५-६ हफ्ते के बाद दुबारा १½ से २ रत्तल खल्ली डाली जाती है। जिन भागों में धान तथा केले की फसल हेरफेर से ली गयी वहां रोपण के एक मास बाद प्रति एकड़ ४० गाडियाँ गोबर खाद न मिली तो प्रति एकड़ १५०० रत्तल मूंगफली या अन्य प्रकार की खल्ली डालते हैं।

बिहार

बिहार में फरवरी तथा जुलाई में निम्नलिखित अनुसार खाद डाली जाती है--

प्रत्येक पेड़ को

गोबर खाद	२० सेर	कम्पोस्ट	१० सेर
लकड़ी की राख	१० सेर	या अण्डी की खल्ली	१ सेर

विपुल खाद देने से कुछ जाति के केले पर दुष्परिणाम होता है। उदा-'रास्थली' जाति के केले में गुठलियां आ जाती हैं।

विदेशों में खाद देने की पद्धति

जमैका— जमैका के कृषि विभाग ने केले को खाद देने के बारे में अनेक प्रयोग किये हैं। उन प्रयोगों के फलस्वरूप 'ग्रास माइकेल' जाति को निम्नलिखित अनुसार खाद देने का सुझाव उस कृषि विभाग ने दिया है।

(१) पोटैश तथा फॉस्फरस जिस जमीन में विपुल हो उसमें ३ औंस (१½ छटाक) अमोनियम सल्फेट प्रति छह हफ्ते के अंतर से दें या २ औंस अमोनियम सल्फेट प्रति चार हफ्ते के अन्तर से दें।

(२) जिस जमीन में फॉस्फरस विपुल और पोटैश कम मात्रा में हो उसमें--

३ औंस अमोनियम सल्फेट छह सप्ताह के अन्तर से तथा आधा रत्तल पोटैशियम सल्फेट प्रति छह माह में एक बार दें।

(३) पोटैश विपुल और फॉस्फरस कम ऐसी जमीन में-

३ औंस अमोनियम सल्फेट प्रति छह हफ्ते के अन्तर से तथा आधा रत्तल सुपर फॉस्फेट प्रति छह महिने बाद दें।

(४) फॉस्फेट तथा पोटैश विपुल है ऐसी मध्यम श्रेणी की जमीन में-

प्रति छह महीने बाद ६% नाइट्रोजन, ६% फॉस्फरिक एसिड तथा १८% पोटैश, इनका खाद मिश्रण पौन रत्तल दें। इसके अतिरिक्त ३ औंस अमोनियम सल्फेट छह हफ्ते के अंतर से दें।

(५) फॉस्फरस तथा पोटैश कम है ऐसी मध्यम श्रेणी की जमीन में-

५% नाइट्रोजन, १०% फॉस्फरिक एसिड, १०% पोटैश इनका पौन रत्तल खाद मिश्रण प्रति छह मास बाद तथा ३ औंस अमोनियम सल्फेट छह हफ्ते बाद दें।

सब प्रकार की जमीन में (बहुत हलकी जमीन छोड़ कर) "ग्रांस माइकेल" जाति की जड़ें भूपृष्ठ भाग से १८ इंच की गहराई में बढ़ती हैं। इसलिये ये खाद केले के पेड़ के चारों ओर क्यारी बनाकर डालें। क्यारी का व्यास पेड़ के विकास के अनुसार बढ़ायें। यह व्यास अधिक से अधिक ४ फुट से अधिक न हो।

त्रिनिदाद—२०० रत्तल प्रांगारिक खाद में (Synthetic pen manure), १ रत्तल म्युरिएट ऑफ पोटैश मिलाकर अथवा न मिलाकर प्रत्येक पेड़ को देने से पेड़ों को लाभ पहुंचता है।

फॉसेट (Fawcett) ने केले के लिये निम्नलिखित खाद-मिश्रण सुझाया है--

		प्रति एकड़
पोटैशियम सलफेट	...	३४४ रत्तल
वॆगनर्स डबल फॉस्फेट	...	२११ ,,
या सुपर फॉस्फेट	...	५३० ,,

स्नो-पाउडर-तेल

तथा अन्य नित्योपयोगी प्रसाधन बनाने और उपयोग करने की विधि से युक्त पुस्तक

मूल्य रु. २; मनीऑर्डर से रु. २·७१ भेजने पर पुस्तक रजि. पोस्ट से भेज देंगे। वी. पी. से मँगाने के लिये रु. २·७७ लगेंगे। विक्रीकर अतिरिक्त।

प्रस्तुत पुस्तक में

फेसक्रीम, फेस-पाऊडर, बालों के प्रसाधन, केशवर्धक प्रसाधन, सुगंधित तेल, पसीने की दुर्गंध नष्ट करनेवाले द्रव्य, सूखा-गीला कुंकुम्, नाखूनों का वारनिश और रंग, अनावश्यक रोएँ नष्ट करने का तरीका, नित्योपयोगी दंतमंजन, बालों का झड़ना रोकना और उन्हें हमेशा काला बनाये रखने का तरीका, बाल धोने का मिश्रण, चेहरा तेजयुक्त रखने तथा चेहरे पर पैदा हुई फुंसियों को नष्ट करने का तरीका, दंतधावन और मसूड़ों की हिफाजत आदि बातों तथा वस्तुएँ बनाने की विधि और उनके उपयोग करने के तरीकोंपर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। शीघ्र मँगवाकर लाभ उठायें।

-उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये खाद मिश्रण प्रत्येक पेड़ को १ से १½ रत्तल दें। खाद पेड़ के तने के पास डालकर तने के चारों ओर छोटी सी क्यारी बनाकर डालें।

बारलेट ने निम्नलिखित खाद-मिश्रण सुझाया है--

(१) सूखा हुआ रुधिर	...	२ रत्तल
सुपर फॉस्फेट	...	१¾ ,,
पोटैशियम सल्फेट	...	१ ,,
(२) अमोनियम सल्फेट	...	१½ ,,
सुपर फॉस्फेट	...	१¾ ,,
पोटैशियम सल्फेट	...	१ ,,

इनमें से कोई भी एक खाद मिश्रण मार्च या अक्टूबर में दें।

केले के पेड़ से खाद

केले को प्रांगारिक खाद बहुत लाभ पहुंचाती है। गोबर खाद तो सबसे अधिक लाभ पहुंचाती है। परन्तु बहुत बार गोबर खाद विपुल उपलब्ध नहीं होती। केले के बेकार पत्ते, तना आदि से भी पोषक खाद तैयार कर सकते हैं। गोबर खाद के स्थान पर या गोबर खाद को पूरक खाद के नाते यह खाद उपयोग में ला सकते हैं। कई स्थानों पर केले के पत्ते तथा कचरा जला डालते हैं।

नित्योपयोगी वस्तु-सूत्र
(Collection of Useful Formulas)

मूल्य रु. २·५०, मनीऑर्डरसे रु. ३·२१ भेजने पर पुस्तक रजिस्टर्ड पोस्ट से भेज देंगे। वी. पी. से मंगाने के लिये रु. ३·२७ लगेंगे। विक्रीकर अतिरिक्त।

प्रस्तुत पुस्तक में

थोड़ी-सी पूंजी में लाभदायक उद्योगधंधे करने की जानकारी दी है। उदाहरणार्थ-साबुन तैयार करने के विभिन्न सूत्र, अगरबत्ती, दंत-मंजन, सुगंधित तेल, स्नो, पाउडर, क्रीम, लिपस्टिक, नेलपॉलिश, सिंदूर, पान के स्वादिष्ट मसाले, तम्बाकू तथा उसके पदार्थ, बूटपॉलिश के विविध प्रकार, सब तरह की स्याही, टिकाऊ गोंद तथा लेई, सील करने की लाख, मोमबत्तियाँ, आईने, फर्निचर-पॉलिश, वार्निश, बाल काले करने का कलप, जंतुनाशक औषधियाँ, शालोपयोगी वस्तुएँ तैयार करना, पटाखे तथा आतिशबाजियाँ, कुछ औषधियाँ तैयार करने के वैज्ञानिक सूत्र दिये हैं। एक प्रति अवश्य मंगाइये।

-- उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १।

पूर्व खानदेश के रावेर तहसील के बागवान् केले के बेकार अंशों से कम्पोस्ट खाद तैयार करते हैं। इस भाग के 'फ्रुट ग्रोअर्स एसोसिएशन' ने रेल्वे स्टेशन के निकट किराये पर स्थान लेकर वहां कम्पोस्ट के लिये गड्ढे खोदे हैं। स्टेशन पर केले के घौद वैगनों में भरते समय वहां जो केले के पत्ते, बैलों का मलमूत्र तथा कूड़ाकचरा फैलता है उसे जमा कर इन गड्ढों में डाला जाता है। इस तरह प्रति वर्ष २५० से ३०० गाडियां कम्पोस्ट तैयार होता है। ये खाद आम नीलाम कर बेचा जाता है। इस खाद को बहुत मांग रहती है तथा भाव भी अच्छा आता है। १९५०-५१ में लगभग २५० से ३०० गाडी खाद तैयार हुई थी तथा उसकी नीलामी में २९६० रु. प्राप्त हुये थे। एक गाडी खाद १० से १२ रु. भाव से बिकी। खाद तैयार करने के लिये लगभग १२०० रु. खर्च हुआ था। खर्च घटाकर संस्था को लगभग १८०० रु. केवल लाभ हुआ। केला, गेहूं तथा धान के लिये यह खाद बहुत ही पोषक होती है। इस खाद से इन फसलों का उत्पादन लगभग २५ से ३० प्रतिशत बढ़ता है।

कम्पोस्ट खाद तैयार करने की विधि

केले के तने के ९ इंच लम्बे टुकड़े काट लें। इन टुकड़ों की ढेरी छांव में रखें। इससे खाद के पानी का बाष्पीभवन कम होता है। इसके अतिरिक्त वर्षा के पानी से खाद गीली नहीं होती है तथा पानी से धुलती भी नहीं। जमीन पर ढेरी लगाने से खाद जल्दी तैयार होने के लिये हवा मिलती है। जल्दी सड़ने के लिये उसमें थोडी-सी रासायनिक खाद मिलानी पड़ती है। १ टन वृक्ष के तने के टुकड़ों में ½ सेर अमोनियम सल्फेट तथा ५ सेर चूना (कूटकर बारीक किया हुआ) मिलाना पड़ता है।

तने के टुकड़े ९ इंच की तह में जमीन पर फैलाएं। दो तहों के बीच में ऊपर बतायी खाद का मिश्रण एक-सा फैलाकर डालें। इस प्रकार तैयार की गयी ढेरी को पानी देने की जरूरत नहीं रहती है। मास में एक बार ढेरी उलट-पुलट लें। छह मास में खाद तैयार होती है।

इस खाद में १.०७% नाइट्रोजन होता है तथा २९% नमी होती है। गड्ढे में तैयार की गयी खाद में ०.६९% नाइट्रोजन होता है। ढेरी में तैयार की गयी खाद में गड्ढे में तैयार की गयी खाद से अधिक नाइट्रोजन रहता है। क्योंकि ढेरी में तैयार होनेवाली खाद को सड़ने के समय पर्याप्त हवा मिलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखांक ६ वाँ

तेल रंग
(Oil Paints)

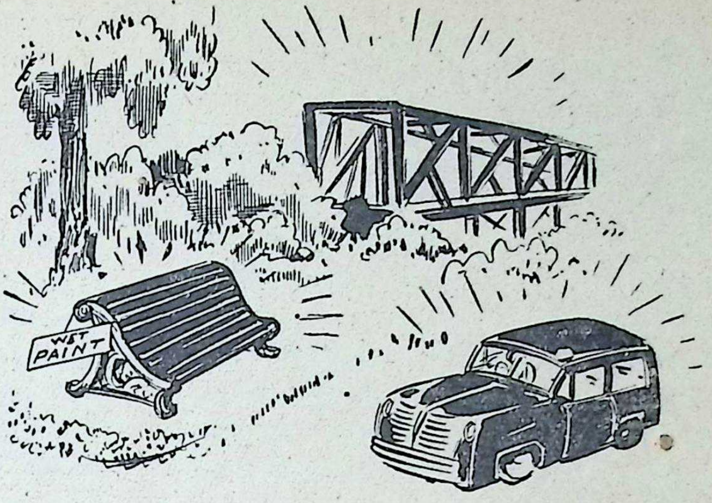

— लेखक —

प्रा. श्री. ना. बेहेरे, बी. एस्सी. (ऑनर्स), एम्. एस्सी., बी. टी., ए. आर. आय्. सी.

[पांचवें लेखांक में (सितम्बर १९५७) ऑईल वार्निश (Oil Varnish) तैयार करने संबंधी विस्तृत जानकारी दी गयी थी; साथ ही वार्निश के विभिन्न उपयोगों की भी आवश्यक जानकारी दी गयी थी। —संपादक]

तेल रंग के घटक

रंगों के उपयोग से पदार्थ के पृष्ठभाग की सुरक्षा के साथ ही उनके दर्शनी मूल्य में भी काफी अन्तर आ जाता है। धुवे से कालिख जमी हुयी दीवालों पर यदि रंग चढ़ाया जाय तो उस कमरे का वातावरण प्रसन्न प्रतीत होने लगता है। इससे स्पष्ट है कि रंगों का मूल उद्देश्य पृष्ठभाग ढांकना ही होता है। अतः तेल-रंगों में जो पदार्थ इस कार्य के लिये उपयोग में लाए जाते हैं उनकी पृष्ठभाग ढांकने की क्षमता पर ही इन रंगों की उपयुक्तता निर्भर होती हैं। पृष्ठभाग ढांकनेवाले सारे पदार्थ मूल में घन स्वरूप के होते हैं। उन्हें सूखनेवाले तेल में मिलाकर बने हुए मिश्रण से पृष्ठभाग ढांका जा सकता है। प्रत्येक तेल रंगों में प्रत्यक्ष रूप से रंगीन वस्तुएं काफी कम प्रमाण में होती हैं। उदा. हरे तेल रंग में—तेल ३५%, द्रव १५% व अन्य घन पदार्थ ५०%—यह प्रमाण रहा तो तेल कुछ पीला अथवा भूरे रंग का हो जाता है तथा द्रव जल की तरह रंगहीन होता है। रंग की नीचली सतह का हरा रंग केवल उसमें मिश्रित ५०% घन पदार्थों के कारण ही दिखायी देता है। इस ५०% घन पदार्थ में प्रत्यक्ष हरे रंग के पदार्थ का केवल १०–१५ अंश ही होता है। बचे हुए ३५ अंशों में पृष्ठभाग ढांकनेवाले द्रव्य ही होते हैं। इतने अधिक प्रमाण में पूर्ति के लिये (Filler) उपयोग में लाया गया यह घन पदार्थ अधिकतर सफेद रंग का तथा सस्ता होना चाहिये; अतः यह सहज रूप में तैयार किया जा सकनेवाला तथा भारी मात्रा में निसर्गप्राप्त ही होता है। स्पष्ट है कि, इस पदार्थ में तेल रंग के लिये आवश्यक सारे गुण (जलरोधकता तथा सर्वसाधारण रासायनिक क्रियारोधकता) होने चाहिये। अर्थात् ये सारे पदार्थ खनिज अथवा तत्समव्युत्पत्ति के होकर तेल रंग के प्रमुख घटक के रूप में ही उनका विशेष महत्व है। इस खनिज-घटक को पृष्ठभाग ढांकनेवाला (Hiding pigment) कहते हैं। सारांश में, शुद्ध, रासायनिक क्रियारोधक खनिज मिट्टी ही इसके लिये उपयोग में लायी जाती है। इस दृष्टि से उत्तम सफेद मिट्टी—चुनखडी अथवा संगमर्मरी पत्थर की मिट्टी से कहीं अधिक उपयोग एवं महत्वपूर्ण सिद्ध हुयी है। क्योंकि चुनखड़ी या संगमर्मरी पत्थर पर आम्ल की क्रिया होने की संभावना अधिक रहती है तथा मिट्टी यदि सफेद हो तो वह किसी भी रंग के लिये उपयोग में लायी जा सकती है। और यदि वह लोह-खनिज की भांति लाल रंग की हो तो वह केवल उसी रंग में पूर्ति के हेतु उपयोग में लायी जा सकेगी।

पूर्ति (Filler) पदार्थ

रंगीन पदार्थों के बारे में और एक महत्व की बात यह है कि यद्यपि ये पदार्थ पृष्ठभाग ढांकने के लिये ही उपयोग में लाये जाते हैं किन्तु वे पृष्ठभाग पर सूखे हुए तेल की निचली सतह के आधार पर ही चिपके रहते हैं। इस कारण जब इस पदार्थ का प्रकाश-वक्रीभवनांक (Refractive Index) तेल के प्रकाश-वक्रीभवनांक से (१.५) अधिक होगा तभी उसका पृष्ठभाग ढांकने का गुण अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। वक्रीभवनांक जितना अधिक उतना ही वह अधिक उपयोगी होगा और यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह तेल के ही अधिक निकट होगा तो उसका पूर्ति (Filler) के रूप में ही उपयोग समझना चाहिये। हम देखते हैं कि चुनखड़ी व झिंक ऑक्सॉइड समान तेल में पृथक्–पृथक् मिलाने पर दोनों मिश्रण के सफेद रंग में काफी अन्तर है। इस कारण सफेद पदार्थों में भी दो गुट बन गए हैं। एक तो वे जिनका प्रकाश–वक्रीभवनांक अधिक होता है तथा जिन्हे पृष्ठभाग ढांकने में उपयोग किया जाता है और दूसरे वे जिनका प्रकाश–वक्रीभवनांक कम होता है तथा जिन्हे केवल पूर्ति (Filler) के रूप में ही उपयोग में लाया जाता है। पूर्ति के रूप में लायी जाने-वाली मिट्टी का अनेक बार अन्य महत्वपूर्ण उपयोग किया जाता है। इस परिस्थिति में वे केवल पूर्ति के पदार्थ न रहकर आवश्यक पदार्थों में उनकी गणना होती है। उदाहरण के रूप में हम सिलिकेट को ले सकते हैं। सिलिकेट्स यह रेती का ही आनुषंगिक पदार्थ होने के कारण उनका वक्रीभवनांक निसर्गतः कम है; किन्तु जब हम मकान की बाहरी दीवाल पर रंग चढ़ाते हैं तब वर्षा–हवा आदि से उसकी रक्षा करने के हेतु सिलिकेट ही अधिक उपयोगी (पूर्ति के लिये) पदार्थ सिद्ध हो सकता है; यह हमें नहीं भूलना चाहिये। पहले व्हाइट लेड अथवा झिंक ऑक्सॉइड के अतिरिक्त पृष्ठभाग को अच्छी तरह ढांकनेवाला कोई अन्य उपयुक्त पदार्थ विशेष प्रचलित नहीं था। किन्तु जैसे जैसे शास्त्रीय जानकारी तथा नये नये तंत्रों प्राप्त होते गये वैसे वैसे पृष्ठभाग को अधिक अच्छी तरह ढांकनेवाले पदार्थों का पता चलते गया। और ये पदार्थ रासायनिक क्रियाओं से तैयार भी किये जाने लगे। अतः पहले के नैर्सगिक पदार्थों की मांग बहुत घट गयी। जिन पदार्थों को अब केवल 'पूर्ति' के लिये ही उपयोग में लाया जाता है, वे इस प्रकार हैं––

(१) व्हाइट लेड (बेसिक कार्बोनेट) } सीसे द्वारा तैयार
(२) व्हाइट लेड (बेसिक सल्फेट) } किया जाता है।
(३) झिंक ऑक्सॉइड
(४) लिथोफोन––बेरियम सल्फाईड व झिंक सल्फेट के जल में द्रावण के मिश्रण से रासायनिक क्रिया होकर, झिंक सल्फाईड व बेरियम सल्फेट के दोनों पदार्थ पानी में अविद्राव्य होने से, यह मिश्रण जल से अधिक हो जाता है।
(५) टिटेनियम-डाय-ऑक्सॉईड (TiO_2)—इसके दो प्रकार–मोटा तथा भारी–हैं। लोह खनिज में यह कम–अधिक मात्रा में प्राप्त होता है। यह सफेद पदार्थ पृष्ठभाग को सबसे अच्छी तरह ढांकनेवाला होता है।
(६) अँटिमनी ऑक्सॉईड
(७) लेड सिलिकेट, लेड फॉस्फेट—आदि सफेद पदार्थ अभी हाल ही में उपयोग में लाये जाने लगे हैं। लिथोफोन तैयार करने की विधि ऊपर दी जा चुकी है। उसके अनुसार लेडेड झिंक ऑक्सॉइड, टायटॅनेटेड लिथोफोन आदि सफेद पदार्थ भी दोनों के गुणधर्म का लाभ उठाने की दृष्टि से तैयार किये जाते हैं।

इन सफेद पदार्थों की पृष्ठभाग ढांकने की तुलनात्मक क्षमता का आगे दिये गये प्रारूप से पता चल सकता है––

वक्रीभवनांक		प्रति पौंड ढांका गया पृष्ठभाग वर्ग फुट
२·७६	भारी टिटॅनियम ऑक्सॉईड	५८·७
२·७०	हलके टिटॅनियम ऑक्सॉईड	४२·८
२·३७	झिंक सल्फाईड	
२·१०	टिटॅनियम बेरियम	
१·८४	लियोफोन	३०·०
२·०९–२·२९	अँटीमनी ऑक्सॉईड	३०·९
२·०२	झिंक ऑक्सॉईड	३०·०
१·९४	व्हाईट लेड	१४·३

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९

उतना ही पृष्ठभाग ढाँक डालने के लिये आवश्यक तौल का परिमाण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रारूप से हमें सहज रूप में पता चलेगा कि टिटॅनियम व लेड के वजनों का प्रमाण १:९ होने के कारण उनके अन्य गुण समान होने पर टिटॅनियम अधिक कीमत देकर भी उपयोग में लाना श्रेयस्कर ही होगा।

तैयार करने की कृति के अनुसार भारी व हलका टिटॅनियम-ऑक्सॉईड के गुणों में भी भिन्नता आ जाती है।

		Anatase(हलका)	Rutile (भारी)
घनता	... ...	३.८८	४.०२
गॅलन में पौंड	...	३२.३२	३४.०९
वक्रीभवनांक	...	२.५३	२.७१
पृष्ठभाग ढांकने की क्षमता		१००	१३३

पूर्ति के पदार्थों की विशेषताएँ

पूर्ति के अथवा बढ़ाने (Extenders) वाले सफेद पदार्थों में विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ का समावेश होता है। रासायनिक निष्क्रियता ही उनकी प्रमुख विशेषता होती है।

पूर्ति के पदार्थ

	वक्रीभवनांक	घनता	सुखा प्रति गॅलन के आकार के अनुसार (पौंड में वजन)	% तेल शोषकता (Oil Absorption)	तेल शोषण के पश्चात् प्रति आकारानुसार (Volume) पौंड गॅलन में आकार (Volume)
सिलिकेट—					
रेत (हवा द्वारा पृथक् की गयी)	१.५५	२.६	६.५०	२५.०	०.०४६
मिट्टी (Clay)	१.५६	२.६	४.०२	३६.०	०.०४६
टाल्कम (संजीरा)	१.५९	२.८५	७.०६	२७.०	०.०४२
अभ्रक	१.६	२.५–३.०		२४–४५	०.०४२–०.०४३
सल्फेट—					
बरायटीस (बेरियम सल्फेट)	१.६४	४.४७	१७.८१	६–१४	०.०२६५–०.०२७५
ब्लॅक फिक्स ,,			१३.६		
जिप्सम	१.५३	२.३५	७.०८	२१.०	०.०५१
प्रक्षेपित कॅलशियम सल्फेट	१.५९	२.९५		५०.०	०.०४४८
कॅल्शियम कार्बोनेट (चुनखड़ी, संगमर्मर आदि)	१.६३	२.६८		१५–५५ (तैयार करने की पद्धतिनुसार)	०.०४४३
अॅल्युमिना हलका		२.००	२.०२		०.०६
–भारी		२.४१	१२.४७		०.०५

उपर्युक्त सारिणी में सिलिकेट, मिट्टी आदि पूर्ति के पदार्थों के जो गुण दिये गये हैं उनका स्पष्टीकरण करना आवश्यक है। जब किसी घन पदार्थ के, तेल के समान सूखनेवाले द्रव की सहायता से पृष्ठभाग पर लेप चढ़ाया जाता है तब उसकी सतह पक्की चिपकी रहने के हेतु तेल व घन पदार्थ के मिश्रण में तेल की मात्रा इतनी रहनी चाहिये कि उसके सूखने पर तेल की मजबूत एवं अखंड (Continuous) सतह तैयार हो सके और यदि तेल की मात्रा कुछ कम रही तो वह घन पदार्थ भली भांति नहीं चिपकेगा। कुछ दिनों के बाद उसके निकल जाने का भय बना रहेगा। उसी प्रकार रंग का चूरा (Pigment) पूर्ण रूप से गीला होने के लिये उसके गुणानुसार कम-ज्यादा प्रमाण में तेल की आवश्यकता पड़ेगी। इस कार्य को हम चूरे की तेल-शोषकता कह सकते हैं। यदि तेल शोषकता कम होगी तो तेल का अधिक अंश पृष्ठभाग पर फैलकर सूखने से उस चूरे का रंग अधिक उत्तम होगा।

उक्त सारिणी की जानकारी को सहज रूप में समझने के लिए एक-दो उदाहरण देना उपयुक्त होगा। एक गॅलन आकार मान के टाल्कम का वजन ७.०६ पौंड दिया गया है। यह टाल्कम गीली करने पर एक पौंड का आकार-मान ०.०४२ गॅलन होती है। अतः १० पौंड टाल्कम गीली करने पर उसका आकार-मान १० × ०.०४२ गॅलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा। अर्थात् ०·४२ गॅलन (आकारमान के अनुसार) गाढी लुगदी तयार मिलेगी। एक गॅलन आकारमान के पेस्ट का कुल वजन $\frac{७·०६}{०·४२}$ पौंड टाल्कम + उसमें मिले हुए तेल का वजन (टाल्कम का २७%) इतना होगा। $(१६·८ + १६·८ \times \frac{२७}{१००}) = (१६·८ + ४·५३) = २१·३$ पौंड प्रति गॅलन। यह रंग काफी गाढ़ा होने के कारण इस अवस्था में उसका उपयोग नहीं किया जा सकता। किन्तु इससे प्रत्येक एक्स्टेंडर का रंग किस प्रकार तैयार होता है तथा कितना वजनी है आदि बातों का अनुमान हम लगा सकते हैं।

रंगीन पदार्थों का वर्गीकरण

रंगीन पदार्थों में दो प्रकार होते हैं–(१) खनिज व कृत्रिम रीति से तैयार किये गये तथा (२) रासायनिक पद्धति से तैयार किये गये। खनिज पदार्थों में मिट्टी, रेती, कंकर, आदि छानकर व जल में विद्राव्य क्षार धोने की क्रिया द्वारा उसे पृथक कर उसका शुद्ध रूप में तेल–रंग में उपयोग किया जा सकता है। इसके विरुद्ध कृत्रिम रंग में एक ही रंग की छटाएं अनेक पदार्थों में रहने के कारण उनका उपयोगानुसार (बाहर उपयोग करने का रंग; जल में लगाया जानेवाला, स्टोव पेंट, बेंकिग पेंट) चुनाव किया जाता है। सिद्ध रंगों के भी दो प्रकार होते हैं–(१) रासायनिक रीति से तैयार किये गए (२) धातु द्वारा रासायनिक क्रिया की मदद से तैयार किये गए अथवा जल में द्राव्य–वनस्पति जन्य रंग का रासायनिक क्रिया द्वारा प्रक्षेपण (Precipitation) कर अविद्राव्य क्षार तैयार करना। विद्राव्य रंग का अविद्राव्य क्षार तैयार कर उसके द्वारा पेंट के उपयुक्त जो रंग तैयार होता है उसे लेक–रंग (Lake–Colours) कहते हैं। नीचे कुछ प्रमुख रंगीन पदार्थों की जानकारी दी गयी है।

किसानों, पशुपालकों एवं हर व्यक्ति की दृष्टिसे
अत्यंत उपयोगी

विद्युत्-संस्कार (Electro-culture)

अर्थात्

विद्युत्–संस्कार द्वारा कृषि, मनुष्य और प्राणियों का स्वास्थ्य–सुधार तथा मवेशियों की हिफाजत।

मूल्य रु. ०·७५; मनीऑर्डर से रु. १·३७ भेजने पर पुस्तक रजिस्टर्ड पोस्ट से भेज देंगे। वी. पी. से मंगाने पर रु. १·४४ लगेंगे। विक्रीकर अतिरिक्त।

प्रस्तुत पुस्तक में

विद्युत्–संस्कार की उपयोगिता, मेग्नटो व उसका कार्य तथा विद्युत्-संस्कार की विधियाँ, विद्युत्-संस्कार और मवेशियों का स्वास्थ्य, मानवी आरोग्य और विद्युत्–संस्कार तथा प्याज के पानी की उपयोगिता आदि विषयों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया है। –उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १।

कुछ प्रमुख रंगीन पदार्थ

धातु—अॅल्यूमिनियम, कॉपर–ब्रॉंझ (तांबे का ब्रॉंझ), सोना, जस्त–पावडर आदि धातुएँ ही प्रत्यक्ष रूप से तेल में घोट कर पृष्ठभाग रंगाने के काम में लायी जाती हैं। अॅल्यूमिनियम की पतली चादर थोडे तेल के साथ घोट कर उसकी अत्यन्त बारीक पावडर तैयार की जाती है। ताम्बे का ब्रॉंझ भी उसी तरह घोटा जाता है। उसमें थोड़ा पारे का अथवा आॅर्सेनिक का क्षार मिलाकर जल के भीतर रहनेवाले जहाजों के पृष्ठभाग को वह लगाया जाता है। इससे उसमें काई आदि चिपकने का कोई भय नहीं रहता। उसी प्रकार प्रत्यक्ष धातु का रंग लाने के लिये नायट्रो सेल्यूकोज लॅकर में उपयोग किया जाता है। सोने की पावडर विशिष्ट प्रसंगों पर ही जैसे साइनबोर्ड अथवा नाम की आकर्षक पट्टियों के लिये उपयोग में लायी जाती है। जस्ते की पावडर उसके उर्ध्वपातन के बाद ही प्राप्त होती है व पृष्ठभाग पर उसके ऑक्साइड की अत्यन्त पतली सतह (%३) रहती है। जस्ते के चूरे का रंग 'राख' की भांति होता है। किसी तेल में आम्लता अधिक होने से उसकी जस्ते पर रासायनिक क्रिया शीघ्र होती है तथा इससे हाइड्रोजन वायु निकलती है तथा समय पर ही सावधानी नहीं बरती गयी तो उसके जल उठने की संभावना रहती है।

काला रंग—ये सारे पदार्थ कार्बनयुक्त होते हैं। इसमें कार्बन ब्लॅक, लॅप ब्लॅक, ग्राफाईट, व्हेजिटेबल ब्लॅक, अॅनिमल ब्लॅक, गिलसोनाइट, बेसिक लेड, सल्फेट ब्ल्यू व कृत्रिम रंग–आदि पदार्थ आते हैं। कार्बन ब्लॅक गॅस जलाकर, लॅप ब्लॅक तेल जलाकर, ग्राफाइट खदान से, व्हेजिटेबल व अॅनिमल ब्लॅक उन धातुओं को जलाकर (कोयला बनाकर) प्राप्त किये जाते हैं। बेसिक लेड ब्लू यह वास्तविक रूप से काला रंग नहीं है; किन्तु कोयला व सीसे का खनिज गॅलेना (लेड सल्फाइड) एकत्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप से जलाकर वह तैयार किया जाता है। वह जंग-रोधक रंग में उपयोग में लाया जाता है।

निग्रोसीन व इंडचूलिन वर्ग के कृत्रिम काले रंग तैयार ही मिलते हैं।

खनिज मिट्टी के रंग--मिट्टी के रंग को धोने के सिवाय उसे एक पदार्थ का रूप देने के लिये जलाना तथा भूंजना भी पड़ता है।

पीला ऑकर--इसमें ११ से २२% फेरिक ऑक्सॉइड रहता है। रंगों की छटाएं अलग अलग होती हैं।

सायना--इसमें ३० से ७०% फेरिक ऑक्सॉइड रहता है। रंग की छटाएं पीले से लेकर ब्राउन तक रहती हैं।

अंबर--इसमें मेंगनीज का ८-१७% व लोहे का ४०-५३% ऑक्सॉइड रहता है। रंग में चॉकोलेट की भांति गहरा रंग भी आता है।

लाल तथा कालापन लिए लाल (Red & Maroon) में अनेक विभिन्न प्रकार की छटाएं दिखाई देती हैं। इस खनिज में ८ से ८०% तक लोहे का ऑक्साइड रहता है। रासायनिक निष्क्रियता के कारण इनका बाहर उपयोग करने के सम्बन्ध में बहुत ही कम स्थान हैं। विशेष तथा निश्चित स्थानों पर ही वह बाहर लगाया जाता है। लोहे के पुल को जो लाल रंग दिया जाता है उसमें पूर्ति के रूप में रेड ऑक्साइड काफी अधिक प्रमाण में होता है।

खनिज मिट्टी की छटाएं निश्चित् रंगों की न होने से उनमें रंगों की मात्रा एवं परिमाण-ये दोनों प्रत्यक्ष अनुभव तथा उनके रासायनिक अवयवों का अध्ययन करने के बाद ही अच्छे पेंट के लिये निश्चित किया जाता है।

नीला (अल्ट्रामरीन)--यह रंग चायना क्ले, सोड़ा, गंधक अथवा कोयला या रेझीन के साथ भट्टी में पिघलकर तैयार होता है। यह कांच के अथवा मिट्टी की ग्लेझ के रंग का होता है किन्तु आम्ल से संबंध आने पर वह खराब हो जाता है। इस पर अल्कली की कोई क्रिया नहीं होती है। इसमें रंग कारकता (Tinting) कम है। वैसे ही बाहर के खुले स्थान पर इसका उपयोग नहीं किया जाता। केवल सीमेंट में मिलाने के हेतु इसका विशेष उपयोग होता है।

लोहे का क्षार, प्रशियन ब्लू, मिलोरी ब्लू व चायनीज ब्लू ये उत्तम रंग हैं तथा उन पर आम्ल की क्रिया नहीं होती। किन्तु अल्कली से वे खराब हो जाते हैं। वे तेल में अच्छी तरह मिल जाते हैं और विशेषता यह है कि ये १८०° श. तक गरम करने पर भी खराब नहीं होते। इसलिये इन्हे बेकिंग पेंटस् में उपयोग में लाया जाता है।

ऑरगॅनिक रंग--इंडयाथ्रिन ब्लू व तांबे का विशेष क्षार थॅलोसायानीन ब्लू-ये नीले रंग महंगे होते हैं और विशेष श्रेणी के नीले रंगों में ही उनका उपयोग किया जाता है। विशेषतः रंगों की हलकी छटाओं के लिये उनका अधिक उपयोग किया जाता है। तेज प्रकाश में भी ये रंग मजबूती पकड़े (Light Fast) रहते हैं। फॉस्फो टंगस्टिक आम्ल का नीला लेक्स अपनी चमक के कारण छपाई के स्याही में विशेष रूप से उपयोग में लाया जाता है।

ब्राउन--ये रंग अपेक्षाकृत कम हैं। लोहे के क्षार पर अल्कली की अधूरी क्रिया द्वारा लोहे के लाल व काले ऑक्साईड के मिश्रण से यह रंग तैयार किया जाता है। यद्यपि ये रंग में उपयोग किये जाने के हेतु उत्तम हैं तथापि उनमें मूल रूप से वह गुण नहीं होता।

नित्योपयोगी औषधियाँ

पुस्तक मँगवाकर अपने परिवार को रोगमुक्त रखें तथा पड़ोसियों की सेवा का पुण्य कमायें।

मूल्य रु. २·५०; म. ऑ. से रु. ३·२१ भेजने पर पुस्तक रजि. पोस्ट से भेजेंगे। वी. पी. द्वारा मंगाने के लिये रु. ३·२७ लगेंगे। बिक्रीकर अतिरिक्त।

प्रस्तुत पुस्तक में

नित्य होनेवाली सामान्य बीमारियों, संक्रामक रोगों, महिलाओं तथा बच्चों की विशिष्ट बीमारियों की विभिन्न चिकित्साओं पर प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त आरोग्य के नियम, उपचार करने की विविध पद्धतियाँ, प्रसव के पूर्व और पश्चात् की जानेवाली चिकित्सा, तरह तरह के विष और उन्हें उतारने की विधियाँ, नित्योपयोगी अंग्रेजी औषधियाँ, घरू दवाखाना एवं तत्संलग्न विषयों पर भी प्रकाश डाला है। अपनी प्रति सुरक्षित करा लें।

--उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऑरगॅनिक ब्राउन रंग में भी विभिन्न काले व लाल रंग का मिश्रण उपयोग में लाया जाता है ।

हरा--क्रोमियम के क्षार को भट्टी में गरम किये जाने पर क्रोमियम ऑक्साईड रंग प्राप्त होता है । इसमें चमक कम होती है साथ ही इसमें घर्षण क्षमता (Abrasive) भी कम है । यह रंग रासायनिक दृष्टि से सच्चे अर्थों में पक्का रंग कहा जा सकता है । क्योंकि वह फीका नहीं होता । यह महंगा होता है । हायड्रेटेड ऑक्साइड फीके शेड्स के लिये अधिक उत्तम रंग है । इसमें जल होने के कारण भट्टी में पक्के बनाये जानेवाले रंग में इनका उपयोग नहीं किया जा सकता ।

क्रोम ग्रीन में गहरे हरे से फीके हरे रंग की विभिन्न छटायें तथा नीले व पीले रंग की कम-अधिक चमक होती है । ये बायक्रोमेट, सीसा व लोहे के क्षार से तैयार किये जाते हैं । ये गहरे रंग में बाहर पेन्ट करने योग्य नहीं है क्योंकि बाद में उनमें कुछ कालापन आ जाता है ।

थॅलोसायनीन ग्रीन व फास्फोटंगस्टिक अॅसिड ग्रीन उत्तम रंग होते हैं तथा भट्टी में गरम भी किये जा सकते हैं । मॅलाशाईट ग्रीन भी एक सुविधाजनक उपयोगी हरा रंग है ।

चर्मकला व्यवसाय

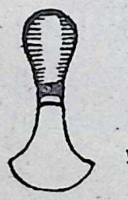

— लेखक —

ब्राह्मणचमार श्री बाबा फाटक

प्रस्तावना लेखक—श्री साने गुरुजी

मूल्य रु. १·००; मनीऑर्डर से रु. १·६१ भेजने पर पुस्तक रजि. पोस्टसे भेजेंगे । वी. पी. से मंगाने के लिये रु. १·६७ लगेंगे । विक्रीकर अतिरिक्त ।

प्रस्तुत पुस्तक में मृत मवेशियों की खाल उतारने से लेकर चमड़ा कमाने तक की व्यवहारोपयोगी, सर्वांगपूर्ण, विस्तृत जानकारी दी है । इसके अतिरिक्त चर्बी निकालना, माँस और हड्डियों की खाद बनाना, ताँत बनाना, सींग और खुरकी वस्तु बनाना, जिलेटिन तैयार करना आदि सहाय्यक धंधों पर भी प्रकाश डाला गया है । अपनी प्रति शीघ्र मंगा लें ।

— उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १ ।

मरून (Maroon)— इसमें हलके रंग अच्छे नहीं होते । सिवाय जो अच्छे होते हैं वे अधिक महंगे होते हैं इसलिये उनका बहुत कम प्रमाण में उपयोग किया जाता है । लोहे के आक्साईड सीमेंट में उनका उयपोग किया जाता है । कॅडमियम (धातु) का रंग भारी व उत्कृष्ट होता है । वह अल्कली से खराब नहीं होता । ऑरगॅनिक मरून रंग अनेक प्रकार के होते हैं— जैसे इंडिया र्‌रीन मरून आदि ।

केसरी--यह सीसे का क्रोमेट होता है तथा इसकी कम-अधिक छटायें तैयार की जा सकती हैं । ये गहरे होने पर भी इसमें कालापन नहीं आता तथा भट्टी में १२०° तक गरम किया जा सकता है ।

सीसे के क्रोमेट के साथ ही सीसे के मालिब्डेट क्षार का मिश्रण रहने पर रंग अधिक निखर उठता है । वैसे ही उसकी अपारदर्शकता भी बढ़ जाती है व रंग अधिक उपयोगी बन जाता है । कृत्रिम केसरी रंग के अनेक प्रकार हैं ।

लाल— लोहे का आक्साईड व कॅडमियम का सल्फाईड क्षार— ये दो प्रमुख लाल रंग होते हैं । लोहे का आक्साईड कहीं भी उपयोग में लाया जा सकता है तथा अधिक अच्छा होता है । उस अनुपात में कॅडमियम का रंग अधिक चमकदार होने पर भी वह अधिक महंगा होता है साथ ही उसमें ढांकने की शक्ति (Covering Power) अपेक्षाकृत कम ही होती है । दोनों रंग भट्टी में २००° तक सहज रूप में गरम किये जा सकते हैं । कृत्रिम रंग के अनेक प्रकार उपलब्ध हैं ।

बैंगनी—बैंगनी रंग तेल में अपेक्षाकृत कम ही उपयोग में लाया जाता है । वह लाल तथा नीले के मिश्रण से तैयार किया जाता है ।

पीला— सीसे के क्रोमेट की विभिन्न छटाएं तैयार की जा सकती हैं । वह आम्लक्रिया रोधक है । किन्तु अल्कली के लिए वह उतना रोधक (Inert) नहीं है । हलकी छटाएं खुले स्थान पर रहने से जल्दी कालापन प्राप्त करती हैं तथा अधिक फीकी हो जाती हैं । वे ११०° तक गरम किये जा सकते हैं ।

कॅडमियम यलो महंगा होने पर भी अल्कली क्रिया-रोधक है । वह १५०° तक गरम किया जा सकता है ।

लोहा, झिंक क्रोमेट व बेरियम क्रोमेट आदि रंग इन दिनों विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध हो रहे हैं ।

कृत्रिम पीले रंग के अनेक प्रकार उपलब्ध हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेलरंग के पाठ तैयार करने के मूलतत्त्व

तेलरंग का कोई भी पाठ तैयार करने पूर्व साधारणतः आगे दिये गये मुद्दों का विशेष विचार करना आवश्यक है–(१) रंग में सूखनेवाले तेल तथा घन पदार्थ में आकारमान की दृष्टि से परस्पर प्रमाण (२) इस बात का प्रमाण प्राप्त कर लेना कि रंग जिस कार्य के लिये उपयोग में लाया जा रहा है उसके लिये आवश्यक रासायनिक गुण उसमें हैं या नहीं। (३) रंग में उपयोग में लाये जानेवाले घन पदार्थ चूरे अथवा बारीक टुकड़ों में (Particle Size) होने चाहिये। (४) उनमें पृष्ठभाग ढांकने की क्षमता (Hiding power) व उस अनुपात में उसकी लागत (मूल्य) का भी विचार किया जाना चाहिये। (५) हमें इस बात को भी ध्यान में रखना होगा कि पेन्ट जिस प्रकार पहले (प्रारंभिक अवस्था में) घन पदार्थ व तेल का एकजीव मिश्रण रहता है, उसी भांति वह आगे भी बना रहे अर्थात् घन पदार्थ तलहटी में एकत्रित होकर गाढ़ी लुगदी न बन जाय। (६) रंग के फैलने की क्षमता का भी विचार करना होता है।

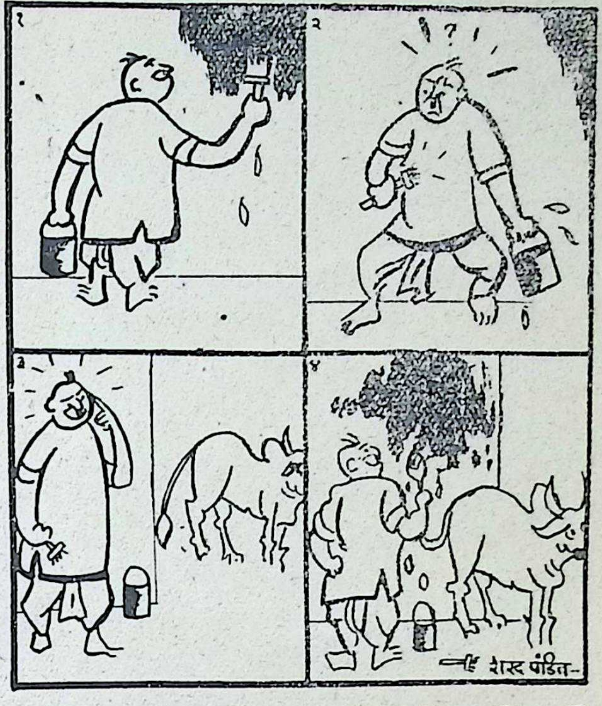

रंग की खरीद–बिक्री तथा उपयोग आकारमान (गॅलन) के माप से होता है। वैसा ही जो पृष्ठभाग ढांकना होता है उसका रंगीन पदार्थों को चिपकाकर बनाये रखने का कार्य तेल के माध्यम से होता है। तेल की मात्रा यदि अधिक होगी तो तेल की सतह अच्छी जमती है तथा रंगीन पदार्थ भी पृष्ठभाग की सतह को चिपका रहता है। अतः माध्यम की मात्रा (Quantity of Medium) घन पदार्थ के आकारमान से विसंगत नहीं होना चाहिये। तेल में घन पदार्थों का परिमाण उनके गुणों के अनुसार तेल की कुल मात्रा के १९% से लेकर ३५–४०% तक रखा जाता है।

यह स्पष्ट है कि, रंग में उपयोग में लाये जानेवाले सभी पदार्थों में रासायनिक एवं अन्य आवश्यक गुणों का होना अनिवार्य है। उसकी जांच विशेषज्ञों अथवा स्वानुभव से की जाए।

कणों का आकार (Particle Size)

रंगों की सहायता से पृष्ठभाग ढांकने की क्रिया केवल पृष्ठभाग तक ही सीमित नहीं है। प्रत्यक्ष रंग की पावडर को किसी भी पृष्ठभाग के प्रति रासायनिक वा अन्य कोई आकर्षण नहीं होता; केवल तेल में गीली होने से तथा रंग चढाने से मूल तेल ही सूखकर गाढ़ा होने के कारण पृष्ठभाग पर वह चिपका रहता है। रंग की पावडर भी कुछ काल तक चिपकी रह सकती है किन्तु कालान्तर से उसके निकल जाने की (Peel off) संभावना अधिक रहती है। वैसे ही यदि सतह खुरदरी पावडर की रही तो रंग चढ़ाये गये पृष्ठभाग की सुन्दरता तथा चिकनाहट तो नहीं रहेगी साथ ही उसकी दिखावट में भी एक प्रकार का वैगुण्य आ जावेगा। क्योंकि चिकना पृष्ठभाग जिस नियमित रूप से प्रकाश को फैलाकर परावर्तित कर सकता है उतना खुरदरा पृष्ठभाग नहीं कर सकता। इसके सिवा पावडर अधिक बारीक होने पर पृष्ठभाग पर सतह जमने के लिये वह वजन में भी कम लगेगी। इस कारण रंग के कणों का आकार जितना छोटा होगा उतना ही अधिक उपयोगी समझना चाहिये।

१ घन सें. मी. आकार के एक टुकडे का पृष्ठभाग ६ वर्ग सें. मी. होता है। उसकी पावडर बनाकर उसे क्रमशः १००, २०० व ३०० नं. की छलनी से छानने पर उसके कणोंका व्यास ०·१५२ मिलिमीटर; ०·०७६; ०·०५६ मिलिमीटर (१० मि. मी. = १ सें. मी.) होता है व प्रत्येक बार उसका पृष्ठभाग कुल ६ वर्ग सें. मी. की बजाय क्रमशः ४००, ६४५, ११३२ वर्ग सें. मी. हो जाता है। उसी प्रकार पृष्ठभाग पर रंग की सतह अपारदर्शक होने की दृष्टि से भी इन बारीक कणों का विशेष महत्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है । प्रकाश की तरंगें काफी छोटी होने के कारण, प्रकाश आरपार न जा सकने की कोई गुंजाइश न रहने देने के लिए कणों का छोटा (प्रकाश की वेव्हलेंग्थ से नहीं) तथा एक दूसरे से चिपके रहना अत्यावश्यक है । इस सम्बंध में नीचे दी गयी सारिणी से हमें उपयुक्त जानकारी प्राप्त हो सकेगी--

रंग		पीसने के बाद होनेवाला कणों का छोटे से छोटा आकार मायक्रॉन्स (= १/१०००० सें. मी.)
कार्बन ब्लॅक	...	०.१
		०.०६–०.६२
आयर्न ऑक्सॉइड	...	
कृत्रिम	...	०.३५– ०.९
नैसर्गिक (खनिज)	...	१.०–२.२५
लॅंप ब्लॅक	...	०.२५–०.३५
लिथोफोन	...	०.४
टिटॅनियम ऑक्सॉइड	...	०.३
झिंक ऑक्सॉइड	...	०.१२
सीसे के रंग	...	०.६ तथा इससे ऊपर
दृश्य का प्रकाश तरंग	...	०.२–०.७५

साबुन तैयार करना

लेखक–प्रा. श्री. ना. बेहेरे, बी. एस्सी. (ऑनर्स), एम्. एस्सी.; बी. टी.; ए. आर. आय. सी.

मूल्य रु. २·५०, म. ऑ. से रु. ३·२१ भेजने पर पुस्तक रजिस्टर्ड पोस्ट से भेजेंगे । वी. पी. से मंगाने के लिये रु. ३·२७ लगेंगे । विक्रीकर अतिरिक्त ।

प्रस्तुत पुस्तक में

सब प्रकार के साबुनों को लगनेवाला आवश्यक कच्चा माल, उन्हें तैयार करने की विविध रीतियाँ, उनके विभिन्न प्रकार, गुणधर्म, कार्य व चुनाव, रासायनिक परीक्षा, साबुन का इस्तेमाल आदि की विस्तृत जानकारी दी है । न केवल उत्पादकों को ही उपयोगी है, वरन् उपभोक्ताओं को भी मार्गदर्शक है । अपनी प्रति सुरक्षित करा लें ।

–उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १ ।

यदि कोई पावडर प्रकाश तरंगों के अंतर से भी छोटे कणों की की जाए (झिंक ऑक्सॉइड से बना सकते हैं) तथा उसे तेल के माध्यम में पूर्णतया गीली कर उसके साथ एकजीव करने योग्य मिश्रण तैयार किया गया तो उसका (रंग) पहला हाथ लगभग अर्धपारदर्शक ही होगा । किन्तु जब इससे कुछ बड़े कण रहते हैं तो उसकी अपारदर्शकता, वक्रीभवनांक व कणों के आकार पर ही अधिक निर्भर होती है । किसी भी रंग की अपेक्षा कार्बन ब्लॅक की पावडर अधिक बारीक की जा सकती है । अतः काले रंग की छटा कम-अधिक करने में उसकी काफी कम मात्रा ही पर्याप्त होती है ।

तेल रंगों के सम्बन्ध में अत्यंत बारीक पावडर का अभाव हमेशा अनुभव में आता है । बारीक पावडर तेल में पूरी तरह मिश्रित होने के लिये काफी देर लगती है तथा उसे काफी घोंटना भी पड़ता है । और यदि उसे ठीक तरह घोंटा नहीं गया तो हमें कई बार वे पदार्थ तेल रंग में ऊपर तैरते हुए दिखाई देते हैं । विशेषतः कार्बन ब्लॅक व प्रशियन ब्लू के रंग से, रंग की छटाएं योग्य प्रमाण में लाते समय बारीक कणों की स्पष्ट रेखाएं पृष्ठ भाग पर दिखाई देती हैं । पदार्थों की पावड़र तैयार करते समय अन्य अनेक भौतिक क्रियाएँ (Physical Actions) होती हैं । पदार्थों के छोटे छोटे कणों पर एक प्रकार की विद्युत् शक्ति अल्प प्रमाण में संचित (Electric Charge) रहती है तथा उसका कणों के पृष्ठभाग पर परिणाम होता है और यदि कोई पावडर तेल में जल्दी गीली हो जाती है तो उसे पुनः पीसने के बाद भी वह उसी प्रमाण में गीली हो सकेगी यह निश्चित् नहीं है । सामान्यतः २०० मेश की छलनी से छानी जानेवाली पावडर रंग के काम में अधिक पसंद की जाती है । किन्तु एनॅमल रंग में (उच्च श्रेणी के चमकीले रंग में) ३०० मेश की छलनी से छानी जानेवाली पावडर अधिक उपयोगी समझी जाती है । पावडर जितनी ज्यादा बारीक होगी उसे तेल में उतना ही अधिक घोंटना होगा ।

पिगमेंट चुनते समय उसकी केवल पृष्ठभाग ढांकने की क्षमता (Covering Power, Hiding Power) का ही विचार करना अपर्याप्त होगा । उसकी कीमत पर भी विचार करना आवश्यक हैं ताकि कम कीमत में उच्च श्रेणी का रंग तैयार किया जा सकता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेल-रंगों में उपयोग में लाये जानेवाले प्रसारक (Extenders)

सामान्यतः जिन रंगों (सफेद) की पृष्ठभाग को ढांकने की क्षमता अधिक होती है उनकी घनता भी अधिक होती है। इस कारण पेंट तैयार होने पर यद्यपि यह पदार्थ तेल के माध्यम में पूर्णतया मिश्रित हो जाता है तथापि यदि उस पेंट का उपयोग तुरन्त नहीं किया गया तो कालान्तर से वह पदार्थ अपनी नैसर्गिक भारीपन के कारण उस घोल में नीचे जम जाता है। ये रंग यदि वैसे ही कुछ दिनों तक रखे जाय तो उसकी सतह पर एक पपड़ी तैयार हो जाती है। और नीचे सतह पर यदि यह पदार्थ अधिक गाढ़ा होकर मजबूती पकड़ ले तो बाद में पुनः वह तेल में कितना भी घोटने पर एकजीव नहीं हो पाता। अतः इस कठिनाई को दूर करने के हेतु कुछ विशिष्ट पदार्थों का प्रसारक के रूप में उपयोग किया जाता है। इन प्रसारकों की गणना पूर्ति के सफेद पदार्थों में की श्रेणि में की जाती है किन्तु इनका कुछ विशेष महत्त्व होता है। इस पदार्थ में सहज रूप से उपलब्ध होनेवाले सफेद रंग (टाल्कम पावडर व चायना क्ले) का उपयोग सामान्यतः ३ से ५% के प्रमाण में किया जाना अधिक उचित है। इनका उपयोग करने पर घन पदार्थों की नीचे जमने की प्रवृत्ति पूर्णतः नष्ट नहीं होती परन्तु इनकी सापेक्ष घनता कम रहने के कारण वे तेल में तैरते रहते हैं तथा काफी धीरे धीरे नीचे बैठते हैं। और उसे थोड़ा घोंटने पर यह पुनः तेल में मिल जाता है। रंग जब नीचे जमने लगता है तब इन प्रसारकों के कुछ कण भी उसमें संकलित होते हैं; फलस्वरूप वे नीचे मजबूती नहीं पकड़ पाते। थोड़ा हिलाने पर पुनः एकजीव मिश्रण तैयार हो जाता है।

रंग में उपयोग किये जानेवाले तेल-माध्यम

रंग पृष्ठभाग पर किस प्रकार फैलेगा तथा उसे फैलाने के हेतु काफी देर तथा परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी आदि सारी बातें तेल-माध्यम पर तथा कुछ अंशों में घन पदार्थों पर निर्भर रहती हैं। यह रंग के प्रत्यक्ष उपयोग में लाने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है किन्तु यद्यपि रंग में मिश्रित घन पदार्थ की पृष्ठभाग को ढांकने की क्षमता अधिक हो तथापि यदि उस रंग को पृष्ठ भाग पर फैलाने के लिये अधिक परिश्रम उठाना पड़े तो वह क्षमता निरुपयोगी ही कही जा सकती है। आगे दिये गए तुलनात्मक सारिणी से इस सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त हो सकती है--

१० पौंड रंग से व्याप्त पृष्ठभाग (वर्ग फुट)

तेल या तेलरंग	लकडी (Wood) पहला हाथ	लकडी (Wood) दूसरा हाथ	धातु पहला हाथ	प्लास्टर (Plaster)
कच्चा तेल	७५६	८७२	१४१७	...
बॉइल्ड तेल	४१२	५४०	१२९६	...
रेड लेड	११३	२५२	४७७	३२४
व्हाइट लेड	२२१	३२४	६४८	३६२
झिंक ऑक्साइड	३७८	४५३	११३४	५०४
आयर्न ऑक्साइड	४५३	५४०	८७०	...
बरायटीस	३८२	४३६	...	...
क्रोम यलो	२५२	३३६	...	...
ब्रन्सविक ग्रीन	३१०	३९६	...	...
लॅंप ब्लॅक	३८२	५२२	...	...
अल्ट्रा मरीन	४६२	५८४	...	...
लिथो फोन	४००	४७२	...	...

यह पुस्तक आपका मार्गदर्शन करेगी।

आतिशबाजी अर्थात बारूदकाम

लेखक-श्री भा. स. करमलकर, एम्. एस्सी.

मूल्य रु. १·५०। रजि. डाकखर्चसहित रु. २·९५; वी. पी. से रु. २·२१। विक्री-कर अतिरिक्त।

-प्रस्तुत पुस्तक में-

चंद्रज्योति, फुलझड़ियाँ, घनचक्कर, अनारदाना, रोमन कैंडल्स, रंगीन दियासलाइयाँ, टिकलियाँ, बड़े पटाखे, बाण, वायुयान, साँप, तिड़तिड़ी, फ्लैश क्रैकर, लड़, प्रदर्शनीय बारूदकाम और इसके अतिरिक्त बारूदकाम में उपयोगी होनेवाले भिन्न-भिन्न रासायनिक पदार्थ, कृतिकुशलता (Manipulation) आदि की विस्तृत जानकारी दी हैं।

- उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रेफाईट का रंग सबसे अधिक फैलता है। तथापि रंग फैलने की शक्ति घन पदार्थों में उनके कणों के छोटे-बड़े होने पर ही नहीं तो कणों के आकार पर भी निर्भर रहेगी। ग्रेफाइट के कण चपटे होते हैं। अतः वे समांतर फैलकर एक बड़ा पृष्ठभाग व्याप्त करते हैं। झिंक ऑक्साइड व प्लास्टर में रासायनिक साधर्म्य है अतः तुलनात्मक दृष्टि से झिंक-ऑक्साइड प्लास्टर पर सहज रूप में फैलता है।

तेल रंगों के मुख्य प्रकार

तेल रंगों के प्रमुख तीन प्रकार हैं--

(१) गाढी लुगदीवाला रंग (Stiff Paint)-- इसमें पिगमेंट भिगाने योग्य ही तेल डालकर मिश्रण किया गया होता है तथा रंग पेस्ट की भांति गाढ़ा है। यह सूख न पाये-इस दृष्टि से इसमें तैयार (Processed) किया गया तेल उपयोग में नहीं लाया जाता वरन् कच्चा तेल उपयोग में लाया जाता है। लिनोलिएट की भांति ड्रायर योग्य प्रमाण में पिगमेंट के साथ ही घोंट कर मिलाया जाता है। यह आकार में कम होने के कारण लुगदी इधर से ऊधर भेजने में खर्चा कम आता है। रंग उपयोग में लाते समय जितना आवश्यक है उतना ही बॉइल्ड ऑइल या द्रावक मिलाया जाता है। यह रंग सहज रूप में सूखकर कडा नहीं होता।

(२) तैयार रंग (Ready Mixed Paint)-- उपर्युक्त भांति से लुगदी तैयार करने के बाद कारखाने में ही उसमें बॉइल्ड ऑइल द्रावक (Thinner) डालकर ग्राहकों की सुविधा के लिये रंग तैयार कर दिया जाता है।

(३) एनॅमल पेंट--यह उच्च श्रेणि का चमकनेवाला रंग होने के कारण उसमें पिगमेंट श्रेणि के अनुसार काफी प्रमाण में बॉइल्ड ऑइल की बजाय स्टॅन्ड ऑइल, वार्निश आदि रहता है। इसमें पिगमेंट अधिक पतला होता है तथा मिश्रण अधिक एकजीव होता है। इसके लिये निम्न सारिणी अधिक मार्गदर्शक हो सकती है-

	स्टिफ पेंट	तयार पेंट		एनॅमल पेंट→	झिंक ऑक्सॉइड	(वार्निश + द्रावक)
कच्चा तेल	८-१०%-२५%	५०-६०%	-पिगमेंट	२०-३०%	के लिये	५५-६०%
ड्रायर	०·५%	३०-४०%	-वार्निश तेल	७०-७५%	कार्बन ब्लॅक ,,	९४-९७%
पिगमेंट	८५-७५%	५-१५%	-द्रावक	१५- ५%	लाल एनॅमल ,,	९२-९३%
कभी कभी						
सॉफ्ट सोप	०·५					

"इस पुस्तक का पाठ अधिक-से-अधिक किसानों द्वारा हो" -डॉ. पंजाबराव देशमुख, कृषिमन्त्री, भारत सरकार।

अधिकतम अन्नोत्पादन के लिये

फसल प्रतियोगिताएँ ★

लेखक-श्री वा. ब. राहुडकर,
बी. एससी. (कृषि), एसो. आय्. ए. आर्. आय्.

मूल्य रु. २·५०। म. ऑ. से रु. ३·२१ भेजने पर पुस्तक रजि. पो. से भेज देंगे। वी. पी. से मंगाने पर रु. ३·२७ लगेंगे। बिक्रीकर अतिरिक्त।

-प्रस्तुत पुस्तक में-

* गेंहूं, धान, ज्वार, बाजरा * चना, आलू आदि फसलों का * कृषिपंडितों ने अधिकतम * उत्पादन प्राप्त कर पारितोषक तथा सम्मान किस प्रकार प्राप्त किया इसकी स्वानुभवात्मक तथा सचित्र जानकारी संकलित की गई है। * अपनी प्रति शीघ्र मंगा लें।

- उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेरवानी

लेखक—श्री ज. पां. दांडेकर

नाप

उंचाई	शोल्डर	हाथलंबाई (शोल्डरसहित)
४२"	८१/२"	३२"
कमरउंचाई	**सीना**	**कमरघेर**
१७"	३६"	३२"
सीट	**हाफ्बॅक**	**गला**
३८"	७१/२"	१५"

कपडा

कोटिंग (सुती, रेशमी अथवा ऊनी)।

प्रमाण—सिंगल पन्हा हो तो ४ से ५ गज व डबल पन्हा हो तो २ से २१/२ गज।

आकृतिः—पीठ (Back)

१ से २ = उंचाई
१ से ३ = सीने का १/४ + १/२"
१ से ४ = कमर-उंचाई
४ से ५ = कमर-उंचाई का १/२ (सीटरेखा)
६ = १ ते ३ का मध्य
७ = १ ते ६ का मध्य
२ से ८ = १"
४ से १० = ३/४"
८,१०,१ = पीठ मध्य रेखा
१ से १२ = हाफबॅक + १/२"
१२ से १३ = सरल रेखा
११ से १४ = सीने का १/४ + १/४"
१० से १५ = कमर-घेर का १/४ + १/४
९ से १६ = सीट का १/४ + १/४"
१४,१५,
१६ व १७ = बाजुओं का आकार
१५ से १८ = ४ से २
१८ से ८ = नीचे का आकार
१ से १९—गले का १/६
१ से २१ = ३/४"
२१ से ११ = पीछे का गले का आकार
१९ से २० = कंधा उतार रेखा [२१ से २० कंधा + १/४"]
१४ से २० = पीछे का मोंढे का आकार
१५ से २२ = सीने का १/६, जेब के मूंह की चवडाई
२२ से २३ = १५ से २२ बाजू ओपन की निशानी

आकृति-सामना (Front)

३ से २४ = २ से १७ + ११/२"
२४ से २५ = सामने की रेखा
२४ से २६ व
२५ से २७ = १३/४"
३८ से ४१ = गले का १/६
४१ से ४२ = २८ से २६
४२ से ४३ = २६ से २४
४३ से ४४ = ३८ से ४१ + १/४"
२६ से २८ व
२७ से ३१ = ३/४"
२८,२९,३० व ३१ = तिरछी रेखा
२८ से ३२ = सीने का १/४ + २"
२९ से ३३ = कमरघेर का १/४ + १३/४"
३० से ३४ = सीट का १/४ + २१/२"
३५, ३४, ३३, ३२ = बाजूओं का आकार
२८ से ३६ = सीने का १/४ − १"
३७ = २८ से ३६ का मध्य
३७ से ३८ = मान बिन्दू रेखा
३८ से ३९ = १९ से २०
३६ से ४० = ११/४"
३२,४०,३९ = सामने का मोंढे का आकार
४४ से ३८ = सामने का गले का आकार
४५ से ४६ = सीने का १/८
२५ से ४७ = सीने का १/६
४६ से ४७ = तिरछी रेखा
४७ से ४८ = १"
३३ से ४९ = ४६ से ४८
४९ से ४८ = नीचे का आकार
५० = २८ से २९ का मध्य
५१ = ३२ से ३३ का मध्य
५२ = ५० से ५१ का मध्य
५२ से ५३ व
५२ से ५४ = सीने का १/८" जेब के मूंह की चवडाई
५३ से ५६ व
५४ से ५५ = ३/४"

आकृति-हाथ

१ से २ = शोल्डर घटाकर हाथ लंबाई
८, ६, ७ = हाथ का नर की ओर का आकार

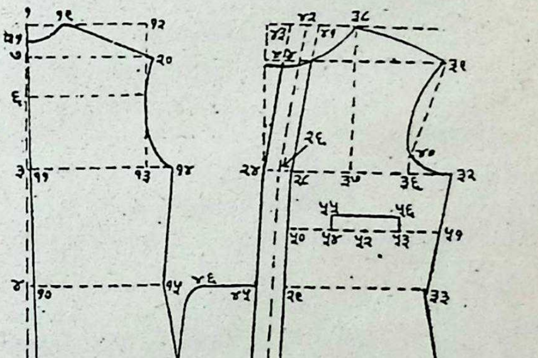

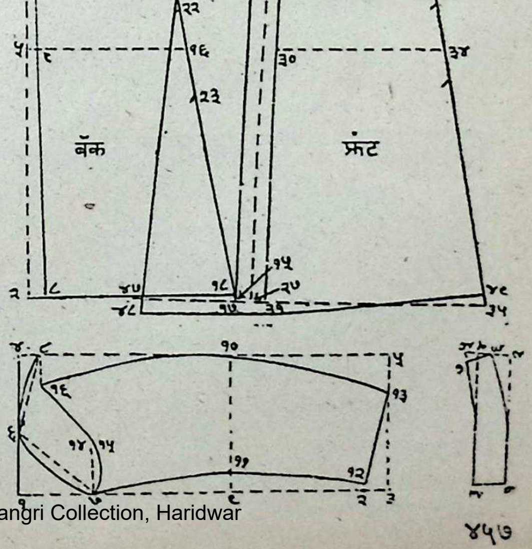

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२ से ३ = १ १/२″
१ से ४ = सीने का १/४
४ से ५ = सरल रेखा
६ = १ से ४ का मध्य
१ से ७ = १ से ६ + ३/४″
४ से ८ = २ से ३
९ = २ से ७ का मध्य
९ से १० = सरल रेखा
९ से ११ = १″
२ से १२ = १/४″
१२ से १३ = सीने का १/६

७, ११, १२ = हाथ का नीचे का आकार
१३, १०, ८ = हाथ का उपर का आकार
७ से १४ = सीने का १/२
१४ से १५ = १/२″.
८ से १६ = १ १/२″
१६, १५, ७ = हाथ का सादी की ओर का आकार
१३, १०, १६ = हाथ का ऊपर का आकार

आकृति–स्टँड

१ से २ = गले का १/२ + १/२″
१ से ३ = १ १/२ से २″
३ से ४ = सरल रेखा
४ से ५ = ३/४″

५ से ६ = १ से ३ − १/४″
६ से १ व ५ से ३ = आकार
५ से ७ = १/२″
७ से ६ = तिरछी रेखा

फेडरेशन ऑफ ब्रिटिश इंडस्ट्रीज द्वारा छात्रवृत्तियां

फेडरेशन ऑफ ब्रिटिश इंडस्ट्रीज ने भारतीय नागरिकों को ब्रिटेन में औद्योगिक ट्रेनिंग के लिये 'सी' श्रेणी की ६ छात्रवृत्तियां दी हैं। ये छात्रवृत्तियां १९५८ के लिये हैं और उनकी अवधि ६ से १२ महीने की होगी।

उम्मीदवार इंजीनियरींग के कम से कम दूसरी श्रेणी के उत्तीर्ण स्नातक हों या उनके पास इंजीनियरी का समकक्ष डिप्लोमा हो। उनकी आयु ३५ वर्ष से अधिक न हो और उन्हें डिग्री लेने के बाद कम से कम ५ वर्ष के काम का अनुभव हो।

छात्रवृत्तियों के लिये आवेदनपत्र भेजने के निर्धारित फार्म और अन्य जानकारी वैज्ञानिक अनुसंधान तथा संस्कृति मंत्रालय (सेक्शन–सी. एस्. २) एम्. ब्लॉक. नयी दिल्ली के पते से मिल सकती है। आवेदन पत्र पहुंचने की अन्तिम तारीख ३१ अगस्त १९५८ है।

नाजुक औजारों और यंत्रों के पुर्जों का संरक्षण

श्रीराम इन्स्टिटयूट फॉर इंडस्ट्रियल रीसर्च, दिल्ली ने यंत्रों के पुर्जे, औजार तथा साधारण जुड़ाई–यंत्र सुरक्षित रखने के लिये "प्लैस्टीपील" नामक देशी रासायनिक मिश्रण का आविष्कार किया है।

यह नया मिश्रण लगाने से यंत्रों के सूक्ष्म पुर्जों पर जंग चढ़ने का भय नहीं रहता। यातायात में पहुंचनेवाली साधारण स्वरूप की हानि की भी बहुत कम संभावना रहती है। अत्यन्त नमीवाले वातावरण में भी वस्तु संग्रह कर रख सकते हैं। चीनी मिट्टी तथा कांच से बनी वस्तुओं के लिये भी उसका उपयोग किया जाता है। इस मिश्रण को आसानी से छोटे पैमाने पर बना सकते हैं।

नाजुक औजार, यंत्रों के पुर्जे तथा अन्य यंत्र सामग्री के संग्रह तथा भेजने के बारे में हमेशा कठिनाई होती है। विदेशों में इस प्रकार के मिश्रण का उपयोग बड़े पैमाने पर होता है, अपने देश में उसका उपयोग सीमित है। यह मिश्रण आयात किया जाता है। इसलिये उक्त संस्था द्वारा आविष्कृत उक्त देशी मिश्रण का देशी उद्योग की दृष्टि से बहुत ही महत्त्व है।

मिश्रण बनाने की जानकारी व्यावसायिक दृष्टि से प्राप्त करना चाहते हैं वे सेक्रेटरी, नैशनल रीसर्च डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया, मंडी हाऊस, लिटन रोड, नयी दिल्ली–१ के पते से पत्रव्यवहार करें।

वेतन तथा कमिशन पर

कॅनव्हासर्स चाहिये

'उद्यम' मासिक के लिये ग्राहक और विज्ञापनदाता प्राप्त करने के लिये होशियार तथा परिश्रमी कॅनव्हासर्स की आवश्यकता है। विस्तृत जानकारी के लिये लिखें या स्वयं मिलें– व्यवस्थापक, उद्यम मासिक, वेस्ट हाइकोर्ट रोड, धर्मपेठ, नागपुर १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मॅट्रिक वा तत्सम शिक्षा प्राप्तों के लिये तांत्रिक शिक्षा की सुविधाएँ (लेखांक ६ वां)

संकलक--श्री स. अ. रानडे, एम्. ए., बी. टी., एडवोकेट.

विश्वविद्यालयों के माध्यम व सत्र

भारत की शिक्षा-पद्धति संक्रमणावस्था में है। अधिक विश्वविद्यालयों में कला तथा वाणिज्य विषयों की शिक्षा प्रादेशिक या हिन्दी भाषा द्वारा दी जाती है, परन्तु इंजिनियरिंग तथा मेडिकल पाठ्यक्रम की शिक्षा कौनसी भाषा में दी जाय इसके बारे में दो मत हैं।

मेडिकल पाठ्यक्रम के वर्ष में तीन सत्र होते हैं। उनका उल्लेख यहां नहीं किया गया। दो सत्रों के प्रारंभ होने की तिथियों का उल्लेख किया गया है, परन्तु ये तिथियाँ थोडी-बहुत बदलती हैं। कुछ स्थानों पर तीन सत्र हैं।

विश्वविद्यालय का नाम	सत्र शुरुवात	माध्यम (बी. ई. व एम्. बी. बी. एस्.)
बम्बई	२० जून; ११ नोव्हें.	अंग्रेजी
गुजरात	२० जून; ११ ,,	गुजराती, हिंदी
पूना	२० जून; ११ ,,	अंग्रेजी
वल्लभ विद्यानगर	१० जून; ११ ,,	अंग्रेजी, हिंदी
नागपूर	२९ जून; ३० ऑक्टो., ९ जाने.	अंग्रेजी
बडोदा	१५ जून; ४ नोव्हें.	,,
बनारस	९ जुलै; २८ ऑक्टो., २ जाने.	,,
कलकत्ता	१० जुलै; २ नोव्हें., २ जाने.	,,
दिल्ली	१८ जुलै; १ ऑक्टो., ८ जाने.	,,
कलकत्ता	२० जून; ११ नोव्हें.	,,
गौहत्ती	२५ जून; २४ ऑक्टो., २ जाने.	,,
जादवपूर	१ जुलै; २ जाने.	,,
कर्नाटक	१५ जून; २५ ऑक्टो.	,,
लखनौ	१६ जुलै; १४ ऑक्टो., ८ जाने.	,,
मद्रास	२४ जून; १ नोव्हें.	,,
उस्मानिया	२१ जून; ४ ऑक्टो., ६ जाने.	अंग्रेजी, हिंदुस्थानी
पंजाब	२३ सप्टें; २ जाने., २८ एप्रिल	अंग्रेजी
पटना	११ जुलै; २९ ऑक्टो., २ जाने.	अंग्रेजी
म्हैसूर	२४ जून; १ नोव्हें.	,,
राजपुताना	८ जुलै; २१ ऑक्टो.	,,
रुरकी	२ सप्टें; १५ जाने.	,,
सागर	१० जुलै; २८ ऑक्टो., १० जाने.	अंग्रेजी, हिंदी
त्रावणकोर	२७ जून; ९ सप्टें., ६ जाने.	अंग्रेजी
उत्कल	१६ जुलै; २ जाने.	,,
बिहार	१५ जून; ४ नोव्हें.	,,
आग्रा	८ जुलै; २ जाने.	,,
अलिगड	१६ जुलै; १४ ऑक्टो., ६ जाने.	,,
अलाहाबाद	१६ जुलै; ९ ऑक्टो., २ जाने.	,,
आन्ध्र	२८ जून; २४ सप्टें., २१ जाने.	,,
अन्नामलाई	२६ जून; १४ ऑक्टो., ६ जाने.	,,

युनियन पब्लिक सर्विस कमिशन की परीक्षाएं

इस कमिशन द्वारा प्रति वर्ष अनेक प्रतियोगिता-परीक्षाएं ली जाती हैं। उसमें केवल उत्तीर्ण होना पर्याप्त नहीं है। जितने स्थान होंगे उस हिसाब से उम्मीदवार का नम्बर आना अत्यावश्यक है। दूसरे वर्ष की परीक्षा तक प्रतियोगिता में स्थान नहीं मिला तो काम समाप्त हो जाता है।

(१) इंडियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस (Indian Adm. Service) परीक्षा---इस परीक्षा द्वारा निम्नलिखित विभागों में भर्ती की जाती है--

(१) राज्य व्यवस्था (Adm.) (२) विदेश विभाग (३) पुलिस (४) ऑडिट एण्ड अकाऊण्ट्स (५) सुरक्षा विभाग (६) कस्टम्स तथा एक्साइज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७) इनकम टॅक्स (८) ट्रॅफिक तथा कर्माशयल विभाग–रेलवे (९) केंद्रीय सचिवालय आदि ।

(२) सेंट्रल इंजिनियरिंग सर्विस परिक्षा––

(१) सेंट्रल इंजिनियरिंग सर्विस

(२) सेंट्रल इंजिनियरिंग सर्विस (इले.)

(३) इंडियन रेल्वेज् सर्विस

(४) मेकॅनिकल इंजिनियरिंग तथा पावर

(५) मिलिटरी इंजिनियरिंग सर्विस

(६) टेलिग्राफ इंजिनियरिंग सर्विस

(३) सर्वे ऑफ इंडिया की परीक्षा

(४) सुरक्षा विभाग की परीक्षा

इसमें भूदल, नौदल तथा विमानदल आदि के लिये अलग अलग या एकत्रित परीक्षाएं होती हैं ।

(५) इसके अतिरिक्त इससे विभिन्न प्रकार की कुछ कम कठिन परीक्षाएँ उच्च श्रेणी के असिस्टंट्स या क्लर्कों के पदों के लिये होती हैं ।

(६) उसी प्रकार बीच बीच मे अन्य कुछ परीक्षायें भी होती हैं।

साधारणतः इन परीक्षाओं के विज्ञापन प्रमुख अंग्रेजी समाचार पत्रों में प्रकाशित होते हैं । कॉलेज के पाठचक्रम का अध्ययन करते समय ही परीक्षा कब होती हैं, उनके लिये क्या पात्रता चाहिये आदि जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिये । कॉलेजों ने भी छात्रों से शुल्क लेकर भी, यह सारी जानकारी प्रति बर्ष एकत्रित करना चाहिये । इसका कारण यह है कि इन परीक्षाओं के नियम तथा प्रश्न पूछने की पद्धति (Nature) हमेशा बदलती रहती है । इसलिये पुराने प्रश्नपत्रों का अध्ययन करना योग्य है ।

इन परीक्षाओं को बैठने के लिये २१ से २४ आयु-मर्यादा रखी जाती हैं । २० वर्ष की आयु में बी. ए. उत्तीर्ण होनेवाला छात्र पूरे वर्षभर अध्ययन कर सकता है । कॉलेज के तीन या चार वर्षों में रोज एक घंटा इस हिसाब से इन परीक्षाओं की दृष्टि से अधिक पठन या अनुभव प्राप्त करने की ओर ध्यान दिया जाय तो उनमें सफलता प्राप्त करने की संभावना बढ़ जाती है ।

पुरानी प्रश्नपत्रिकायें "मॅनेजर ऑफ पब्लिकेशन्स, सिविल लाइन्स, दिल्ली" के पास से मोल मिल सकती हैं । कीमत आदि जानकारी उस विभाग से पत्रव्यवहार कर मंगवायें ।

इसी प्रकार की कुछ परीक्षायें कुछ राज्यों में भी ली जाती हैं ।

चाँवल का उत्पादन बढ़ाने के लिये

चाँवल की खेती और व्यापार

पुस्तक में दिये गये अनुभवों और प्रयोगों से सहायता लें ।

मूल्य रु. २·५०; म. ऑ. से रु. ३·२१ भेजने पर पुस्तक रजि. पोस्ट से भेजेंगे । वी. पी. से मंगाने के लिये रु. ३·२७ लगेंगे । विक्रीकर अतिरिक्त ।

– प्रस्तुत पुस्तक में –

★ धान बोनेयोग्य जमीन ★ रोपा–पद्धति और बोआई के अन्य प्रकार ★ खाद देना और स्थानांतर के बाद की देखभाल ★ चाँवल की कटाई, पछाड़ना गाहनी, उड़ावनी और संग्रह ★ चाँवल की फसल को होनेवाली बीमारियाँ और उनका निवारण ★ चाँवल की सुधारी हुई जातियाँ और बीज ★ चाँवल से संलग्न फसलें ★ पुआल के उपपदार्थ आदि बातें सचित्र दी गई हैं ।

अपनी प्रति शीघ्र मंगवा लें । – उद्यम प्रकाशन, धर्मपेठ, नागपुर १ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मामूली पारिवारिक कठिनाइयां तथा

उनका निवारण

लेखिका–श्रीमती प्रभा परांजपे, बी. ए.

दही मथना

[महिला मंडल में दही मथने की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था जिसमें नवविवाहिता विजया को प्रथम पुरस्कार मिला। पुरस्कार ग्रहण करते समय, विजयाने प्रतियोगिता में प्रथम आने का श्रेय अपनी सास को दिया जिसने उसे दही मथने की क्रिया योग्य रीति से करने की शिक्षा दी थी। परीक्षकने उसका अभिनंदन किया तथा दही मथने के समय किन किन बातों की सावधानी लेनी चाहिये; इस पर प्रकाश डाला। वही जानकारी में उन्हीं के शब्दों में 'उद्यम' की पाठिकाओं के सम्मुख प्रस्तुत छोटे से लेख में दे रही हूं। –लेखिका]

ऋतुमान के अनुसार पानी का उपयोग

पहिले, जिस बर्तन में मठा बनाना हो वह बर्तन तथा मंथनी गरम पानी से साफ धो लें। बाद में मलाई का जमा हुआ दही बर्तन में निकाल लें। उसमें कुछ देर तक मथनी चलाएं। जिस बर्तन में दही जमाया हो उसके किनारे से लगा हुआ दही, जाड़े में खौलता तथा अन्य ऋतुओं में कुनकुना पानी डालकर निकाल लें तथा फौरन मथे हुये दही में डाल दें। दही मथते समय बीच बीच में ऋतुमान के अनुसार–ग्रीष्मऋतु में बिलकुल ठंडा तथा शीतऋतु में नल का–पानी डालने से थोडी ही देर में मक्खन ऊपर आ जाता है। बाद में मथनी पर सादा पानी डालकर मक्खनपर ठंडा पानी छिड़कें। मथनी को गरम पानी से धोकर उसकी चिकनाहट निकाल डालें।

ठंडे जल के छिड़काव से मक्खन एकत्रित आता है। कुनकुने पानी में हाथ गीले कर थोड़ा थोड़ा मक्खन हाथ पर लें। मठा निथर जाने के बाद, मक्खन पानी रखे हुये बर्तन में डाला जाय। मक्खन रखने के बर्तन का जल एक दो बार बदलने से मक्खन को खट्टी गन्ध नहीं आती। बर्तन का मठा दूसरे बर्तन में निकाल लें तथा उसमें मक्खन का छोटा-सा गोला रख दें। बर्तन को गीला कपड़ा लपेटें। इन दोनों से मट्ठा जल्दी खट्टा नहीं होता। ठंड के दिनों में मट्ठा ढंक कर न रखें; अन्यथा वह फसफसाता है और दही–पानी अलग हो जाता है।

ध्यान देनेयोग्य अन्य बातें

कम चौड़े मुंहवाले बर्तन में दही मथना चाहिये। इससे मठे के छींटें बाहर नहीं उड़ेंगे। मठा तैयार कर लेने के बाद वह स्थान गरम पानी से अच्छी प्रकार से धो लें या कम से कम गीले कपड़े से पोंछ लें। इससे फर्श पर चिकनाहट नहीं रहती। काम हो जाने के बाद मथनी को गरम पानी से धो डालें। बिना कलई के बर्तन में मठा नहीं बनाना चाहिये। जमाया हुआ दही बर्तन में निकाल लेनेपर शीघ्र मठा बनाना चाहिये, अन्यथा मक्खन निकलने में देरी लगती है। जिस बर्तन में मठा बनाया जाता है उसे भी काम हो जाने के बाद गरम पानी से धो डालना चाहिये। इससे उसकी चिकनाहट दूर हो जाती है तथा बाद में उसे आसानी से मांज सकते हैं। मथनी चलाने की रस्सियां भी नियमपूर्वक गरम पानी से धोया करें।

प्रतिदिन या एक दिन बाद मठा बनता हो तो ताजा मक्खन तथा बासा मक्खन अलग अलग रखें। इससे बासे मक्खन की गन्ध ताजे मक्खन को नहीं लगेगी। बासा मक्खन पानी में डुबाकर रखें तथा उसका पानी रोज बदलें। मक्खन रखने के अलग बर्तन हों तो बीच बीच में उन्हें मांजा जाए। पर्याप्त मक्खन जमा होने पर उसका घी बना लें। जिस बर्तन में मक्खन निकाला जाता है वह बाहर से गरम पानी से (गीले कपड़े से) पोंछ लें। इससे वह बर्तन बाहर से साफ रहता है। जिस बर्तन में दही जमाया जाता है, उसमें में दही निकाल लेनेपर वह धो डालें। इससे बर्तन से गन्ध नहीं आती।

मथना

धूप निकलने के पूर्व मठा बनाया जाय। हाथ से मथनी चलाने की अपेक्षा रस्सी से चलाने से मथने की क्रिया शीघ्र पूरी होती है तथा श्रम भी बचते हैं। दो चार सेर दही हो तो खड़े होकर अन्यथा बैठकर मथनी चलाएँ। पास में आवश्यक से आवश्यक बर्तन तथा वस्तुएं रख लें। इसमें समय तथा श्रम की बचत होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़े रहकर मथनी चलाना गर्भवती स्त्री के लिये अच्छा व्यायाम है।

लकड़ी की मथनी उत्तम होती है। वह हलकी होती है तथा सस्ती भी मिलती है। मठा तैयार होते ही मथनी हलकी चलने लगती है तथा मख्खन ऊपर आने लगता है। कम से कम पानी डालकर बनाया गया तथा जिसमें चिकनाहट बिलकुल नहीं है तथा जिसमें से मख्खन का सारा अंश निकाल लिया गया है वही मठा उत्तम समझना चाहिये।

मख्खन से घी बनाना

बिना कलई के बर्तन में मख्खन गरम करने से कलई निकल जाने का भय नहीं रहेगा। प्रथम मख्खन साफ धोलें, पानी संपूर्णतः निकाक डालें तथा बाद में मज्य आंच पर गरम करें। मख्खन में रहा दही लाल होकर नीचे बैठता है, और घी पारदर्शक दिखायी देने लगता है। उसी समय घी तैयार हो जाता है। घी को शीघ्र चीनी मिट्टी की बरनी में छानकर भरें तथा बरनी का मुंह ढक्कन से बंद कर दें। इससे खादार घी बनता है। मख्खन को गन्ध आती हो तो खाने का पान डालकर मख्खन गरम करें।

बर्तन में से घी निकाल लेने के बाद, उस में थोडा पानी उबाल लें तथा उसें खरोंच लें। बर्तन आंच पर से नीचे उतार लें। पानी ठंडा हो जाने दर ऊपर तैरनेवाला घी का अंश निकाल लें। इससे पतेली मांजने में कम परिश्रम लगता है।

घी को उत्तम स्थिति में रखने के लिये--(१) गर्मी के दिनों में शीतल स्थान पर बर्तन रखें तथा उनपर ढक्कन रखें। ये ढक्कन कम उष्णतावाहक होने के कारण घी को डाव मी नहीं पहुंचती।

(२) ताजा निकाला हुआ घी बासे घी में न मिलाएं दूसरे बर्तन में रखें।

(३) एक बार गरम किया हुआ घी पुनः पहिले घी में सहींमिलाना चाहिये।

पुराने घी से गन्ध छूट रही हो तो ताजा दही डालकर उसे पुनः उबाल लिया जाय या, ताजा मख्खन उबाल लेने पर घी में चने की दाल के बराबर हलदी छोड़ें।

मूंगफली के दाने पीसने के यंत्र के विविध उपयोग

लेखिका--श्रीमती मालती आर्डे

इस यंत्र का उपयोग मूंगफली के दाने, काजू, बादाम, भिगाई हुयी चने की, मूंग की दाल आदि पीसने के साथ ही निम्नलिखित विविध कामों के लिये भी हो सकता है-

-बासी रोटियां बचने पर उनका चूरा बनाकर उसमें शक्कर या गुड़ मिलाते हैं या उसे बघार देते हैं। हाथ से रोटियों का चूरा ठीक नहीं हो पाता। रोटी के छोटे बड़े टुकड़े होते हैं। उक्त यंत्र से यही काम अति शीघ्र तथा उत्तम होता है। श्रम करना नहीं पड़ता है। पांच निनिटों के भीतर ७-८ रोटियों का चूरा तैयार हो जाता है। गोल रोटी को दो बार मोड़ने पर तिकोनी आकार आता है। इसे ही एक बार और मोड़ लें तथा यंत्र में सीधी दबाकर रखें; यंत्र चलाने पर चूरा तैयार होता है। चूरा बहुत बारीक होता है। इससे रुचि के अनुसार घी-शक्कर मिलायें और उसके लड्डू बनायें। बासी रोटी न खानेवाले बच्चे इन लड्डुओं को बड़े चाव से खाते हैं। मीठी चीजें पसन्द न करनेवालों के लिये यही चूरा थोड़े से घी में भून लें बाद में उसे बघार देकर एक-सा भून लें। तश्तरी में यह चूरा रखकर उस पर थोड़ी हरी धनिया पत्ती तथा कसा हुआ नारियल का बुरादा फैला दें। खानेवाला पहिचान नहीं सकेगा कि यह नया पदार्थ किस चीज से बनाया गया है।

-मूली के पत्ते निकाल डालें तथा मूली यंत्र में खड़ी पकड़ कर रखें। यंत्र चलाते ही मूली का कीस तैयार होगा। गाजर का हलवा बनाना हो तो, गाजर कों कद्दू कस पर कसते हैं। परन्तु इस यंत्र की सहायता से आसानी से उसका कीस निकाल सकते हैं।

-अदरक तथा सूखा खोपड़ा भी इस यंत्र से बहुत ही बारीक तथा शीघ्र कसा जाता है। रोटियों का चूरा बनाते समय तथा खोपड़ा कसते समय टुकड़े छोटे होने तक यंत्र में हाथ से दबाकर रखें। खोपड़े के उंगली के बराबर तीन टुकड़े करें। जब टुकड़े छोटे हो जाते हैं तथा उन्हें हाथ से पकड़ना संभव नहीं तब यंत्र का डट्टा लगायें तथा उसपर जोर डालें। कद्दूकस का काम इस यंत्र से हो सकता है।

-चने की दाल-इसके लिये पहिले चने की दाल भिगोनी पड़ती है तथा बाद में उसे पीसते हैं। सील-बट्टे पर पीसने की अपेक्षा इस यंत्र से पीसने का काम बहुत ही आसान तथा शीघ्र होता है। दाल एक सी पीसी जाती है।

-अदरक पाक की टिकियां बनाने के लिये इस यंत्र से अदरक भी कस सकते हैं। अदरक के टुकड़े यंत्र में डालें तथा ऊपर से लकड़ी का डट्टा दबाकर यंत्र घुमायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणी जगत् की मनोरंजक बातें

मछलियाँ पानी में क्यों नहीं डूबतीं ?

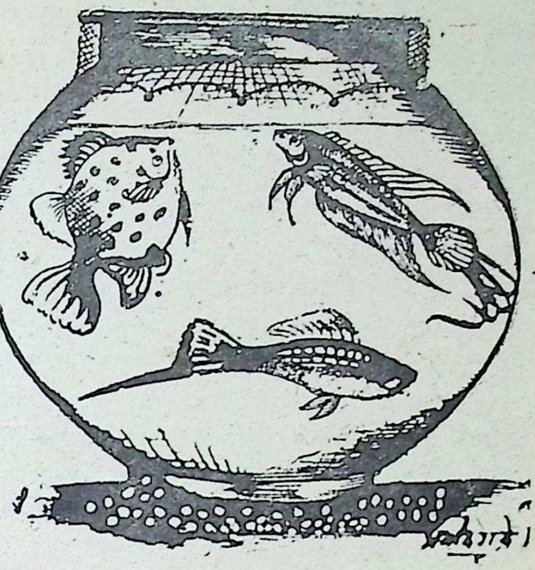

मेरे बालपाठकों,

यह वर्षाऋतु है। सब ओर पानी ही पानी दिखाई देता है। नदी-नालों में पानी भर गया है। वर्षा से सभी को प्रसन्नता होती है। तुम्हारे समान ही पानी में रहनेवाली मछलियों को भी हर्ष हुआ होगा। पानी के बिना वे जिन्दा नहीं रह सकतीं।

क्या तुमने कभी तालाव या नदी के किनारे जाकर मछलियों की क्रीडा देखी है? शौक के खातिर कांच के बर्तन में रखी हुई मछलियाँ तुमने अवश्य देखी होंगी। उन्हें पानी में इधर-उधर उछल कूद करते हुये देखकर तुम्हारा मनोरंजन हुआ होगा। कभी तुम्हारे मन में यह भी विचार आया होगा कि मछलियां पानी में डूबती कैसे नहीं। तुम्हारे समान ही कोई बुद्धिमान मछली हो तो वह भी सोचती होगी कि, देखो ये बच्चे कैसे बगैर पानी के हवा में सांस लेते हैं और उसका तो पानी के बाहर दम घुटने लगता है।

पानी में मछलियां क्यों नहीं डूबतीं? मछलियों तथा हमें दोनों को जिन्दा रहने के लिये प्राणवायु की आवश्यकता है। सांस लेते समय हम हवा अंदर लेते हैं। यह हवा फेफड़ों में जाती है। वहाँ जो छोटी छोटी रुधिर वहन करनेवाली नलियाँ होती हैं, वे उसमें से प्राणवायु शोषण कर लेती हैं। इससे अशुद्ध रक्त शुद्ध होता है। परन्तु मछलियां हवा में से प्राणवायु हमारे समान सांस द्वारा भीतर नहीं ले सकतीं। वे केवल पानी में से प्राणवायु भीतर ले सकती हैं। तुम यदि मछलियों की ओर ध्यानपूर्वक देखोगे तो पता चलेगा कि मछलियां सतत अपना मुंह खोलकर पानी पीती रहती हैं। तुम्हें लगेगा कि मछलियां बहुत पानी पीती हैं। परन्तु वे मुंह से पानी भीतर लेकर, 'गिल्स' नामक अवयव द्वारा उसे बाहर निकाल देती हैं। ये 'गिल्स' मानो मछलियों के फेफड़े हैं। वे कान के पास होते हैं तथा उनपर ढकन जैसा पड़दा होता है। 'गिल्स' में सूक्ष्म रक्त वहन करनेवाली नलियाँ रहती हैं जो पानी में से प्राणवायु शोषण कर लेती हैं। इससे अशुद्ध रुधिर शुद्ध होता है तथा मछलियां तरोताजा हो जाती हैं। सांस लेने की उनकी यह रीति हमें विचित्र मालूम देगी। परन्तु मछलियां आगे बढते समय ही पानी पी सकती हैं। किसी मछली की पूंछ पकड़ कर उसे पीछे घसीटते ले जाएँ तो वह दम घुटकर मर जायगी।

तुम्हारे में से जिनके यहाँ काँच के बर्तन में मछलियां रखी होंगी, उन्हें बर्तन का जल बार बार बदलना पड़ता है। मछलियों को प्राणवायु मिलता रहे इसीलिये ऐसा किया जाता है। अन्यथा मछलियां दम घुटकर मर जाएंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोजपूर्ण खबरें

संग्राहक--श्री श्री. स. आपटे

टंग्स्टन कार्बाईड का सैण्डपेपर

सैण्डपेपर से सभी परिचित हैं। काठ की वस्तुएँ चिकनी बनाने के लिये उसका उपयोग होता है। सैंडपेपर पर कांच तथा रेती के खुर्दुरे कणों के मिश्रण की मोटी तह रहती है। उससे लकड़ी पर घिसने से चिकनाहट आती है। सैंडपेपर बार बार घिसने से उसके कण खुर्दुरे नहीं रहते या कागज से निकल जाते हैं। लकड़ी का बारीक भुसा भी कणों की दरारों में अटक जाता है। इसके सिवाय घर्षण से पैदा होनेवाली उष्णता से लकड़ी के कणों के अनेक प्रकार के गोंद पिघलते हैं तथा उनकी मोटी तह सैंडपेपर पर जमने से वह चिकना हो जाता है। ऐसा सैण्डपेपर घिसने के काम के लिये निरुपयोगी है।

शिकागो की "स्किल" कंपनी ने टंग्स्टन धातु के कार्बाईड के कणों की तह लगाकर "सैंडपेपर" बनाया है। टंग्स्टन कार्बाईड कांच से कठिन तथा उससे कई गुना मजबूत होता है। ये कण फौलाद की बहुत ही पतली तथा लचीली पट्टी पर मजबूती से चिपकाये जाते हैं। इसके लिये पहिले पट्टी पर पिघले हुये पीतल की पतली तह फैलाते हैं तथा उसके जमने के पूर्व उस पर कार्बाईड की बुकनी डाली जाती है। इस सैंडपेपर के कण, बार बार उपयोग में लाने पर भी निकलते नहीं तथा उस पर पानी का भी परिणाम नहीं होता। लकड़ी का गोंद उसपर जमा हो तो स्पिरिट में ब्रश भिगो कर उससे वह पट्टी साफ कर सकते हैं। (साधारण सैंडपेपर को स्पिरिट का स्पर्श होने से कांच तथा रेती के कण कागज को जिस गोंद द्वारा चिपकाये जाते हैं वह गोंद घुल जाएगा)। इस "सैंडपेपर" को (पर्माग्रिट) कई वर्षोंतक अच्छी स्थिति में उपयोग कर सकते हैं।

कीलें मारनेवाली काडतूस

मोटी लकड़ी में बड़ी बड़ी कीलें ठोकने का काम, विशेषतः असुविधाजनक स्थानों पर, कभी कभी बहुत ही पीड़ादायक होता है। ऐसे काम के लिये सुप्रसिद्ध "डु पांट" नामक अमेरिकी कंपनी की रेमिंग्टन शाखा द्वारा प्रस्तुत "माइटी माईट" इस काड़तूस का हथौड़ी जैसा उपयोग हो सकेगा। चार इंच लंबी तथा एक इंच व्यास की फौलादी नली में २२ इंची बंदूक की काड़तूस रखने के लिये एक छेद होता है। प्रथम नली में कील डाली जाती है तथा उसपर आघात करनेवाला आधा इंच लंबा फौलाद का टुकड़ा रखा जाता है। उस पर काड़तूस तथा ऊपर नली का ढक्कन घुमाकर लगाया जाता है। जहां कील ठोकनी होती है वहां नली का मुंह दबाकर रखें। ढक्कन को एक पेंच पीछे खींच कर शीघ्र छोड़ दें। उसका सिरा बंदूक के गुटके के समान काड़तूस के पीछे आघात करता है। उसका बहुत बड़ा आवाज होकर चार इंची कील आसानी से लकड़ी में पैठ जाती है।

जलविरहित बैटरी

मोटर में विद्युत्-शक्ति का संग्रह करने के लिये लेंड-एसिड पर चलनेवाली बैटरी का उपयोग होता है। इस बैटरी में तीव्र गंधकाम्ल रहता है। बैटरी के सिरों से संलग्न तार बार बार साफ करनी पड़ती है तथा उन पर वैसलिन लगाना पड़ता है। अन्यथा तेजाब तार को खा जाता है। इसके अलावा इस बैटरी में बार बार बाष्पी भवन से शुद्ध किया हुआ पानी डालना पड़ता है। इतनी सावधानी लेने के बाद भी इस बैटरी की कार्यक्षमता २-३ वर्षों से अधिक नहीं होती।

अब तेजाब के बदले सिलिकॉनयुक्त रसायन काम में लाकर अमेरिका के "वॉटरलेस बैटरी कंपनी" ने जलविरहित बैटरी तैयार की है। इस बैटरी में पानी की आवश्यकता नहीं है। उसमें तेजाब नहीं होता। भीतर का मसाला सीलबन्द है जिससे बैटरी की ओर विशेष ध्यान देने की जरूरत नहीं पड़ती। किन्हीं कारणों से बैटरी के सर्किट में अति तीव्र प्रवाह बहने भी लगे तो भी बैटरी के पतरों को कोई हानि नहीं पहुंचती या अनेक दिनों तक बैटरी उतरी हुई रखी जाय तो भी उसका रसायन बेकार नहीं जाता। साधारण बैटरी की अपेक्षा इस बैटरी की कीमत ४-५ डॉलर्स ही अधिक है तथा वह उससे पन्द्रह-बीस गुना अधिक समय तक काम देती है।

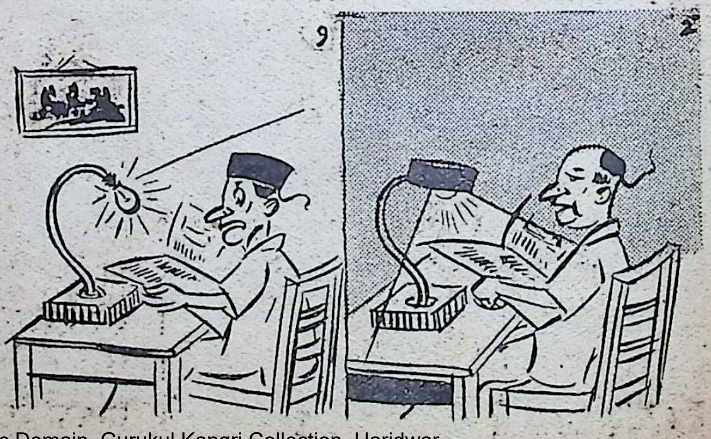

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिज्ञासु जगत

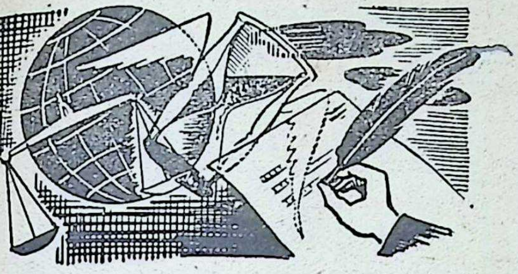

[सैंकड़ों जिज्ञासु पाठक "उद्यम" के नाम अपने प्रश्न भेजकर, उनके उत्तरों की मांग करते हैं। हर प्रश्न के साथ रु. ०.५० के डाक-टिकिट हों, तभी उत्तर भेजे जा सकते हैं। परन्तु प्रायः देखा गया है कि कई पाठक उचित कीमत के डाक-टिकिट न भेजकर अपने प्रश्न भेजते हैं तथा उत्तरों की अपेक्षा रखते हैं। अतः हम ऐसे पाठकों से अनुरोध करते हैं कि वे कृपया अपने प्रश्नों के साथ आवश्यक डाक-टिकिट अवश्य भेजा करें अन्यथा उनके प्रश्नों के उत्तर देना संभव नहीं होगा।

पाठकों के प्रश्नों के उत्तर अधिकारी व्यक्तियों द्वारा हम प्राप्त करते हैं। इससे प्रश्नों के उत्तर देने में कुछ विलंब होना स्वाभाविक है। कभी कभी पूछे गये प्रश्नों का अपेक्षित उत्तर उन अधिकारी व्यक्तियों से नहीं मिल पाता है जिससे उन्हें प्रकाशित करना असंभव होता है। इसलिये पाठकों से साग्रह अनुरोध है कि इस संबंध में वे व्यर्थ का पत्रव्यवहार न करें। —संपादक]

आलू की खेती

श्री व. दा. मराठे, कामठी—दिन ब दिन आलू की खेती बढ़ती जा रही है। आलू की फसल से अच्छा पैसा मिलता है। पोषक अन्न की दृष्टि से भी उसका अत्यंत महत्त्व है। इन कारणों से मैं भी आलू की खेती करना चाहता हूं। शास्त्रशुद्ध आलू की खेती के बारे में कृपया जानकारी दें।

—आलू की फसल अच्छी आने के लिये उत्तम, भुरभुरी तथा पानी की निकासी उत्तम रीति से होनेवाली जमीन चाहिये। खरीफ तथा रबी दोनों प्रकार की फसल पैदा कर सकते हैं। ज़मीन भुरभुरी बनाने के लिये उसकी गहरी जुताई करें तथा मिट्टी के ढेले आदि तोड़ लें। जमीन को खाद देना भी आवश्यक है। आलू को विपुल कम्पोस्ट खाद (Farm—yard manure) आवश्यक है। प्रति एकड़ लगभग २० से २५ गाडियां कम्पोस्ट खाद डालनी चाहिये। इसके अलावा इस फसल को पूरक खाद भी देना जरूरी है (Mineral Fertilisers)। "म्यूरिएट ऑफ पोटैश" के समान क्लोराईडयुक्त खाद इस फसल को न दें। प्रति एकड़ १०० पौंड नाइट्रोजन, ५० पौंड फॉस्फरिक एसिड तथा ४० पौंड पोटैश याने ४०० पौंड अमोनियम सल्फेट नाइट्रेट २६% या ५०० पौंड सल्फेट ऑफ् अमोनिया, ३०० पौंड सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा १६० पौंड सल्फेट ऑफ पोटैश, यह मिश्रण आलू के लिये पर्याप्त है। बुआई के ४–५ दिन पहिले २०० पौंड अमोनियम सल्फेट नाइट्रेट २६%, ३०० पौंड सुपर फॉस्फेट तथा १६० पौंड सल्फेट ऑफ पोटैश इन दोनों का मिश्रण दें तथा शेष २०० पौंड अमोनियम सल्फेट नाइट्रेट २६% आलू लगाने के १। से १।। महीने बाद भरने के समय दें।

फसल के प्रारंभिक विकास के दिनों में पानी की विशेष जरूरत नहीं होती, फूल लगने पर उसे भरपूर पानी दिया जाय। बुआई के बाद प्रत्येक ५ से ८ दिन अन्तर से पानी दिया जाय तथा उस समय खुरपी आदि चलाकर खेत साफ रखें तथा जमीन भुरभुरी करें।

बोने के लिये निरोगी आलू का चुनाव करें। साधारणतः अण्डे के बराबर का आलू बोएं। इससे बड़ा आलू हो तो उसके दो या तीन टुकड़े कर बोएं। प्रत्येक टुकड़े पर साधारणतः २ या ३ आंखें हों। रोगी आलू के टुकड़े निरोगी आलू के टुकड़ों के साथ मिल जाने से पूरी फसल रोगग्रस्त हो जाती है। इसलिये जहांतक संभव हो अण्डे के आकार के आलू चुनें तथा उन्हें साधारण प्रकाश के स्थान पर रखें। अंकुर आने पर उन्हें बोएं। १ फुट अन्तर दो आलुओं के बीच रखें तथा दो नालियों के बीच १।। फुट अन्तर हो। इस प्रकार १ × १।। फुट हिसाब से आलू की बुआई करें। नालियों को मिट्टी भुरभुरी कर उनमें आलू बोएं। जैसे जैसे पौधे बढ़ने लगते हैं वैसे वैसे उनकी जड़ों के पास मिट्टी भर दें। १। से १।। महिने के बाद अन्तिम बार मिट्टी इस तरह से भरें कि पौधे नाली के ऊपरी हिस्से में आ जाय फिर ऊपर बताये अनुसार बची हुई खाद डाल दें।

आलू की फसल को रोगों तथा कीटकों से अधिक से अधिक नुकसान पहुंचता है। इन बातों से फसल को बचाने के लिये कीटनाशक औषधियां तथा उन औषधियों को छिड़कने के लिये पंप आदि चीजों की पहिले से ही व्यवस्था कर रखें।

बोने के पूर्व आलुओं को, एगलाल या एग्रसान में भिगोलें। आलू को अर्लीब्लाईट, लेटब्लाईट ये रोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं। कुप्ताव्हीट ओ. बी. २१ या फंगी कॉपर आदि औषधियां फसल पर छिड़कने से लाभ होता है। फॉलीडॉल औषधि आलु के पौधों पर छिड़कने के ऊपर पत्ते खानेवाले कीड़े आक्रमण नहीं करते। फसल रोगग्रस्त हो जाने पर औषधियों तथा स्प्रे पंप की व्यवस्था करने के लिये दौड़धूप करेंगे तो सब साधन जुटते तक फ़सल रोग से नष्ट हो जायेगी।

सर्वसाधारण ३।। से ४ मास में फ़सल तैयार होती है। अधकच्ची अवस्था में आलू नहीं तोड़ने चाहिये। ऐसी फसल काटने से आलू टिकते नहीं तथा वे सड़ने लगते हैं। एकाध आलू भी सड़ा दिखाई दे तो उसे शीघ्र खोदकर निकाल लें तथा जमीन में गाड़ दें। अन्यथा उसके कारण आसपास के आलू भी सड़ जाते हैं। आलू निकाल कर शीघ्र छाया में रखें तथा उन्हें २–३ फुट ऊंची ढेरी लगाकर रखें। इससे अधिक ऊंची ढेरी न हो। अधिक समय तक उन्हें बोरे में भरकर न रखें।

–बी. एम्. नागले

सितम्बर माह से

वार्षिक चंदा भेजिये

वे ग्राहक जिनका वर्षारंभ सितम्बर माह से होता है, सितम्बर १९५८ से अगस्त १९५९ तक के वर्ष का अपना वार्षिक चंदा केवल ७ रु. शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें। ग्राहकों को वर्ष में विशेषांक दिया जाता है। वार्षिक चंदा भेजते समय अपनी ग्राहकसंख्या अवश्य सूचित करें। यदि चंदे की रकम चेक से भेजें तो बैंक कमिशन के लिये रु. ०·५० अधिक भेजना न भूलें।

–व्यवस्थापक, **उद्यम मासिक,** धर्मपेठ, नागपुर १।

सोने का मुलामा चढाने की विधि

श्री नारायण श्रीधर प्रयागी, काशी––इयररिंग, नेकलेस आदि नकली गहनों पर सोने का पानी चढ़ाने की विधि बतलाने की कृपा करें।

–गहनों की धातु के अनुसार यह विधि अलग अलग होती है। इसलिये किस धातु के गहने पर सोने का पानी चढ़ाना है इसका स्पष्टीकरण आवश्यक है। आजकल बाजार में मिलनेवाले सस्ते तथा चमकीले अमेरिकी गहने एल्युमिनियम से बनाये जाते हैं। उनपर पानी चढ़ाने की विधि जिस सिद्धान्त पर आधारित है उसीकी जानकारी उपलब्ध है। चांदी–तांबे के या पीतल की वस्तु पर विद्युत् की सहायता से पानी चढ़ाया जाता है। इस विषय पर उद्यम (मार्च १९५४) के अंक में विस्तृत जानकारी तथा पाठ दिये गये हैं।

भारतीय अनुसंधान

भिंडी की रोगमुक्त किस्में

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्था के वनस्पति विभाग ने हाल में भिंडी की कुछ ऐसी किस्में निकाली हैं, जिन पर किसी भी बीमारी का असर नहीं होता। भिंडी के पौधों को अक्सर एक विषैला रोग लग जाता हैं, जिससे फसल बरबाद हो जाती है। किन्तु जो नयी किस्में निकाली गयी हैं, उन पर इस बीमारी का कोई असर नहीं होता। नयी किस्म के बीजों की अन्तिम रूप से जांच की जा रही है। आशा है कि १९५९ की फसल तक उत्पादकों को नयी किस्म के कुछ बीज दिए जा सकेंगे। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्था भिंडी के पौधों को बीमारी से बचाने के काफी प्रयत्न करने के बाद, इस नतीजे पर पहुंची कि भिंडी की रोगमुक्त किस्म निकालना ही सबसे उत्तम तरीका होगा। फलस्वरुप भिंडी की बहुत सी किस्मों की आजमाइश की गयी। अन्त में पाया गया कि पश्चिम बंगाल की एक किस्म की भिंडी को अन्य कुछ किस्मों की भिंडियों के साथ मिलाकर उगाने से जो भिंडी होगी, उसपर बीमारी का असर नहीं होगा।

मछली के तेल से चमड़ा साफ करने का पदार्थ

मद्रास की केन्द्रीय चमड़ा अनुसंधान संस्था ने पोंगम और सार्डिन मछली के तेल से चमड़ा साफ करने का पदार्थ (फैट लिकर) तैयार करने की नयी विधि निकाली है। चमड़े को नरम और लचीला बनाने तथा उसे चमकाने के लिये यह पदार्थ काम आता है।

नये ढंग से तैयार किये गये इस पदार्थ की जांच की जा चुकी है और यह उपयोगी साबित हुआ है।

भारत को हर साल २०० से ३०० टन तक अर्थात् ५० लाख रु. के मूल्य के फेट लिकर की जरूरत पड़ती है। दूसरी आयोजना में चमड़ा–उद्योग के विस्तार के कारण जरूरत और बढेगी। नयी विधि से तैयार करने से जरूरत भर का फेट लिकर यहीं तैयार हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होनहार युवकों के लिये :

नौकरी की खोज में

टाईम्स ऑफ इंडिया, बम्बई संस्करण ता. २९-७-५८

टेक्सटाईल अधिकारियों के ६ पदों के लिये ता. २९-८-५८ तक बम्बई पब्लिक सर्विस कमिशन द्वारा आवेदनपत्र मंगवाये गये हैं। टेक्सटाईल मॅन्युफैक्चरर की डिग्री या डिप्लोमा, तीन वर्षों का वीविंग विभाग का अनुभव आवश्यक है। आयु ३५ वर्ष के भीतर हो। वेतनमान रु. २००-६५०। पचास नये पैसों का पोस्टल आर्डर तथा २५ नये पैसों के डाक तिकिट भेजकर आवेदन के फॉर्म मंगवाएं।

टाईम्स ता. २९-७-५८

सेक्रेटरी, डिपार्टमेंट ऑफ् सायन्स एण्ड फ्युएल, नॉर्थ ब्लॉक, नयी दिल्ली द्वारा ता. २५-८-५८ तक निम्नलिखित पदों के लिये आवेदन मंगवाए गये हैं।

(१) जनरल मॅनेजर (२) प्रमुख सिविल इंजिनिअर (३) प्रमुख प्रोसेस इंजिनिअर आदि।

वेतनमान उच्च; आयुर्मर्यादा ३५-४५।

टाईम्स ता. २९-७-५८

डायरेक्टरे उत्तरप्रदेश सीमेन्ट फैक्टरी, चर्क (मिर्जापुर), द्वारा ता. ३१-८-५८ तक निम्नलिखित पदों के लिये आवेदन पत्र मंगवाए गये हैं।

(१) बर्नर फोरमन्-वेतनमान ३००-६०० (२) क्वारी (Quarry) फोरमन्-वेतनमान २००-४५० (३) शिफ्ट फोरमन्-४ स्थान। वेतनमान १२०-३०० (५) चीफ स्टोअर कीपर वेतनमान २००-४५० (६) असि. स्टोअर कीपर-दो स्थान। वेतनमान ७५-२०० (७) सैनिटरी इन्स्पेक्टर-वेतनमान १२०-२१० (८) डीजेल मैकैनिक वेतनमान १२०-२५० (९) शावेल मैकैनिक्स (Shovel Mechanics)-वेतनमान १२०-२५० (१०) चार्जमन (इले.) ३ स्थान, (मेकै.) ३ स्थान श्रेणी ८०-२०० (११) इन्स्ट्रूमेन्ट मैकैनिक-वेतनमान १००-१७५ (१२) उम्मीदवार एंजिनिअर्स-पांच स्थान-भत्ता (Stipend) १५० (१३) उम्मीदवार (Apprentices) मैट्रिक पास, हिंदी जानना आवश्यक, आयु १८ से २१ अनेक शाखाओं में अनेक स्थान है।

विस्तृत जानकारी के लिये मूल विज्ञापन देखें।

टाईम्स ता. ३०-७-५८

अहमदाबाद इले. कं. अहमदाबाद द्वारा ता. २५-८-५८ तक मेकै. या इले. इंजिनियरिंग के एप्रेन्टिसशिप के लिये आवेदन मंगवाये गये हैं। भत्ता ग्रैज्युएट को रु. १५०। डिप्लोमा धारियों को रु. ११०।

टाईम्स ता. १-८-५८

ता. २१-८-५८ तक असि. कंट्रोलर एटामिक एनर्जी कमीशन ट्राम्बे (बम्बई) द्वारा निम्नलिखित पदों के लिये आवेदन मंगवाये गये हैं--

(१) सीनियर रीसर्च ऑफिसर--वेतन मान ९५०-१२५० रु.

(२) रीसर्च ऑफिसर वेतनमान ६५०-९०० रु.

(३) ज्यूनिअर रीसर्च ऑफिसर वेतनमान ४००-६०० रु.

(४) रीसर्च असिस्टंट वेतनमान २५०-३७५ रु.

आवेदन फॉर्म ३५ नये पैसों के डाक टिकिट लिफाफे में भेजकर मंगवाएं।

-भारतीय नौ सेना में (Navy exam.) प्रवेश। यह परीक्षा दिसंबर १९५८ में होगी। १ रु. भेजकर जानकारी प्राप्त करें। पता-सेक्रेटरी युनिअन पब्लिक सर्विस कमिशन धोलपुर हाऊस, नयी दिल्ली।

आवेदन पत्र दि. ३०-८-५८ के पूर्व भेजे जायें।

आवश्यकता है

'उद्यम' मासिक के लिये ग्राहक और विज्ञापनदाता प्राप्त करने के लिये होशियार तथा परिश्रमी कैनवासर्स की आवश्यकता है। विस्तृत जानकारी के लिये लिखें या स्वयं मिलें- व्यवस्थापक, उद्यम मासिक, वेस्ट हाइकोर्ट रोड, धर्मपेठ, नागपुर १।

बीज हर प्रकार के उत्तम व भरपूर उपज देनेवाले सागसब्जी व फुलपौधों के बीज प्राप्त होंगे। साथ ही आम, चिक्कू, कागजी नीबू, मुसंबी आ. की कलमें। लिखिये-मे. गार्डन सप्लाईज कं. नेहरू रोड, विलेपार्ले (ईस्ट) बंबई २४।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

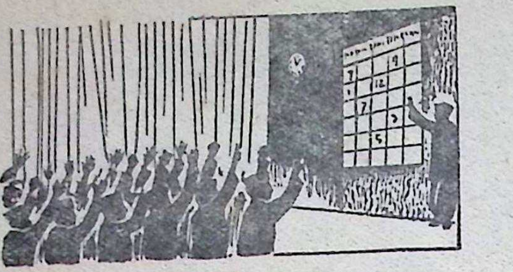

शेयर बाजार का रुख

(ता. ६।७।५८ से ता. ५।८।१९५८)

लेखक--श्री धनंजय, एम्. कॉम्.

पिछले मास में तेल तथा तिलहन बाजार में भाव एकदम आसमान छू गये। मूंगफली, बिनौला, अण्डी आदि तिलहनों का भाव इतना तेज हुआ कि अधिकांश सटोड़िये देखते रह गये। यद्यपि अब कुछ नरमी की ओर रुख दिखायी देता है तथापि भाव तेज ही हैं। निम्नलिखित सारिणी से उसकी कल्पना हो सकेगी--

	जुलाई ६	जुलाई २५	अगस्त ५
मूंगफली अगस्त वायदा (खंडी)	१७१.६२	१९७	१९१
,, तैयार (हंडरवेट)	३६.५०	४१.२५	३९.७५
मीठा तेल ,, (क्वार्टर)	१८.७५	२१.१२	२०.२५
अण्डी सितम्बर वायदा (खंडी)	१५५	१७०	१६२
अण्डी तेल (क्वार्टर)	१६·७०	१८·५०	१७·९४
अलसी तैयार (हंडरवेट)	३२.२०	३५.५०	३४
बिनौला तैयार ,,	१४४	१२०	१२०

सरकार द्वारा अनेक तेलों तथा तिलहनों का निर्यात खुला कर दिया जाने तथा निर्यात शुल्क हटा लिया जाने से बाजार में तेजी का रुख दिखायी दिया। इसका सटोडियों ने लाभ उठाकर भाव बढ़ा दिये। तिलहनों की अपर्याप्त पूर्ति तथा तीसरे महायुद्ध का भय, आदि बातें भी भाव बढ़ने के लिये कारणीभूत हुईं। निर्यात बाजार में भारत अब भी विशेष प्रगति नहीं कर सका यह दिखाई देने से भाव उतर रहे हैं।

सोना-चांदी

सोना-चांदी के भाव टेढ़े-मेढ़े घटते बढ़ते रहे। प्रतिवर्ष वर्षाऋतु में भाव नीचे आते हैं, उस दृष्टि से इस वर्ष भी १५ जून से सोना-चांदी के भाव घटने लगे। परन्तु मध्यपूर्व में युद्ध के नगारे जैसे बजने लगे वैसे बाजार एकदम संभल गया तथा भाव बढ़ने लगे। सोने का भाव प्रति तोला १०४ रु. से १०८ रु. तक बढ़ गया तथा प्रति १०० तोला चांदी का भाव ५ रु. से बढ़कर १८५ रु. हुआ।

युद्ध की संभावना न रहने से भाव धीरे धीरे घटने लगे। सोने का भाव १०५॥ रु. हो गया तथा चांदी का ~~भाव~~ १८३ रु. के आसपास आ गया।

कपास बाजार

कपास का मौसम प्रायः समाप्त होता आया। फलस्वरूप कपास-बाजार में काम काज विशेष नहीं हुआ। इसी बीच कपड़ा-उद्योग की स्थिति न संभलने के कारण मिलों ने भी कपास खरीदी में उत्साह नहीं दिखाया। तैयार बाजार में लक्ष्मी, जयधर, CO_2, विजय, जारिला आदि जातियों को अच्छी मांग रही। परन्तु वायदा बाजार में अगस्त वायदा ६९४ रुपयों से ६६५ रुपये तक प्रति खंडी घट गया।

शक्कर गुड़

शक्कर की भाव वृद्धि रोकने के लिये सरकार को पंजाब, उत्तर प्रदेश तथा बिहार के शक्कर के Ex-Factory भाव निश्चित कर देने पड़े। विगत मास में शक्कर का भाव उत्तर भारत में प्रति बोरा ३-४ रुपयों से बढ़ गया। क्योंकि कारखानेदारों ने शक्कर का भाव अप्रत्यक्ष रीति से बढ़ा दिये। गुड़ का भाव भी प्रति मन २-३ रु. से बढ़ा।

धातु बाजार में तेजी

तांबे व पीतल के पतरे के भाव १ अगस्त से और भी बढ़ाये गये। लंदन तथा सिंगापुर बाजारों में तांबा व जस्त के भाव विगत कुछ हफ्तों में खूब बढ़ने से ही उक्त तेजी निर्माण हुई। गये दो महिनों में तांबे के पतरे का भाव प्रति हंडरवेट १४ रु. से महंगा होकर २०८ रु. हुआ, तथा पीतल के पतरे का भाव प्रति हंडरवेट १२ रु. से बढ़कर १६८ रु. हुआ। किन्तु कथील, शीसा तथा एल्युमिनियम के भावों में कोई अन्तर नहीं पड़ा।

शेयर बाजार

मध्यपूर्व में युद्ध के बादल छाने लगे वैसे कलकत्ता, दिल्ली तथा मद्रास शेयर-बाजार में मन्दी की एक बड़ी लहर दौड़ गयी परन्तु वह कुछ समय के लिये ही रही। फलस्वरूप शेयर बाजार शीघ्र संभल गया। सटोडिये अन्त तक शेयर खरीदते रहे। भाव कैसे संभले इसकी कल्पना इस सारिणी से होगी।

		जुलाई ६	अगस्त ५
बेंगाल कोल	...	२३४	२३९
बिर्ला ज्यूट	...	१७·४४	१९·८०
हावरा ज्यूट	...	१७·१९	१८·१२
नैशनल ज्यूट	...	२३	२४·३७
इंडियन आयर्न	...	२३·०७	२४·३७
ब्रुकबॉण्ड टी	...	१८	१९.१०
टेम्समैको	...	१९·७०	२०·७०
टिटाघर पेपर	...	३९·४५	४०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्थिक तथा औद्योगिक परिवर्तन

(कवरपृष्ठ क्र. २ का शेषांश)

यह रकम सर्वसाधारण बाकी में से रखी गयी है। डिविडेंड योग्य प्रमाण में बांटने के हेतु सर्वसाधारण बाकी में से १५ लाख रु. डिविडन्ड इक्वलायझेशन रिजर्व में रखे गये हैं। अल्प प्रमाण में पूंजी लगानेवालों की सुविधा के लिये १०० रु. कीमतवाले शेयरों को १०-१० रु. के १० शेयरों में विभक्त कर दिया गया है। गत वर्ष टूटफूट निधि में २७ लाख ५९ हजार रु. जमा किये गये। प्रति शेयर ६ रु. डिविडन्ड तथा प्रति शेयर ६ रु. बोनस बांटने के लिये १२ लाख रु. व्यय होंगे। आगामी वर्ष के लिये ४ लाख ६ हजार रु. की बाकी रखी गयी है। गतवर्ष १ लाख २८ हजार रु. की बाकी रखी गयी थी। डिविडन्ड पर अतिरिक्त कर पटाने के हेतु ८० हजार रु. की व्यवस्था की गयी है।

× × ×

सेन रॅले इंडस्ट्रीज लि.

३० सितम्बर १९५७ को समाप्त वर्ष सेन रॅले इंडस्ट्रीज लिमि. के लिए संतोषजनक रहा।

प्रतिवेदन प्रस्तुत करनेवाले वर्ष साइकिलों की बिक्री कुल १ करोड़ ९६ लाख रु. कीमत की हुयी। इसके पूर्व-साल में बिक्री १ करोड़ ६५ लाख रु. की हुयी थी। कंपनी को २३ लाख १७ हजार रु. का कुल लाभ हुआ। इसके पूर्व-साल में कुल लाभ २१ लाख १२ हजार रु. हुआ था। प्रतिवेदन-वर्ष में टूटफूट-निधि में ७ लाख २५ हजार रु. जमा किये गये। इसके पूर्व-साल में इसी निधि के अन्तर्गत ६ लाख ७५ हजार रु. जमा किये गये थे। इसके सिवा अन्य विभिन्न निधियों में भी ७ लाख ८५ हजार रु. जमा किये गए हैं। सर्व साधारण शेयर्स पर ६ प्रतिशत के हिसाब से डिविडन्ड बांटने के लिये ५ लाख ५२ हजार रु. खर्च होंगे। फरवरी १९५७ में कंपनी के विस्तार की योजना को सरकार की स्वीकृति प्राप्त हुयी। उस दृष्टि से बुलवायी गयी काफी यंत्र-सामग्री अभी हाल ही में आ पहुँची है। विदेशी मुद्रा की कठिनाइयों के कारण उत्पादन योजना पूर्ण रूप से क्रियान्वित करना असंभव सा हो गया है। इसी बीच उत्पादन-व्यय कम करने की दिशा में प्रयास जारी हैं।

× × ×

नॅशनल रबर मॅन्युफॅक्चरर्स लि.

नॅशनल रबर मॅन्युफॅक्चरर्स लि. के अध्यक्ष श्री के. एन्. मुकर्जी के मतानुसार उक्त कंपनी १९५९ के प्रारंभ में ही प्रति वर्ष ३६ लाख साइकिल-टायर्स व १२ लाख साइकिल-ट्यूब्स तैयार करने लगेगी। भारत सरकार से प्राप्त स्वीकृति के अनुसार कनव्हेअर बेल्टिंग व फ्लॅट बेल्टिंग का उत्पादन करने के हेतु यंत्र-सामग्री लगायी जा रही है। कंपनी के माल का उत्पादन बढाना भी संभव है किन्तु यह कच्चा माल-विशेषतः रबर-की पूर्ति पर ही निर्भर है। श्री मुकर्जी ने यह मत व्यक्त किया है कि भारत में शीघ्र ही कृत्रिम रबर तैयार करने का कारखाना शुरू किया जाए। दूसरी पंचवर्षीय योजना के अंत में मार्गों की वृद्धि होने से देश में साइकिलों की मांग भी बढ़ेगी। १९६० में ही १६० लाख टायर्स व १६० लाख ट्यूब्स की माँग रहेगी। वर्तमान समय में भी टायरों एवं ट्यूबों का उत्पादन मांग की अपेक्षा काफी कम है। देश के कारखानों की उत्पादन-क्षमता भी काफी कम है और इसी कारण देशान्तर्गत मांग की पूर्ति के लिए उक्त वस्तुओं का विदेशों से आयात किया जाता है।

× × ×

अलेंबिक केमिकल वर्क्स लि.

उक्त कंपनी पेनिसिलीन-उत्पादन के हेतु नया कारखाना खोलने जा रही है। कारखाने के भवन-निर्माण का कार्य जारी है तथा विदेशों से यंत्र सामग्री भी बुलवायी गयी है। इस कारखाने में १९५९ से उत्पादन शुरू किया जावेगा। कंपनी के विकासार्थ पूंजी की आवश्यकता है और इसके लिए कंपनी के संचालकों ने प्रति १०० रु. कीमतके २३ हजार शेयर्स बिक्री के लिए निकालने का निश्चय किया है। १९५७ का वर्ष कंपनी के लिए काफी संतोषजनक रहा। १ करोड़ ९२ लाख रु. के माल की बिक्री हुयी। इसके पूर्व-साल में बिक्री १ करोड़ ३८ लाख रु. की हुयी थी। १९५७ में कंपनी को कुल २५ लाख रु. का लाभ हुआ जबकि इसके पूर्व-साल में कुल लाभ १५ लाख १४ हजार रु. ही हुआ था। सर्वसाधारण शेयर पर १२ रु. के हिसाब से डिविडन्ड बांटा जावेगा। इसके पूर्व-साल में प्रति शेयर १० रु. के हिसाब से डिविडन्ड बांटा गया था। दिसम्बर १९५७ के अंत में कंपनी के पास पूंजी ५६ लाख २७ हजार रु. की थी। उसमें से ४१ लाख २७ हजार रु. सर्वसाधारण शेयर्स के रूप में तथा १५ लाख रु. प्रेफरेन्स शेयर्स रूप में हैं। कंपनी ने अब तक कुल १ करोड़ १० लाख रु. पूंजीगत व्यय किया है।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

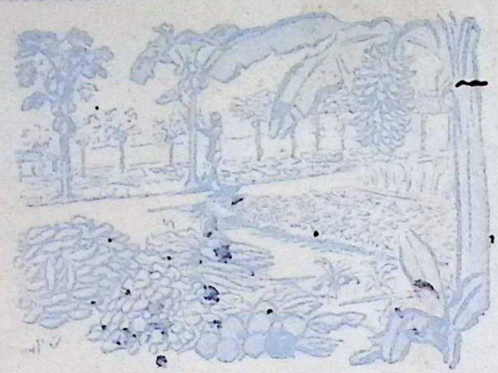

सब्जियों की बागवानी

मूल्य रु. २·००; मनीऑर्डर से रु. २·६५ भेजनेपर पुस्तक रजि. पोस्ट से भेज देंगे । वी. पी. से मंगाने के लिये रु. २·७१ लगेंगे । विक्रीकर अतिरिक्त ।

– प्रस्तुत पुस्तक में –

टमाटर, बैंगन, फूलगोभी, गाँठगोभी, भिंडी, आलू, घुइयाँ, प्याज, मली, गाजर, चुकंदर आदि कंदफूल–सब्जी और सब तरह की पत्ती–सब्जियों की खेती पर प्रकाश डाला गया है ।

सब्जियों की खेती के लिये जमीन का चुनाव, खेत की रचना, खाद, पौधे तैयार करना, सिंचाई का प्रवंध, सब्जियों की हेरफेर करने की विधि आदि बातें विस्तृत रूप से दी गई हैं ।

अपनी प्रति शीघ्र मंगा लें ।

– **उद्यम प्रकाशन**, धर्मपेठ, नागपुर १ ।

फूलों की बागवानी

मूल्य रु. २·५०; म. ऑ. से रु. ३·२१ भेजनेपर पुस्तक रजि. पोस्ट से भेजेंगे । वी. पी. से मंगाने पर रु. ३·२७ लगेंगे । विक्रीकर अतिरिक्त ।

– प्रस्तुत पुस्तक में –

फुलवारी की रचना, जमीन और उसकी तैयारी, पौधे तैयार करना, बीज बोना, पौधे स्थानांतरित करना, सिंचाई, खाद, झाड़ों की रक्षा करना आदि जानकारी, विभिन्न फूलपौधों को लगाने की और व्यापार की सचित्र जानकारी दी है ।

इसके अतिरिक्त फलों को अधिक दिन ताजा रखना, फूलों और गुलदस्ता की आकर्षक रचना करना, फुलवारी के झाड़ों के कीड़े, कीटनाशक द्रव्य आदि जानकारी विधिवत् दी है ।

– **उद्यम प्रकाशन**, धर्मपेठ, नागपुर १ ।

मुद्रक तथा प्रकाशक – वि. ना. वाड़ेगांवकर, (संपादक, हिंदी 'उद्यम')
उद्यम कमर्शियल प्रेस, वेस्ट हायकोर्ट रोड. धर्मपेठ नागपुर १.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

14/9/59

बाल-भारती

भाद्र

सितम्बर १९५९

मूल्य
३५ नये पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

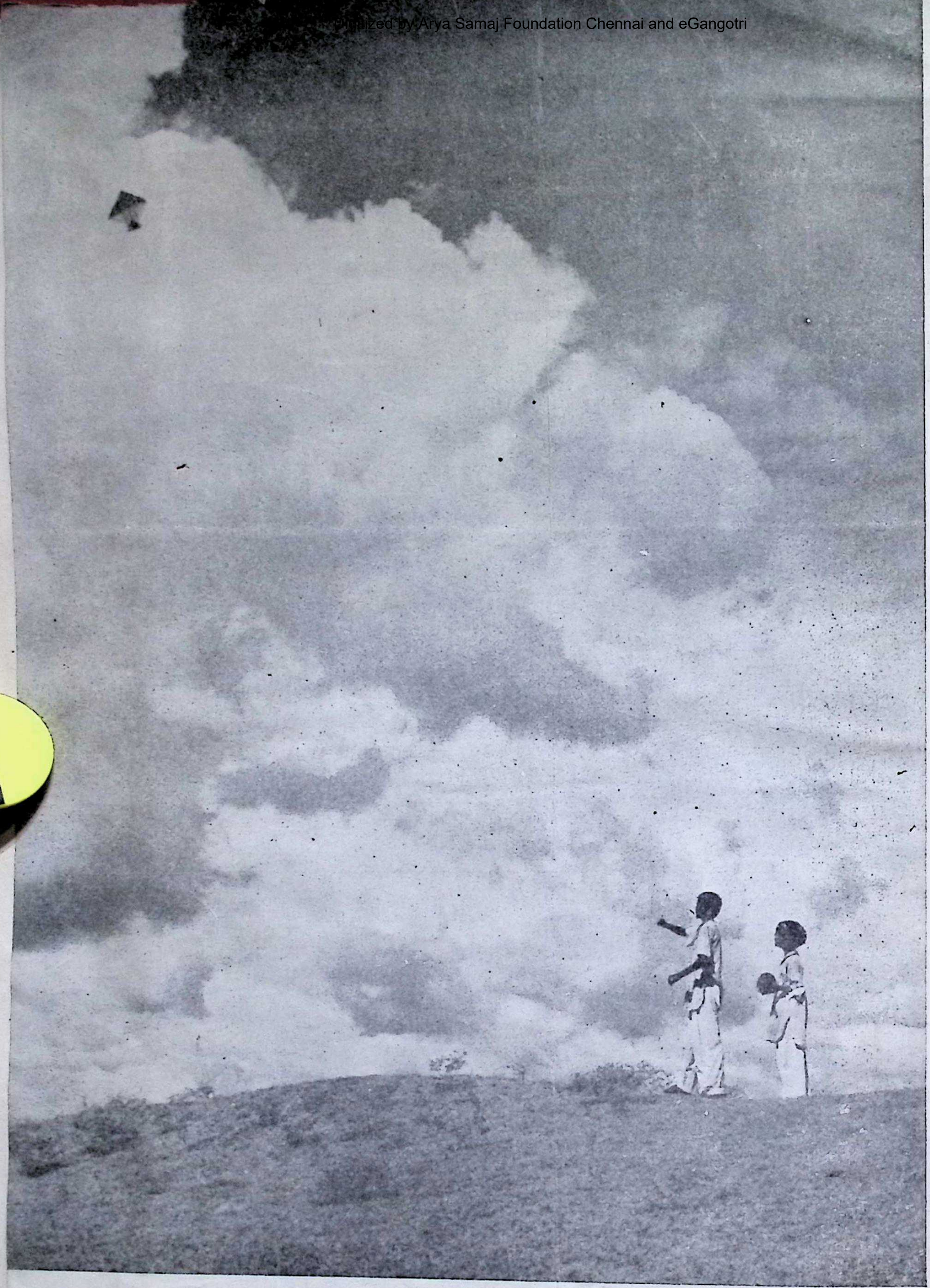

होकर हवा पर सवार, चली बादलों के पार
उड़ी, उड़ी रे, पतंग मेरी उड़ी रे !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के स्वास्थ्य के रक्षक

नौनिहाल बेबी टानिक

बच्चों की कमज़ोरी में काम आता है

नौनिहाल ग्राइप सीरप

बच्चों के क़ब्ज़, बदहज्मी दांत निकलना और अफ़ारा में काम आता है

हमदर्द दवाखाना

[ट्रस्ट] देहली

बाल-भारती

संख्या ४ भाद्र १८८१ वर्ष १२

सितम्बर १९५९

सम्पादक मण्डल

के० शंकर पिल्ले — मोहन राव

फ्रीडा वेदी — सावित्री देवी वर्मा (मंत्री)

विषय-सूची

लोभी गड़रिया	सावित्री देवी वर्मा	... २
हिंडोले का गीत (कविता)	दादा चतुर्वेदी	... ४
टिड्डा ज्योतिषी	मोहनलाल पुरोहित	... ५
राजकुमारी का साहस	गुरु नारायण पाण्डेय	... ७
स्वास्थ्य गीत (कविता)	प्रे० चन्दोला	... ९
बेताल पचीसी	वीरेश्वर भट्टाचार्य	... १०
बुद्धि की कीमत	रामदास तांती	... १२
नारी का सम्मान	ब्रह्मानन्द बन्धु	... १३
सच और झूठ की पहचान	राज ऋषि	... १४
उल्लू अंधेरे में क्यों रहता है ?	...	... १४
बाल-भारती चित्रावली		... १५–१८
परेम्बर	शान्ता रंजन	... १९
केवट (कविता)	कैलाशचन्द्र	... २०
हम भारतीय बालक (कविता)	सरलकान्ता लाल	... २०
नियम (कविता)	निरंकार देव सेवक	... २०
लिलीपुट की यात्रा	अनुवादक : मदन मोहन शुक्ल	... २१
सहन शील बापू	अरुण धीर	... २३
कुछ समाचार		... २४
वफादार हाथी	सत्या जैन	... २५
दीदी के पत्र	दीदी	... २६
पाओ चेंग का अद्भुत न्याय	देवेन्द्र किशोर शर्मा	... २७
मनुष्य-भक्षी वृक्ष	सन्त राम	... २९

सम्पादकीय पत्र-व्यवहार का पता--सावित्री देवी वर्मा

पब्लिकेशन्स डिवीजन, ओल्ड सेक्रेटेरिएट, दिल्ली-८

वार्षिक मूल्य--चार रुपये, १ डालर या ७ शिलिंग

एक प्रति---३५ नये पैसे, १० सेंट या ८ पेंस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोभी गड़रिया

सावित्री देवी वर्मा

हां, तो करामाती कुर्सी ने कहानी कहनी शुरू की।

दक्षिण के पहाड़ी प्रदेश में गड़रियों का एक गांव बसा था। इसी गांव में दो भाई रहते थे। बड़े भाई का नाम था जालिम खां और छोटे का था रहमत खां। कहने को तो वे दोनों सगे भाई थे पर बड़ा भाई भेड़ों के प्रति बड़ा निर्दय था। वह उन्हें कम से कम खुराक देता और अधिक से अधिक ऊन उन पर से उतारता, जब कि छोटा भाई उनकी देखभाल भी अच्छी करता और मूंडते समय कैंची को अधिक दबाता भी नहीं था।

एक साल जाड़ा अधिक पड़ा और मैदान में ऊन की मांग खूब बढ़ी। बड़े भाई ने ऊन बेच कर काफी पैसे कमाए। अब उसे लालच आ गई। उसने साल में दो बार भेड़ों को मूंडना शुरू किया। छोटे भाई ने कहा भी कि भैया, ऐसा मत करो। जाड़े में भेड़ों को सर्दी लगेगी। पर उसने भाई की नसीहत पर कुछ ध्यान नहीं दिया। इस बात को लेकर दोनों भाइयों में काफी कहा-सुनी भी हुई पर जालिम खां को तो लालच ने घेरा हुआ था। ऊन बेच-बेच कर उसने खूब धन बटोर लिया। उसने अपनी भेड़ों की कुछ भी परवाह नहीं की। नतीजा यह हुआ कि धीरे-धीरे उसकी भेड़ें कम होने लगीं। उसने इसके लिए छोटे भाई को जिम्मेदार ठहराया। एक दिन छोटे भाई ने इस बात को ताड़ा कि जालिम खां जिन भेड़ों को बुरी तरह मूंड कर चरागाह भेजता था वे ही लौट कर नहीं आती थीं। धीरे-धीरे उनकी आधे से अधिक भेड़ें गायब हो गईं। पड़ोसियों को जालिम खां से तो कोई सहानुभूति नहीं थी, पर उन्हें रहमत खां पर बड़ा तरस आता था। बेकसूर रहमत खां अपने भाई की गलती का नाहक ही शिकार हो रहा था।

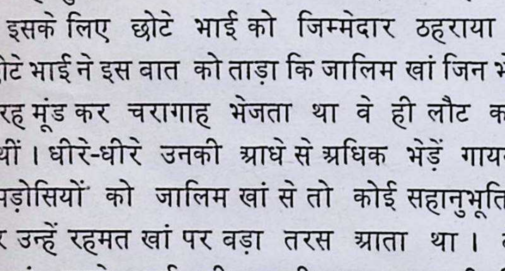

वह अपने भाई से बोला—कितनी सुन्दर ऊन है इनकी पीठ पर! मैं अभी कैंची ला कर इन्हें मूंडता हूं।

जब वसन्त ऋतु आई तो उनकी केवल तीन भेड़ें बची थीं। उस दिन जालिम खां भेड़ों के साथ-साथ ही लगा रहा। जब उसकी नजर उनकी पीठ पर उठी हुई नर्म-नर्म ऊन पर पड़ी तो वह अपने भाई से बोला—कितनी सुन्दर ऊन है इनकी पीठ पर! मैं अभी कैंची ला कर इन्हें मूंडता हूं।

रहमत खां को भाई की यह बात अच्छी नहीं लगी क्योंकि ठंडी हवा चलनी शुरू हो गई थी और भेड़ों को मूंड कर नंगा करने का मतलब था उन्हें जाड़े भर ठिठुरने देना। जब भाई कैंची लेकर लौटा तो वहां एक भी भेड़ नहीं बची। रहमत खां ने बताया कि वे टीले पर चढ़ कर गायब हो गईं।

जब वसन्त ऋतु आई तो उनकी केवल तीन भेड़ें बची थीं।

अब रोटी कमाने का और कोई साधन न देख कर बड़ा भाई अपनी कैंची और थैला लेकर चल पड़ा, लाचारी में छोटे भाई को भी उसके संग जाना पड़ा। वे दोनों उसी रास्ते से चल दिए जिससे उनकी तीन भेड़ें गायब हुई थीं। दोपहर तक वे लोग एक ऐसी सूनी जगह पर पहुंचे जहां चारों ओर सन्नाटा था। वे थक कर सुस्ताने को बैठे ही थे कि उन्हें नीचे घाटी से आती हुई किसी गड़रिए की बांसुरी की मधुर धुन सुनाई पड़ी। उन पर इस मधुर संगीत का ऐसा अच्छा प्रभाव पड़ा कि उनके दिल की उदासी दूर हो गई। उनकी थकावट मिट गई और वे घाटी की ओर चल पड़े। आगे जाकर जो कुछ उन्होंने देखा, उससे हैरान रह गए। घाटी में चारों ओर हरी कांच-सी घास लहलहा रही थी। उसके बीच-बीच में हल्के जामुनी रंग के वनफशे के फूल छिटके हुए थे। उस घास के मैदान में भेड़ों का एक बहुत बड़ा सफेद झुण्ड चर रहा था और एक चट्टान पर बैठ कर एक बूढ़ा बांसुरी बजा रहा था। बूढ़े ने एक चोगा पहन रखा था। उसके सफेद बाल कमर तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

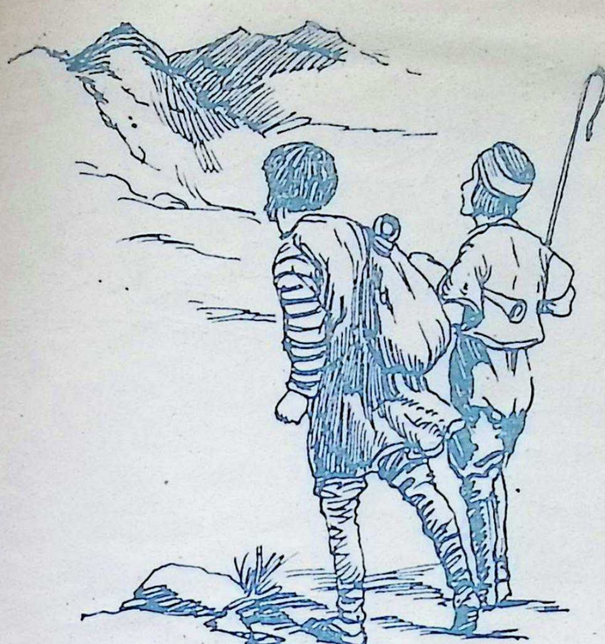

वे दोनों उसी रास्ते से चल दिए जिससे उनकी तीनों भेड़ें गायब हुई थीं।

छितरे हुए थे और उसकी शानदार दाढ़ी छाती पर फैली हुई थी। वह बहुत रोबीला दिखाई पड़ रहा था।

छोटे भाई रहमत खां ने आगे बढ़कर कहा——बाबा सलाम ! हम परदेशी गड़रिए हैं। हमारी भेड़ें खो गई हैं। इसलिए बेरोजगार होकर हम अपने वतन से काम की खोज में निकले हैं। हमारे लायक कोई काम मिल जाए तो बड़ी दया होगी।

बूढ़ा बोला——यहां चारों ओर घास के मैदान हैं। मैं यहां का सबसे पुराना गड़रिया हूं। मेरे पास बहुत-सी भेड़ें हैं। मैं तुम दोनों को काम दे सकता हूं। पर पहले यह पता करना होगा कि तुम दोनों में से कौन भेड़ों को मूंडने में चतुर है।

यह बात सुनकर जालिम खां को हिम्मत बंधी। वह आगे बढ़ कर बोला——जनाब, मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि आस-पास की किसी घाटी में भी मेरे समान भेड़ों को मूंडने में चतुर कोई दूसरा आपको नहीं मिलेगा। मेरे द्वारा मूंडे जाने के बाद आप को भेड़ पर एक रोआं भी बचा हुआ नहीं दीखेगा।

एक चट्टान पर बैठ कर एक बूढ़ा बांसुरी बजा रहा था। बूढ़े ने एक चोगा पहना हुआ था। उसके सफेद बाल कमर तक छितरे हुए थे।

बूढ़ा बोला——ठीक है, शायद तुमको मैं काम दे सकूं। अभी तुम दोनों बैठकर मेरे थैले में से निकाल कर खाना खाओ। रात को मैं तुम्हें भेड़ें मूंडने के लिए सौंप दूंगा।

खा-पीकर दोनों भाई हरी-हरी घास पर सुस्ताने के लिए लेट गए। जालिम खां लेटे-लेटे मन मोदक उड़ाते हुए सोचने लगा कि अब भेड़ों को कसकर मूंडने की मेरी चतुराई का लोहा रहमत को जरूर मानना पड़ेगा।

थोड़ी देर बाद चांद पहाड़ की चोटी पर दिखाई पड़ा। सफेद दूधिया भेड़ें बूढ़े चरवाहे के चारों ओर इकट्ठी हो गईं। एक नजर अपने रेवड़ पर डालकर बूढ़े गड़रिए ने अपनी बांसुरी पर एक मधुर तान छेड़ी——जिसे सुनकर भयानक भेड़ियों का एक गिरोह वहां आ गया। उनकी आंखें चिनगारियों की तरह चमक रही थीं और उनकी लाल-लाल जीभ मुंह से एक ओर को लटकी हुई लपलप कर रही थीं। उनके बाल बहुत बढ़े हुए थे। उन भेड़ियों ने आकर जालिम खां को घेर लिया।

बूढ़े ने जालिम खां से कड़क कर कहा——उठो, इस रेवड़ को मूंडो।

डर के मारे जालिम खां की घिग्गी बंध गई। वह कैंची हाथ में लेकर ज्यों ही आगे बढ़ा, भेड़िए दांत निकाल कर उसकी ओर गुर्राने लगे। जालिम खां के छक्के छूट गए। कैंची हाथ से छूट गई। वह पीछे को मुड़ आया। वह मन ही मन अपने भाई को इस दुर्भाग्य के लिए कोस रहा था। उसने चिल्ला कर कहा——जनाब, मैं भेड़ों को मूंड सकता हूं, भेड़ियों को नहीं।

बूढ़े गड़रिए ने जरा सख्ती से कहा——तुम्हें यदि नौकरी पर रहना है तो यह काम करना ही होगा। वरना यहां से वापस चले जाओ और समझ रखो कि यह भेड़िए भी तुम्हारे साथ ही जाएंगे।

रहमत खां ने सोचा इससे बुरा और क्या हो सकता है। वह भाई की कैंची उठा कर और हिम्मत करके पास वाले भेड़िए की ओर मुड़ा। उसे यह देख कर हैरानी हुई कि वे जंगली भेड़िए उसके सामने भोले मेमनों की तरह खड़े रहे। रहमत खां ने एक-एक करके सब को धीरे-धीरे मूंडा।

जब काम खत्म हो गया तो बूढ़े ने कहा——शाबाश बेटे, मैं तुम्हारे काम से बहुत खुश हूं। यह भेड़ियों का झुंड और इनकी ऊन सब तुम्हें इनाम में दी जाती है। तुम इन्हें लेकर अपने गांव लौट सकते हो और अपने इस निकम्मे और निष्ठुर भाई को भी साथ ले जाओ। इसकी खैर इसी में है कि वह इस झुंड की देखभाल ठीक से करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह भाई की कैंची उठा कर और हिम्मत करके पास वाले भेड़िए की ओर मुड़ा ।

रहमत खां कहने ही वाला था कि मैं इन भेड़ियों का क्या करूंगा, पर वह यह देख कर हैरान रह गया कि वे सब भेड़िए बदल कर भेड़ें बन गए । असल में ये सब वे ही भेड़ें थीं जो कि जालिम खां के व्यवहार से तंग आकर पहाड़ों में गायब हो गई थीं। अब वे पहले से दुगनी मोटी और तगड़ी थीं।

छोटे भाई के संकेत करने पर जालिम ने उस बढ़िया ऊन के ढेर का गट्ठर बांध लिया और अपने भाई के पीछे भेड़ों को हांकता हुआ चुपचाप चल पड़ा। गांव पहुंच कर उन्होंने अपने साथियों को आप बीती सुनाई। उनके सभी पड़ोसी उनके रेवड़ की प्रशंसा करते नहीं थकते थे।

आगे के लिए जालिम खां को अच्छी नसीहत मिल गई और उसने अपनी भेड़ों की खूब सावधानी से देखभाल की और मूंडने का काम हमेशा के लिए रहमत खां पर छोड़ दिया।

करामाती कुर्सी यह कहानी सुना कर चुप हो गई।

इस कहानी का प्रभाव बादशाह, उसकी रानी और राजकुमारी पर बहुत अच्छा पड़ा। उन्होंने भी दूसरों की छीनी हुई सब जमीन-जायदाद उनके मालिकों को लौटा दी। कहते हैं, वह करामाती कुर्सी अब तक उस राज्य में राजमहल के बच्चों की वाटिका में रखी हुई है और सूरज डूबने पर बहुत से बच्चे वहां कहानी सुनने के लिए इकट्ठे होते हैं। उस कुर्सी से शिक्षाप्रद कहानियां सुनकर उस देश के सभी बच्चे बड़े नेक और सदाचारी बन गए हैं।

(समाप्त)

★

हिंडोले का गीत

दादा चतुर्वेदी

आओ सखी री झूला झूलें वर्षा मंगल गाएं,
बाबुल की बगिया में चुनचुन जामुन, अमियां खाएं।
भाइयों का ले नाम प्रेम से नेह मेह बरसाएं,
पटली पर भर पेंग परस्पर मचकी दे मचकाएं।
आओ सखी री……

किस की डोर पालना किसका किसकी कजली गाएं,
रेशम की हो डोर, पालना चन्दन का लगवाएं,
मेघ मलार हिण्डोला कजली वीरन की हम गाएं,
झूलें और झुलाएं हिलमिल पावस-पर्व मनाएं।
आओ सखी री……

किसका पेड़, बगीचा किसका किसकी अमियां खाएं,
मन का पेड़, हृदय की बगिया रस की अमिया खाएं,
बाबुल की बगिया में लुकछिप झूलें और झुलाएं,
राधा का धर वेश श्याम को ले-ले नाम बुलाएं।
आओ सखी री……

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिड्डा ज्योतिषी

मोहनलाल पुरोहित

किसी गांव में एक गरीब ब्राह्मण रहा करता था। उसका नाम था टिड्डा। टिड्डा के माता-पिता बचपन में ही इस असार संसार को छोड़कर चल बसे थे। शिक्षा के नाम पर उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर वाली कहावत सच्ची उतरती थी।

एक समय की बात है, गांव में सूखा पड़ गया। रोजी की खोज में टिड्डा को भी गांव छोड़ना पड़ा। वह शहर चला। सांझ हो चली थी। वह शहर पहुंचने को ही था कि उसने दूर से देखा एक आदमी उसी की ओर चला आ रहा है। पूछने पर बोला––मैं कुम्हार हूं। और आप?

––मैं एक ब्राह्मण हूं। रोजी की टोह में घर से निकला हूं।

कुम्हार ने ब्राह्मण को प्रणाम किया। अपना दुःख प्रकट करते हुए उसने कहा––गुरुदेव! आज सुबह से हैरान हो रहा हूं। मेरे गधे का कहीं पता-ठिकाना नहीं। आप ब्राह्मण देवता हैं, शकुन निकालिए आपके लिए क्या असम्भव है?

ब्राह्मण जिस समय शहर में आ रहा था, उसने तालाब के पास एक झाड़ी में एक गधे को लोटते देखा था। समझा हो-न-हो, वह गधा इसी का होना चाहिए। चट से शकुन लेकर कह दिया––तो जाओ तालाब के पश्चिम में झाड़ी के पास मिल जाएगा।

और कुम्हार को अपना गधा ठीक उसी स्थान पर मिल गया। वह उसे लिए दौड़ा-दौड़ा पण्डित जी के पास आया। पण्डित जी एक पेड़ के नीचे आसन लगाए बैठे थे। कुम्हार आते ही पांव पर गिर पड़ा––गुरुदेव! आपने आज नचा लिया। मैं इसके लिए सुबह से हैरान हो रहा हूं। न मालूम कहां-कहां के चक्कर मार चुका। आप सचमुच देवता हैं। चलिए मेरा घर पवित्र कीजिए।

ब्राह्मण टिड्डा मन ही मन बड़ा प्रसन्न हुआ। सोचा––चलो, यह भी ठीक रहा। वरना रात पड़ने पर यहां परदेश में कहां ठिकाना लगता। वह कुम्हार के साथ हो लिया।

कुम्हार ने घर पहुंचते ही अपनी पत्नी को आवाज लगाई और कहा––देख! आज अपने आप बिना खोजे ही गुरु मिल गए। मैं तो सुबह से हैरान हो गया था इस कमबख्त गधे के पीछे। पण्डित जी ने आज जान बचा दी। वरना रात भर चक्कर काटता रहता और फिर भी क्या ठिकाना था इस पाजी का। चलो, फौरन रोटी बनाओ इन ब्राह्मण देवता के लिए।

कुम्हार जितना ही सरल और सीधे स्वभाव का था उसकी पत्नी उतनी ही तेज-तर्रार थी। कहने को तो वह अपने पति का कहना मान गई। पर मन में बड़ी उदास और दुःखी रही। सोचने लगी––यह एक और बला उठा लाए। अब इसे रोटियां भी खिलाओ और घर में भी रखो।

उसने एक दिन अपने पति से कहा––तो आज मेरा भी एक प्रश्न पूछिए अपने गुरुदेव से कि मैंने कितनी रोटियां बनाई हैं?

कुम्हार ने उत्तर में कहा––तू तो पगली है। भला रोटियां कितनी बनाईं, यह भी कोई पूछने जैसा प्रश्न होगा?

पर कुम्हारिन जो अपनी इस जिद्द पर अड़ी तो अड़ी ही रही।

तंग आकर कुम्हार ने ब्राह्मण देवता से पूछ ही लिया––गुरुदेव! वह तो मनाए भी नहीं मानती। जिद्द पकड़े बैठी है कि मुझे बताइए, आज मैंने कितनी रोटियां पकाई हैं?

ब्राह्मण ने उत्तर दिया––इसमें कौन बड़ी बात है। तुम हां भर लो। मैं उसे कल ही बतला दूंगा। उसने कितनी रोटियां बनाई हैं।

ब्राह्मण के उठने-बैठने का स्थान रसोई से कोई दूर तो था नहीं। उधर कुम्हारिन रोटियां बनाने लगी––इधर ब्राह्मण लगा उसके थपके गिनने। क्योंकि रोटी के बनने के साथ ही वह तवे पर तो थपके के साथ गिरती ही। इस प्रकार जब ब्राह्मण ने कुम्हारिन को भी ठीक जवाब बता दिया, तो बड़े आदर और इज्जत के साथ दोनों उसकी पूजा करने लगे।

यह चर्चा सारे शहर में फैल गई कि ब्राह्मण देवता बड़े सिद्ध पुरुष हैं। लोग उनके नाम पर कितनी ही उलटी-सीधी मनगढ़ंत कथाएं जोड़ कर एक-दूसरे को सुनाने लगे।

अचानक एक दिन वहां की रानी का चन्द्रहार चोरी हो गया। रानी नहाने चली तो हार खूंटी पर रख कर गई थी। और वापिस आई तो देखती है––खूंटी हार खा गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा साहब ने ब्राह्मण की बड़ाई सुन रखी थी। उन्होंने ब्राह्मण देवता को बुलाया। प्रणाम करके उचित आसन दे कर यह विनती की--गुरुदेव ! मुझे हार खो जाने का तो जरा भी दुःख नहीं। ऐसे सैकड़ों हार मेरे पास मौजूद हैं और आपकी कृपा से सैकड़ों दूसरे भी खरीद सकता हूं, पर खेद है तो इसी बात का कि रानी उसी हार पर जिद्द पकड़े बैठी है। वह भोजन भी नहीं कर रही है। कहती है, जब तक वह हार न मिल जाए, मैं अन्न-जल नहीं ग्रहण करूंगी। अब तो लाज आपके ही हाथ है।

टिड्डा महाराज अब तो फंस मरे। सोचने लगे कैसी आफत आ गई। फिर भी हिम्मत से काम लिया। राजा साहब से तुरन्त कह डाला — मुझे सात दिन का मौका दिया जाए। सातवें रोज हार आपको अवश्य मिल जाएगा।

—गुरुदेव ! मुझे हार खो जाने का तो जरा भी दुःख नहीं। पर खेद है तो इसी बात का कि रानी उसी हार पर जिद्द पकड़े बैठी है।

ब्राह्मण ने सोचा — सात रोज में तो मैं २०० मील पहुंच जाऊंगा। पर राजा भी कोई बुद्धू हो, ऐसी बात नहीं। उन्होंने कहा--कोई हर्ज नहीं, आप सात रोज तक मेरे महल में रहें। आपको भी इस प्रकार आने-जाने की दिक्कत न उठानी पड़ेगी और रानी साहिबा को भी धीरज बंधा रहेगा।

राजा की होशियारी के सामने ब्राह्मण की युक्ति कोई काम नहीं कर सकी। उसे विवश होकर वहीं रहना पड़ा। पर नींद किसे आए ? वह बड़े सोच में पड़ गया। ब्राह्मण सोने की जितनी कोशिश करता नींद उतनी ही दूर भागती। रात भर जोर-जोर से 'निद्रा आ--निद्रा आ' चिल्लाने लगा और सारी रात इसी तरह काट दी।

राजा के यहां एक निद्रा नाम की दासी थी। उसी ने रानी का चन्द्रहार चुराया था। उसने जब ब्राह्मण की कथा सुनी कि इस प्रकार सात रोज में वह हार का पता ठिकाना सब कुछ बतलाने को ही यहां महलों में टिका है और रात भर उसे 'निद्रा आ--निद्रा आ' कहते भी सुना तो उसके होश उड़ गए। वह बड़े तड़के ही छिपे-छिपे ब्राह्मण के पास आकर उसके पैरों पर गिर पड़ी और गिड़गिड़ा कर प्रार्थना करने लगी--गुरुदेव ! दया करें। मैंने ही यह चोरी की है। आप मेरा नाम इस प्रकार चिल्ला कर लोगों पर प्रगट न करें। यह हार लीजिए और मुझे बचाइए। पर मेरा नाम आप किसी को भी न बताइए !

ब्राह्मण बड़ा खुश हुआ--सोचने लगा, यह भी ठीक रहा। वाह री तकदीर ! वह राजा के पास चन्द्रहार लेकर पहुंचा और उसे सौंप कर विदाई मांगने लगा।

राजा ने उससे कुछ दिनों तक और ठहरने को प्रार्थना की। बोला--आपने मेरी लाज रख ली। अब मैं भला आपको इस प्रकार कैसे जाने दूं ? इस दास पर दया करके कुछ दिन इस कुटिया को पवित्र कीजिए।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकुमारी का साहस

गुरु नारायण पांण्डेय

लगभग एक मास से कलिंग की राजसभा में सम्राट अशोक के पत्र पर नित्य विचार होता, किन्तु सभा कुछ निर्णय न कर पाती। राजकुमारी रोज राजसभा में आती और अपने भाई की बगल में बैठ कर लोगों की बातें सुनती। आज अशोक की चेतावनी का उन्तीसवां दिन था। यदि कलिंग के राजकुमार कल पाटलिपुत्र के लिए नहीं चल देंगे तो परसों कलिंग पर आपत्ति के बादल बरस पड़ेंगे।

घटना यों थी––पाटलिपुत्र की सेना ने कलिंग को अपना अधीन राज्य बना लिया था। किन्तु कलिंग के वीरों के भीतर की स्वतन्त्रता की आग को वह बुझा नहीं सकी थी। कुछ दिन बाद कलिंग में विद्रोह की आग धधकने लगी। राजकुमार उसके नेता थे। जब उसका धुआं पाटलिपुत्र पहुंचा तो सम्राट अशोक ने कलिंग के राजा को अन्तिम चेतावनी दी। उस चेतावनी में लिखा था––एक मास के भीतर राजकुमार को पाटलिपुत्र भेज दीजिए। नहीं तो अवधि समाप्त होने पर हमारी सेना कलिंग पर आक्रमण कर देगी। हम केवल राजकुमार को कुछ काल तक कलिंग से दूर रखना चाहते हैं। यहां उनकी सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध किया जाएगा।

राजकुमार बोले––फिर मैं ही पाटलिपुत्र क्यों न चला जाऊं? सम्राट मुझे ही तो चाहते हैं। क्या आप लोग मेरे बिना अपनी मातृभूमि को स्वतन्त्र करने की तैयारी पूरी न कर लेंगे?

राजकुमारी ने समझाया––जनता को नेता चाहिए, भाई! योग्य नेता के अभाव में जनता की शक्ति बिखर जाती है। सौभाग्य से कलिंग को तुम्हारे जैसा योग्य नेता मिल गया है। तुम्हारे न रहने पर सब किए कराए पर पानी फिर जाएगा। इस समय तुम्हारा कलिंग में रहना अत्यन्त आवश्यक है। मैं वहां चली जाती हूं, विश्वास रखो, सम्राट मुझे राजकुमार ही समझेंगे। मैं उन्हें इतना निश्चिन्त कर दूंगी कि तुम्हें संगठन का पूरा समय मिल जाएगा।

दूसरे दिन वह राजकुमार के वेश में अपनी चार सहेलियों के साथ घोड़े पर सवार होकर पाटलिपुत्र की सीमा में चली गई। अब वह कलिंग का राजकुमार थी। राजकुमार को अपने सेवकों के साथ आते देख पाटलिपुत्र का सेनापति अपनी सफलता पर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने राजकुमार का स्वागत किया और उन्हें आदरपूर्वक पाटलिपुत्र ले गया।

सारी सभा राजकुमार की सुन्दरता पर मुग्ध हो गई। उनसे मिल कर सम्राट भी प्रसन्न हुए। उन्होंने राजकुमार के इच्छानुसार उनके रहने की व्यवस्था कर दी।

राजकुमार को अपने सेवकों के साथ आते देख पाटलिपुत्र का सेनापति अपनी सफलता पर बड़ा प्रसन्न हुआ।

नगर के बाहर ऊंची चहारदीवारी से घिरी हुई एक विशाल वाटिका के सुन्दर भवन में राजकुमार अपने सेवकों के साथ रहने लगे। बीच के बाहरी फाटक पर एक बड़ा-सा घण्टा लटका दिया गया। किसी को राजकुमार से मिलना होता तो वह घण्टा बजाता और जब उसके जवाब में भीतर से घण्टा बजता तभी वह अन्दर प्रवेश कर पाता।

सम्राट प्रायः राजकुमार से मिलने के लिए आया करते। उनसे बातें करके उन्हें विशेष आनन्द मिलता। वह उनके लिए पाटलिपुत्र के पुस्तकालय से अच्छी-अच्छी पुस्तकें लाते। राजकुमार को चित्र बनाने का भी शौक था। वह चित्र बना कर सम्राट को दिखाते। इस तरह सम्राट की राजकुमार से मित्रता दिन पर दिन बढ़ती गई।

अशोक की एक सौतेली मां थी। वह उनसे बहुत जलती थी। वह चाहती थी कि अशोक न रहे तो उसका पुत्र राजा बन जाए। उसने कई बार अशोक को मरवाने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षड़यन्त्र रचा, किन्तु सम्राट माता समझ कर उसे क्षमा कर दिया करते थे।

एक दिन उसने सम्राट के संग जंगल में घूमने-फिरने की योजना बनाई। अशोक ने उसे स्वीकार कर लिया। चलते समय उन्होंने कलिंग के राजकुमार को भी साथ ले लिया। जंगल में घुमाते-फिराते माता उन्हें पूर्व योजना के अनुसार एक पहाड़ी के पास ले गई। जहां उन लोगों ने विश्राम के लिए पड़ाव डाल दिया। जब सम्राट के सैनिक विश्राम कर रहे थे, माता बातें करते हुए उन्हें एक पहाड़ी के ऊपर चढ़ा ले गई। उसके साथ उसका एक विश्वासी नौकर था और सम्राट के साथ केवल राजकुमार थे। पहाड़ी पर एक गुफा दिखाई पड़ी जिसका मुंह पत्थर की चट्टान से बन्द था। माता ने कहा—क्या यह पत्थर तुम हटा सकते हो, बेटा? हटाओ तो देखा जाए इसके भीतर क्या है?

अशोक चट्टान से भिड़ गए। उन्होंने धक्का देकर चट्टान को जैसे ही गिराया, गुफा में से एक सिंह दहाड़ कर सम्राट के ऊपर टूट पड़ा। माता अपने नौकर के साथ पहले ही पहाड़ी की आड़ में छिप गई थी। राजकुमार कुछ दूरी पर थे। उन्होंने सम्राट पर आए हुए खतरे को देखा और जोर से चिल्ला कर सिंह की ओर झपटे। सिंह ने उन्हें गौर से देखा और सम्राट की छाती पर से उछल कर उनके पास चला गया। वह पालतू कुत्ते की भांति दुम हिलाने और राजकुमार का हाथ चाटने लगा। सम्राट उठ कर खड़े हो गए। वह आश्चर्य-चकित थे। जब वह लोग चले तो शेर भी उनके पीछे-पीछे पड़ाव पर चला आया। शेर का पेट धंसा हुआ था। वह कई दिनों का भूखा था। उसे तुरन्त भोजन दिया गया। खाते समय वह बार-बार आंखों में आंसू भर कर राजकुमार की ओर देखता। जब राजकुमार घोड़े पर सवार होकर चले तो सिंह भी उनके पीछे-पीछे पाटलिपुत्र चला आया और उनकी वाटिका में रहने लगा।

पाटलिपुत्र में इस आश्चर्यजनक घटना की चारों ओर चर्चा फैल गई। राजसभा में बार-बार इस घटना पर विचार हुआ, किन्तु किसी की समझ में यह रहस्य नहीं आया। राजकुमार भी इस सम्बन्ध में कुछ बता नहीं सके।

एक दिन आधी रात को कलिंग का राजकुमार छिपकर अपनी बहिन से मिलने आया। जब वह चहारदीवारी पर से कूदा तो आवाज सुनकर सिंह उसके पास दौड़ गया। चांदनी रात में राजकुमार ने सिंह को पहचान लिया। वह उससे लिपट गया और उसका कान पकड़े हुए अपनी बहिन के पास आया। उसने आते ही पूछा—मेरा यह सिंह तुझे कहां मिला, बहिन? यह सिंह तो मेरा बाल मित्र है। मेरा और इसका जन्म एक ही दिन हुआ था। मैं इसे बहुत प्यार करता था। एक दिन यह अचानक गायब

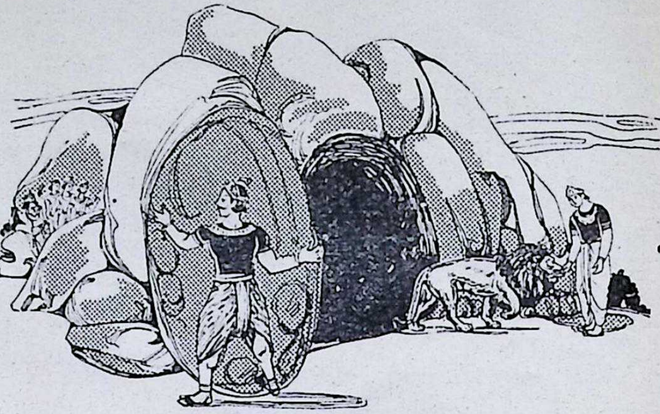

सिंह पालतू कुत्ते की भांति दुम हिलाने और राजकुमार का हाथ चाटने लगा।

हो गया और बहुत ढुंढ़वाने पर भी नहीं मिला।

तब राजकुमारी को उस दिन का रहस्य समझ में आ गया। उसने सारी घटना अपने भाई को सुना दी। बहिन से मिल कर राजकुमार कलिंग लौटा और उसने उस घटना का जिक्र कलिंग की राजसभा में किया।

सभासदों ने कहा—ऐसा लगता है राजकुमारी को सम्राट से प्रेम हो गया है। तभी तो उन्होंने जान पर खेल कर शत्रु को सिंह से बचाने का प्रयत्न किया था। यदि ऐसी बात है तो अशोक से मित्रता क्यों न कर ली जाए? व्यर्थ में क्यों रक्तपात हो?

बहुत विचार के बाद निश्चय हुआ कि राजकुमार पाटलिपुत्र जा कर सम्राट को सब रहस्य बता दें।

जब असली राजकुमार ने पाटलिपुत्र आ कर अशोक को सब बातें बताईं तो सम्राट दंग रह गए। उन्होंने कहा—हिंसक पशुओं में भी जब इतना प्रेम और इतनी पहचान है तो हम लोग प्रेम का साम्राज्य क्यों न कायम करें। भारी उपहार के साथ कलिंग की स्वतन्त्रता का प्रमाण-पत्र देकर उन्होंने राजकुमार और राजकुमारी को विदा कर दिया।

पाटलिपुत्र और कलिंग की मित्रता हो गई और राजकुमारी के विवाह से यह मित्रता और भी सुदृढ़ हो गई।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य गीत

प्रो० चन्दोला

सवेरे उठता हूं, शौच को जाता हूं,
तन्दुरुस्त बनने के लिए, हवा भी खाता हूं।
दांत मेरी है चक्की, नात मेरी है सच्ची।
कहती है मेरी काकी, सीख हमेशा अच्छी॥

दातुन मैं करता हूं, नाखून मैं काटता हूं,
तन्दुरुस्त बनने के लिए मल मल के नहाता हूं॥
भोजन ही है जीवन, बिना इसके सब सूनापन।
पर बीमारी में लंघन, नहीं बन जाएगा दुश्मन॥

चपाती खाता हूं, और खूब चबाता हूं,
तन्दुरुस्त बनने के लिए, मैं साग भी खाता हूं॥

उकड़ू बैठूंगा तो मैं कुबड़ा बन जाऊंगा।
अकड़कर चलूंगा तो खूब तगड़ा हो जाऊंगा॥
सीधा बैठता हूं, और सीधा चलता हूं,
तन्दुरुस्त बनने के लिए, मैं तन के रहता हूं॥
एक, दो, तीन, चार खेल में जीत और हार।
काम के बाद खेल, यही जीवन का सार॥

कवायद भी करता हूं, और दौड़ लगाता हूं,
तन्दुरुस्त बनने के लिए, हँसी-खेल भी करता हूं॥
जो खाए सेब, टमाटर, घर में ना आए डाक्टर।
अन्ट शन्ट मत खाओ पर, पछताओगे जिन्दगी भर॥

फल भी खाता हूं, और जल भी पीता हूं,
तन्दुरुस्त बनने के लिए, परहेज भी करता हूं॥
घर को रखूं साफ मैं, फटकते नहीं मक्खी–मच्छर।
नष्ट करूं तुरन्त उन्हें, डी० डी० टी० और
फ्लिट छिड़क कर॥

साफ मैं रहता हूं, सफाई रखता हूं,
तन्दुरुस्त बनने के लिए, मैं रोग भगाता हूं॥
सांस नाक से लेता हूं, समय से सो जाता हूं।
खटिया पर खूब पसरकर, नींद गाढ़ी लेता हूं॥
दूध मैं पीता हूं, और घी भी खाता हूं,
तन्दुरुस्त रहने के लिए, संयम से रहता हूं॥
सेवा हो धर्म हमारा, सेवा हो कर्म हमारा।
सारे विश्व में गूंजे, "बाल भारती" का यह नारा॥
सेवा भी करता हूं और सुख भी पाता हूं,
तन्दुरुस्त बनने के लिए, मैं सब से कहता हूं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

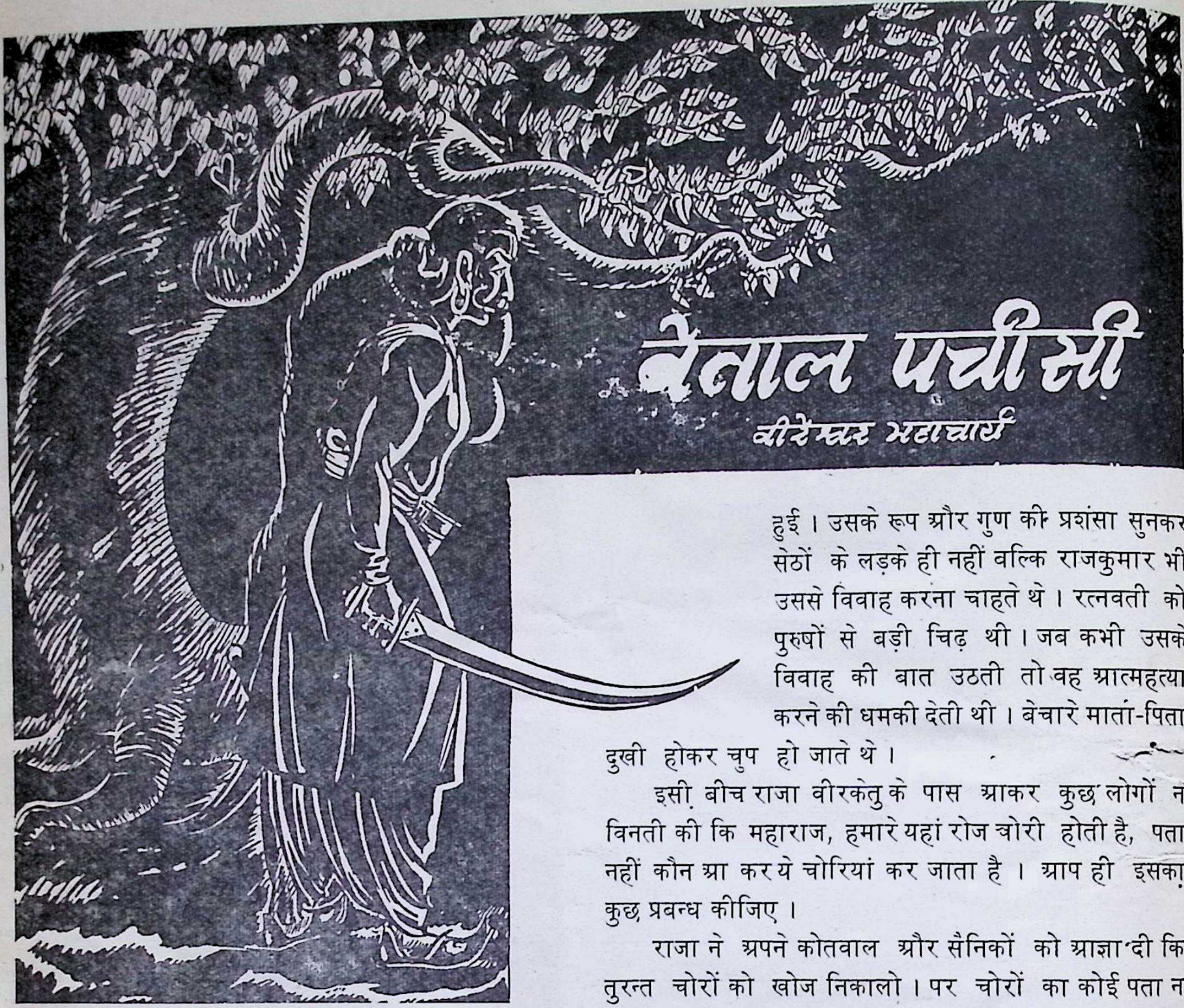

वेताल पचीसी

वीरेश्वर भट्टाचार्य

राजा त्रिविक्रम सेन ने शीशम के पेड़ से वेताल को उतार कर, कन्धेपर रख लिया और आगे बढ़ चला। वेताल बोला—महाराज आप बहुत शक्तिशाली हैं, फिर भी रास्ते की थकावट दूर करने के लिए मैं आपको एक सुन्दर कहानी सुनाता हूं। सुनिए :—

बहुत पहले अयोध्या नगर में वीरकेतु नामक राजा राज्य करता था। वह बहुत शूरवीर था। उसी समय अयोध्या में रत्नदत्त नाम का एक सेठ रहता था। उसके कोई सन्तान नहीं थी। बहुत दिनों बाद एक लड़की पैदा हुई। माता-पिता ने लड़की का नाम रत्नवती रखा। उसके सुन्दर नाम की तरह उसका रूप और गुण भी सुन्दर था। धीरे-धीरे वह बड़ी हुई। उसके रूप और गुण की प्रशंसा सुनकर सेठों के लड़के ही नहीं बल्कि राजकुमार भी उससे विवाह करना चाहते थे। रत्नवती को पुरुषों से बड़ी चिढ़ थी। जब कभी उसके विवाह की बात उठती तो वह आत्महत्या करने की धमकी देती थी। बेचारे माता-पिता दुखी होकर चुप हो जाते थे।

इसी बीच राजा वीरकेतु के पास आकर कुछ लोगों ने विनती की कि महाराज, हमारे यहां रोज चोरी होती है, पता नहीं कौन आ कर ये चोरियां कर जाता है। आप ही इसका कुछ प्रबन्ध कीजिए।

राजा ने अपने कोतवाल और सैनिकों को आज्ञा दी कि तुरन्त चोरों को खोज निकालो। पर चोरों का कोई पता न चला। आखिरकार राजा स्वयं ही रात में भेप बदल कर चोर पकड़ने के लिए निकल पड़ा। उसने अपने पास हथियार भी छिपा रखे थे। उसे घूमते-घामते रात को नगर की चार-दीवारी पर कोई आदमी चलता फिरता दिखाई पड़ा। वह दुबक कर चला जा रहा था तथा रह रह कर पीछे की ओर देख लेता था। उसकी यह हालत देखकर राजा ने समझ लिया कि जरूर यही चोर है जो रोज चोरी करने आता है।

राजा झपट कर उसके पास जा पहुंचा। उसे देख कर चोर ने कड़क कर पूछा—तुम कौन हो ?

राजा उसका भेद जानने के लिए बोला—मैं चोर हूं।

चोर यह सुनकर बोला—तुम भी यही काम करते हो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब तो तुम मेरे मित्र हो। आओ, हमारे साथ घर चलो। आज तुम हमारे मेहमान बनो।

राजा ने उसकी बात मान ली और उसके साथ चल पड़ा। उसका घर जंगल के छोर पर धरती के नीचे बना हुआ था। उसका मकान देख कर राजा चकित रह गया। वहां की साज-सजावट ऐसी थी कि स्वर्ग भी उतना सुन्दर न होगा। उसी समय एक दासी आ कर चुपके से राजा से बोली—श्रीमान, आप इस मौत के मुंह में कहां से आ गए। यह तो बड़ा विश्वासघाती है। यहां से निकलते ही यह आपकी हत्या कर डालेगा। इसलिए चुपचाप चले जाइए।

राजा तुरन्त जान बचा कर चम्पत हो गया और अपने महल में जा पहुंचा। फिर रातों-रात अपनी सेना को लेकर धरती के नीचे बने हुए उसी महल पर जा धमका। उसने घर के चारों ओर घेरा डाल कर युद्ध का बाजा बजवा दिया।

चोर ने युद्ध का बाजा सुन कर सोचा छिप कर मरना कायरता है, लड़ कर मरने में बहादुरी है, इसलिए वह लड़ाई के लिए तैयार हो कर बाहर निकल आया।

लड़ाई में हार जाने पर चोर पकड़ा गया। राजा उसको तथा उसके सारे धन को लेकर राजधानी लौट आया। वहां उसने आज्ञा दी कि सवेरे सारे नगर में ढिंढोरा पिटवा कर इस चोर को सूली पर चढ़ा दिया जाए।

जब चोर को सूली पर लटकाने के लिए ले जाया जा रहा था उस समय रत्नवती ने अपनी छत से उसे देखा। वह अपने पिता से बोली—मैं इसी व्यक्ति से विवाह करूंगी, यही मेरा पति है।

रत्नदत्त बोला—तुम इस पापी चोर से क्यों विवाह करना चाहती हो ?

पर लड़की एक न मानी, बोली—आप राजा के पास जाकर इसे छुड़ा लाइए। मैं इसी से शादी करूंगी।

रत्नदत्त सेठ ने राजा के पास जा कर विनती की। वह उसे छुड़ाने के लिए करोड़ों रुपए देने को तैयार था, पर राजा ने उसे छोड़ने से इनकार कर दिया।

यह सुन कर रत्नवती ने सती होने का निश्चय कर लिया। रिश्तेदारों ने बहुत समझाया, पर रत्नवती नहा धो कर तैयारी करके वहीं जा पहुंची, जहां उस चोर को सूली दी जाने वाली थी। चोर को फांसी पर चढ़ा दिया गया। चोर ने उस हालत में ही रत्नवती को देखा और लोगों से सारी कहानी सुन कर पहले तो उसकी आंखों से आंसू टपकने लगे, फिर वह हंस पड़ा। इसके बाद वह मर गया।

रत्नवती ने चोर को सूली से उतार कर चिता सजाई और उसके साथ सती होने के लिए चिता पर बैठ गई। उस श्मशान में एक भैरव देवता रहते थे। उसको सती होते देख कर भैरव देवता बहुत खुश हुए और उन्होंने आकाशवाणी की—रत्नवती, मैं तुझ पर बहुत प्रसन्न हूं, मुझ से वर मांग।

लड़की बोली—हे देव, आप वरदान देना चाहते हैं तो सुनिए। मेरे पिता के कोई पुत्र नहीं है, उनके सौ पुत्र हों।

भैरव देवता ने कहा—ऐसा ही होगा।—फिर बोले—तू बहुत नेक है, इसलिए एक वर और मांग ले।

रत्नवती बोली—ठीक है, आप यही वर दें कि मेरे पति जीवित हो जाएं और वे सदाचारी तथा धर्मशील हों।

देवता ने आकाशवाणी में कहा—जा, ऐसा ही होगा। राजा वीरकेतु भी तेरे पति से खुश रहेगा।

वह वरदान मिलते ही चोर एकाएक जीवित होकर उठ बैठा। उसने चकित होकर रत्नवती को देखा।

(शेष पृष्ठ २२ पर)

राजा झपट कर उसके पास जा पहुंचा। उसे देख कर चोर ने कड़क कर पूछा—तुम कौन हो ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि की कीमत

रामदास तांती

एक सौदागर के चार लड़के थे। जब वह सौदागर मरने लगा, तब उसने अपने चारों बेटों को बुलाकर कहा––मैं चाहता तो यह हूं कि तुम चारों हिलमिल कर रहो, लेकिन अगर कभी बंटवारे की बात चले ही, तो तुम अपने चाचा से मदद लेना। वह बहुत बुद्धिमान हैं, ठीक-ठीक हिस्सा बांट देंगे।

सौदागर का सबसे बड़ा बेटा विद्वान था। वह दिन भर किताबें पढ़ा करता था। मंझला भाई बड़ा मेहनती था। लेकिन दोनों छोटे भाई पूरे गंवार किसान थे। बड़ा भाई सुबह होते ही घूमने निकल जाता, दिन भर किताबें पढ़ा करता, फिर खाने के बाद पैर फैला कर सो जाता।

उधर तीनों छोटे भाई खेत में एड़ी चोटी का पसीना एक करते थे। वे रात में सोचा करते––हम तो इतनी मेहनत करते हैं, पर हमारा भाई दिन भर इधर उधर घूमा करता है। आखिर हमने ऐसा क्या गुनाह किया है?

एक दिन चारों भाइयों ने बंटवारे के लिए अपने चाचा के पास जाने का इरादा किया।

चाचा पहले से ही उनके मन की बात ताड़ गए। उन्होंने चारों से कहा––मैं जानता हूं, तुम बंटवारे के लिए आए हो। मैं तुम्हें पास के एक गांव में ले चलूंगा, और वहीं तुम्हारा बंटवारा कर दूंगा।

चारों भाई और चाचा जब उस गांव में पहुंचे तो वहां एक मकान से रोने की आवाज आ रही थी। चारों भाई उधर ही चलने लगे। बड़े भाई ने दरवान से पूछा––क्यों भाई, यह किसका मकान है? यहां सब रो क्यों रहे हैं?

––अजी साहब कुछ न पूछिए। यह मंत्री जी का मकान है। राजा ने उनसे एक प्रश्न का जवाब पूछा है। अगर मंत्री जी आज उसका ठीक-ठीक जवाब न बता सकेंगे, तो उनका सिर काट लिया जाएगा। सब लोग बहुत दुखी हैं। मंत्री जी अभी तक कोई जवाब नहीं सोच सके हैं।

––वह प्रश्न क्या है?

––यह तो मंत्री जी को ही मालूम है।

सौदागर के लड़के ने पूछा––क्या हम लोग उनसे मिल सकते हैं?

––हां-हां, अन्दर आइए।

चाचा और चारों भाई भीतर गए।

मंत्री जी बोले––राजा का प्रश्न है कि एक मैदान में एक बड़ा-सा कुआं है। उसके चारों ओर पांच छोटे-छोटे कुएं हैं। जब बड़े कुएं में पानी बढ़ता है तो पांचों छोटे कुएं भर जाते हैं, लेकिन जब पांचों छोटे कुएं उमड़ते हैं, तो उस बड़े कुएं को नहीं भर पाते। बताओ क्या है?

सौदागर के सभी लड़के सोचने लगे, मगर किसी को भी उसका हल नहीं मिला। थोड़ी देर बाद सौदागर के बड़े लड़के ने खुश हो कर कहा––मैं ने इसका जवाब मालूम कर लिया है।

मंत्री ने लड़के को गले से लगा लिया और बोले––मैं तुम्हारा एहसान कभी न भूलूंगा।

मंत्री ने लड़के को गले से लगा लिया। बोले––मैं तुम्हारा एहसान कभी न भूलूंगा।

उसने कहा––यह इस कलियुगी जमाने का हाल है। बड़ा कुआं बाप है और पांचों छोटे कुएं उसके लड़के हैं। बाप तो यथाशक्ति पाल पोस कर अपने बेटों को बड़ा करता है, पर

(शेष पृष्ठ २८ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

14759

एक ऐतिहासिक कहानी

नारी का सम्मान

ब्रह्मानन्द बन्धु

महाराज शिवाजी बड़े धर्मात्मा थे। अन्याय से टक्कर लेना तो उनके जीवन का मूल मंत्र ही था। वे कहा करते थे—हम किसी के भी साथ छेड़ छाड़ न करें, साथ ही दूसरों को भी हमारे साथ छेड़ छाड़ नहीं करनी चाहिए। अन्याय करना असल में उनकी दृष्टि में उतना पाप नहीं था, जितना अन्याय सहन करना।

भारतवर्ष पर उन दिनों मुगल वंश का झंडा फहरा रहा था। आत्मसम्मान का सवाल था। महाराज की फौजें एक बार मुसलमानों से भीषण युद्ध कर रही थीं। खून की नदियां बह चली थीं। आखिर में दुश्मन की सेना में भगदड़ मच गई और मैदान महाराज के हाथ रहा।

लूट का माल इकट्ठा किया जा रहा था। बड़े-बड़े हीरे-जवाहरात अपनी चमक-दमक से सभी की आंखों को चकाचौंध किए डालते थे। सोने-चांदी और जेवरात का तो कुछ हिसाब ही नहीं था।

लूट के उसी सामान में एक सुन्दर मुसलिम महिला भी हाथ लगी थी। चांद के ही समान सुन्दर मुख था उस बहन का। उसकी बड़ी-बड़ी आंखों के सामने कमल को भी लज्जा आती थी। उसके शरीर का प्रत्येक अंग फूल से भी अधिक कोमल था।

महाराज का एक मनचला सेवक तो यहां तक सोच बैठा कि क्यों न इसे महाराज की सेवा में अर्पित करके उनकी निगाह में ऊंचा स्थान प्राप्त करूं? चट-से वह निर्दोष नारी महाराज के सम्मुख बड़े ढंग से पेश की गई। उस समय हिन्दुपति महाराज छत्रपति शिवाजी राजसिंहासन की शोभा बढ़ा रहे थे।

महाराज के मुख से एकाएक यही शब्द निकल पड़े—अहो! आश्चर्य है! आज मुझे मेरी मां याद आ रही है।

—बड़ी सुन्दर है यह नारी! धन्यवाद भाई!—महाराज के मुख से एकाएक यही शब्द निकल पड़े—अहो! आश्चर्य है! आज मुझे मेरी मां याद आ रही है! मेरी मां! यदि तू भी कहीं इतनी ही सुन्दर होती तो यकीनन मैं भी बड़ा ही रूपवान होता!!

इतना कह कर छत्रपति गद्‌गद हो गए। उनके तेजस्वी नेत्रों से आंसुओं की धारा बह निकली। उन्होंने आज्ञा दी—इस बहन को, इसके पति के यहां ससम्मान पहुंचा दिया जाए। इसे जरा भी कष्ट न होने दिया जाए। साथ ही सरकारी खजाने से इसके लिए बहुमूल्य भेंट का प्रबन्ध भी किया जाए!! क्योंकि आज एक बहन अपने भाई के यहां से अपनी ससुराल विदा हो रही है।

छत्रपति के ये वचन सुन कर सारे दरबार में सन्नाटा छा गया। लोगों के मस्तक गर्व से ऊंचे उठ गए। पर उस सेवक का सिर शर्म से झुक गया, जो कि इनाम पाने की आस लगाए हुए था। उस मुसलिम बहन की आंखों में आनन्द और कृतज्ञता से आंसू छलक आए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो लघु कथाएं

सच और झूठ की पहचान

उल्लू अंधेरे में क्यों रहता है

राज ऋषि

सच और झूठ नाम की दो बहनें थीं, एक बार दोनों नहाने के लिए साथ-साथ नदी पर गईं। कपड़े उतार कर दोनों नदी में नहाने लगीं। झूठ नहा कर जल्दी से नदी के बाहर आई और झाड़ी पर पड़े अपनी बहन सच के कपड़े पहनने लगी। सच ने उससे पूछा--बहन झूठ, तुम मेरे कपड़े क्यों पहन रही हो?

पर झूठ ने सच की बात का कोई उत्तर नहीं दिया और जल्दी से कपड़े पहन कर नदी के पार चली गई। सच बेचारी दुविधा में पड़ गई। कुछ देर वह सोचती रही, पर अन्त में लाचार होकर उसने झूठ के ही कपड़े पहन लिए क्योंकि वह संसार में नंगी तो रह नहीं सकती थी।

लोग कपड़ों को देख कर सच को झूठ और झूठ को सच मानने लगे। झूठ के इस धोखे के कारण दोनों में परख करना कठिन हो गया। तभी से सच बेचारी सिर धुन रही है, पर झूठ मानती नहीं।

(विक्टर ह्यूगो के एक कथन के आधार पर)

एक दिन थक कर सूर्य भगवान ने कुछ समय के लिए कार्य से अवकाश ग्रहण करने का निश्चय किया। पृथ्वी के तमाम जीवों की एक सभा बुलाकर उनके सामने उन्होंने अपना विचार प्रकट किया। फिर पूछा--परन्तु मेरे बाद मेरा काम कौन करेगा?

सभी एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। भगवान भास्कर (सूर्य) का काम उठाने की तो बात ही अलग, वे तो उनके प्रताप से ही जीवित थे। फिर भी एक उल्लू खड़ा हुआ और उसने कहा--भगवान्, मैं आपका काम भरसक करूंगा।

सभी उसे देखकर हँसने लगे--रे, मूर्ख, भला कहां से देगा तू सारे जगत को प्रकाश? कैसे तू पेड़-पौधों और जीवों को जीवन देगा? कहां से तू गर्मी देगा?

उल्लू से कोई उत्तर नहीं बन पड़ा। अपनी मूर्खता पर झेंप कर वह अंधेरे में जा छिपा और तभी से अंधेरे में रहता आया है, रोशनी में आते उसे शर्म लगती है।

(संकलित)

टिड्डा ज्योतिषी--(पृष्ठ ६ का शेषांश)

इस प्रकार वह ब्राह्मण राजा के यहां बड़े आराम के साथ दिन बिताने लगा। राजा की उस पर असीम श्रद्धा थी। उसे हर समय अपने पास रखता और राज्य के हर काम में उस ब्राह्मण की सलाह लेता। राजा के इस प्रकार के व्यवहार पर मंत्री बहुत नाराज रहा करते। वे यह समझते कि यह ब्राह्मण निरा मूर्ख है, इसे कुछ भी तो नहीं आता-जाता और राजा व्यर्थ में इसे सिर पर चढ़ाए फिर रहा है, और हर समय उस ब्राह्मण को नीचा गिराने की चाल सोचा करते।

एक दिन मौका पाकर मंत्री ने राजा से प्रार्थना की--अपने गुरुदेव के चमत्कार हमें भी दिखाइए।

राजा, मंत्री का आशय समझ गया। सभा जमी हुई थी। वर्षा ऋतु थी। राजा ने एक टिड्डा चुप-चाप अपनी मुट्ठी में बन्द कर लिया। ब्राह्मण देवता जब हमेशा की तरह सभा में उपस्थित हुए और अपने स्थान पर आ बैठे तो राजा ने विनय पूर्वक प्रार्थना की--गुरुदेव! आज सभा भरी हुई है। मेरे दरबारियों का प्रश्न है और उनकी ओर से मैं आपसे निवेदन कर रहा हूं। कृपया बतलाइए मेरे हाथ में क्या है?

ब्राह्मण बड़ी सोच में पड़ गया--अब तो कोई चारा भी नहीं कि भाग निकलें। उसे अपनी मौत सामने दिखाई पड़ी। वह बोल पड़ा--

झाड़ी में तो गधो बतायो,
थपकै रोटी पाई।
निद्रा कहते हार बतायो,
अबकै टिड्डा (थारी) मौत आई।।

इन शब्दों के छूटते ही राजा ने हाथ जोड़ कर कहा--गुरुदेव! टिड्डा मेरे हाथ में ही है, लेकिन अभी तक मरा नहीं। मैंने इसे धीरे से पकड़ रखा था, नहीं तो यह मर ही जाता।

इस प्रकार सभा के सम्मुख राजा की जीत रही। वह गुरुदेव से बड़ा प्रसन्न हुआ। उसकी श्रद्धा और भी अधिक बढ़ गई। उसने अपने गुरुदेव को खूब धन दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालघर-जीवन की झांकी

भोजन के बाद बच्चे फर्श साफ करते हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुन्द बुद्धि वाले बच्चों को मनोवैज्ञानिक ढंग से सिखाया जाता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वच्चों को सिलाई, जूते पालिश करना ग्रादि काम सिखाया जा रहा है।

कक्षा में वच्चों को मिट्टी के खिलौने वनाना सिखाया जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, H

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

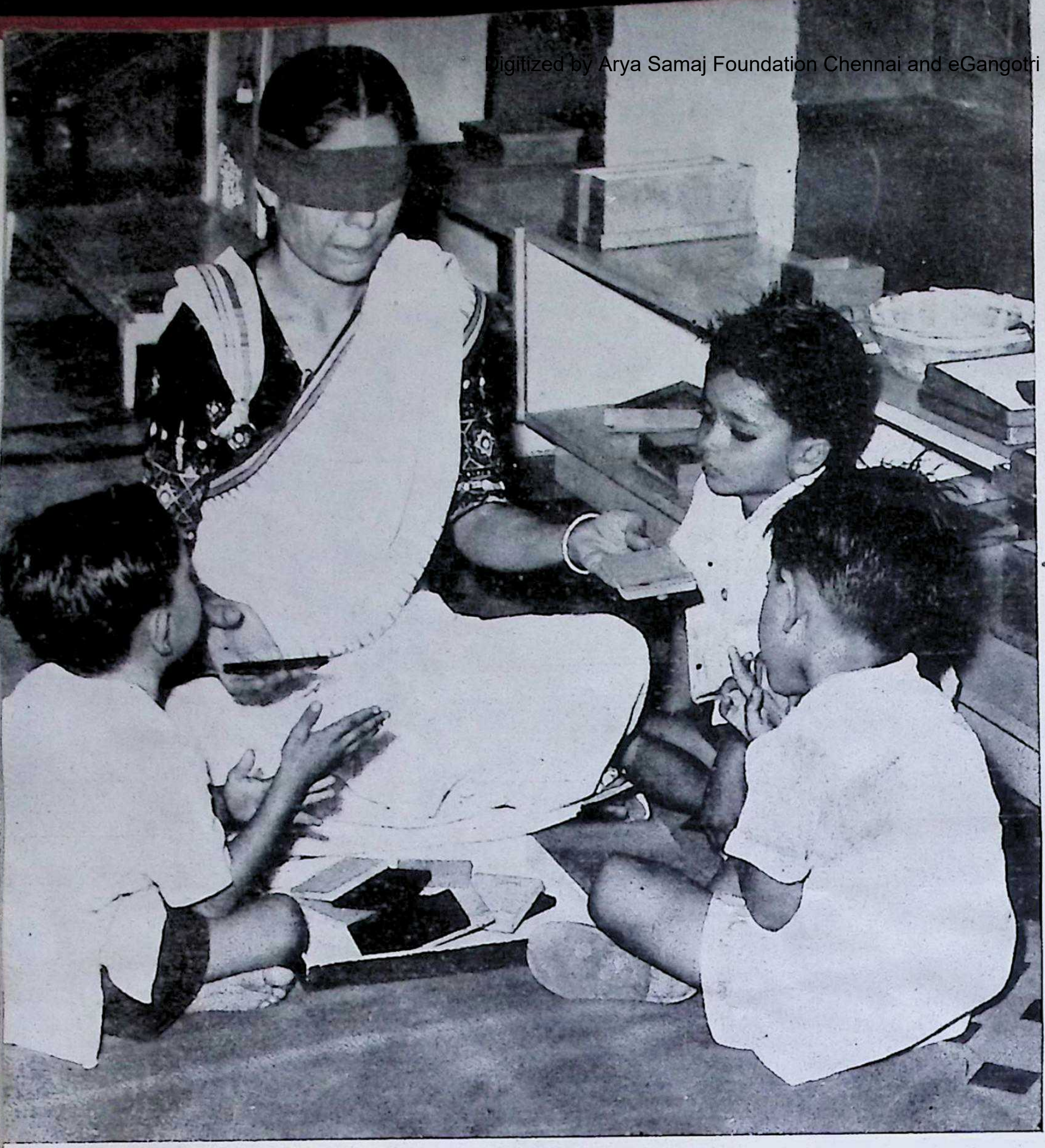

बच्चों की स्पर्श शक्ति को विकसित करने के लिए आंख बन्द करके कुछ खेल खिलाए जा रहे हैं।

बाल घर में प्रत्येक बच्चे के लिए अपने बर्तन मांजना जरूरी है।

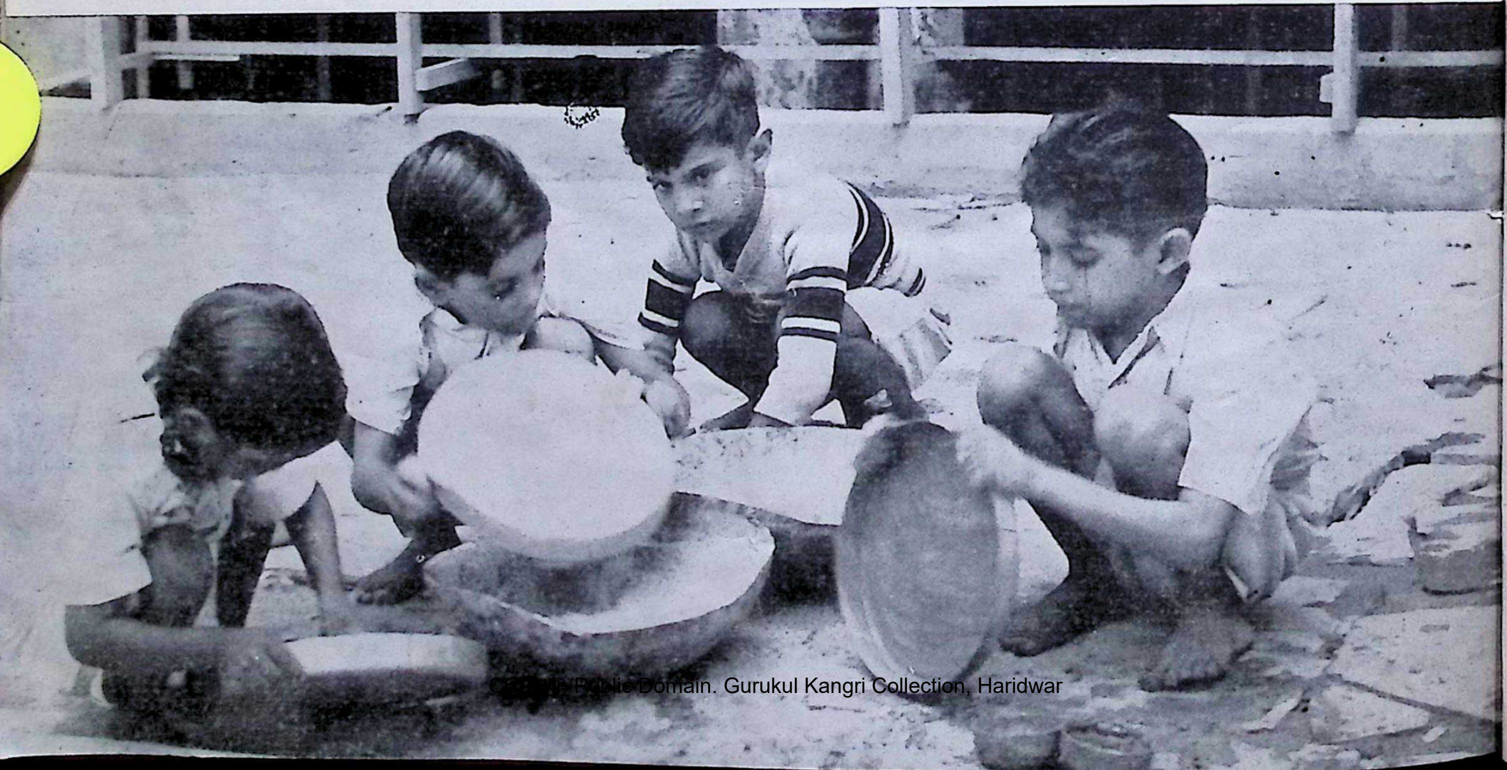

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेरेम्बुर

शान्ता रंजन

आप योजना का मतलब तो जानते होंगे ? किसी काम को करने से पहले उसके बारे में सोच लेना, लिख लेना कि यह कैसे किया जाएगा, यही है योजना । आज का जमाना योजनाओं का जमाना है । योजना बना कर जो काम किया जाता है, वह अच्छा और सफल होता है ।

हमें जब भी घर का सुधार करना होता है, तब पहले उसके बारे में सोचना पड़ता है, योजना बनानी पड़ती है। इसी तरह जब देश को आगे बढ़ाना होता है, तब भी सोचना पड़ता है और जो कुछ करना है, जिस तरह करना है, सब लिख लेना पड़ता है ।

आपने पंचवर्षीय योजना के बारे में तो सुना ही होगा । इसका अर्थ है पांच साल में देश को आगे बढ़ाने का काम । पांच साल बीत गए । उन पांच सालों में हमने बहुत-से काम किए । अब दूसरे पांच साल बीत रहे हैं। दूसरी पंचवर्षीय योजना में भी हमें बहुत सारा काम करना है, किया है, कर रहे हैं और करेंगे ।

मद्रास भारत के दक्षिणी भाग में है । उसके पास एक जगह है पेरेम्बुर । वहां एक कारखाना है । उसमें रेल के डिब्बे बनते हैं । रेल के डिब्बे तो आपने देखे होंगे । उनमें बैठकर ही तो आप लम्बे-लम्बे सफर करते हैं । आजकल कुछ नए-नए चमकदार डिब्बे दिखाई देते हैं। इनमें से कुछ डिब्बे इसी पेरेम्बुर के कारखाने में बने हैं । इस कारखाने में करोड़ों रुपया खर्च हो रहा है । बिना खर्च किए कोई काम बनता भी तो नहीं । ऐसा विचार है कि यहां हर साल ३५० डिब्बे तैयार हुआ करेंगे । वे डिब्बे इस्पात के बनेंगे और हल्के होंगे ।

जब ऐसा होने लगेगा और इंजीनियरों का ख्याल है कि सन् १९६० तक ऐसा होने लगेगा, तब हर जगह नए-नए डिब्बे दिखाई देंगे। रेलों में इतनी भीड़ नहीं होगी। सफर में इतनी मुसीवत भी नहीं रहेगी । हमें अपने पैसे अपने देश के बाहर भी नहीं भेजने पड़ेंगे । अब तक ये सब डिब्बे बाहर से मंगाने पड़ते थे और उसके बदले में करोड़ों रुपए बाहर भेजते थे । और केवल रुपए की ही बात नहीं थी, एक और बात भी थी । डिब्बे तो भारी होते हैं न । वह केवल पानी के जहाज से ही आते थे, उनके आने में समय भी बहुत लगता था और किराया भी । अब यह झंझट भी नहीं रहेगी ।

एक और लाभ है, वह यह कि डिब्बों को बनाते समय मुसाफिरों की सुविधा का ध्यान भी रखा जाएगा । पंखे, रोशनी और पानी का इन्तजाम, जैसा हम चाहेंगे कर सकेंगे । बैठने के लिए आराम देने वाली सीटें बनाएंगे । जो लोग दूर का सफर करते हैं, उनके सोने के लिए कोचें भी तैयार करेंगे ।

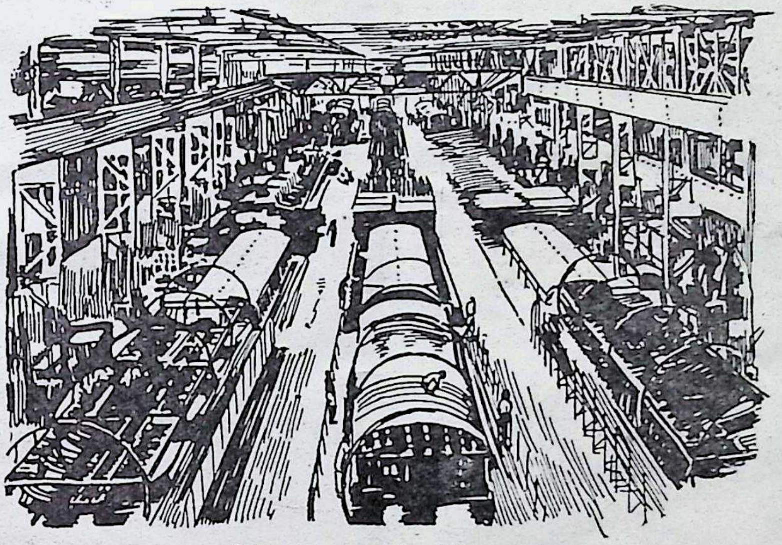

रेलों का कारखाना, पेरेम्बुर।

करेंगे क्या, कर रहे हैं । आपने देखा, यह कितने काम और कितने आराम की बात है । आप शायद एक बात नहीं जानते कि इन डिब्बों के हिस्से और इनमें लगने वाले इंजन भी हमारे ही देश में बनते हैं । "चितरंजन" और "टेलको" का नाम आप सब ने सुना होगा । वहां से बन कर अलग-अलग हिस्से पेरेम्बुर आते हैं और उनको जोड़ कर डिब्बे तैयार किए जाते हैं ।

रेल के डिब्बे हमारे देश में बनने लगे हैं । इससे एक और लाभ हुआ है । आजकल देश में जगह-जगह कारखाने बन रहे हैं, तरह-तरह की चीजें वहां तैयार हो रही हैं । उनके लिए कच्चा माल दूर-दूर मिलता है, उस माल को पहुंचाने के लिए डिब्बों की कमी नहीं होगी ।

कारखानों में माल पहुंचाना ही क्यों, वहां जो माल तैयार करते हैं उसको बाजार में ले जाने का काम भी तो अब जल्दी हो जाता है । इसमें पहले बहुत देर लगती थी, बहुत पैसा खर्च होता था, लेकिन अब बहुत कम समय लगता है, बहुत कम पैसा खर्च होता है और फिर जो पैसा खर्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है, वह अपने ही देश में रहता है। नए-नए कारखाने बन जाने से अपने देश के लोगों को काम भी बहुत मिल गया है। जो लोग पहले भूखों मरते थे, उन्हें अब दोनों वक्त खाने को रोटी मिल जाती है।

कितनी बड़ी बात हुई। पेरेम्बुर का कारखाना महीने भर में अभी तक ११ डिब्बे ही तैयार करता था, अब ज्यादा कर रहा है और अगले साल तक ३० डिब्बे हर महीने तैयार करेगा, यानी १ दिन में १ डिब्बा!

क्या आप कभी पेरेम्बुर गए हैं? हम वहां गए हैं। बहुत बड़ा कारखाना है। आप सोच भी नहीं सकते। शुरू में डिब्बों के अलग-अलग हिस्से देखे जा सकते हैं। उसके बाद आगे बढ़ने पर यह देखने को मिलता है कि कैसे इन अलग-अलग हिस्सों को एक-दूसरे के साथ जोड़ा जा रहा है। वहां लम्बे-लम्बे हिस्से दूर-दूर तक फैले होते हैं। हजारों आदमी काम करते हैं। और आखिर तक पहुंचने पर सामने चम-चम करता तैयार डिब्बा मिलता है। नए-नए डिब्बे देखकर खुशी होती है। दुनिया के सारे काम इसी तरह हो जाते हैं। बस, जरूरत है, मेहनत की, लगन की और सूझ-बूझ की।

इस कारखाने के अलावा, इसी तरह का एक और कारखाना खोलने की बात सोची जा रही है। ज्यों-ज्यों देश आगे बढ़ेगा, त्यों-त्यों न जाने कितने ऐसे और कारखाने खोलने पड़ेंगे। कौन जानता है कि आप में से कौन-कौन उन कारखानों में जाकर काम करेंगे और नए-नए डिब्बे, बढ़िया-बढ़िया डिब्बे, सुख और सुविधा देने वाले डिब्बे तैयार करेंगे।

केवट

कैलाशचन्द्र (आयु १४ वर्ष)

केवट कहो कहां जाते हो,
सबको साथ लिए जाते हो।
खेते हो सबके हित नैया,
धन्य धन्य तुम केवट भैया॥

हम भी केवट कभी बनेंगे,
भारत की नैया खेएंगे।
कर देंगे सब लोग सुखारी
यही प्रतिज्ञा हमने धारी॥

हम भारतीय बालक

सरल कान्ता लाल

हम नन्हें वीर सिपाही हैं, भूतल को स्वर्ग बना देंगे।
हम भारत मां के चरणों में अपने प्राण चढ़ा देंगे॥
जननी, जन्मभूमि के चरणों पर निज सर्वस्व लुटा देंगे।
अंधकार में एक बार फिर, ज्योति किरण फैला देंगे॥
हम ऊंच, नीच का भेद मिटाकर सबको एक बना देंगे।
विश्व शांति है ध्येय हमारा, सारे जग को बतला देंगे॥
हम नन्हें मुन्ने बालक हैं, जीवन को अमर बना देंगे।
हम वीर भूमि के सैनिक हैं, फिर ज्ञान सुधा बरसा देंगे॥
हम कर्मवीर हैं, धर्मवीर हैं, मरु में फूल खिला देंगे।
विष को अमृत कर देंगे, कांटों को फूल बना देंगे॥

नियम

निरंकार देव सेवक

एक नियम से रोज सवेरे
सूर्य निकल आता है,
एक नियम से घटता बढ़ता
चन्दा मुस्काता है।

एक नियम से तारे धुंधले
पड़ कर फिर खिल जाते,
एक नियम से नदियां नाले
सागर में मिल जाते।
एक नियम से तुम भी अपने
सारे काम सम्हालो,

सोकर उठो, नहाओ धोओ
बैठो खाना खा लो।
ठीक समय पर पढ़ने जाओ
ठीक समय पर खेलो,
तो तुम सब कुछ कर सकते हो
जो चाहो वह ले लो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गतांक से आगे

लिलीपुट की यात्रा

महेन्द्र शुक्ल

हम लोगों ने इस दैत्य की पूरी-पूरी तलाशी ली । एक जेब में हमें मोटे कपड़े का एक चौकोर टुकड़ा मिला जो सम्राट के बड़े कमरे में बिछाने के काम आ सकता है । बाईं ओर की जेब में चांदी का एक बड़ा बक्स था जिसे हम दोनों मिल कर भी नहीं उठा सके । हम लोगों की इच्छा के अनुसार दैत्य ने वह बक्स खोल दिया । हम लोगों में से एक आदमी जब उस के अन्दर घुसा तो एक तरह का पाउडर उसकी नाक में भर गया जिसके कारण उसे पचासों छींकें आईं । उसके वेस्ट कोट की दाहिनी जेब में हमें लोहे का एक लम्बा नल मिला, जिसके एक ओर खंभे से भी बड़ी लकड़ी लगी थी और इस खम्भे में लोहे के गोल और लम्बे डंडे लगे थे ।

इसके अलावा हम लोगों ने इस दैत्य की जेब में एक बहुत ही विचित्र वस्तु पाई है । यह चांदी का एक गोल डिब्बा है, जिसमें एक ओर गोलाई में कुछ निशान बने हैं । बीच में लोहे के दो डण्डे हैं । एक छोटा और दूसरा बड़ा । दोनों उसी डिब्बे में घूमते रहते हैं और डिब्बे के अन्दर से बराबर टक-टक की आवाज आती रहती है । ... आदि आदि ...

जब यह विवरण सम्राट को सुनाया गया तो उन्होंने सब से पहले मेरी तलवार मांगी । इस समय तीस हजार सिपाहियों को धनुष बाण लेकर तैनात कर दिया गया था । मैंने तलवार म्यान से निकाल कर दिखाई । यद्यपि उसमें थोड़ा जंग लग गया था, फिर भी वह सूर्य के प्रकाश में चमक उठी । उसकी चमक से लोगों की आंखें चौंधिया गईं और तीस हजार की वह फौज भय और आतंक से चिल्ला उठी । फिर मैंने उसे म्यान में रख दिया । इसके बाद राजा ने पूछा कि तुम्हारे पास लोहे के दो नल हैं । वे क्या हैं और किस काम आते हैं ? वास्तव में वे मेरी पिस्तौलें थीं । मैंने सम्राट को बारूद का इस्तेमाल कैसे होता है और वह लड़ाई में कैसे भयानक काम करती है यह सब समझाया । फिर मैं ने कहा कि मैं अभी पिस्तौल चला कर दिखाता हूं, आप अपने आदमियों से कह दीजिए कि वे डरें नहीं । इसके बाद मैंने पिस्तौल में बारूद भर कर एक हवाई फायर किया । इसका असर तलवार से भी अधिक हुआ । हजारों सिपाही भय के कारण बेहोश हो गए । जो बचे, वे भी थर-थर कांप रहे थे । सम्राट यद्यपि अपने स्थान पर खड़े रहे फिर भी बड़ी देर के बाद उन के होश ठिकाने हुए । मैंने पिस्तौलें और बारूद भी सम्राट को सौंप दीं और बता दिया कि इसके आस-पास आग न जाने पाए नहीं तो राजमहल क्या सारा शहर एक ही धमाके में उड़ जाएगा ।

इसी तरह मैंने अपनी घड़ी और दूसरी चीजें एक-एक करके सम्राट को दिखाईं और उनके गुण बताए । मेरी तलवार पिस्तौलें और बारूद तो सरकारी खजाने में जमा हो गईं, बाकी चीजें मुझे वापस लौटा दी गईं ।

मैंने अपनी एक जेब की तलाशी नहीं दी थी । इसमें मेरा चश्मा, दूरबीन और कुतुबनुमा रखे थे । मैंने सोचा कि यदि ये चीजें दूसरे हाथों में पहुंचेंगी तो अवश्य नष्ट हो जाएंगी । इसलिए मैंने उन्हें छिपा लिया ।

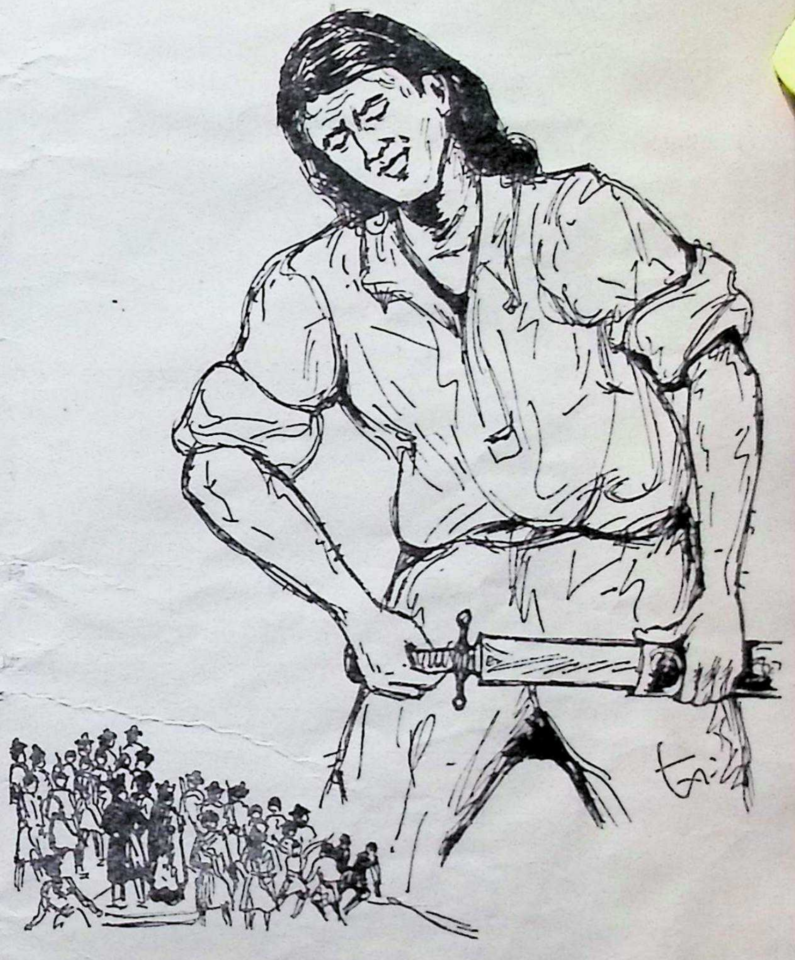

मैंने तलवार म्यान से निकाल कर दिखाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी भलमनसाहत और मीठे व्यवहार से सिर्फ सम्राट और उनके मन्त्री ही प्रभावित नहीं हुए, बल्कि फौज तथा साधारण जनता भी मुझ से बहुत प्रेम करने लगी । इसलिए मुझे यह आशा हो चली कि किसी न किसी दिन मैं इस कैद से अवश्य छुटकारा पा जाऊंगा । साधारण जनता के लोग बिना किसी ड़र या हिचक के मेरे पास चले आते । कभी-कभी मैं लेटे हुए ही उन में से पांच-छः को अपने हाथों पर बिठा लेता । यहां तक कि छोटे-छोटे लड़के बिना किसी डर के मेरे बालों में आंख-मिचौनी खेलने लगे ।

धीरे धीरे मैं इन लोगों की भाषा अच्छी तरह समझने लगा । अब मैंने इन के रीति रिवाजों को समझने की कोशिश की । ये लोग खेल तमाशों के बड़े शौकीन होते हैं । नट विद्या और बाजीगरी के तमाशे जगह जगह होते रहते हैं । यहां पर सरकारी नौकरियां भी उन्हीं लोगों को मिलती हैं जो देश के अच्छे खिलाड़ी होते हैं । एक आदमी ने दो बांसों के बीच में बंधी रस्सी पर बिना गिरे हुए अपना नाच सम्राट को दिखाया । उस की कला से प्रसन्न होकर सम्राट ने उसे राज्य की सबसे ऊंची पदवी दे कर अपना प्रधान मंत्री ही बना लिया । मैंने सोचा कि क्यों न मैं भी इसी प्रकार का कोई तमाशा दिखा कर सम्राट को प्रसन्न करूं । इसलिए मैंने दो फुट ऊंची कई लकड़ियां मंगवाईं । इनमें से चार को मैंने एक वर्गाकार मैदान के चारों कोनों में गाड़ दिया, जिस की प्रत्येक भुजा तीस इंच की थी । इस वर्ग की चारों भुजाओं में भी थोड़ी-थोड़ी दूर पर कई लकड़ियां गाड़ कर मैंने एक घेरा बना लिया । फिर मैंने अपने बड़े रूमाल को इन लकड़ियों के ऊपर तान कर इतनी मजबूती से बांध दिया कि जमीन से दो फुट की ऊंचाई पर एक छतनुमा मैदान बन गया । तब मैंने सम्राट से प्रार्थना की कि वे इस छत पर कवायद करने के लिए चौबीस घुड़सवारों की एक पलटन भेजें । सम्राट ने मेरे प्रस्ताव को मान लिया ।

कभी-कभी मैं लेटे हुए ही उन में से पांच-छः को अपने हाथों पर बिठा लेता

चौबीस घुड़सवार बुलाए गए जिन को मैंने एक एक कर के अपने हाथ में उठाया और उस छतनुमा मैदान में चढ़ा दिया । शीघ्र ही वे घुड़सावार दो दलों में बंट गए और तरह-तरह के लड़ाई के खेल खेलने लगे । घोड़ों की टापों से मैदान गूंज उठा । सम्राट ने इस खेल को बहुत पसन्द किया । कई दिनों तक यह तमाशा होता रहा ।

सम्राट ने मनोरंजन का एक अनूठा ही तरीका खोज निकाला । उन्होंने अपनी राजधानी के आसपास की तमाम फौजों को तैयार रहने का हुक्म दिया । फिर उन्होंने मुझ से कहा कि मैं दोनों पैरों को खूब फैला कर खड़ा हो जाऊं । फिर उन्होंने अपने सेनापति को हुक्म दिया कि

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

★

वेताल पचीसी––(पृष्ठ ११ का शेषांश)

रत्नदत्त यह सब देख कर अचरज में पड़ गया । वह अपनी लड़की और दामाद के साथ अपने घर लौट आया । राजा वीरकेतु भी यह बातें सुन कर बहुत खुश हुआ । उसने चोर को अपना सेनापति बना दिया । इस प्रकार चोर ने चोरी छोड़ दी और अपनी पत्नी के साथ सुखी जीवन बिताने लगा ।

यह कथा सुनाकर वेताल ने राजा से पूछा––महाराज, तुम यह बताओ कि रत्नवती को देख कर सूली पर चढ़ा हुआ चोर पहले रोया और फिर हँसा, इसका क्या कारण है । अगर जान बूझ कर नहीं बोलोगे तो तुम्हारा सिर फट जाएगा ।

राजा त्रिविक्रम सेन ने उत्तर दिया––चोर इस दुख से रोया था कि यह सेठ बिना किसी कारण के ही मेरा बन्धु बनकर मेरे लिए श्मशान में आया, मैं इससे उऋण नहीं हो सकता । पर रत्नवती राजकुमारों को छोड़ कर उस जैसे चोर को चाहने लगी थी, इस बात पर चकित होकर वह हँस पड़ा था ।

राजा त्रिविक्रम सेन की बात सुनकर वेताल फिर उछल कर शीशम की डाल पर लटक गया और राजा उसे उतारने के लिए लौट पड़ा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

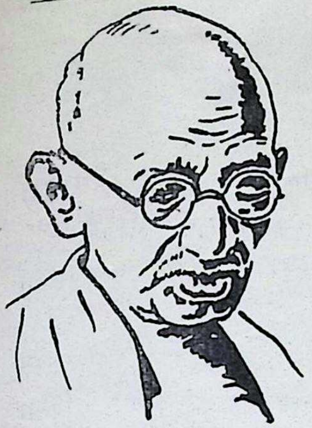

सहन शील बापू

अरुण धीर

प्रिटोरिया में शाम को गांधी जी प्रधान मन्त्री मिस्टर क्रूगर के बंगले के सामने से लौटा करते थे। मन्त्री के द्वार पर जो सन्तरी खड़ा था, उसने सोचा कि एक काले आदमी की यह हिमाकत कि वह फुटपाथ पर चले। उसने ठोकर मार कर उन्हें नीचे गिरा दिया। इतने में एक गोरा बैरिस्टर, जो कि गांधी जी का दोस्त था, वहां आ पहुंचा और बोला——ऐसे बदतमीज सन्तरी को तो कुछ सबक मिलना चाहिए।——गांधी जी ने कहा——भाई, जहां सभी गोरे हमें, कुली, कह कर हम से नफरत करते हैं, वहां इस बेचारे नासमझ सन्तरी को मैं क्यों कसूरवार समझूं?

जब गांधी जी भारत लौटे तो उन्होंने एक छोटी-सी पुस्तिका लिखी, जिसमें अफ्रीका में गोरों के दुर्व्यवहार का कच्चा, परन्तु सच्चा, चिट्ठा लिखा था। इस पुस्तक की जिल्द हरी थी——इस कारण यह हरी पोथी के नाम से मशहूर हुई। इसकी दस हजार प्रतियां छपवाकर सब प्रमुख अखबारों और राजनीतिक दलों के नेताओं के पास भेजनी थीं। पैकेट बन्द करने और पता लिखने में काफी समय व धन खर्च होता। पर गांधी जी ने पास-पड़ोस के बच्चों के सहयोग से यह काम कुछ ही घण्टों में खत्म कर दिया। जब दोबारा गांधी जी अफ्रीका लौटे तो गोरे उनके विरुद्ध हो गए और उन्हें जहाज से उतरते ही घेर लिया। किसी ने उनकी पगड़ी उछाली, किसी ने घूंसे और लातों की बौछार की। बड़ी मुश्किल से एक पुलिस अफसर की चतुराई से वह उनके चंगुल से बच कर निकल सके। बाद में इंगलैंड के उपनिवेश विभाग के मन्त्री मि० चैम्बरलेन ने नेटाल के अफसर को तार दिया कि मि० गांधी से कहो कि यदि वह दुष्ट गोरों पर मुकदमा चलाएं तो उन्हें न्याय मिलेगा। पर क्षमाशील गांधी जी का उत्तर था——मैं हमला करने वाले को दोषी नहीं मानता हूं। उन्हें तो यह समझाया गया है कि मैंने भारत में ऊल-जलूल बातें कह कर यहां के गोरों को बदनाम किया है। उन्होंने वे बातें सही मान लीं और जोश में आकर आपे से बाहर हो गए, तो इसमें अचम्भा ही क्या है? ऐसी हालत में मुझे मुकदमा नहीं चलाना है। जब गोरे असलियत जानेंगे तब खुद पछताएंगे।

जब गांधी जी अपने देश लौटने को थे तो प्रीतिभोजों में लोगों ने गांधी जी और बा को अनेक अमूल्य भेंटें दीं। गांधी जी ने भेंट की वस्तुएं देखीं और रात भर सोचते रहे कि स्त्रियों को मैंने सदा सेवा की शिक्षा दी, बच्चों को सेवा की शिक्षा दी, अगर इन उपहारों को पचा भी लूं तो स्त्री-बच्चे क्या सोचेंगे? उन्हें मैं बराबर समझाता रहा हूं, सेवा के दाम नहीं हुआ करते। सेवा के बदले मिलता है——प्रेम, केवल प्रेम। घर में कीमती गहने वगैरह रखना भी गुनाह समझता हूं। सादगी बढ़ती जा रही है। ऐसी हालत में सोने की घड़ियां क्या काम में लाऊंगा? हीरे के हार और अंगूठियां कौन पहनेगा? गहने-गांठों का मोहताज न होने का उपदेश मैं औरों को दिया करता था। अब इन जेवरों और जवाहरातों का मैं क्या करूं?——वाद-विवाद के बाद बा भी गांधी जी की बात मान गईं और अन्त में चार वर्षों में उपहार में जितनी भी चीजें मिली थीं, बैंक में जमा करके, गांधी जी ने यह शर्त लगा दी कि यह धन लोक-सेवा के लिए खर्च किया जाए।

गांधी जी के एक अंग्रेज मित्र ने उन्हें रस्किन की एक किताब पढ़ने को दी थी। उसमें गांधी जी को तीन मूल मन्त्र मिले :——

१—सब की भलाई में ही अपनी भलाई भी समाई हुई है।

२—वकील और हज्जाम, बाबू और भंगी दोनों के काम की कीमत एक-सी होनी चाहिए, क्योंकि जीने का हक सब को बराबर है। जीने के लिए रोजी पाने का हक सब को बराबर है।

३—सादा जीवन, मेहनत-मजदूरी का जीवन, किसान का जीवन ही सच्चा जीवन है।

महात्मा जी को सादगी का जीवन बहुत पसन्द था। वह अपने हर काम में आत्म-निर्भर होना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने अपना खाना-पीना सब सादा कर लिया था। अपने कपड़े खुद धोते थे। उन्होंने अपनी जीवनी में लिखा है——"पहले-पहल जो कालर मैंने धोया उसे कभी नहीं भूलूंगा। उसे लगाकर मैं अदालत में गया। वहां बैरिस्टरों ने मेरा मजाक उड़ाना शुरू किया। लेकिन मैंने इसकी जरा भी परवाह नहीं की। मुझे इस तरह की हँसी-दिल्लगी को सहन

(शेष पृष्ठ २४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ समाचार

ट्रकों का निर्माण

प्रधान मंत्री श्री नेहरू ने २१ जून को जबलपुर के तोपगाड़ी कारखाने के ट्रक (मोटर ठेले) बनाने वाले विभाग का बाकायदा उद्घाटन किया। उस दिन कारखाने से पहला ट्रक तैयार होकर निकला। यह विभाग जर्मनी की एक फर्म मेसर्स एम० ए० एन० के सहयोग से खोला गया है। इस विभाग में विभिन्न कल-पुर्जों को जोड़ कर ट्रक तैयार किए जाते हैं। अभी तो केवल ३० फीसदी हिस्से देश में बनते हैं। लेकिन उम्मीद है कि पांच साल के अन्दर ६० फीसदी हिस्से यहीं बनने लगेंगे।

इस कारखाने में तैयार ट्रकों की एक अच्छाई यह है कि वे कई तरह के ईंधनों (पेट्रोल, डीज़ल तेल आदि) से चल सकते हैं।

१९५८-५९ में गेहूं की पैदावार

सन् १९५८-५९ में देश में ९९ लाख ६० हजार टन गेहूं पैदा हुआ। इस साल जितनी जमीन में गेहूं की खेती हुई उसका रकवा भी पिछले साल के मुकाबले लगभग ५ फीसदी बढ़ गया। कुल पैदावार पिछले साल के मुकाबले २५.२ प्रतिशत, यानी लगभग सवा गुनी ज्यादा हुई। पिछले ५ वर्षों में जितना गेहूं हुआ था, उसकी औसत पैदावार से यह १२,०१,००० टन, यानी १४.१ फीसदी अधिक है।

बच्चों के लिए राष्ट्रीय संग्रहालय

अक्तूबर १९५९ से नई दिल्ली में बाल भवन के निकट बच्चों के लिए राष्ट्रीय संग्रहालय बनाने का काम शुरू कर दिया जाएगा। दूसरी योजना में इसके लिए १० लाख रुपए रखे गए हैं। आशा है कि ३१ मार्च, १९६१ तक भाषण-कक्ष, कृत्रिम नभ मण्डल कक्ष, कार्यालय और विभिन्न देशों से एकत्र गुड़ियों के लिए इमारत बन जाएगी।

देश में संग्रहालयों का विस्तार करने की योजना के अन्तर्गत यह संग्रहालय बनाने की योजना तैयार की गई। यह एशिया में अपने ढंग का पहला संग्रहालय होगा।

भारत में मछली-पालन

आजकल भारत में समुद्र तथा नदियों आदि से हर साल १० लाख टन से भी ज्यादा मछली निकाली जाती है। मछली के उत्पादन की दृष्टि से भारत संसार का आठवां देश है।

भारत में नदियों तथा समुद्री मछलियों का बड़ा भण्डार है। अगर देश में ठीक ढंग से मछली-पालन किया जाए तो हमारे भोजन की कमी काफी हद तक पूरी हो जाए, साथ ही हमें फायदेमंद खाना और प्रोटीन भी मिलने लगे।

पश्चिमी बंगाल में कोयले की नई खान

भारत के भूगर्भ सर्वेक्षण विभाग ने पश्चिमी बंगाल के बांकुरा जिले में १३ वर्गमील के कोयले के नए क्षेत्र का पता लगाया है। अब तक इस क्षेत्र में कोयले की चार तहें खोजी जा चुकी हैं।

ओंडाल के पास भी कोयला होने का अनुमान है। अंदाज लगाया गया है कि इस क्षेत्र में ५२ लाख ६० हजार टन कोयला मिल सकेगा।

सहन शील बापू—(पृष्ठ २३ का शेषांश)

करने की आदत हो गई थी। जिस तरह मैं धोबी की गुलामी से छूटा उसी तरह नाई की गुलामी से छूटने का भी मौका मिल गया। प्रिटोरिया में एक बार मैं अंग्रेज नाई की दुकान पर गया। उसने मेरे बाल काटने से साफ इनकार कर दिया। मुझे बड़ा ही दुःख हुआ। वहां से मैं सीधे बाजार में पहुंचा। बाल काटने की कैंची खरीदी और आइने के सामने खड़े होकर अपने बाल काट डाले।"

एक बार कोई मित्र महादेव भाई को तीन बन्दरों की मूर्तियां भेंट दे गया था उनमें से एक ने हाथों से मुंह बन्दकर रखा था, दूसरे ने आंखें और तीसरे ने कान बन्द कर रखे थे। महादेव भाई ने वे मूर्तियां महात्मा जी को दे दीं। उन्हें वे न केवल पसन्द आईं बल्कि उन्हें वह अपना गुरु कहा करते थे। महात्मा जी कहा करते थे कि रोजाना की जिन्दगी के लिए इनसे बहुत अच्छी सीख मिलती है। पहला बन्दर हमें यह बताता है कि कम बोलो, झूठ मत बोलो और किसी की निन्दा न करो। दूसरा बन्दर हमें यह सीख देता है कि हम किसी की बुराई या कोई बुरी वस्तु देखने के लिए आंख न खोलें। तीसरा बन्दर हमें यह सिखलाता है कि किसी की निन्दा नहीं सुननी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वफादार हाथी

सत्या जैन

प्राचीन काल में बन्धुवर्मा नामक एक राजा था। उसके पास मोती नामक एक हाथी था। राजा के महावत ने उस हाथी को प्यार से अपने बच्चों की तरह पाला था। हाथी भी महावत और उसके बच्चों को बहुत प्यार करता और सारे दिन उनके साथ खूब खेलता।

एक बार एक शत्रु ने बन्धुवर्मा के राज्य पर हमला कर दिया। राजा अपने शाही झण्डे के साथ मोती की पीठ पर सवार हो युद्ध में जा डटा। घमासान युद्ध हुआ परन्तु थोड़ी ही देर में एक तीर बन्धुवर्मा की छाती को बींध गया और वह स्वर्ग सिधार गया। यह देखते ही महावत नीचे कूद पड़ा और हाथी से बोला—मोती बेटा, जब तक मैं न पुकारूं यहीं खड़े रहना।

राजा को गिरते देख कर सेना में खलबली मच गई। सैनिक मैदान छोड़ भागने लगे। इतने में शत्रु के तीर ने महावत को भी मार गिराया। मोती के शरीर में भी अनेक तीर लगे, परन्तु वह महावत के आदेशानुसार वहीं खड़ा रहा। भागते हुए सैनिकों ने मोती की पीठ पर फ़हराती हुई पताका देखी तो उन्हें फिर जोश आ गया और वे नारा लगाते हुए दुश्मन पर टूट पड़े। थोड़ी ही देर में शत्रु मैदान छोड़ कर भाग गया।

शत्रु के भागने पर सैनिक मोती के पास आए और उसे राजमहल की ओर ले जाना चाहा। परन्तु मोती ने एक पग भी न उठाया। सब हैरान थे। महावत की खोज की गई तो उसकी लाश पास ही पड़ी मिली। लाश को देख कर मोती की आंखों से आंसू बहने लगे। वह लाश को सूंड से प्यार करने लगा, परन्तु अपने स्थान से टस से मस न हुआ। राजमहल का एक वृद्ध कर्मचारी पहेली समझ गया। वह भाग कर महावत के छोटे बच्चे को गोद में उठा लाया। बच्चे ने मोती को बैठने को कहा। मोती आवाज़ पहचान गया। उसने बच्चे को और शव को अपनी पीठ पर रख लिया और राजमहल की ओर चल दिया।

वह लाश को सूंड से प्यार करने लगा, परन्तु अपने स्थान से टस से मस न हुआ।

बच्चो ! मोती की वफादारी ने उसके देश को शत्रु के पंजे में जाने से बचा लिया। सचमुच, प्यार से सभी को वश में किया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी के पत्र

प्यारे मुन्ना मुन्नी,

अब अगले महीने दशहरा और दीवाली दोनों ही त्योहार पड़ रहे हैं। उत्तर प्रदेश, बंगाल और बिहार में तो दशहरा और दीवाली दोनों की छुट्टियां मिलाकर लगभग एक महीने के लिए कालेज और स्कूल बन्द होते हैं। ऐसे मौकों पर आप में से बहुतों को अपने रिश्तेदारों के घर जाने का निमंत्रण मिलेगा। हो सकता है कि मां, बड़े मुन्ना-मुन्नी को अकेले ही मौसी, मामा, बुआ या चाची के यहां कुछ दिन बिताने के लिए भेज दे, या चाचा तुम्हें खुद ही आ कर ले जाएं।

ऐसे मौके पर मेरी एक सलाह है। जब तुम किसी के यहां जाओ तो तुम्हें इस बात की समझदारी होनी चाहिए कि बाहर जाकर तुम एक अच्छे और उपयोगी मेहमान साबित हो सको। तुम पूछोगे सो कैसे ? सुनो——आजकल रहने की जगह की तंगी होने के कारण मेहमानों के लिए अलग रहने का कमरा देना तो गृहस्थ के लिए मुश्किल है। दूसरी बात है कि खाने-पीने की चीजें भी दिन पर दिन महंगी होती जा रही हैं। तुम्हें अपने मेजवान की सुविधा का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए। इसलिए नीचे लिखी बातों का हमेशा ध्यान रखो।

अपने चचेरे, ममेरे भाई के कमरे में रहने को ही अपनी व्यवस्था कर लो। अपनी चीजों को एक कोने में करीने से रखो। कपड़े खूंटी पर ही लटकाओ। एक बार में बहुत से कपड़े बाहर मत निकालो। जो कपड़े मैले हो गए हैं, उन्हें अपने खाली बिस्तरबंद में लपेट कर रख दो। अपना शीशा, कंघी, तेल, ब्रुश, मंजन आदि शेल्फ पर या किसी डिब्बे में रखो। यदि तुम्हारे पास कोई अटैची है तो उसी में रहने दो। केवल जरूरत के समय निकाल कर फिर उन्हें ठिकाने पर रख दो।

मेहमानों के आ जाने से घर के नौकर का काम बढ़ जाता है। ऐसी सूरत में तुम्हें खुद अपना बिस्तर उठाना, बिछाना चाहिए। खा-पीकर अपने बर्तन उठाने भी मत भूलो। मुन्नी का फर्ज है कि गृह-स्वामिनी को भोजन बनाने तथा परोसने में मदद करे। मुन्ना भी छोटे बहन-भाइयों को कुछ देर बहला सकता है। भोजन करने के लिए ठीक समय पर पहुंच जाओ। देखने में आता है कि आम तौर पर गृह-स्वामिनी का सारा दिन मेहमानों की खातिर-तवाजा और इंतजार में ही बीत जाता है। यदि सब कोई तैयार होकर वक्त पर चाय-पानी, भोजन और नाश्ते के लिए इकट्ठे हो जाएं तो काम ठीक से निबट जाता है। पर मेहमान 'हौली डे मूड' में होने का तर्क पेश करके हर काम बेवक्त करने में कोई हर्ज नहीं समझते। भला सोचो कि तुम लोगों की छुट्टियां गृहिणी की परेशानी का कारण बनें तो क्या यह उचित है ?

बच्चे भी बड़ों के साथ सिनेमा जाने की जिद्द करने लगते हैं। आठ-दस बच्चों को एक साथ सिनेमा ले जाने का यह मतलब है कि एक समय में बीस-पच्चीस रुपए खर्चना। आर्थिक और व्यावहारिक दृष्टि से यह असम्भव है। बच्चों की एक नासमझी और खलती है। वे पराए घर जाकर बहुत इतराने लगते हैं। उनको यह भरोसा रहता है कि मां या बड़ी बहिन या भाई यहां सब के सामने तो कुछ कहेंगे नहीं। बस, वह कोई खिलौना लेने या कहीं जाने के लिए रोने, मचलने और जिद्द करने लगते हैं। इससे मेजबान भी ऊब जाता है। कभी-कभी बच्चे आपस में अपने चचेरे-ममेरे भाई-बहनों से मार-पीट तक कर बैठते हैं। ऐसे चार ऊधमी बच्चों के मारे घर में एक आफत-सी आ जाती है। कभी-कभी तो बच्चों की यह लड़ाई बड़ों की मित्रता में भी दरार डाल देती है।

बाज नादान बच्चे अपने छोटे या बड़े बहन-भाई की चुगली लगाकर मेजवान की नजरों में खुद अच्छा बनने की कोशिश करते हैं। कुछ समस्यापूर्ण बच्चे अपने मेजबान की अच्छी चीजों को ही चुपके से उठाकर अपने बक्स में रख लेते हैं। यह तो बहुत ही खराब आदत है।

तुमको तो यह चाहिए कि जिनके यहां जाओ उनके बच्चों को खुश रखो। उन्हें अच्छी-अच्छी कहानियां सुनाओ। उनकी सिलाई-बुनाई, पढ़ाई-लिखाई में दिलचस्पी लो। उन्हें कुछ अच्छी बातें सिखाओ, और उनसे भी तुम खुद कुछ सीख सकते हैं। जब गृहिणी काम में लगी हो तो खेल-कूद कर बच्चों को ही बहला रखो। अपने बड़ों को किसी बात की भी असुविधा न होने दो। भोजन बरबाद न करो, घर की व्यवस्था न बिगड़ने दो। स्वयं को उपयोगी बनाओ और सब के साथ सभ्यता से पेश आओ।

ऐसा करने से न केवल तुम्हारी प्रशंसा होगी, बल्कि सब की यही इच्छा होगी कि ऐसे भले मुन्ना-मुन्नी को हर छुट्टियों में अपने यहां बुलाया जाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाओ चेंग का अद्भुत न्याय

देवेन्द्र किशोर शर्मा

एक समय जब चीन में सुंगवंश के राजाओं का राज्य था, वहां न्याय करने वाले एक अधिकारी रहते थे। उनका नाम था पाओ चेंग। अपनी बुद्धिमानी और न्याय के लिए वे दूर-दूर तक प्रसिद्ध थे। वे कभी रिश्वत न लेते। अमीर-गरीब या छोटे-बड़े में वे कोई भेद न करते और सदा न्याय की ओर ध्यान देते। उनके सम्बन्ध में यह भी प्रसिद्ध था कि अपराधी का पता लगाने की उनमें अद्भुत शक्ति है। वे दीन-दुखियों की सहायता भी करते थे, अतः सभी लोग उन्हें चाहते थे। उनकी बुद्धिमानी और न्यायप्रियता की प्रशंसा यहां तक फैली हुई थी कि उनके सम्बन्ध में यह कहावत प्रसिद्ध हो गई थी :—

देव लोक में जैसे देव
भू पर वैसे पाओ चेंग

न्यायाधीश पाओ चेंग एक दिन अपनी पालकी में बैठे हुए कहीं जा रहे थे कि रास्ते में उन्होंने देखा, गांव का एक बालक खड़ा है। उसके हाथ में एक बड़ी-सी खाली थाली है और वह जोर-जोर से रो रहा है। उसका करुण रोदन सुन कर जज महोदय ने पालकी रुकवाई और लड़के को अपने पास बुलवाया।

—तुम क्यों रो रहे हो?—उन्होंने लड़के से पूछा।

—मैं तेल की कचौड़ियां और पकौड़ियां बेचता हूं, महाशय!—लड़के ने कहा।

—पर इस में तो रोने की कोई बात नहीं है।—जज ने कहा।

—परन्तु मेरी आज दिन भर की कमाई कोई ले गया महाशय!—लड़के ने सिसकियां भरते हुए कहा।

—कितने पैसे कमाए थे आज तुमने?—जज ने पूछा।

—दो सौ पैसे थे महाशय।—लड़के ने उत्तर दिया।

—फिर, वे पैसे चले कैसे गए?—जज ने पूछा।

—मैं उन्हें इसी थाली में रखकर जरा सो गया था, तभी उन्हें कोई चुरा ले गया।—लड़के ने दुख से कहा।

—तुमने अपनी थाली कहां रखी थी?

—उस चपटे पत्थर पर थाली रख दी थी और वहीं मैं सो गया था।

—यदि तुमने थाली उस पत्थर पर रखी थी तब तो अवश्य उस पत्थर ने ही तुम्हारे पैसे चुराए होंगे। जज ने बड़ी गम्भीरता से कहा।

इस समय जज के आस-पास बहुत से लोग इकट्ठे हो गए थे और उन लोगों की बातचीत सुन रहे थे। जज महोदय की बात सुन कर लड़का उनके मुंह की ओर ताकने लगा और वहां खड़े हुए लोग मुंह दबा कर हँसने लगे।

किन्तु न्यायाधीश पाओ चेंग ने इन बातों पर कोई ध्यान न दिया। उन्होंने तुरन्त हुक्म दिया—इस मुल्जिम पत्थर को फौरन कचहरी में ले चलो, इस पर मुकद्दमा चलाया जाएगा।

चार मजबूत आदमियों ने बांसों में रस्सियां बांधीं और उस पत्थर को लटका कर कचहरी में ले चले। आस-पास खड़े सब लोग भी इस विचित्र मुकद्दमे को देखने के लिए साथ हो लिए और बहुत से अन्य लोग भी जिन्होंने यह हाल सुना साथ हो लिए। कचहरी में शीघ्र ही अच्छी-खासी भीड़ लग गई।

जज महोदय भी कचहरी में पहुंच कर कुर्सी पर बैठे और हुक्म दिया—उस मुल्जिम पत्थर को हाजिर किया जाए।

—मेरी आज दिन भर की कमाई कोई ले गया महाशय!—लड़के ने सिसकियां भरते हुए कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकरों ने तुरन्त पत्थर को उठाकर जज महोदय के सामने रख दिया ।

--पत्थर ! जज महोदय ने गम्भीर स्वर में कहा,-- क्या तूने इस लड़के के पैसे चुराए हैं?--पत्थर बेचारा चुप था ।

जज पाओ चेंग ने दुबारा वही सवाल किया । पत्थर फिर भी चुप । अतः जज ने इस गुस्ताखी के लिए पत्थर को कोड़े लगाए जाने की आज्ञा दी । अब तो कचहरी में उपस्थित लोगों की हँसी रोके न रुकी और वे सब ठहाका मार कर हँस पड़े ।

जज महोदय ने उन लोगों पर क्रोध की दृष्टि डाली । उन्होंने अपने हाथ की घड़ी मेज पर जोर से पटक कर कहा-- तुम लोगों की यह हँसी अदालत का अपमान है । इसलिए तुम सब लोगों को इस अपराध में तीन-तीन दिन की कैद की सजा दी जाती है ।

जज की आज्ञा सुन कर तो अदालत में सन्नाटा छा गया । फसल के दिन थे, खेतों पर बहुत काम पड़ा था । तीन दिन जेल में रहने से काम की बड़ी हानि होती । अतः सब लोग गिड़गिड़ा कर माफी मांगने लगे और कहने लगे अब इस तरह का कसूर न होगा । बड़े-बूढ़े लोगों ने मिन्नत की और कहा कि सरकार क्षमा करें, अब ये लोग ऐसा न करेंगे ।

चारों ओर से मिन्नतें सुन कर जज को कुछ दया आई । उन्होंने कहा--अच्छा, कैद की सजा को मैं जुर्माने में बदल देता हूं । तुम में से हर एक आदमी बीस पैसे यहां डालकर घर जा सकता है ।

फिर उन्होंने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि पानी से भरा हुआ एक बर्तन लाओ । सब लोग उसी में जुर्माने के पैसे डालेंगे ।

इस हुक्म से लोगों को बड़ा सन्तोष हुआ कि चलो बड़े सस्ते छूटे । पानी का बर्तन लाकर रख दिया गया । बर्तन आते ही भीड़ में से दो व्यक्तियों ने सबसे पहले २०-२० पैसे डाले और तुरन्त घर चल दिए । जब तीसरा आदमी पैसे डालने आया तो जज ने उसे ठहरने को कहा । जज महोदय पैसे डालने की क्रिया को बड़े ध्यान से देख रहे थे और उन्होंने देखा कि दूसरे आदमी द्वारा पैसे डाले जाने के बाद ही पानी के ऊपर थोड़ा तेल उतराने लगा । जज ने तुरन्त हुक्म दिया कि जो दूसरा आदमी अभी पैसे डाल कर गया है उसे तुरन्त वापस लाओ । घर पहुंचने के पहले ही वह व्यक्ति पकड़ कर लाया गया । तलाशी लेने पर उसके पास तेल से सने हुए १८० पैसे और निकले । सब लोग यह तमाशा देख रहे थे ।

बुद्धिमान जज ने अपनी अनोखी युक्ति से वास्तविक अपराधी का पता लगा लिया था । उन्होंने तुरन्त आज्ञा दी कि शेष सब लोग बिना जुर्माना दिए घर जा सकते हैं । उन्होंने कुल पैसे लड़के को दिला दिए और चोर को दस कोड़े लगवाए ।

गांववाले आश्चर्य करते हुए और जज के न्याय की प्रशंसा करते हुए वापिस गए । प्रत्येक के मुख से यही निकल रहा था--

देव लोक में जैसे देव
भू पर वैसे पाओ चेंग ।

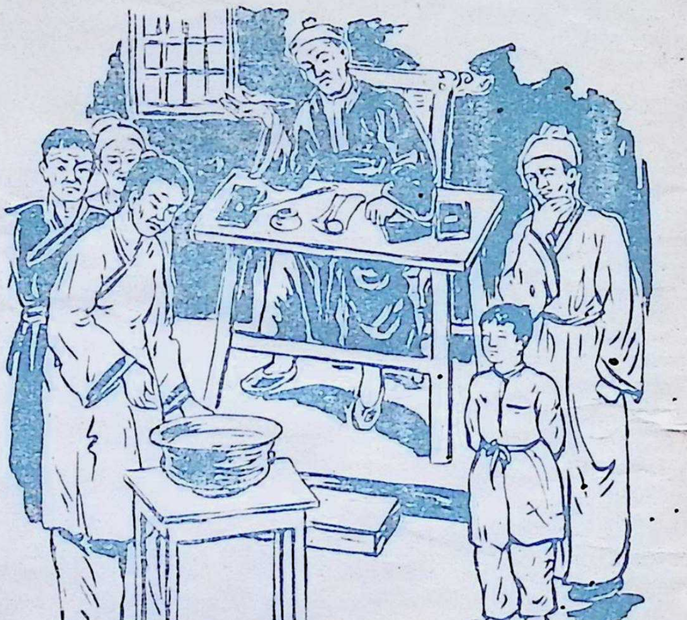

उन्होंने देखा कि दूसरे आदमी द्वारा पैसे डाले जाने के बाद ही पानी के ऊपर थोड़ा तेल उतराने लगा ।

बुद्धि की कीमत--(पृष्ठ १२ का शेषांश)

वे सब मिल कर भी पिता के बुढ़ापे में उसे खिला नहीं सकते ।

मंत्री ने सौदागर के लड़के को बहुत इनाम दिया । चारों भाई और चाचा चल पड़े । तीनों छोटे भाइयों ने अपने बड़े भाई की बुद्धि की कीमत देखी तो वे चुप रह गए और उसका आदर करने लगे ।

जब चाचा ने बंटवारे की बात चलाई तो तीनों बोल उठे--चाचा ! हम भूलते थे । दादा वास्तव में बहुत बुद्धिमान हैं । हम लोग बंटवारा नहीं करेंगे ।

फिर वे चारों हिलमिल कर रहने लगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य-भक्षी वृक्ष

सन्त राम

आपने अनेक प्रकार के पौधे देखे और सुने होंगे, पर मनुष्यों को खाने वाले पौधे की बात कभी न सुनी होगी। अफ्रीका महाद्वीप के पूर्व में मेडागास्कर नाम का एक टापू है। वहीं यह मनुष्याहारी वृक्ष पाया जाता है। जर्मनी के एक बड़े यात्री और वैज्ञानिक डाक्टर कार्ल लीचे ने हाल ही में इसका पता लगाया है। डाक्टर महोदय ने इसका नाम क्रिनायदा दारजीना रखा है। यह पौधा दस फुट ऊंचा होता है। इसमें इतना बल है कि यह मनुष्य को अपने जाल की झंझरी में फंसा कर नष्ट कर सकता है। यह मकोडस नाम की एक जंगली जाति के प्रदेश में पाया जाता है। वे लोग इसे पूजते हैं और अपनी जाति की क्वांरी कन्याओं की बलि इस पर चढ़ाते हैं। इस बलिदान की रीति बड़ी भयंकर होती है।

डा० लीचे ने इसे अपनी आंखों से देखा है। वे लिखते हैं—मृत्यु के इस पवित्र वृक्ष का आकार बड़ा ही अनूठा है। इसका तना लगभग दस फुट ऊंचा होता है। तने का आकार पीपे जैसा होता है। उसकी छाल पर विलक्षण चित्रकारी-सी रहती है, जिससे यह एक बड़ा भारी कनवस-सा दीखता है। इसके तने के ऊपर एक बहुत बड़ा थाल-सा उगा रहता है। तने की चोटी से भूमि तक आठ पत्ते लटके रहते हैं। उनकी लम्बाई दस-बारह फुट होती है। निकलने की जगह उनकी चौड़ाई एक फुट तक होती है, परन्तु आगे जाकर वह कोई दो फुट तक हो जाती है। अन्त में, सूंड की तरह जाकर पत्ते की नोक सुई के सदृश तीखी हो जाती है।

पत्तों पर बड़े-बड़े विषैले कांटे बहुतायत से निकले रहते हैं। उनकी मोटाई बीच में पन्द्रह इंच से कम नहीं होती। उनकी नोकें धरती को छुए रहती हैं। तने के ऊपर के थाल के नीचे से कोई आधा दर्जन सूत उगे रहते हैं। ये देखने में बहुत दुर्बल जान पड़ते हैं। इनके सिर ऊपर की ओर उठे रहते हैं। जान पड़ता है, तने की चोटी पर के उस थाल में से कुछ गाढ़ा और मीठा रस-सा निकलता रहता है। यह रस इसी वृक्ष की उपज है। यह संभवतः पक्षियों को मोहने के लिए उत्पन्न होता है। इसमें तेज नशा रहता है। यहां तक कि इसे थोड़ा-सा चखने पर भी तत्काल मूर्च्छा आ जाती है।

बलिदान के समय लड़की को वृक्ष पर चढ़ने और उस रस को पीने के लिए विवश किया जाता है। यदि वृक्ष का राक्षस प्रसन्न-चित्त हो तो वह उस लड़की को चैन से नीचे उतरने देता है। परन्तु यदि उसकी तबीयत कुछ अच्छी न हो तो फिर बेचारी लड़की का भाग्य फूट जाता है।

मुझे मालूम न था कि वृक्ष लड़की को ऊपर से कूदने से कैसे रोकता है, परन्तु अन्त में मुझे उसका भी पता लग गया। एक दिन मुझे मालूम हुआ कि आज रात को बलि दी जाएगी। मैंने उस जंगली जाति के सरदार को कुछ भेंट दी। इससे मुझे वह त्योहार देखने की अनुमति मिल गई। मैं उन लोगों के साथ रात को जंगल में गया। उस पवित्र पेड़ के पास पहुंच कर उन्होंने उसके चारों ओर बाहरी स्थानों में आग जलाई। इससे इर्द-गिर्द का सारा प्रदेश प्रकाशमान हो गया। तब वे खाने-पीने और नाचने-गाने लगे। शीघ्र ही सब लोग मदिरा पीकर मतवाले हो गए। जिस लड़की की बलि दी जाने वाली थी केवल उसी को मदिरा नहीं दी गई। वह लड़की

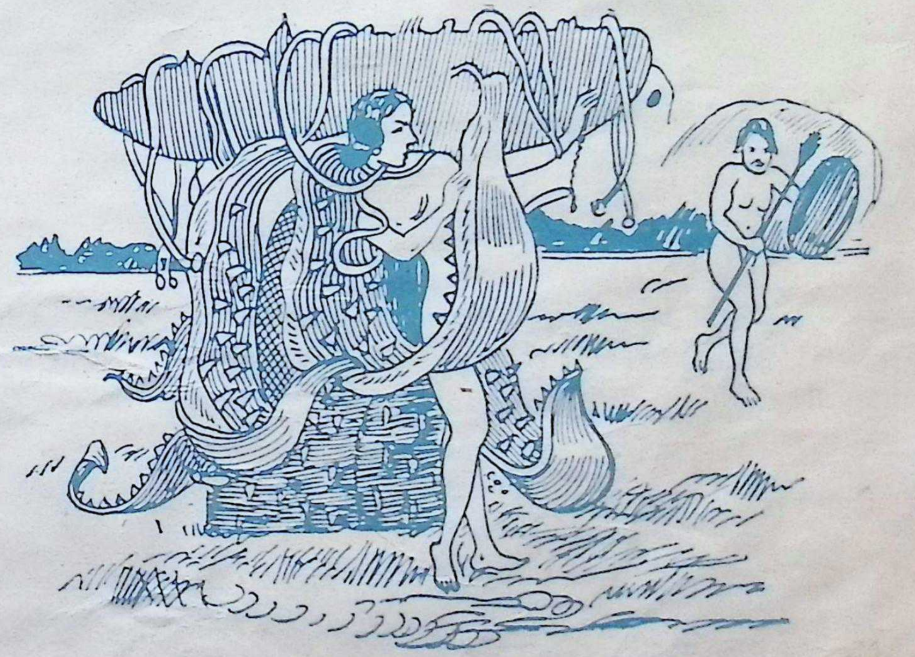

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

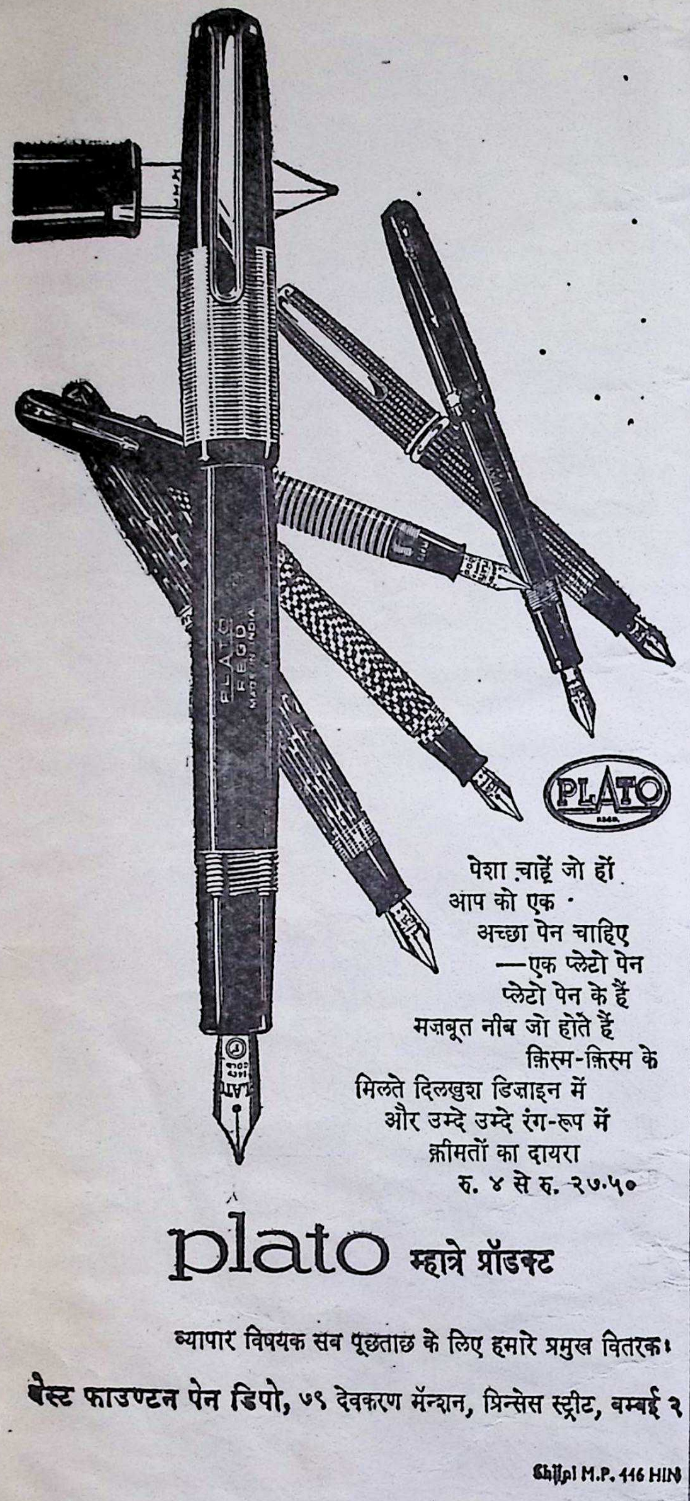

डर के मारे कुछ नहीं बोलती थी। बेचारी एक कोने में सिमटी हुई चारों ओर देख रही थी।

अचानक बिना किसी सूचना के सब लोग चुप हो गए। वे डरे हुए हिरणों की तरह इधर-उधर छिटक गए। आग के चिटकने के सिवा और कोई शब्द न सुनाई देता था। मैं समझ गया कि जिस लड़की को मैंने इस प्रकार भयभीत देखा था उसी की बलि दी जाएगी। मैंने उसकी ओर फिर देखा, मुझे उसके चेहरे पर भय के चिन्ह साफ दिखाई दे रहे थे। इसी बीच में नाचने वालों के पहले दल के लोग कुछ होश में आ चुके थे। वे चीखते और उछलते हुए उस अभागी कन्या पर झपट पड़े। उन्होंने उसे घेर लिया। वे इशारों से और चिल्ला-चिल्ला कर उसे वृक्ष पर चढ़ने का आदेश देने लगे। किन्तु वह लड़की भयभीत हो कर पीछे हट गई और दया के लिए प्रार्थना करने लगी।

इस प्रकार सब लोग इकट्ठे होकर, कड़ाई से उसे डराने और आदेश मानने पर बाध्य करने लगे। नाचने वालों ने एक बार फिर आज्ञा दी। पर लड़की नहीं मानी। उसने बचने का यत्न किया। इस पर वे हाथों में भाले लेकर उसे उस मृत्यु के वृक्ष की ओर जाने के लिए बाध्य करने लगे।

अन्त में सब तरह से हार कर वह बेचारी कन्या उस वृक्ष के निकट चली गई। थोड़ी देर वह चुपचाप खड़ी रही। फिर हृदय की सारी शक्ति को एकत्र करके एकदम वृक्ष की ओर उछली और हाथों के सहारे ऊपर चढ़ गई। चोटी पर पहुंच कर उसने उस पवित्र रस को पी लिया। इसके बाद, एक बार वह फिर ऊपर को उछली। मुझे आशा थी कि वह अब नीचे कूद पड़ेगी। मैं समझता था कि काम समाप्त हो चुका है। उस धुंधले प्रकाश में मैं यह न जान सका कि उसकी चिल्लाहट का क्या कारण है। परन्तु वहां जो घटना घट रही थी, मैं उसे सहसा जान गया। डर के मारे मेरा लहू सूख गया। जो वृक्ष एक मिनट पहले निर्जीव और निश्चेष्ट दिख पड़ता था, वह जी उठा। जो सूत निर्बल जान पड़ते थे उनका खिलना बन्द हो गया और उन्होंने लड़की के सिर और कंधों पर गुंडी मार कर उसे ऐसी मजबूती से पकड़ लिया कि उनसे छूटने की उसकी सारी चेष्टाएं निष्फल हुईं।

हरी-हरी टहनियां, जो पहले बहुत कड़ी थीं, ऐंठने लगीं। उन्होंने सांपों की तरह चारों ओर गुंडी मार ली। जिस समय यह सब हो रहा था, मुझे एक ऐसा भयानक दृश्य दिखाई दिया जिसे मैं कभी न भूल सकूंगा। वे बड़े-बड़े पत्ते धीरे-धीरे उठने लगे। उनके लम्बे-लम्बे भयानक कांटे भीतर की ओर हो गए थे। उनकी नोकें बालिका की देह में घुस गईं। उन्होंने शिकंजे की तरह उसे मसल डाला। जिस समय वे एक-दूसरे से मिल गए,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके तने से गुलाबी रंग का रस-सा टपकने लगा। इस पर सब लोग बड़े हर्ष से फिर खाने-पीने लगे। उन्होंने समझा कि राक्षस शान्त हो गया।

डा० लीचे के इस वृत्तांत ने वनस्पति-विद्या के पण्डितों में एक बड़ी हलचल उत्पन्न कर दी है। विद्वानों का एक दल शीघ्र ही मेडागास्कर में जाकर इस मनुष्यों को खाने वाले पेड़ के भेद को मालूम करने वाला था। शायद वह गया होगा।

लिलीपुट की यात्रा— (पृष्ठ २२ का शेषांश)

अपनी फौज के पैदलों को चौबीस और घुड़सवारों को सोलह की लाइन में खड़ा करे। जब फौज कायदे से खड़ी हो गई तो उसने मार्च करने का आर्डर दिया। तीन हजार पैदल और एक हजार घुड़सवारों ने बैंड बजाते हुए मार्च कर दिया। जब ये लोग मेरे पैरों के नीचे से निकले तो दर्शकों के आश्चर्य और उत्साह का ठिकाना न रहा।

मैंने सम्राट के पास अपने छुटकारे के लिए इतने प्रार्थनापत्र भेजे कि उन्होंने यह मसला अपने मन्त्रियों की बैठक में पेश कर दिया। कई दिनों की बहस के बाद यह तय हुआ कि मुझे आजाद कर दिया जाए। लेकिन छूटने के पहिले मुझे कुछ बातों की शपथ लेनी होगी और एक संधिपत्र पर हस्ताक्षर करने पड़ेंगे। यह संधिपत्र इस प्रकार था :—

लिलीपुट के सम्राट महाराजाधिराज, श्री गोलबस्टो मोमरिन ३ लेम गर्डिलो शेफिन मुली उली कू संसार के पालक और संहारक जिनका राज्य पांच हजार योजन (लगभग बारह मील) तक पृथ्वी के इस छोर से उस छोर तक फैला है, जो सम्राटों के सम्राट हैं और धरती में रहने वाले सब मनुष्यों से ऊंचे हैं, जिनका सिर ऊंचाई के कारण सूर्य से टकराता है और जिनके चलने से पृथ्वी कांपने लगती है, वह महाराजाधिराज अपने राज्य में आए हुए पर्वताकार आदमी के सामने कुछ बातें रखते हैं, जिनकी उसे शपथ लेनी पड़ेगी :—

(१) पर्वताकार आदमी बिना हमारे मुहरबंद आज्ञा-पत्र को लिए हमारे राज्य से बाहर नहीं जाएगा।

(२) वह बिना दो घंटे पहिले सूचना दिए हमारी राजधानी के पास नहीं आएगा क्योंकि हमारे आदमियों को कुचले जाने के डर से घरों में बन्द रहना पड़ेगा।

(३) पर्वताकार मनुष्य सिर्फ हमारी बड़ी सड़कों पर ही चलेगा खेतों या चरागाहों में न लेटेगा और न घूमेगा।

(४) सड़कों पर घूमते समय वह इस बात का ध्यान रखेगा कि उसके पैरों के नीचे कोई आदमी, घोड़ा या गाड़ी न कुचल जाए। वह हमारे किसी आदमी को बिना उसकी इच्छा के अपने हाथों में नहीं उठाएगा।

(५) अगर कभी हमें कोई बहुत जरूरी डाक भेजनी पड़े तो उसे हमारे हरकारे और घोड़े को अपनी जेब में रख कर ले जाना पड़ेगा और उसे सुरक्षित वापिस भी लाना पड़ेगा।

(६) वह ग्लेफुस्कू नामक टापू के रहने वालों के खिलाफ जो हमारे शत्रु हैं, हमारी मदद करेगा और उनके जहाजी बेड़े को नष्ट कर देगा।

(७) पर्वताकार मनुष्य फुरसत के समय हमारे आदमियों को भारी पत्थर उठाने में मदद करेगा, जिससे हम अपनी राजधानी की चहारदीवारी बनवा सकें।

(८) वह दो महीने के अन्दर हमारे राज्य के चारों ओर घूम कर पता लगाएगा कि हमारा राज्य कितना लम्बा-चौड़ा है।

यदि वह इन शर्तों का पालन अच्छी तरह और ईमानदारी के साथ करेगा तो हम उसके खाने-पीने के लिए रोजाना अपने यहां के १,७२४ आदमियों के बराबर खुराक दिया करेंगे और उसके ऊपर अपनी कृपा बनाए रखेंगे।

मैंने इन सभी शर्तों को स्वीकार कर लिया और इस बात की कसम खाई कि मैं इन शर्तों का पालन करूंगा। तब मेरे पैर में बंधी जंजीरों को खोल कर मुझे आजाद कर दिया गया।

आप आश्चर्य करेंगे कि सम्राट ने मुझे एक हजार सात सौ चौबीस आदमियों के बराबर राशन देने का फैसला क्यों किया। वास्तव में ये लोग हिसाब किताब में बड़े चतुर होते हैं। उन्होंने मेरी लम्बाई चौड़ाई नाप कर पता लगाया कि मैं उनके आदमियों की तुलना में कितनी जगह घेरता हूं। इसी आधार पर उन्होंने यह भी समझ लिया कि भोजन की तादाद क्या होगी। अब आप स्वयं समझ सकते हैं कि ये लोग कितने बुद्धिमान थे।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम बाल-भारती पढ़ते हैं

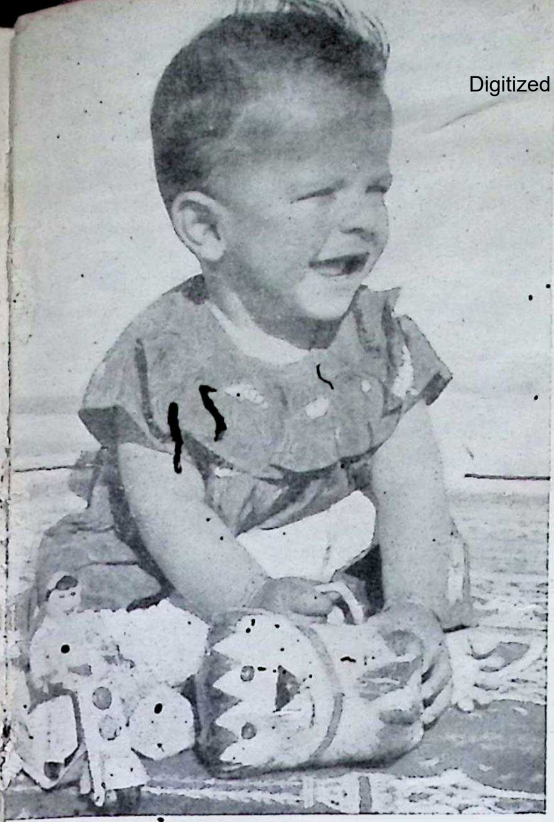

दीपक

सुदेश और प्रेम

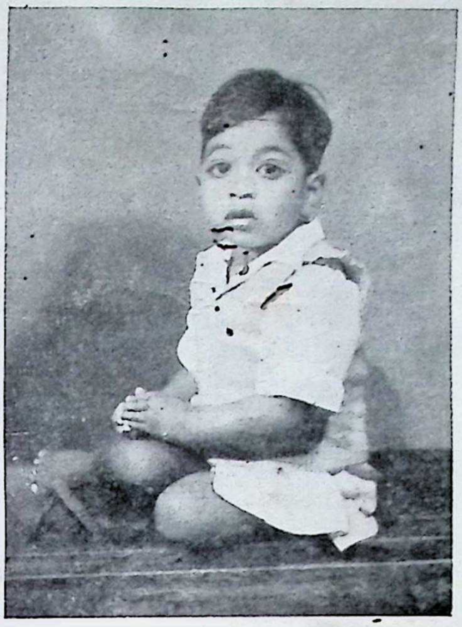

कृष्ण गोपाल

सन्ध्या पतके

उमा तिरुमलश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

141315४

इन पत्रिकाओं को अपने वाचनालय में सम्मिलित कीजिए

ग्राम सेवक

ग्राम सुधार की विभिन्न योजनाओं के बारे में ग्रामीण जनता के योग्य सामयिक सूचना और समाचार । भाषा अति सरल और छपाई सुन्दर । वार्षिक शुल्क १.२५ रुपए ।

मैट्रिक मापतोल

मापतोल प्रणाली में होने वाले महत्वपूर्ण परिवर्तन का जानना हर एक नागरिक के लिए अनिवार्य है । इस सम्बन्ध में पूरी जानकारी के लिए इस पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया है । वार्षिक मूल्य २.०० रुपए, एक प्रति ४० नए पैसे ।

कुरुक्षेत्र

सचित्र मासिक पत्र, जिसमें देश के सामुदायिक विकास-कार्यक्रम सम्बन्धी समाचार तथा लेख प्रकाशित होते हैं । वार्षिक शुल्क २.५० रुपए ।

आजकल

इस लोकप्रिय सचित्र मासिक पत्र में भारत भर के प्रसिद्ध साहित्यकारों के विचारपूर्ण लेख, कविताएं तथा कहानियों के अतिरिक्त कला, संस्कृति व अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर प्रामाणिक लेख पढ़िए । वार्षिक शुल्क ६.०० रुपए ।

भारतीय समाचार (पाक्षिक)

दो चित्र कथाओं सहित

ठोस पाठ्य सामग्री, अधिकृत सरकारी सूचनाएं व विकास सम्बन्धी गतिविधियों के समाचारों से युक्त यह पत्रिका छात्रों, शिक्षकों, व सार्वजनिक कार्यों से सम्बन्धित सभी व्यक्तियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है । वार्षिक शुल्क ५.०० रुपए ।

योजना

सब क्षेत्रों में हुई प्रगति का आलोचनात्मक मूल्य आंकने वाला, भारत की पंचवर्षीय योजनाओं का पथप्रदर्शक हिन्दी और अंग्रेजी का पाक्षिक पत्र । वार्षिक शुल्क २.५० रुपए ।

बिक्री बढ़ाने के लिए इन पत्रिकाओं में विज्ञापन दीजिए

पब्लिकेशन्स डिवीज़न

पो० बॉ० नं० २०११, ओल्ड सेक्रेटेरिएट

दिल्ली—८

डाइरेक्टर, पब्लिकेशन्स डिवीज़न, ओल्ड सेक्रेटेरिएट, दिल्ली—८ द्वारा सम्पादित तथा प्रकाशित और प्रबन्धक भारत सरकार मुद्रणालय, फ़रीदाबाद द्वारा मुद्रित ।

Regd. No. D—508.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar